टॉल्सटॉय की डायरी
८.२
५८

'साहित्य-मण्डल-माला' की पन्द्रहवीं पुस्तक—

टॉल्सटॉय की डायरी

(महर्षि टॉल्सटॉय के यौवन-कालीन अनुभव)

अनुवादक

ठाकुर राजबहादुर सिंह

प्रकाशक

साहित्य-मण्डल,

दिल्ली।

मूल्य तीन रुपया

प्रकाशक
ऋषभचरण जैन,
मालिक—साहित्य-मण्डल,
बाज़ार सीताराम, दिल्ली।

पहली बार

अक्तूबर, १९३२

मुद्रक
जे० बी० प्रिंटिंग प्रेस,
चाँदनी चौक,
दिल्ली

प्रकाशक के शब्द

महर्षि टॉल्सटॉय के अन्यतम सुहृद, अँग्रेज़ विद्वान् श्री० ऑल्मर मॉड की लम्बी और महत्वपूर्ण प्रस्तावना के सम्मुख हमें प्रस्तुत पुस्तक के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं रहती। जिस प्रकार अँग्रेज़ी-अनुवादक-महोदय ने भाषा-लालित्य पर अधिक ध्यान न देकर लेखक के मूल भावों पर ही दृष्टि-निक्षेप किया है, उसी प्रकार की सावधानी हिन्दी-अनुवाद में भी बर्ती गई है। अँग्रेज़ी अनुवाद के अनुसार ही इस अनुवाद में भी पाठक कहीं-कहीं अस्पष्टता पायेंगे। परन्तु हमें इस बात का आनन्द है, कि अपने भरसक हमने महर्षि की स्वर्ग-गत आत्मा तथा अँग्रेज़ी-अनुवादक के साथ विश्वासघात नहीं किया है।

आशा है, हिन्दी-संसार इस पुस्तक का स्वागत करेगा।

—ऋषभचरण जैन।

प्रस्तावना

इस पुस्तक में टॉल्सटॉय की १८५३-५७ ई० की निजी डायरी का उद्धरण है, जोकि अभी रूसी, फ्रेञ्च और अँग्रेज़ी भाषाओं में पहली बार प्रकाशित हुई है।

बोल्शेविक-सरकार ने टॉल्सटॉय की रचनाओं को 'उनके पूँजीवादी दृष्टि-कोण' के कारण रूसी पुस्तकालयों से (दोनों राजधानियों के प्रधान पुस्तकालयों को छोड़कर) पृथक् करा दिया है। अब यह भी सम्भव नहीं मालूम होता, कि टॉल्सटॉय की कोई रचना बिना सेन्सर की आँख-आगे पड़े और बिना कटे-छँटे प्रकाशित हो सके; क्योंकि मानव-जीवन के प्रति न-सिर्फ़ टॉल्सटॉय का दृष्टि-कोण बोल्शेविकों के पदार्थवाद से भिन्न था, वरन् हिंसा के प्रति उनका विरोध-भाव, तथा किसी भी प्रकार के युद्ध से उनकी हार्दिक घृणा, वर्तमान रूसी सरकार के सिद्धान्तों से भिन्न दिशा में चलती है। शायद इसीलिये, वर्तमान पुस्तक का रूसी संस्करण रूस में प्रकाशित न होकर फ़्रान्स में हुआ है—यद्यपि वास्तव में यह डायरी उस समय की लिखी हुई है, जबकि टॉल्सटॉय के ऐसे सिद्धान्त नहीं बने थे, जिन्हें बोल्शेविज़्म-विरोधी समझा जाय। इसीलिये शायद सेन्सर इसकी अधिक काट-छाँट न करता।

प्रस्तुत डायरी में टॉल्सटॉय के उन दैनिक कार्यों और विचारों का संग्रह है, जो वे किया करते थे, या जो उनके मन में उठा करते थे; और जिन्हें वे निजी उपयोग के लिये संक्षेप में लिख लिया करते थे। उन्होंने जुवों में अपनी हार, अपने अस्थिर स्वभाव, आत्म-सुधार के लिये अपने प्रयत्न, तथा अपनी अभिलाषाओं, विचार-धाराओं और अपने जीवन के प्रधान उद्देश्य और उपयोग के विषय में उत्पन्न होनेवाले प्रश्नों का वर्णन् अत्यन्त स्पष्टतापूर्वक किया है।

कहीं-कहीं तो उनके नोट इतने संक्षिप्त हैं, कि समझ में नहीं आते। परन्तु ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते हैं, हमें बहुत-सी बातें मालूम होती जाती हैं,—कुछ प्रभावशाली विचार, उनकी कार्य-प्रणाली का परिचय, उनकी प्रारम्भिक रचनाओं का इतिहास, तथा सेना में उनकी असफलताओं और निराशाओं का सच्चा विवरण।

३१ अक्तूबर १८५३ को हम उन्हें यह कहते हुए देखते हैं:—"मैं प्रायः लिखते-लिखते·········अग्रसर होना।" (हिन्दी-अनुवाद पृष्ठ ९२, तीसरी पंक्ति)

यह बात टॉल्सटॉय की शैली के प्रधान गुण का परिचय देती है। उनका सब से पहला उद्देश्य था—अपने विचारों को स्पष्ट रूप में प्रकट करना। उन्होंने सुन्दर-सुन्दर शब्दों के प्रयोग का लोभ कभी न किया, न-ही व्यर्थ-के और जोशीले वाक्यों की इच्छा उन्हें हुई।

मुझे १८९६ ई० का वह सब से पहला अवसर याद है, जब उन्होंने अपनी एक डायरी में से 'प्रेम की भिक्षाएँ'-शीर्षक एक अंश अनुवाद के लिये मुझे दिया था। जब उन्होंने मेरा अनुवाद देख लिया, तो मैंने पूछा—वह उन्हें पसन्द

आया, या नहीं। "हाँ", उन्होंने कहा—"खूब किया है, लेकिन साहित्यिक छटा दिखाने का लोभ तुम नहीं त्याग सके। मैं सदा ठीक वही कहता हूँ, जो मेरा अभिप्राय होता है, परन्तु अँग्रेजों के रक्त में यह विशेषता है कि वे बात को निश्चित रूप में कहने की जगह आकर्षक ढँग से उपस्थित करने की इच्छा रखते हैं। तुम सदा अभिप्राय की जगह भाषा को अधिक महत्व देते आये हो। डिलन में भी, जिसे एक सर्वोत्कृष्ट अनुवादक माना जाता है, यही दोष है।"

मैं तब तक साहित्यके रंग में इतना अधिक नहीं रँगा था, कि इस पाठ को न समझता। टॉल्यटॉय ने जो मेरे अनुवादों की सबसे अधिक प्रशंसा की, उसका कारण केवल यही है, कि मैंने उनके विचारों को ठीक उनके मूल रूप में उपस्थित करना ही अपना प्रधान उद्देश्य बनाया। इसके कारण कहीं-कहीं पाठक के भ्रम में पड़ जाने की शंका भी मुझे हुई, और अनेक आकर्षक और कर्ण-मधुर वाक्यों का लोभ भी मुझे त्यागना पड़ा। यह तरीक़ा ऐसे लेखकों की रचनाओं में लागू होता है, जो अपनी रचना के विषय-सम्बन्ध में बहुत लगन से काम लेते हैं। उन लेखकों के अनुवादों में, जो किसी विशिष्ट विषय पर नहीं लिखते, भाषा की स्वच्छता और मुहाविरों के लिये थोड़ी-बहुत स्वतन्त्रता क्षम्य है।

इस पुस्तक में सिवा इसके, ऐसी कोई बात नहीं है,।कि जहाँ कहीं केवल संकेत अथवा एक ही शब्द में कुछ लिखा गया है, वहाँ कुछ संक्षेप कर दिया गया है।

सच्चरित्रता के विषय में टॉल्सटॉय बहुत उच्च विचार रखते थे, और सदा उसे प्राप्त करना अपना उद्देश्य रखते थे, परन्तु उनके प्रकृति-दत्त स्वभाव ने उनको भयानक संघर्ष

में डाल दिया था, और वे कभी अपने प्रयत्न में सफल न हो पाते थे। उन्होंने अपनी असफलताओं का उल्लेख अत्यन्त सत्यतापूर्वक किया है, परन्तु उन अधिकांश वाक्यों को उनके ज्येष्ठ पुत्र ने प्रकाशित होने के पहले उनकी डायरी में से निकाल दिया। जहाँ कहीं ऐसा हुआ है, वहाँ विन्दु-चिह्न (………) लगा दिये गये हैं। जहाँ कहीं ऐसे चिह्न मिलें, समझना चाहिये, कि वहाँ उन्होंने अपनी दुश्चरित्रता के विषय में कुछ लिखा था।

अपने विषय में मुझे यह कहना है, कि जो-कुछ करने का मेरे पास साधन था, मैंने वह सब किया है, और कुछ अंश इतने स्पष्ट रूप में प्रकाशित हुए हैं, कि अप्रकाशित सत्यों पर पर्याप्त प्रकाश डाल देते हैं। मैं जिस छूट के लिये उत्तरदायी हूँ, वह है—दैनिक व्यय के विषय में टॉल्सटॉय का अनावश्यक विस्तार और जुआ खेलने के लिये बनाये हुए उनके नियम। क्योंकि, जो खेल उस समय खेले जाते थे, अब उनका प्रचलन नहीं है, अतएव इन नियमों का अनुवाद व्यर्थ और परेशान करनेवाला होता।

इन पाँच वर्षों में टॉल्सटॉय के साथ क्या-क्या बीती—यहाँ इनका संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया जाता है, जिससे डायरी में उल्लिखित घटनाओं को समझने में पाठकों को अधिक सुविधा होगी।

[१८५३]

१८५३ में टॉल्सटॉय कॉकेशस की रूसी सेना में एक उम्मेदवार फ़ौजी अफ़सर के पद पर नियुक्त हुए, जिसमें उनके बड़े भाई निकोलेंका एक अफ़सर थे। १८५१ ई० में, जब

टॉल्सटॉय कॉकेशस को रवाना हुए, तो उनकी इच्छा सेना में भर्ती होने की कदापि नहीं थी,※ और वे अपने परिचय की चिट्ठियाँ, और अन्य सरकारी काग़ज़ात पीटर्सबर्ग या तुला में-ही छोड़ गये थे। जब वे भर्ती होगये, तो इन काग़ज़ात के अभाव में, जिन्हें वे घर से भी न मँगा सके, उन्हें बार-बार अनेक प्रकार का कष्ट सहना पड़ा, और उनकी उन्नति में बड़ी बाधा पड़ी। बहुत दिन तक उन्हें कोई अवसर न दिया गया, न उन्हें सेण्ट-जॉर्ज का पदक मिला, और न-ही प्रार्थना-पत्र भेजने पर उन्हें छुट्टी मिल सकी।

सन् १८५१ ई० में उन्होंने सेना के साथ कॉकेशिया के पहाड़ी लोगों पर धावा किया, जिससे उनके मन में 'धावा' (The Raid) नामक कहानी का प्लॉट आया। इसी वर्ष उनकी पहली कहानी 'बाल्यावस्था' (Childhood) पीटर्सबर्ग के तत्कालीन सर्वोत्तम पत्र (Contemporary) में प्रकाशित हुई, जिसे पाठकों और समालोचकों ने बेहद पसन्द किया।

१८५३ में टॉल्सटॉय ने एक युद्ध में भाग लिया, और मरते-मरते बचे। पहाड़ी लोगों का छोड़ा हुआ एक गोला उनके पैर के पास आकर फटा। 'काष्ठ-पतन'-नामक कहानी का कथानक उन्होंने यहीं से ग्रहण किया।

११ जून को उन्होंने छुट्टी ली, और जब वे एक रक्षक-सेना के साथ ग्रॉज़्नी के क़िले की ओर जारहे थे, तो उन्हें एक चेचन घुड़सवार ने क़रीब-क़रीब पकड़ लिया। इस

※ इस घटना का वर्णन 'मण्डल'-द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'देहाती सुन्दरी' में मिलेगा, जो टॉल्सटॉय की रचना The Cossacks का हिन्दी-अनुवाद है।

घटना के फल-स्वरूप उन्हें 'कॉकेशस का क़ैदी' (उनकी २३ कहानियों के संग्रह में से एक) का कथानक मिल गया, जिसे उन्होंने बहुत बाद में लिखा, और जिसके बारेमें उन्होंने 'कला क्या है ?'-नामक पुस्तक में लिखा है, कि "यह कहानी मेरी उन दो कहानियों में से एक है, जिन्हें लिखकर मैं पूर्णतः सन्तुष्ट हुआ हूँ।"

स्वास्थ्य अच्छा न होने के कारण टॉल्सटॉय ने अपनी छुट्टी और बढ़वा ली और १० जुलाई से ११ अक्तूबर तक —तीन मास—प्याटीगॉर्स्क के पाचक जल का सेवन करने चले गये, जहाँ उनकी बहन काउण्टेस मेरी अपने पति वैलेरियन टॉल्सटॉय के साथ ठहरी हुई थीं।

उनके प्रथम प्रयास 'शैशवावस्था' ने उन्हें अन्य साहित्यिक क्रियाशीलताओं के लिये प्रोत्साहित किया। वे कोई चीज़ सरलतापूर्वक न लिखकर उसे बार-बार दोहराते जाते थे, जबतक कि वे उस रचना को प्रकाशन के योग्य नहीं समझ लेते थे। बहुत-से वर्णन और मस्विदे उन्होंने यों-ही यह कहकर डाल दिये थे, कि वे उनकी दृष्टि में सन्तोष-जनक नहीं थे। हाल में जब रूस में समस्त साहित्यिक सम्पत्ति को राष्ट्र की चीज़ विघोषित करदिया गया, तो नयी रूसी सरकार को उनकी कुछ आरम्भिक कहानियों के मस्विदे और बहुत-सी ऐसी लेख-सामग्री मिली, जिसे टॉल्सटॉय प्रकाशित नहीं करवाना चाहते थे। देखना यह है, कि टॉल्स-टॉय की इच्छानुकूल न होते हुए भी वह सामग्री अब प्रकाशित होती है, या नहीं। उनमें से कई रचनाएँ तो प्रकाशित हो चुकी हैं।

सन् १८५२ ई० में उन्होंने 'बाल्यावस्था', 'काष्ठ-पतन',

'एक ज़मींदार का प्रभात' और 'खिलाड़ी' समाप्त करने के बाद 'कॉसेक्स' भी आरम्भ करके उसका पहला भाग समाप्त कर लिया, जो १८६३ ई० में प्रकाशित हुआ। सभी कहानियाँ उनके निजी अनुभव के आधार पर लिखी गयी थीं, किन्तु इनमें से कोई भी आत्म-चरित के साधन के रूप में उपयोग में नहीं लाई जा सकती; क्योंकि उन्होंने कथानक और पात्रों में अपने तथा अन्य लोगों के विचारों का भी समावेश किया है। उदाहरणार्थ 'शैशवावस्था', 'बाल्यावस्था' और 'युवावस्था' में पिता का चरित्र-चित्रण टॉल्सटॉय के पिता के चरित्र से नहीं मिलता। माता का चित्रण निकोलेंका के जीवन से बहुत अधिक सादृश्य रखता है; यद्यपि टॉल्स-टॉय की माता का देहान्त उसी समय हो गया था, जब उनकी अवस्था कुल दो वर्ष की भी नहीं हो पायी थी। इसी प्रकार 'कॉसेक्स' में मर्याना के साथ प्रणय का जो चित्रण किया गया है, वह टॉल्सटॉय के निजी अनुभव की अपेक्षा उनके साथी अफ़सरों के अनुभवों से विशेष रूप में लिया गया है।

बाद में उन्होंने कॉकेशस-निवास की स्मृतियों में काफ़ी आनन्द का अनुभव किया; किन्तु उन तीन वर्षों तक तो उन्हें अपना जीवन कठिन परीक्षाओं में होकर गुज़ारना पड़ा, जब वे वहाँ पर मौजूद थे। समय का अधिकांश उन्होंने स्टॉरोग्लैडोव के पड़ाव पर गुज़ारा, जहाँ वे बड़े घटिया मकानों में सुख-स्वाद-विहीन जीवन व्यतीत करते थे। कॉसेक्सों (क़ज़्ज़ाक़-फ़िर्क़ेवालों) के जिस आरम्भिक जीवन का शानदार वर्णन उन्होंने किया है, उसने शुरू में इन्हें ख़ूब आकर्षित किया था, किन्तु आगे चलकर यह

अवस्था ऐसी हो गयी कि साधारण कॉकेशियन अफ़सर के साथ भी उनका रहना असह्य हो उठा। उनके साथ टॉल्स-टॉय का सामाजिक सम्मिलन केवल ताश खेलने और शराब पीने की दावत तक ही सीमित रह गया।

जिन कठिनाइयों का वर्णन ऊपर किया जा चुका है, उनके कारण उन्हें पूरे दो वर्ष तक उम्मेदवार अफ़सर ही बने रहना पड़ा, और जनवरी, १८५४ ई० तक उन्हें 'पहाड़ियों के विरुद्ध वीरतापूर्ण कार्य करनेवाले' की पदवी नहीं मिली।

अपने वर्तमान जीवन और सफलता के अभाव के कारण असन्तुष्ट होकर उन्होंने १८५३ ई० में नौकरी छोड़ देने का निश्चय किया और मई-मास में इसके लिये दरख़्वास्त दे दी। किन्तु परिचय-पत्र के अभाव के कारण उनके नौकरी से एक-दम पृथक् होने में बाधा पड़ी, और उन्हें केवल छुट्टी पर सन्तोष करना पड़ा। अन्ततः १३ जनवरी, सन् १८५४ ई० में उन्हें कमीशन की परीक्षा में सम्मिलित होने की स्वीकृति मिली—जो उस समय शुद्धतः एक व्यवस्था-मात्र थी; और वे उसी महीने की १९ तारीख़ को घर के लिये रवाना होगये। वे रास्ते में बर्फ़ पड़ने की कठिन यातना भोगने के बाद २ फ़र-वरी को अपनी ज़मींदारी—याश्नाया पोल्याना में पहुँचे। इस यात्रा ने उन्हें चित्रण के लिये काफ़ी सामग्री प्रदान की।

वे फिर कॉकेशस नहीं लौटे, क्योंकि तुर्की के साथ युद्ध समाप्त हो गया, और यद्यपि इँगलैएड तथा फ़्रांस ने रूसी युद्ध की घोषणा मार्च, १८५४ ई० तक नहीं की थी, पर उसकी तैयारी पहले से ही हो रही थी, और टॉल्सटॉय को तुर्की और सेवस्टॉपॉल में नौकरी बजानी पड़ी।

[१८५४]

६ फ़र्वरी, १८५४ ई० को जब टॉल्सटॉय याश्नाया पोलयाना के निकटवर्ती तुला-नगर में थे, उन्हें एक सरकारी हुक्म मिला कि उन्हें कमीशन प्रदान किया गया है और उनकी नियुक्ति डैन्यूब की सेना में [illegible] जाती है। यह उन दरख्वास्तों का नतीजा था, जो टॉल्सटॉय ने सिलिस्ट्रिया-स्थित सेना-नायक जनरल प्रिंस एम० डी० गोर्शाका के पास भेजी थीं।

पाठकों को स्मरण रखना चाहिए, कि इन जनरल-महोदय के दो भाई (जिनमें से एक वह था, जिसने सेवस्टॉपॉल के घेरे में पैदल सेना के अध्यक्ष का काम किया था) थे, और, तीन भतीजे। डायरी में जहाँ 'गोर्शाका' का ज़िक्र किया गया है, वहाँ यह बात स्पष्ट नहीं है, कि उक्त पाँच गोर्शाकाओं में से वहाँ किसकी चर्चा की गयी है। गोर्शाका-परिवार और टॉल्सटॉय-परिवार में रिश्तेदारी थी।

फ़र्वरी के अन्त में टॉल्सटॉय घर से रवाना हुए, और घोड़ों पर २००० मील की यात्रा करके कर्स्क, पोलतावा, बालटा और किशीनेव होते हुए १२ मार्च को बुख़ारेस्ट पहुँचे। प्रिंस गोर्शाका ने उनकी अच्छी आव-भगत की, पर उन्हें अपने स्टाफ़ में नहीं शामिल किया, और उनकी ड्यूटी आल्तेनित्सा-स्थित तोपख़ाने पर लगा दी। यह नियुक्ति स्थायी नहीं थी; क्योंकि थोड़े ही दिनों बाद उनकी बदली दक्षिणी सेना के प्रधान-नायक जनरल सर्ज़पुटोव्स्की के स्टाफ़ में हो गयी। २७ मई को वे उस स्टाफ़ में सम्मिलित हुए और गढ़ी के घेरे में उन्होंने भाग लिया।

ऑस्ट्रिया के धमकी-पूर्ण रुख़ और अँग्रेज़ों तथा फ़्रांसीसियों के वार्ता तक आजाने के कारण प्रिंस गोर्शाका ने सिलिस्ट्रिया से उसी वक़्त घेरा उठा लिया जबकि ख़ास हमले का मौक़ा था। जून के अन्त में टॉल्सटॉय अन्य स्टाफ़-वालों के साथ बुख़ारेस्ट चले गये। वहाँ उन्हें दन्त-पीड़ा के कारण बहुत कष्ट भोगना पड़ा और ३० जून को बेहोशी की दवा देकर उनके फोड़े का ऑपरेशन किया गया।

२१ जुलाई को स्टाफ़ बुख़ारेस्ट से चल पड़ा, और रूसी सरहद में पहुँच गया। टॉल्सटॉय ९ सितम्बर को किशीनेव पहुँचे, जहाँ उन्होंने दो मास का क्रियाशीलता-विहीन जीवन व्यतीत किया। उन्होंने दो बार दरख़्वास्त दी, कि उनका तबादला क्रीमिया को कर दिया जाय, जहाँ उस समय वास्तविक युद्ध हो रहा था, पर उसको मंज़ूरी नहीं मिली। कुछ दिनों के लिये वे तोपख़ाने में गये, पर फिर स्टाफ़ में बुला लिये गये, और १ नवम्बर तक उन्हें बाध्यतः किशीनेव में रहना पड़ा। सितम्बर के मध्य के लगभग उन्होंने अपने कुछ साथी अफ़सरों के साथ फ़ौजी सिपाहियों के शिक्षक के लिये एक सोसाइटी क़ायम की। अक्तूबर के मध्य में यह सोसाइटी युद्ध-सम्बन्धी पत्रिका प्रकाशित करने और फ़ौज में सद्भाव क़ायम रखने का कार्य करने लगी— यह पत्रिका ऐसी छपनेवाली थी, जिसे सिपाही लोग पढ़कर समझ सकें। पत्रिका के उद्देश्य और उसकी नमूने की कॉपी प्रधान सेनापति को दिखाकर ज़ार की सेवा में स्वीकृति के लिये भेजी गयी थी। टॉल्सटॉय इस उत्तरदायित्त्वपूर्ण कार्य के प्रति काफ़ी उत्साह रखते थे और यद्यपि जुआ खेलने के कारण उन्हें काफ़ी नुक़सान उठाना पड़ गया था, फिर भी उन्होंने

इस काम में लगाने के लिये घर को पत्र लिखकर रुपया मँगाया। किन्तु ज़ार ने इस कार्य की मंज़ूरी नहीं दी, और पत्रिका का प्रकाशन रोक दिया गया।

सितम्बर के अन्त और अक्तूबर के आरम्भ में टॉल्स-टॉय ने निकोलेव और ऑडेसा जाने के लिये छुट्टी ली, और फिर उन्होंने हठपूर्वक अपना तबादला सेवस्टॉपॉल को कर देने की प्रार्थना की, जहाँ घेरा आरम्भ हो रहा था।

अन्त में उन्होंने अपने भाई सर्जी को ३ जून, १८५५ ई० के दिन निम्न पत्र लिखा, जिससे उनके आगामी कार्य-क्रम का पता लगता है:—

"किशीनेव से १ नवम्बर को मैंने क्रीमिया भेजे जाने की दरख़्वास्त दी। इसका उद्देश्य कुछ तो वहाँ का युद्ध देखना था, और कुछ था, सर्ज़पुटोवस्की के स्टाफ़ से पृथक् हो जाना; क्योंकि इस स्टाफ़ में रहना मुझे पसन्द नहीं था। किन्तु इन दोनों से बड़ा कारण यह था, कि मैं देश-भक्ति के कारण उपरोक्त युद्ध में सम्मिलित होना चाहता था, जिसकी भावना उन दिनों मुझ में प्रगाढ़ रूप से विद्यमान थी। मैंने किसी ख़ास नियुक्ति की माँग न करके, अपनी तक़दीर का फ़ैसला अधिकारियों पर छोड़ दिया। क्रीमिया में मुझे सेवस्टॉपॉल के एक तोपख़ाने पर लगाया गया, जहाँ मैंने एक मास बड़े आनन्दपूर्वक सीधे-सादे और भले साथियों में व्यतीत किया, जो लड़ाई और ख़तरे के मौक़े पर बहुत ही भले साबित होते हैं। दिसम्बर में हमारा तोपख़ाना सिम्फ़र पॉल को भेज दिया गया, और वहाँ छः सप्ताह एक चौरस और सुखदायक मकान में व्यतीत किये। वहाँ घोड़े की सवारी करने और नई-नवेलियों के साथ नाचने तथा गाने-बजाने

का अच्छा मौक़ा मिला। अधिकारियों के साथ क्रीमिया की सबसे ऊँची दक्षिणी पहाड़ी चाटीरदाग पर जंगली बकरों के शिकार का भी उपयुक्त अवसर मुझे मिल गया था।"

[१८५५]

"जनवरी, सन् १८५५ ई० में अफ़सरों की बदली नये सिरे से शुरू हो गई थी, और मेरी बदली सेवस्टॉपॉल से दस वर्स्ट ❋ की दूरी पर बल्बेक नदी के किनारे पर स्थित तोपख़ाने को हो गई। वहाँ मुझे बुरे लोगों से साबिक़ा पड़ा—तोपख़ाने के सभी अफ़सर भयानक थे। नायक का स्वभाव अच्छा होने पर भी वह बड़ा ही अक्खड़ और सख़्त था। किसी तरह का आराम नहीं था, और मिट्टी की बनी हुई झोपड़ियों में बड़ी ठंड लगती थी। मेरे पास न तो कोई पुस्तक थी—कि उसे पढ़ता, न कोई आदमी था—जिससे बातें करता। यहीं मुझे पत्रिका के लिये घर से मँगाये हुए रुपये मिले; यद्यपि पत्रिका के प्रकाशित करने की आज्ञा नहीं मिली है। मैं २५०० रूबल की रक़म जुए में हार गया, और इस प्रकार दुनियाँ में अपनी महामूर्खता का ढिंढोरा मैंने स्वयं पीट दिया—यद्यपि सारी परिस्थितियों पर विचार करने पर मेरा अपराध वैसा अक्षम्य नहीं जँचता, फिर भी मैं इस गर्हित दोष से बरी नहीं हो सकता! मार्च मास में कुछ-कुछ गर्मी पड़ने लगी और ब्रेनेव्स्की-नामक एक बड़ा भला आदमी तोपख़ाने में नियुक्त होकर आया। मेरी तबियत सुधरने लगी, और ता० १ अप्रैल को गोलाबारी का ख़ास वक़्त आया। तोपख़ाना वहाँ से उठकर सेवस्टॉपॉल आ गया और तब

❋ एक वर्स्ट लगभग पौन मील के बराबर होता है।

मैं पूर्णतः स्वस्थ हो गया। १५ मई तक वहाँ मैं बड़े ही खतरे में रहा—आठ-आठ दिन के अवकाश के बाद मुझे चार-चार दिन के लिये फ़ोर्थ बैस्टिन के तोपखाने का इंचार्ज बनाया गया। किन्तु वसन्त-ऋतु होने के कारण मौसम बहुत अनुकूल था। बहुतेरे लोगों से मेल-जोल हुआ—अनुभव प्राप्त करने की खूब सामग्री मिली, जीवन के सभी आनन्द वहाँ प्रस्तुत थे, और हमने भद्र लोगों का एक प्रधान दल संगठित कर लिया। इस प्रकार उन छः सप्ताहों का समय मेरे जीवन की सुखदतम स्मृतियों के रूप में क़ायम रहेगा। १५ मई को तोपखानों के प्रधान अध्यक्ष गोर्शाका के दिमाग़ में यह बात आयी, कि मुझे बल्बेक की तटवर्ती पहाड़ी पर स्थित सेना का नायक बनाकर भेजा जाय। उक्त सेना का पड़ाव सेवस्टॉपॉल से बीस वर्स्ट की दूरी पर था। इस परिवर्तित प्रबन्ध से मैं बहुत अंशों में अब तक सन्तुष्ट हूँ।"

घेरे के अन्त तक टॉल्सटॉय अपनी सेना के नेतृत्व में ही रहे। सेवस्टॉपॉल से वे सम्राट् अलैग्ज़ैण्डर द्वितीय की आज्ञा से हटा दिये गये थे—इसका कारण यह था, कि सम्राट् ने उनकी 'दिसम्बर में सेवस्टॉपॉल'-नामक रचना पढ़कर हुक्म दिया था, कि "इस नवयुवक को घेरे से हटाकर उसकी प्राण-रक्षा का उपाय किया जाय।"

जब टॉल्सटॉय की तबियत बीमारी और अन्यमनस्कता से (जिसके कारण वे जुए में प्रवृत्त होगये थे) कुछ-कुछ सुधरने लगी, तो एक आकस्मिक परिवर्तन होने के कारण उन्होंने ५ मार्च, १८५५ की डायरी में यह बात नोट की—"……आज कुछ साथी मिले हैं। कल भक्ति और

ईश्वरत्व के विषय में विवाद हुआ। इस विवाद से मेरे मन में उस वस्तु को समझने का आभास उत्पन्न हुआ, मैं जिसे प्राप्त करने की कोशिश में हूँ। वह आभास है, एक ऐसे धर्म की उत्पत्ति, जो मनुष्यता और अर्वाचीन विकास के अनुकूल हो। ईसा के धर्म का संशोधित संस्करण—जिसमें मिथ्यात्व आर रहस्यवाद को स्थान न हो, तथा जो संसार को शान्ति का सन्देश सुनावे। मैं समझता हूँ, इस विचार को पूरा करने के लिये सदियों के सतत् प्रयत्न की आवश्यकता होगी। एक पीढ़ी दूसरी को पाठ देगी, और किसी दिन कट्टरता या मनुष्य की सहज तर्क-बुद्धि इसे स्वीकार करेगी। धर्म के द्वारा मनुष्य-मात्र, समझ-बूझकर, एकता के सूत्र में बँधें—मेरे मन में यह भावना मुख्य रहेगी।"

कोई भी व्यक्ति, जो टॉल्सटॉय के उक्त तिथि के बाद का पचीस वर्षों का जीवन जानता है, इस बात की कल्पना कर सकता है, कि शायद उनके उक्त विचार साधारणतः परिवर्तित विचारों के रूप-मात्र रहे हों, किन्तु उनके जीवन के अन्तिम तीस वर्ष यह बतलाते हैं, कि उपरोक्त विचार-रूपी जो बीज उनके मन में उगे थे, वे आगे चलकर पूर्णतः फलीभूत हुए,—क्योंकि १८८० ई० के बाद उनका समस्त जीवन उसी उद्देश्य में लग गया, जिसका आभास उन्हें ४ मार्च, १८५५ ई० को ब्रीनेव्स्की से वार्तालाप करते समय मिला था।

४ अगस्त को उन्होंने चर्नायारेका-नदी के भयानक किन्तु असफल आक्रमण में भाग लिया। अनेक अवसरों पर उन्होंने सेवस्टॉपॉल पर छापा मारा, और अन्तिम बार २७ अगस्त को उन्होंने मालाखोव को फ्रांसीसियों के हाथ में

जाते देखा; जिसके बाद सेवस्टॉपॉल की रक्षा असम्भव हो गयी।

सेवस्टॉपॉल के इस अन्तिम धावे पर उन्होंने अपनी फूफी को ४ सितम्बर, १८५५ ई० के दिन यह लिखा—"२७ तारीख़ को सेवस्टॉपॉल में एक बड़ा और गौरवपूर्ण युद्ध हुआ। मेरा सौभाग्य या दुर्भाग्य उसी दिन वहाँ पहुँचने का था, जिस दिन लड़ाई छिड़ी थी, जिससे मैं लड़ाई देखने के अतिरिक्त एक स्वयंसेवक के रूप में उसमें कुछ भाग भी ले सका। घबराना मत, मुझे मुश्किल-से किसी ख़तरे का अन्देशा था। २८ तारीख़ (मेरा जन्म-दिन) मेरे जीवन में दूसरा मौक़ा था, जब मैंने ऐसा दुःखद और स्मरणीय दिन बिताया;—पहली घटना १८ वर्ष पूर्व हुई थी। वह शोक था, चाची अलैग्ज़ैण्ड्रिया इलिनिश्ना की मृत्यु का, और यह शोक है, सेवस्टॉपॉल के हाथ से निकल जाने का। जिस समय मैंने इस नगर को प्रज्ज्वलित अग्नि-शिखाओं के बीच में भस्म होते देखा और अपने बैस्टिन पर फ्रांसीसी झण्डे और फ्रांसीसी सेना-नायक पर मेरी दृष्टि गयी, मैं विवश हो, रो पड़ा।······ गत कई दिनों से मेरे मन में बार-बार विचार उत्पन्न हो रहे हैं, कि सेना से पृथक् हो जाऊँ।"

सितम्बर के उत्तरार्द्ध में अन्य रूसी सेनाओं के साथ टॉल्सटॉय की सैनिक टुकड़ी भी पीछे हटी, और ऐसा करते हुए भी फॉटसिआली तथा अन्य कई स्थानों पर उनकी साधारण मुठभेड़ फ्रांसीसी सेनाओं से हुई।

सेवस्टॉपॉल के युद्ध के बाद तोपखानों के नायकों ने जो रिपोर्टें तैयार की थीं, उनका संक्षिप्त वृत्तान्त तैयार करने का भार टॉल्सटॉय पर डाला गया, और मध्य नवम्बर में

उन्हें उक्त रिपोर्ट के साथ एलची (दूत) के रूप में पीटरु-बर्ग भेजा गया।

[१८५६]

१८५५ ई० के अन्त में टॉल्सटॉय को तरक़्क़ी मिली; और वे सब-लेफ़्टिनेंट के पद पर नियुक्त हुये। मार्च, सन् १८५६ई० में ही वे लेफ़्टिनेंट भी बना दिये गये। यही उनका आख़िरी ओहदा था। पीटर्सबर्ग में उन्हें सैनिक बमों के कारख़ाने का निरीक्षण सौंपा गया था। उन्होंने नौकरी से इस्तीफ़ा दिया, किन्तु १६ मई को उन्हें ११ महीने की छुट्टी-मात्र दी गयी, और अन्ततः २६ नवम्बर को उनका इस्तीफ़ा मंजूर होगया।

सब बातों को देखते हुए टॉल्सटॉय एक अच्छे अफ़सर थे। अन्य ख्यातियों के साथ उन्होंने 'पितृदेश की सेवा करने की ख्याति' का भी गौरव प्रकट किया है। तुर्की-युद्ध के समय वे कुछ दिनों के लिये स्टाफ़ में ले लिये गये थे, और वहाँ, तथा क्रीमिया में, उन्हें जो काम सौंपे गये थे, उनकी पूर्ति उन्होंने पूर्ण सावधानी के साथ की। उनकी इच्छा मुख्य मोर्चे से पीछे हटकर मामूली सेवाओं में लगे रहने की नहीं थी; वे तो ख़तरे से बचने के बजाय उल्टे उसे खोजा करते थे। कॉकेशस के समय में और उसके बाद भी उन्होंने स्वेच्छा-पूर्वक मोर्चों में भाग लेने की आज्ञा माँगी, और क्रीमिया-युद्ध में, जब वे सेवस्टॉपॉल में थे, घेरे के लिये उन्होंने स्वेच्छापूर्वक अपनी सेवाएँ समर्पित कर दीं। जिस समय वे फ़ोर्थ बैस्टिन में थे, उस वक़्त बेहद ख़तरे का अन्देशा होने पर भी वे बड़ी प्रसन्नतापूर्वक अपने दिन काटते थे। जब उन्हें मिट्टी के झोंपड़ों में रहकर और सर्दी खा-खाकर दिन व्यतीत

करने पड़े, उस समय उन्होंने सुन्दर सैन्य-संगठन और तोप-ख़ानों की व्यवस्था पर एक स्कीम तैयार की। उन्हें अपने देशवासियों की भलाई का बड़ा ख़याल था। जैसाकि पहले बतलाया जा चुका है, फ़ौजी सिपाहियों की भलाई के लिये वे एक अख़बार (पत्रिका) निकालनेवाले थे, और जब अपने पहाड़ी तोपख़ाने के साथ वे ख़ास मोर्चे पर गये, तो सैनिकों की आवश्यकताओं को समझने में उन्होंने काफ़ी दिलचस्पी दिखलायी। यद्यपि टॉल्सटॉय अपने गर्व, खिजलाहट और बेहूदगी के लिये प्रायः कुढ़े हैं, किन्तु उनके क्रीमिया के साथी-अफ़सर टॉल्सटॉय के आनन्दपूर्ण संसर्ग का स्मरण अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक करते रहे हैं। एक अफ़सर ने लिखा है—"युद्ध के उन भीषण दिनों में टॉल्सटॉय हमें अपनी शीघ्रता में लिखी हुई कहानियाँ और पद्य सुना-सुनाकर जगाया करते थे। जब वे हम लोगों के साथ होते थे, तो यह मालूम ही नहीं होता था, कि समय कब बीत गया—प्रसन्नता की तो कोई हद ही नहीं होती थी……जब काउण्ट (टॉल्सटॉय) हम लोगों से दूर जाते, या घोड़ा दौड़ाकर सिम्फ़रपोल जा पहुँचते थे, तो हम लोग उदास हो जाते थे।……" दूसरे तोपख़ाने में प्रसिद्ध था कि "वह अद्‌भुत घुड़सवार, ख़ुशदिल साथी, और ऐसे पहलवान थे, जो ज़मीन पर लेटकर पौने दो मन वज़न के आदमी को अपने हाथों पर खड़ा करके हाथ तानकर ऊपर उठा लेते थे। ……उनकी कितनी ही युक्तियुक्त और बुद्धिमत्तापूर्ण बातें और उनके कहने के ढंग विस्मरण करने की चीज़ नहीं हैं।……"

यह सब होने पर भी उन्हें सैनिक जीवन से बड़ी निराशा

हुई थी और नौकरी में उनकी अवस्था स्पृहणीय नहीं रही। सत्ताईसवें वर्ष में वे लेफ़्टिनेन्ट बने थे, और तब तक अधिकारियों की दृष्टि में वे पूर्णतः मेल-मिलापी बन चुके थे। अफ़सरों के एक दल ने 'सेवस्टॉपॉल-गायन'-नामक एक गान गाने की व्यवस्था की थी, जिसमें एक व्यक्ति प्यानो बजाता था, और शेष युद्ध के पद्य गाते थे। साहित्यिक योग्यता सब से अधिक होने के कारण पद्य-रचना का भार टॉल्सटॉय पर डाला गया था, और अफ़वाह के रूप में यह बात भी प्रसिद्ध होगयी थी कि वे सिपाहियों को युद्ध के गीत भी सिखाया करते थे।

सैनिक सफलता उनके भाग्य में नहीं थी, और उन्हें शीघ्र ही इस बात का अनुभव हो गया था कि उनका वास्तविक पेशा होना चाहिए साहित्यिक कार्य। जिस सुस्ती का वर्णन उन्होंने डायरी में किया है, उसके होते हुए भी उन्होंने अपनी सैनिक सेवा के साथ-साथ कई सुन्दर रचनाएँ की। १८५२ ई० में 'शैशवावस्था' प्रकाशित होने के बाद १८५३ ई० में 'कन्टेम्पोरेरी''-नामक पत्रिका में 'आक्रमण'-रचना प्रकाशित हुई। इसके बाद १८५४ ई० में 'बाल्यावस्था' और १८५५ ई० में 'खिलाड़ी', 'काष्ठ-पतन', 'दिसम्बर में सेवस्टॉपॉल' और 'मई में सेवस्टॉपॉल' प्रकाशित हुईं। १८५६ ई० में 'अगस्त में सेवस्टॉपॉल', 'बर्फ़ का तूफ़ान' और 'दो हुसार', 'कन्टेम्पोरेरी'-पत्रिका में और 'एक ज़मींदार का प्रभात' और 'मॉस्को का एक परिचित'-नामक रचनाएँ अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं।

टॉल्सटॉय की कहानियों और निबन्ध-रचनाओं ने उनकी गणना रूस के सर्वाग्रगण्य लेखकों में करादी, और

उनकी यह ख्याति समय के साथ बढ़ती ही गयी। बाद में 'युद्ध और शान्ति'-नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ, और तत्पश्चात् 'एना करेनिना' और 'अन्धकार की शक्ति' प्रकाशित हुए। अन्त में 'अङ्गीकार' और 'क्या करें?' तथा 'तेईस कहानियाँ' के प्रकाशन के बाद उन्हें ऐसी विश्व-ख्याति मिली, जैसी किसी भी रूसी लेखक को इसके पूर्व नहीं मिली थी। इन अन्तिम रचनाओं के द्वारा उन्होंने अपने विचार न-केवल रूस में ही प्रसारित किये, वरन् समस्त संसार के विभिन्न जाति, धर्म, समाज, संस्कृति, श्रेणी और भाषाओं के लोगों तक पहुँचाकर उन्हें लाभान्वित कराने की उच्च क्षमता प्राप्त की, और संसार के पञ्च-महाद्वीपों में उनका नाम सभ्य जन-समाज में प्रख्यात हो गया।

सितम्बर, सन् १८५५ ई० में 'कन्टेम्पोरेरी' के सम्पादक नेक्रासोव ने, जो अपने समय का प्रधान रूसी कवि भी था, टॉल्सटॉय को इस प्रकार लिखा था—"सत्य का जो रूप आपने हमारे साहित्य में प्रकट किया है, वह हम लोगों के लिये नितान्त नूतन है। मैं ऐसे किसी भी लेखक को नहीं जानता, जो अपने लिये लोगों (पाठकों) के हृदय में ऐसी गहरी सहानुभूति और प्रेम प्राप्त कर सका हो, जैसा आपने प्राप्त किया है, और मुझे भय केवल इसी बात का है कि समय तथा जीवन की निकृष्टता एवं हमारे चारों ओर फैली हुई मूकता और बधिरता आपके लिये भी वैसी-ही अनिष्टकारी सिद्ध होगी, जैसी हममें से अधिकांश लेखकों के लिये हुई है। इस प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों से शक्ति का नाश हो जाता है, जिसके बिना लेखक नहीं बन सकता—कम से कम ऐसा लेखक तो नहीं ही बन सकता, जैसे की आवश्यकता

रूस को है।………आप ऐसे ढंग से कार्यारम्भ कर रहे हैं, जिससे बड़े-से-बड़े सावधान व्यक्ति भी वाध्य होकर अपनी आशाओं से दूर जा पड़ते हैं।………"

नवम्बर, १८५५ ई० में जब टॉल्सटॉय पीटर्सबर्ग पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि वहाँ वे एक प्रसिद्ध साहित्यिक के रूप में विख्यात हो चुके हैं, और सर्व-साधारण में उनकी रचनाओं का बड़ा मान हो चला है। सभी जगह उनका स्वागत हुआ। उस समय के चुने हुए लोगों ने—चाहे वे किसी भी राजनीतिक विचार या सामाजिक स्थिति के क्यों न हों—उनका स्वागत किया। सन् १८५६ ई० की डायरी में हमें ऐसे प्रसिद्ध लोगों के नाम मिलेंगे, जिनके साथ टॉल्सटॉय का सौहार्द बढ़ गया था।

१८५६ ई० में छुट्टी लेकर टॉल्सटॉय पीटर्सबर्ग, मॉस्को और याश्नाया पोल्याना में दिन व्यतीत करने लगे। मॉस्को में उनकी मुलाक़ात अलैग्ज़ैण्ड्रा द्याकोवा से हुई, जिसकी ओर वे अपनी आरम्भिक युवावस्था में ही आकर्षित हो चुके थे। उस अस्थायी स्नेह का वर्णन उन्होंने 'युवावस्था' में अच्छी तरह किया है, जिसमें निकोलेंका इर्तेनेव के राजकुमारी नेखलुदोवा के साथ अनुचित बर्ताव का परिचय मिलता है। अलैग्ज़ैंड्रा ने पीछे प्रिंस ऐण्ड्रू ऑब्लेंस्की-नामक एक व्यक्ति के साथ शादी करली। टॉल्सटॉय और अलैग्ज़ैण्ड्रा के पुनर्मिलन ने उन दोनों के हृदय में पूर्व-भावनाओं का उदय करा दिया; किन्तु राजकुमारी 'यह देखकर कि टॉल्सटॉय के प्रति उसका स्नेह बढ़ता ही जा रहा है, अपने बच्चों को साथ ले, पीटर्सबर्ग को रवाना होगयीं।

एक और घटना ऐसी हुई, जिसका परिणाम बड़ा

गम्भीर हुआ। याश्नाया पोल्याना के निकटवर्ती स्थान सुदाकोवो में तीन युवतियाँ रहती थीं, जिनके नाम क्रमशः ओल्गा, वैलेरिया, और ज़ेनिश्का आर्सेनेवा थे। इन तीनों की एक फ्रांसीसी सहेली वर्गानी भी थी। गर्मी के दिनों में टॉल्सटॉय उपरोक्त रमणियों से प्रायः मिलते रहे, और ये युवतियाँ टॉल्सटॉय की फूफी तातियाना और उनकी बहन मेरी से भेंट-मुलाक़ात करने याश्याना पोल्याना आया करती थीं। टॉल्सटॉय और वैलेरिया में परस्पर प्रीति बढ़ी, और उनकी सगाई पक्की हो गयी।

अगस्त महीने में अलैग्ज़ैण्डर द्वितीय का दरबार देखने देखने के लिये उपरोक्त तीनों युवतियाँ एक 'चाची' को साथ ले, मॉस्को गयीं। वैलेरिया मॉस्को के आमोद-प्रमोद-मय जीवन में प्रवाहित-सी हो गयी, और उसने अपने संगीत-शिक्षक एम० मार्टियर से चोंचलेबाज़ी शुरू कर दी। टॉल्स-टॉय की सगाई कुछ समय तक तो और क़ायम रही, किंतु अक्तूबर में टॉल्सटॉय ने वर्गानी को वैलेरिया की भलाई के लिये, खूापोवित्स्की (अपने उदाहरण के रूप में) और देमबित्सकाया (वैलेरिया की उपमा के रूप में) की कहानी सुनाई। इस कहानी द्वारा उन्होंने अपनी अनिश्चित अवस्था और किंकर्त्तव्य-विमूढ़ता की भावना का परिचय दिया, और कहा कि पार्थक्य द्वारा वह उन (भावों) की परीक्षा लेना चाहते हैं। उसी महीने की २७ तारीख़ को उन्होंने वैलेरिया को अपनी डायरी का एक पृष्ठ दिखा देने की मूर्खता की, जिसमें यह वाक्य दर्ज था कि—"मैं तुम्हें चाहता हूँ।" जिस समय टॉल्सटॉय ने तुरन्त शादी कर लेने की बजाय अपनी भावनाओं की परीक्षा लेने के लिये दो मास के लिये वैले-

रिया से पृथक् होकर पीटर्सबर्ग जाने की ठान ली, तो यह मालूम हुआ कि शादी के सम्बन्ध में अब सब-कुछ निश्चित हो गया है। इसके बाद लम्बा पत्र-व्यवहार आरम्भ होगया, जिसके द्वारा टॉल्सटॉय को अधिकाधिक रूप में यह निश्चय होता गया कि वैलेरिया और वह एक-दूसरे के लिये उपयुक्त जोड़ी नहीं हैं, और वह उसे उतना प्रेम नहीं करते, जितना उसके द्वारा अपने को प्रेम कराना चाहते हैं। जब सगाई टूट गयी, तो आर्सेनेव और टॉल्सटॉय की फूफी तातियाना ने उन्हें बहुत कुछ बुरा-भला कहा; किन्तु युगल-जोड़ी का हृदय वास्तव में एक दूसरे से टूटा नहीं था, और अन्त में उन दोनों की शादी आनन्दपूर्वक हो गयी, और उनका परिवार खूब बढ़ा।

अपने गुलामों की मुक्ति के सम्बन्ध में टॉलसटॉय के कुछ विचार समझ लेने पर डायरी के इस भाग में दर्ज नोटों की व्याख्या समझ में आजायगी।

जिस समय वे लड़ाई पर गये थे, तब भी वे ग़ुलामों की मुक्ति के सम्बन्ध में अपने विचार लिखते रहे थे, और १८५६ ई० में पीटर्सबर्ग पहुँचकर उन्होंने अपने-आपको इसी प्रश्न की ओर लगा दिया। उनकी इच्छा किसी सरकारी प्रबन्ध या सुधार की प्रतीक्षा किये बिना अपने गुलामों को तुरन्त मुक्त कर देने की थी। उन्होंने तत्कालीन नर्म दल के कार्यकर्त्ताओं और सरकारी मेम्बरों से इस मामले में राय लेने के लिये मुलाक़ात की। उनकी इच्छा थी कि उनके किसान अपनी-अपनी ज़मीन के स्वयं अधिकारी बन जायँ; किन्तु ऐसा करने के लिये वे अपने-आप भारी क्षति भी उठाने के लिये तैयार नहीं थे; क्योंकि इस कार्य में एक बड़ी भारी वाधा

यह थी, कि उनकी ज़मींदारी २० हज़ार रूबल‍❀ को रेहन रक्खी हुई थी। टॉल्सटॉय ने एक कार्य-क्रम तैयार किया, इसके सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल की, और इस काम में अपने को पूर्णतः लगा दिया। उनके प्रस्तावों में से एक ऐसा था, जो सरकार के लिये भी स्वीकार्य था। वे १८५६ ई० के मई मास में अपने प्रस्तावों के साथ याश्नाया पोल्याना गये, और किसानों के सामने वह स्कीम रक्खी, जिसके द्वारा किसान उनके साथ यह ठेका करते, कि उन्हें वह ज़मीन, जिसे वे जोतते-बोते हैं, तीस वर्ष के लिये पट्टे पर मिल जाय। इस पट्टे के अनुसार किसानों को लगभग दो रूबल प्रति एकड़ देना पड़ता, जिसमें से कुछ रक़म तो रेहन छुड़ाने के लिये जमा होती रहती, और कुछ उन (टॉल्सटॉय) के ख़र्च में आती। चौबीस से तीस वर्ष के अन्दर जब ज़मीन रेहन से छूट जाती, तो वह सब-की-सब किसानों की जायदाद हो जाती। इस ठेके के शर्तनामे के साथ-साथ टॉल्सटॉय ज़मीन पर से अपना मालिकाना अधिकार छोड़ देते।

टॉल्सटॉय ने २८ मई से १० जून तक याश्नामा पोल्याना के किसानों की सभाएँ कीं, किन्तु उसका कोई सन्तोषजनक परिणाम नहीं निकला। किसानों में यह अफ़वाह फैल गयी कि अलैग्ज़ैण्डर द्वितीय के दरबार के अवसर (२६ अगस्त, १८५६ ई०) पर वे सब गुलामी से मुक्त कर दिये जायँगे, और उन्हें ज़मींदारों की सारी ज़मीन मुफ़्त मिल जायगी।

इस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करके टॉल्सटॉय को रूस की दुःखद दशा का भान हुआ। काउण्ट ब्लुडोव को

❀ लगभग डेढ़ रुपये के बराबर का रूसी सिक्का।

एक पत्र में उन्होंने लिखा:—"कोई-न-कोई उपाय ज़रूर निकालना है। यदि छः महीने के अन्दर गुलाम मुक्त न किये गये, तो आग लग जायगी। इसकी सभी तैयारी हो चुकी है। विद्रोहियों के हाथ चारों ओर ग़दर की चिनगारियाँ फैला देंगे, और फिर सर्वत्र आग लग जायगी।........."

साठ वर्ष तक उक्त भविष्यवाणी चरितार्थ नहीं हुई। उस समय जो-कुछ हुआ, वह यही था कि १८६१ ई० में गुलाम मुक्त कर दिये गये, और उन्हें मामूली ज़मीन के टुकड़े दे दिये गये, जिसकी क्षति-पूर्ति के रूप में ज़मींदारों को सरकारी बॉण्ड मिल गये। इस बॉण्ड की रक़म सरकार ने किसानों पर लम्बे-लम्बे दुःखद कर लगाकर वसूल की। यह सब बातें उस समय बिना किसी ऐसे ज़बर्दस्त हुल्लड़ या ग़दर के हो गयी थीं, जिसकी भविष्य-वाणी टॉल्सटॉय ने की थी।

(१८५७)

१२ जनवरी को टॉल्सटॉय मॉस्को से पेरिस के लिये रवाना हुए, और इसी मास की २९ तारीख़ को पीटर्सबर्ग से आगे बढ़े। इसके ग्यारह दिन बाद २१ फ़रवरी को वे पेरिस पहुँच गये।* बारहसिंगा की गाड़ी पर वे वार्सा पहुँचे थे, और वहाँ से रेलगाड़ी द्वारा पेरिस।

पेरिस में उनका जीवन अपेक्षाकृत क्रियाशील और

---

* पाठक देखेंगे कि टॉल्सटॉय ने तारीख़ लिखने में यहाँ भी भूल की है; क्योंकि २९ फ़रवरी को पीटर्सबर्ग से चलकर ग्यारह दिन बाद पेरिस पहुँचने का अर्थ है ९ फ़रवरी को पहुँचना, न कि २१ फ़र्वरी को।

आनन्दपूर्ण रहा। वहाँ वे कितने ही रूसी सज्जनों और साहित्यिक लोगों से मिले। ९ मार्च से १४ मार्च तक उन्होंने तुर्गनेव के साथ दिजन की सैर की।

टॉल्सटॉय ने १८६० ई० में दुबारा पश्चिमी यूरोप का भ्रमण, शिक्षा-प्रणाली का अध्ययन करने के लिये किया था; किन्तु पहले भ्रमण का कोई विशेष उद्देश्य नहीं था। ५ अप्रैल को उन्होंने अपने मित्र वी० पी० बॉटकिन को लिखा—"मैं दो महीने से पेरिस में ठहरा हूँ, और मैं नहीं समझता कि इस नगर से मेरी दिलचस्पी कभी कम होगी, या यहाँ का जीवन मेरे लिये आकर्षण की चीज़ नहीं रहेगा। मैं घोर अज्ञान में हूँ, इस बात का परिचय मुझे कहीं अन्यत्र इस रूप में नही मिला था, जैसा यहाँ मिला है। यदि केवल इसी कारण मुझे यहाँ रहना पड़े,—खासकर उस हालत में जबकि मैं समझता हूँ कि मेरी अज्ञानता यहाँ रहकर दूर हो सकती है—तोभी मैं यहाँ आनन्दपूर्वक रहूँ। इसके अतिरिक्त ललित कला से मुझे अत्यन्त आनन्द मिलता है—लॉवर, वर्सेई, कन्सर्वेटाइर ।तथा कंसर्ट-थियेटरों के दृश्यों और कॉलेज-डि-फ्रांस तथा सर्बोन के भाषणों के अतिरिक्त यहाँ के समाजिक जीवन की स्वच्छन्दता, जिसका कि हम रूस में विचार भी नहीं कर सकते, ऐसे हैं—जिनकी ओर मन बरबस आकर्षित हो जाता है। इन सब आकर्षणों का परिणाम यह हुआ, कि मेरे लिये पेरिस या इसके पार्श्ववर्ती ग्राम (जहाँ मैं दो महीने और रहने के लिये जा रहा हूँ) छोड़ना मुश्किल होगा।"

किन्तु इस निश्चय के दूसरे ही दिन (६ तारीख़ को) उन्होंने एक ऐसा आदमी देखा, जिसका हाथ मशीन से कट

गया था। इस करुण दृश्य वे ऐसे प्रभावान्वित हुए, कि वे उसी दिन जिनेवा के लिये रवाना हो गये, और उसके दूसरे दिन वहाँ पहुँच गये। जिनेवा में उन्होंने अपनी चचेरी बहनों (काउण्टेसेज़ टॉल्सटॉया) से मुलाक़ात की, जिनमें से अलेग्ज़ैण्ड्रा ए० टॉल्सटॉया से उनको ख़ास प्रेम था। उनके साथ टॉल्सटॉय का मित्रतापूर्ण प्रेम था। यह प्रेम कई वर्षों तक क़ायम रहा, और इससे टॉल्सटॉय को काफ़ी प्रसन्नता प्राप्त होती रही। इस डायरी में टॉल्सटॉय ने उन्हें 'अलैग्ज़ेण्ड्रिन' और 'साशा' के नाम से याद किया है। ('साशा'-नामक एक लड़का भी टॉल्सटॉय का मित्र था) उन्होंने अलेग्ज़ैण्ड्रा टॉल्सटॉया को 'चाची' या 'दादी' के नाम से भी सम्बोधन किया है, (यद्यपि ऐसा कहते समय वे यह भी कह दिया करते थे कि तुम 'चाची' होने के लायक़ नहीं हो।) वे (टॉल्सटॉय से) ग्यारह वर्ष बड़ी थीं। "अगर अलेग्ज़ैण्ड्रिया की उम्र दस वर्ष कम होती!" टॉल्सटॉय अपनी शादी के सम्बन्ध में विचार करते हुए कभी-कभी सोचा करते थे।

अलेग्ज़ैण्ड्रा, सम्राट् अलैग्ज़ैंडर द्वितीय की बहिन डचेज़ आफ ल्यूटेनबर्ग की सहेली के रूप में स्विट्ज़रलैण्ड में रहती थीं। इन्हीं डचेज़-महोदया के बच्चों की शिक्षा का भार उनकी बहिन एलिज़ाबेथ पर था। आगे चलकर अलैग्ज़ैण्ड्रा को भी ग्रैण्ड डचेज़ मेरी अलैग्ज़ैण्ड्रोवना की शिक्षा का प्रबन्ध अपने हाथ में लेना पड़ा मेरी। एलैग्ज़ैण्ड्रोवना आगे चलकर डचेज़ आफ़ एडिनबरा कहलाई।

टॉल्सटॉय अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिये, अलैग्ज़ैण्ड्रा टॉल्सटॉया के राजघराने के साथ रहने और उन-

लोगों से परिचय रखने की हँसी उड़ाने के लिये राजकीय परिवार को 'कोर्टसेट' (दरबारी अखाड़ा) और कभी-कभी 'चिमनी-सेट' तक कहा करते थे। इस डायरी में शब्द कई बार आये हैं।

स्विट्ज़रलैण्ड जाकर अलैग्ज़ैण्ड्रा से मिलने पर उन्होंने कहा—"मैं सीधे पेरिस से आ रहा हूँ। पेरिस नगर ने मुझे ऐसा व्याकुल कर दिया है, कि मैं अपनी सुध-बुध भूल गया हूँ। मैंने वहाँ क्या नहीं देखा ?.........पहला स्थान जो मैंने देखा, वह था—मेरे रहने का 'मैसन ग्रेनी', जिसमें छत्तीस परिवारों क रहने का प्रबन्ध था। इनमें से उन्तीस क्वार्टर ऐसे थे, जो कभी-कभी ख़ाली हो जाया करते थे। मैं उस भीड़ से घबड़ा गया। मैं अपनी भावनाओं की परीक्षा लेने के लिये मैंने एक दिन तलवार से सिर काटे जाने की सज़ा का दृश्य देखा। इस घटना के बाद मुझे नींद नहीं आयी, और मैं किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गया। सौभाग्य से मुझे ख़बर मिली, कि तुम जिनेवा में हो, और अब एकदम तुम्हारे पास आ गया—मुझे निश्चय था, कि तुम मुझे इस दुरवस्था से बचाओगी।"

काउण्ट से अलैग्ज़ैण्ड्रा ने उनके सम्बन्ध में कहा है—"वह (टॉल्सटॉय) बड़े-ही सीधे स्वभाव के और लज्जालु थे; साथ-ही ऐसे प्रसन्न-चित्त भी थे, कि उनकी उपस्थिति से लोगों में जान-सी आ जाती थी। वे अपने सम्बन्ध में शायद-ही कभी कोई बात करते थे; किन्तु प्रत्येक नव-परिचित व्यक्ति को गहरी और एकाग्रतापूर्ण दृष्टि से देखते थे। बाद में उस नव-परिचित व्यक्ति के सम्बन्ध में वे अपने विचार भी हम लोगों पर प्रकट कर देते थे, जो इस व्यक्ति के स्वभाव

के पूर्ण परिचायक होते थे। उनकी स्त्री ने बाद में उनका नाम 'पतला चमड़ा' ठीक ही रख दिया था, क्योंकि उनपर ज़रा-ज़रा सी बात को ऐसी गहरी छाया पड़ती थी, कि वह छोटी-सी बात उन्हें किसी के अनुकूल या प्रतिकूल बनाने के लिये पर्याप्त होती थी। वे लोगों के स्वभाव का अनुमान अपनी स्वाभाविक बुद्धि-शक्ति से लगाते थे, और उनका अनुमान प्रायः सत्य सिद्ध होता था।"

काउण्टेस टॉल्सटॉय स्वयं एक सभ्य, सुसंस्कृत, धार्मिक और बुद्धिमती महिला थीं। उनका संगीत विलक्षण था, उनके हृदय में उत्साह था, और उनकी दयालुता इसलिये विशेष रूप में प्रसिद्ध थी, कि वे लोगों को प्रसन्न करना जानती थीं। सम्राट् की उन पर बड़ी कृपा थी, और दरबार में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। उनके इस प्रभाव का उपयोग कई बार टॉल्सटॉय ने अपनी सरकारी नौकरी में किया था।

टॉल्सटॉय अलैग्ज़ैण्ड्रा के पास से शीघ्र ही जिनेवा झील के पूर्ववर्ती गाँव में चले गये, जहाँ रूजिऊ के 'नॉवेल हिलॉइस' का सुन्दर दृश्य था। उन्होंने काउण्टेस तथा अन्य रूसी परिचितों के साथ झील की सैर की, फिर एक मित्र के साथ सेवाय की पैदल यात्रा की, और २७ मई को साशा नामक लड़के के साथ एक सप्ताह की यात्रा पर निकले। रास्ते में मॉण्ट्री, ली एवान्त्स, कॉल-डि-जामन, चैट्यू-डि-ऑक्स, इन्टर्लेकन; ग्रिंडलवाल्ड, शीडेक, बीज़ और थन नामक स्थान भी देखे।

१३ जून को वे तूरिन के लिये रवाना हुए, जहाँ उनके लेखक मित्र ड्रूज़िनिन और बॉटकिन मौजूद थे। दस दिन बाद वे क्लैरेंस लौटे। रास्ते का एक भाग उन्होंने पैदल चल-

कर तै किया। जाते समय वे मॉण्ट सेनिस होकर गये थे, और वापसी में सेण्ट बर्नार्ड होकर आये।

१ जुलाई को वे लूसर्न के लिये एरडन और बर्न के रास्ते रवाना हुए, और ६ तारीख़ को लूसर्न पहुँच गये। ७ तारीख़ को उन्होंने स्वीज़रहॉफ़-नामक होटल के सामने रास्ते में गानेवाले का दृश्य देखा, जिसने उन्हें 'लूसर्न'-नामक कहानी लिखने के लिये कथानक प्रदान किया। पेरिस में नर-मुण्ड कटने का जो दृश्य उन्होंने देखा था, उसने उसकी कोमल आत्मा पर बड़ा ही स्थायी और गहरा प्रभाव डाला, और उनका सारा सामाजिक दृष्टि-कोण ही बदल गया।

इसके कुछ ही दिनों बाद (२३ जुलाई को) वे स्टटगार्ट पहुँचे, और उसके दूसरे दिन ही बातेन पहुँच गये, जहाँ उन्हें अनेक रूसी मित्र मिल गये। पॉलन्स्की-नामक रूसी कवि उक्त स्थान से लिखता है—"एल० एन० टॉल्सटॉय यहीं हैं।......हम दोनों में भ्रातृवत् प्रेम हो गया है। दुर्भाग्यवश उन्हें जुए से बड़ा ही प्रेम है। मैं उन्हें इस काम से रोकने में असमर्थ रहा। मैं डर गया, कि इस प्रकार जुआ खेलकर तो वे सब-कुछ गँवा बैठेंगे; क्योंकि उन्होंने बैंक से अपना सारा रुपया निकाल लिया था। किन्तु ईश्वर को धन्यवाद है, कि उसी दिन शाम को वे अपना सारा हारा हुआ रुपया जीत गये।......" दूसरे दिन उक्त कवि ने फिर लिखा—"काउण्ट एल० टॉल्सटॉय आज जुए में पूर्णतः हार गये। उन्होंने ३००० फ़्रांक लगा दिये थे, और अब उनके पास कौड़ी भी शेष नहीं रही है। उन्होंने बॉटकिन को लूसर्न के पते पर चिट्ठी लिखकर क़र्ज़ मँगाया है, और मैंने भी उन्हें २०० फ़्रांक दिये हैं।"

इसके कुछ सप्ताह बाद ४ अगस्त को फ्रैंकफ़ोर्ट से चलकर ड्रेसडन, बर्लिन और स्टेटिन होते हुए टॉल्सटॉय ११ अगस्त को पीटर्सबर्ग वापस आगये। फिर उन्होंने शीत-काल अपनी बहन और बड़े भाई निकोला के साथ मॉस्को में बिताया। बीच-बीच में कभी-कभी पीटर्सबर्ग भी आते-जाते रहे। उन दिनों वे बहुत-सी लड़कियों के साथ नाचे, और किसी के प्रेम-पाश में बँधने के लिये आतुर हो रहे थे। उन्होंने त्युशेवा राजकुमारी शेरबटोवा और ल्वोवा से प्रेम किया।

उन दिनों नवयुवक व्यायामों में जिम्नास्टिक को बहुत पसन्द करते थे, और सुसम्पन्न नवयुवकों में इसका ख़ूब प्रचार था। ऐसा भी समय आया, जब टॉल्सटॉय को यह अभिलाषा हुई, कि वे अपने शरीर को ऐसा सुदृढ़ बनायें कि संसार में कोई भी उनका मुक़ाबला न कर सके। उनका शरीर व्यायाम से ऐसा बन गया था, कि वे अच्छे पहलवान-से दीखते थे। उस समय का उनका सुदृढ़ शरीर अधिक अवस्था हो जाने और व्यायाम छोड़ देने तक भी काफ़ी सुन्दर और गठीला बना रहा।

उन्हें गान-विद्या और शिकार से भी बेहद प्रेम था। गायन-पार्टियों ने उन्हें ऐसा आकर्षित किया, कि उन्होंने एक स्थायी गायन-समाज स्थापित करने की व्यवस्था कर डाली, जिसके फल-स्वरूप मॉस्को की प्रसिद्ध संगीतशाला का प्रादुर्भाव हुआ।

रूसी भाषा में स्त्रियों के नाम के अन्त्याक्षर पुरुषों के नाम के अन्त्याक्षरों से साधारणतः भिन्न होते हैं। उदाहरणार्थ, श्रीमान् पॉपोव की स्त्री श्रीमती पॉपोवा कहलायेंगी। जब रूसी लोग विदेश जाते हैं, तो उन देशों के प्रचलन के

अनुसार वे भी स्त्री-पुरुषों के नाम में समानता ला देते हैं। और इस प्रकार श्रीमान् पॉपोव की स्त्री को श्रीमती पॉपोव कहने लगते हैं। रूसी-भाषा से अनुवाद करते समय दो में से एक ही ढंग अख़्तियार करना चाहिये, किन्तु इस डायरी में, जिसकी शैली संक्षिप्त और उक्त नियम के विपरीत है, श्रीमान्, श्रीमती अथवा कुमारी-आदि लिखना असुविधाजनक होता, इसलिये अन्त्याक्षर देखकर समझ लेना चाहिये, कि उक्त नाम पुरुष का है या स्त्री का।

इस पुस्तक की भूमिका लिखने में मैंने इसके फ्रेंच-संस्करण के अनुवादक श्री० ए० खिरिआकोव श्री० एस० मेलगोनोव और टी० पॉल्नोव की भूमिका से उनकी आज्ञानुसार सहायता ली है, जिसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ। किन्तु पुस्तक का सम्पूर्ण अनुवाद मैंने मूल रूसी भाषा से ही किया है।

ग्रेट बैडो, चेम्सफ़ोर्ड,
४ मार्च, सन् १९२७ ई०

—ऐल्मर मॉड।

टॉलसटॉय की डायरी
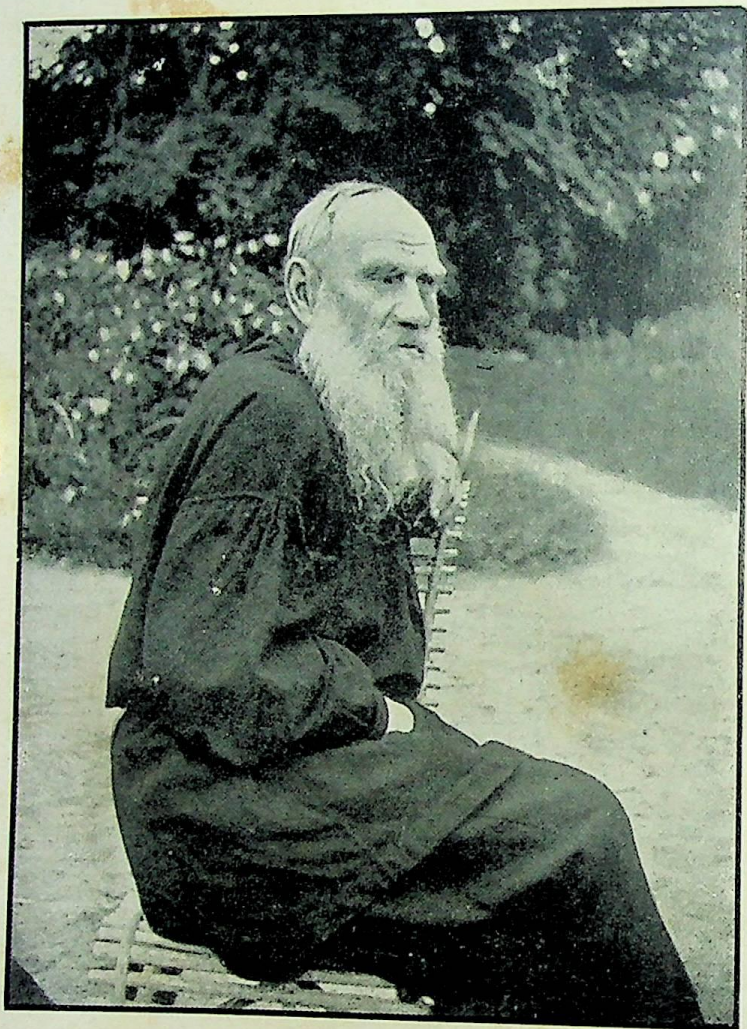
टॉलसटॉय

[१८५३]

१ जनवरी—सेना कीं टुकड़ी * के साथ आगे बढ़ा; स्वस्थ और प्रसन्न हूँ।

२-४ जनवरी—शरलेना में शराब पी, और ग्रॉज़्नी पहुँचा, जहाँ मेरा भाई शराब के नशे में मस्त पड़ा था ×। मैं प्रसन्न और स्वस्थ हूँ।

५ जनवरी—आज दिन-भर फिर कुछ नहीं किया, कुछ विचार भी नहीं किया। ग्रॉज़्नी में रहना कुछ अच्छा नहीं लगता, यहाँ सदा ऐसा-ही होता है। कुछ काम करने के लिये अधीर हो रहा हूँ।

६ जनवरी—कैसे मूर्ख हैं! इन लोगों का—ख़ासकर मेरे

---

* उस समय टॉल्सटॉय दूसरी आर्टिलरी ब्रिगेड की चौथी बैटरी में उम्मेदवार अफ़सर के ओहदे पर काम कर रहे थे। यह फ़ौज कॉकेशिया की पहाड़ी जातियों के मशहूर सरदार शॉमिल के विरुद्ध भेजी गयी थी।

× लियो टॉल्सटॉय का बड़ा भाई निकोला था, जिसका घरेलू नाम निकोलेंका भी था। निकोला बड़े अच्छे स्वभाव का और बुद्धिमान युवक था। बचपन में अपने भाई टॉल्सटॉय पर उसका अच्छा प्रभाव था।

भाई का—शराब पीना मुझे बहुत बुरा लगता है। युद्ध ऐसी अनुचित और बुरी चीज़ है कि जो-कोई इसमें भाग लेता है, वह अपनी आत्मा को मार देता है। क्या मैं ठीक मार्ग पर हूँ? मेरे ईश्वर, मुझे समझाओ, और यदि मैं ग़लती पर हूँ, तो मुझे क्षमा करो।

७ जनवरी—प्रातःकाल तबियत गड़बड़ रही; सायंकाल नोरिंग टोकरी में शराब की बोतलें लेकर आया। मुझे नशे ने धर दबाया। टेंजिस्क के अफ़सर न-मालूम कहाँ से कई वेश्याएँ साथ लाये। मैंने फिर शराब पी। यानोविच भी नशे में चूर था। वह मेरी उँगलियाँ तोड़ने की कोशिश करने लगा, और बोला—"मैं बेवक़ूफ़ी कर रहा हूँ।" दर्द और नशे के कारण मुझे क्रोध आ गया और मैंने उसे बेवक़ूफ़ और छिछोरा कह डाला। उसने आँखों में आँसू भरकर बच्चों की तरह मेरे साथ धृष्टतापूर्वक बातें कीं। मैंने कहा कि मैं और सैनिकों की तरह झगड़ा नहीं करना चाहता और मामले को इस तरह नहीं बढ़ाना चाहता।

८ जनवरी—आज सुबह मैंने उससे कहा कि मैंने (कल) शराब पी थी, और मैंने जो-कुछ कहा, उसके लिये माफ़ करना। इस पर उसने बेवक़ूफ़ी के साथ कहा—"मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ; अपराध तुम्हारा-ही था।" कल ज्यों-ही मैं अपनी प्रार्थना समाप्त कर चुकूँगा, त्यों-ही पहले मिलनेवाले व्यक्ति से क्षमा-याचना करूँगा, और यदि वह क्षमा न करेगा,

तो मैं उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारूँगा। पहले वह फ़ायर करेगा, और मैं हाथ न उठाऊँगा। मैंने नासमझी की। यानोविच अच्छा आदमी है, और इस तरह मैं उसे हानि पहुँचा सकता हूँ। निकोलेंका यहाँ से चला गया। उसके लिये यह दृश्य नागवार और उदासीनतापूर्ण था, क्योंकि उसे इस मामले को समाप्त करने का ढंग नहीं सूझता था। वह घमंडी है, फिर भी मैं उसे प्रेम करता हूँ, और उसे खिन्न देखकर मुझे दुःख होता है। गत दो दिन से मैं कई बार सेना से अलग हो जाने की बात सोच चुका हूँ; परन्तु भली भाँति विचार करके मैं इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ कि मैंने अपना जो कार्य-क्रम बनाया है, उसे बदलना नहीं चाहिए। वह (कार्य-क्रम) है, इस वर्ष के अन्तिम आक्रमण में भाग लेना, जिसमें, मुझे ऐसा मालूम होता है कि, या तो मैं काम आजाऊँगा, या घायल हो जाऊँगा। जो ईश्वर की इच्छा होगी, वही होगा। भगवान् ! मुझे भूल न जाना। मुझे समझाओ—शक्ति, दृढ़ता और बुद्धि दो।

९ जनवरी—मैंने अपने विचार को पूरा कर लिया। यानोविच ने तुरन्त माफ़ी माँग ली; किन्तु कोई भी नहीं जान सकता कि उससे इस विषय पर फिर बात करने में मुझे कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ा। उच्च अफ़सर मेरे ऊपर नाक-भौं चढ़ा रहे हैं, पर मैं इसकी बहुत कम पर्वाह करता हूँ। मैं कुछ लिखना चाहता था; किन्तु जीवन

का यह अशान्त रूप मुझे किसी बात पर टिकने नहीं देता।

१० जनवरी—घोड़े पर सवार होकर ईंधन लाने के लिये बाहर गया। मौसम बहुत ख़राब है, मुझे सर्दी लग गयी। सायंकाल मैं अच्छी तरह लिख न सका। सिर में दर्द हो गया। शरीर में स्फूर्ति लाने के लिये बहुत चिन्तित हूँ।

११ जनवरी—कुछ काम नहीं किया। मानुशकेविच के साथ गप-शप करता रहा, और उससे यह भी कह दिया कि अगर तरक्क़ी होती है, तो मेरा विचार तरक्क़ी का अधिकार उस (मानुशकेविच) के लिये छोड़ देने का है। अब कुछ-न-कुछ अवश्य लिखूँगा। तबियत ऊब रही है।

१२ जनवरी—धीरे-धीरे अफ़सर लोगों का क्रोध शान्त होता दीखता है। प्रिफ़रेंस* में छः रूबल बर्बाद हुए, बैंक* में खेलना चाहता था। पास कौड़ी नहीं रह गयी है। मैंने एक चित्र बनाने के लिये ख़ाका तैयार किया है, जिसका नाम होगा—नृत्य और........। मेरे गले में दर्द है; पर फिर भी तबियत ख़ुश है।

१३-१६ जनवरी—गले में दर्द रहा; किन्तु १४ जनवरी को मैंने अरीनेस्की के साथ शराब पी। न तो प्रसन्न हूँ, न सुस्त। आज थोड़े पैसे लगाकर खेला, पर खेल का ज़ोर बढ़ता-ही जा रहा है। जीवन बिल्कुल जड़वत् हो रहा है।

---

* भिन्न प्रकार के जुए।

मानुशकेविच ने मुझे मेरा भविष्य-फल बताया। यह बिल्कुल स्पष्ट था कि मेरे जीवन में शीघ्र-ही परिवर्तन होनेवाला है; वास्तव में मैं चाहता भी यही हूँ। असल बात यह है कि जीवन सत्याचरणपूर्वक व्यतीत करने में ही मुझे प्रसन्नता है।

१७ जनवरी—सुबह कुछ दूर तक टहला। ब्यूस्की को अब मैं बिल्कुल नहीं चाहता। वह यहीं है। कुनक❀ (मित्र) लोग मुझे बहुत खिन्न कर रहे हैं। बाल्टा× को भगा रहा हूँ। थोड़ा लिख सका हूँ। यह अद्भुत बात है कि जिस विषय पर मैं लिखना चाहता हूँ, उसी में पिछड़ जाता हूँ।

❀ अपनी मौसी को एक पत्र लिखते हुए टॉल्सटॉय ने लिखा है—'मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ कि कुनक बनने पर प्रेमोपहार देने पड़ते हैं, और मित्र के घर भोजन करना पड़ता है। इसके बाद पुरानी प्रथा के अनुसार (जिसका कि लोप हो चला है) एक-दूसरे का जीवन-मरण पर्यन्त मित्र बन जाता है। इसका अर्थ यह है कि यदि मैं अपने मित्र से उसका कुल धन, उसकी स्त्री, उसके हथियार या जो-कोई भी बहुमूल्य वस्तु उसके पास हो, माँगू, यह मुझे दे दे, और वह जो-कुछ माँगे वह मुझे भी देना पड़े।'—The life of Tolstoy Vol. 1. Chapter 3.

×बाल्टा एक पहाड़ी योद्धा था, जो रूसी फ़ौज में दुभाषिए के रूप में भर्ती हुआ था। यह बड़ा साहसी सवार था, और घोड़े चुराया करता था। उसे इस बात की चिन्ता नहीं थी, कि वह शत्रु-पक्ष का अनिष्ट कर रहा है, या मित्र-पक्ष का।

बिल्कुल ऐसा ही होता है। 'प्रिफ़रेंस' में खेला। ताश खेलने को तबियत बहुत ललचायी।

१८-२० जनवरी—मेरा जीवन बिल्कुल अनियमित है, इसलिये मैं अपने-आपको पहचानने में असमर्थ हूँ और इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने से लज्जित हूँ। ताश खेले, ४० रूबल हार गया, फिर खेलूँगा। ओगलिन को बहुत चाहने लगा हूँ।

२१ जनवरी—कुछ लिखा, पर बहुत ही स्वल्प, बे-मन से और व्यर्थ—जिसका कोई नतीजा नहीं। इस अव्यवस्थित और उद्देश्य-हीन जीवन और अवाञ्छनीय लोगों की संगति से मेरी मानसिक शक्ति कुण्ठित हो गयी है, क्योंकि ऐसे लोग कोई भी गम्भीर या उच्च विचार नहीं समझ सकते। पास कौड़ी नहीं रही है। यह अवस्था मुझे और भी कुविचारों का पात्र बना रही है। इससे मेरी कुकर्म-प्रवृत्ति का प्रमाण मिल जाता है। अब ताश खेलने की इच्छा नहीं होती। न-मालूम ईश्वर मुझे कहाँ तक मदद देगा ! कॉकेशस की बहु-प्रशंसित उत्तमता मेरे किस काम आयेगी, जबकि मैं ऐसा (निकृष्ट) जीघन व्यतीत कर रहा हूँ ? तुला वापस जाकर मैं फिर अनिच्छापूर्वक कुलीकोस्किस, गंस और लुतिकोस के झुण्ड में जा मिलूँगा। नहीं, कदापि नहीं।

२२-२३ जनवरी—कल दिन अच्छी तरह कटा; तो भी

बाल्टा के साथ ज़रूर जाने से बाज़ न आया। ओगलिन ताश खेलने में हार गया, मैं अब उससे लज्जा का अनुभव करता हूँ। स्टीगिलमैन जा रहा है, और उसकी जगह अफ़-सरी मुझे सौंपी गयी है। सचमुच, मैं हूँ बिल्कुल व्यर्थ आदमी।

२४ जनवरी-१० फ़रवरी—जीवन बड़ा-ही अव्यवस्थित हो रहा है। यों कोई ऐसी बात नहीं हुई है कि जिससे मैं अपने-आपको धिक्कारूँ। यद्यपि अभी तक ख़तरे की कोई बात सामने नहीं आयी है, तो भी मुझे ऐसा मालूम होता है कि गत वर्ष की अपेक्षा और भी भयानक ख़तरा आनेवाला है। भाई से कुछ रक़म (२०० रूबल) मिली है, जिसमें से ८० रूबल तो क़र्ज़ के थे, और ९४ रूबल अन्य। किन्तु मैं खुद ऋण-ग्रस्त हूँ। जो कुछ मेरे पास था, उससे अधिक ख़र्च हो गया। मेरी बन्दूक़ बाल्टा ने उड़ा ली। मेरा भाई बहुत (शराब) पी रहा है—इससे मेरी परेशानी बढ़ती जा रही है। कल से (ताश) खेलना बन्द कर दूँगा, और युद्ध समाप्त होते-ही नौकरी छोड़ दूँगा।

२० फ़रवरी—हम लोग ग्रॉज़्नी से कुरिंस्की तक बिना किसी विशेष घटना के पहुँच गये। दो सप्ताह तक वहीं ठहरे रहे। इसके पश्चात् कोचकोलीकोव की पहाड़ी पर डेरे डाले गये। १६ फ़रवरी की रात और १७ फ़रवरी के दिन तोपों की बाढ़ें दगीं। मैंने काफ़ी बहादुरी दिखायी।

ताश खेलने में अब मैं बार-बार जीत रहा हूँ, पर अब मेरे पास एक पाई भी नहीं बची है, यद्यपि मुझे जरूरत बहुत अधिक है। आज ओगलिन ने कहा कि मुझे क्रॉस✽ मिलेगा। ईश्वर ऐसा ही करे; किन्तु मैं इसे तुला के लिये चाहता हूँ।×

१० मार्च—मुझे क्रॉस नहीं दिया गया, + और मैं क़ैद हो गया। ऑलिफ़र को धन्यवाद। कॉकेशस में नौकरी करके मुझे कठिनाइयों, सुस्ती और कुसंगति के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला। जहाँ तक हो सके, शीघ्र-ही मैं इस (नौकरी) को छोड़ दूँगा। मैं अपने पास की सारी रक़म खो चुका।

✽आदरसूचक सैनिक-पदक।

× मतलब यह कि अपने घर जाकर लोगों को दिखाना चाहते थे, कि उन्होंने कैसी सैनिक प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

+ टॉल्सटॉय सेंट-जार्ज का क्रॉस (पदक) पाने के लिये बहुत उत्सुक थे, पर हर बार जब उन्हें मिलने का मौक़ा आता था तो कोई-न-कोई बाधा आ खड़ी होती थी। एक बार तो सरकारी क़ाग़ज़ात घर से न लाने के कारण वे इससे वंचित रहे, दूसरी बार इन्होंने खुद लेने से इन्कार करके पदक एक बुड्ढे सैनिक को दिलवा दिया, और अब तीसरी बार जब इनकी सेना के कमाण्डर (प्रधान संचालक) ने इन्हें तलब किया, तो ये अपनी ड्यूटी पर हाज़िर न रहकर शतरंज खेलते हुए पाए गये, जिससे क्रॉस देने की जगह उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया।

अब भी मुझे ओगलिन को ८० रूबल, यानोविच को छः रूबल, सोकोनिन को ५० रूबल और कांसटेंटिनोव को ७८ रूबल देना है। इस तरह कुल दोसौ चौदह रूबल का क़र्ज़ मुझ पर है, और २३० रूबल मैं और ख़र्च कर चुका हूँ। यह बहुत बुरा हुआ। मुझे खेद है कि मैंने इस काम में भाग लेने से पहले-ही इन्कार क्यों नहीं कर दिया। अभी तीन सप्ताह यहाँ और रहना है। सुस्ती और निष्क्रियता के अतिरिक्त कुछ ऐसे लोगों से परिचय भी हो गया है, जिनके कारण यहाँ से निकलना मुश्किल हो रहा है।

१६ अप्रैल—बहुत दिनों से मैंने कुछ नहीं लिखा। अप्रैल के आरम्भ में स्टारोग्लादो पहुँचकर मैं उस जुआरी का-सा जीवन व्यतीत करने लगा, जो अपने क़र्ज़ का हिसाब जोड़ते हुए डरता है। सुलीमोस्की के साथ खेलने पर मैं १००) रूबल हार गया। शरलेना जाकर, स्वास्थ्य ख़राब होने का सर्टीफ़िकेट (प्रमाण-पत्र) प्राप्त करने की व्यर्थ चेष्टा की। मैं सेना की नौकरी तत्काल छोड़ना चाहता था; पर इस झूठी शर्म के मारे ऐसा नहीं कर सकता था, कि मैं उम्मेदवारी की ही अवस्था में घर जाकर क्या मुँह दिखाऊँगा। मैं कमीशन की प्रतीक्षा करूँगा, जो मुझे मुश्किल से मिलेगा। मैं सभी तरह की असफलताओं का अभ्यस्त हूँ। यदि मैं मङ्गलवार को कोई ख़राब काम करने से बच गया, तो यह ईश्वर की दया थी। मैं फिर अपने पुराने एकान्तवास, शान्ति,

सुव्यवस्था एवं सुन्दर और सुखद भावनाओं की ओर लौटना चाहता हूँ।

भगवन्, मेरी सहायता करो! पहले-पहल ऐसी दुःखद भावनाओं का अनुभव कर रहा हूँ। बिना आनन्दोल्लास के ही युवावस्था व्यतीत करने का मुझे बड़ा खेद है। मुझे मालूम होता है कि मेरी जवानी बीत चुकी। अब वह समय आगया है, जब उस (यौवनावस्था) से बिदा ली जाती है।

१७ अप्रैल—बहुत तड़के उठा और कुछ लिखना चाहता था, परन्तु सुस्ती छाई हुई थी। जो कहानी मैं लिख रहा हूँ, वह आकर्षक भी नहीं है। इस (कहानी) में एक पात्र भी ऐसा नहीं है, जिसे मैं प्रेम करता होऊँ। तो भी इसमें विचार के लिये काफ़ी मसाला है। बाल्यावस्था (Childhood) नामक पुस्तक दोबारा पढ़ी। सुलीमोस्की आया। वह रुखाई से पेश आया, पर मैंने अत्यन्त नम्रतापूर्ण व्यवहार किया। मैंने भोजन के बाद खेल खेला, भविष्य-फल सुनाया और फिर कुछ पढ़ने में लग गया। सेरेज़ा ❀ और ब्रिमर को पत्र लिखे। मेरे

❀ सेरेज़ा का पूरा नाम सर्जी निकोला टॉल्सटॉय था। यह लियो टॉल्सटॉय के चार भाइयों में से दूसरा था। सब से बड़े भाई का नाम था;—निकोला, और सब से छोटे का लियो। अपने दूसरे भाई सेरेज़ा को बचपन में टॉल्सटॉय एक आदर्श पुरुष मानते थे।

ख़राब अक्षर बड़ी दिक़्क़त के कारण बन गये हैं। मैं सीधी पंक्ति में निम्न-लिखित पता भी नहीं लिख सकता था:—

"सेवा में—

हिज़ एक्सीलेंसी एडवर्ड व्लाडी मिरोविच,

तिफ़लिस।"

१८ अप्रैल—तड़के उठा। अवदीव*-कृत 'उड़ता साँप' (Flying snake) का कुछ अंश पढ़ने के बाद लिखना आरम्भ किया, और काफ़ी परिमाण में लिख डाला। अब मेरी कहानी का कथानक स्पष्टतर होता जा रहा है। मैं सुन्दरतापूर्वक इसका रूखा पहलू बचा सकूँ, तो यह कहानी × अच्छी रहेगी। काम करने अभ्यस्त न होने

---

* एक साधारण लेखक।

× यहाँ उस कहानी का ज़िक्र है, जिसे टॉल्सटॉय ने युद्ध के समय में (How love perishes or Christmas Eve) नाम से लिखना शुरू किया था। यह कहानी समाप्त नहीं हो सकी थी, और टॉल्सटॉय की मृत्यु के समय अन्य काग़ज़ों के साथ इसकी अधूरी पाण्डु-लिपि उनके पास से निकली थी। यह टॉल्सटॉय की उन अनेक अधूरी कहानियों में से थी, जिन्हें वे प्रकाशित नहीं कराना चाहते थे। वे स्वयं कहा करते थे कि ईश्वर परिशोधन-द्वारा प्राप्त होता है। उनका विचार था कि उच्च-कोटि के लेखकों का यह भी काम है कि वे इस बात के जानने की चेष्टा करें कि वे अपनी कृति में से कौन-कौन-सा अंश अप्रकाशित रहने देना चाहते हैं।

के कारण मैंने अपना बहुत समय व्यर्थ में गँवा दिया। अभी रुपये-पैसे के सम्बन्ध में भाई से कुछ बातचीत हुई थी। यह (प्रसङ्ग) मुझे बहुत बुरा लगता है। शाम को खाना खाने के बाद मैं इपिश्का❊ से मिलने गया और सोलोमोनीदा+ से बात-चीत की।.........किसी स्त्री को देखकर मुझे उसमें अधिक सौन्दर्य मालूम होता है।

१९ अप्रैल—(ईस्टर का दिन) गिरजाघर नहीं गया। सुबह का खाना खाया। कुलिच÷ बहुत अच्छी रही। लड़कों और अफ़सरों के साथ खेल खेलता रहा।......आज शराब नहीं पी, न मेरे भाई ने ही पी। मुझे इस बात से

❊ एक बुड्ढा क़ज़्ज़ाक़, जिसका वर्णन् टॉल्सटॉय की (The Cossacks) नामक कहानी में आया है, और जिसका हिन्दी-अनुवाद 'देहाती सुन्दरी' के नाम से 'मण्डल' प्रकाशित कर चुका है। इस कहानी में यह नाम बदलकर इरोश्का रख दिया गया है। इपिश्का ने अपने पुराने ढँग के भोले स्वभाव के कारण टॉल्सटॉय पर बड़ा प्रभाव डाला था। टॉल्सटॉय ने उससे बहुत-से पुराने गाने, कहावतें और दन्त-कथाएँ सुनी थीं। इपिश्का ने ने टॉल्सटॉय को अपने वन्य-जीवन के अनेक अनुभवों और कॉकेशस के रीति-रिवाज और दृश्यों से सुपरिचित कराया था।

+ सोलोमोनीदा का नाम The Cossacks में मर्यंका आया है। यह वह सुन्दरी कॉसेक्स लड़की थी, जिसके साथ ओलेनिन को प्रेम हो गया था।

÷ ईस्टर के दिन की ख़ास तरह की रोटी।

बड़ी प्रसन्नता हुई। एलेक्सीव* ने सौम्य स्वभाव का परिचय दिया।

२१-२५ अप्रैल—पहले की तरह ये दिन भी गुज़र गये—'बार' का खेल खेला, लड़कियों के सौन्दर्य की प्रशंसा की, और ज़ुकेविच के घर एक बार शराब भी पी। मैंने 'क्रिसमस इव' नामक कहानी का कच्चा मस्विदा तैयार कर लिया है; और अब इसमें संशोधन करूँगा। आज का दिन खिन्नता में बीता। किज़ल्या के पास से कुछ (सन्देश) नहीं आया, क्योंकि (उसके) घोड़े चुरा लिये गये हैं। मेरी वर्तमान अभिलाषाएँ इस प्रकार हैं—एक सैनिक के रूप में सेंट-जॉर्ज का कॉस प्राप्त करना, कमीशन के लिये योग्यता प्राप्त करना, और यह कि मेरी दोनों कहानियाँ सफलतापूर्वक समाप्त हों।

दो दिन पूर्व निकोलेंका ने मेरे साथ ख़ूब (शराब) पी थी, और दो घंटे तक ख़ूब गपशप करता रहा। बड़ा आनन्द रहा। काम करने में अब मेरा जी नहीं लगता।

२६ अप्रैल—एक बार, खेलने के अतिरिक्त लगभग सारा दिन लिखने में व्यतीत किया, किन्तु लिख कुछ विशेष नहीं सका; जो-कुछ लिखा भी, वह अच्छा नहीं हुआ......ये छुट्टियों के अन्तिम दिन हैं।

२७ अप्रैल—प्रातः-काल जल्दी उठा। थोड़ा लिख सका—

* टॉल्सटॉय की फ़ौज का सेनापति।

वह भी अच्छा नहीं हुआ। खाने के बाद सोने का उपक्रम करने लगा। खाने के बाद दोस्तों ने लिखने न दिया। शाम को कुछ लिखा। कहानी अच्छी नहीं होती दीखती।

२८ अप्रैल—तड़के उठा, पर कुछ लिख नहीं सका। तमाम दिन तबियत ख़राब रही। दोस्तों ने साथ खेलने के लिये बहुत परेशान किया। जिस मासिक-पत्रिका में मेरी कहानी प्रकाशित हुई है, वह आ गयी है, पर कहानी को संक्षिप्त करके नाश कर दिया गया है।❀ इससे मुझे बड़ा क्रोध आया। मेरा भाई ज़ुकविच और मानुशकेविच–दोनों—जा रहे हैं। मुझे छुट्टी मिल गयी है; किन्तु मैं इस (छुट्टी) का उपयोग नहीं करना चाहता।

२९ अप्रैल—बहुत थोड़ा लिखा, किन्तु तबियत बिल्कुल ठीक है। मुझमें काम करने की आदत कम है। निकोलेंका कल जा रहा है; (वह) बहुत प्रसन्न है।

३० अप्रैल—शिकार के लिये गया; पर सफलता नहीं

❀ यहाँ उन्होंने अपनी The Raid नामक कहानी का ज़िक्र किया है, जिसे काट-छाँटकर बहुत संक्षिप्त कर दिया गया था। अपने भाई सर्नियस को टॉल्सटॉय ने एक पत्र में इस प्रकार लिखा था—Chaildhood नष्ट कर दी गयी और The Raid की तो हत्या भी कर डाली गयी। उसमें जितना भी अच्छा अंश था, वह या तो निकाल दिया गया, या तोड़-मरोड़कर निर्जीव बना दिया गया।

मिली। कुछ लिखा नहीं। सुलीमोस्की ने मेरे सामने ही ओक्साना से कह दिया कि मैं उसे (ओक्साना को) प्रेम करता हूँ। मैं बिल्कुल घबरा गया। मुझे पहले अपना क़र्ज़ चुकाने की फ़िक्र करनी चाहिये। क……को लिखना है। कल लिखूँगा। मैं इस बात से बहुत चिन्तित हूँ कि व्यूस्की को को 'दी रेड' (कहानी) में अपना व्यक्तित्व साफ़ नज़र आ रहा है।

१ मई—सुबह शीघ्र उठकर कुछ लिखा। जो कुछ लिखना शुरू किया है, केवल उसी को समाप्त करना है। दिन सुस्ती में ही बीता। ग्रोमैन मूर्ख है। खाने के बाद सोया, फिर शाम को कुछ लिखा।………

२-३ मई—कुछ नहीं लिखा; कोई विशेष बात नहीं हुई। कुछ खेलने के बाद स्नान किया। शराब पीकर कुछ-कुछ नशे का अनुभव करने लगा। शिकार के लिये गया।

४-७ मई—कोई विशेष घटना नहीं हुई। कहानी के पुरस्कार-स्वरूप ४० रूबल मनीऑर्डर-द्वारा प्राप्त हुए। आज बहुत लिख डाला। बहुत-सा अंश परिवर्तित और संक्षिप्त करके कहानी को अन्तिम रूप दिया। मुझे अब कोई स्त्री प्राप्त करने की आवश्यकता है। इन्द्रिय-लिप्सा के कारण मुझे क्षण-भर भी मानसिक शान्ति नहीं मिल रही है।

८-१५ मई—सात दिन तक कोई काम नहीं किया। मित्रों के यहाँ गया और ख़ूब शराब पी, यद्यपि मेरी इच्छा

यह थी कि अब पीना बन्द कर दूँ। मेरा भाई आज चला गया।

निकोलेंका, सेरेज़ा और माशा के पास से पत्र आये हैं। सब मेरी लेखन-कला-सम्बन्धी प्रशंसा और चापलूसी से पूर्ण हैं। कहानी (क्रिसमस इव) अब पूर्णतः सोच ली गयी है। अब मैं अपने-आप पर क़ाबू रखकर सुव्यवस्थित जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ—पढ़ना, लिखना, स्थिरता और आत्म-निग्रह। न तो मुझे लड़कियाँ मिलीं, न क्रॉस-ही मिलेगा। इनके कारण मैंने अपने जीवन का अत्यन्त बहुमूल्य समय व्यर्थ खो दिया। बड़ी मूर्खता है। भगवन् ! मुझे आनन्द प्रदान करो।

१५-२२ मई—……बड़ी बुरी अवस्था है। मैंने अपने-आपको बहुत बिगाड़ दिया। कहानी लिखना बन्द करके Childhood (शैशवावस्था) उसी उत्साह के साथ लिख रहा हूँ, जिस लगन के साथ Boyhood (बाल्यावस्था) लिखा था। मैं समझता हूँ, यह पुस्तक भी वैसी-ही (अच्छी) होगी। मेरा ऋण कुल चुकता हो गया। एक सुन्दर साहित्यिक जीवन का शुभ अवसर मेरे लिये तैयार है। मुझे कमीशन प्राप्त करना चाहिये। मैं एक चतुर नवयुवक हूँ। मुझे और क्या चाहिए ? मैं कार्य-पटुता और आत्म-निग्रह से काम लूँगा, और अधिकाधिक आनन्द प्राप्त करूँगा।

२२-२७ मई—कोई विशेष बात नहीं हुई। थोड़ा लिखा,

किन्तु 'बाल्यावस्था' और Youth (युवावस्था) का ख़ाका तैयार कर लिया, जिन्हें मैं समाप्त करने की आशा रखता हूँ। आज अलेक्सीव ने मुझे एक काग़ज़ भेजा है, जिसमें मुझे सिविल कमीशन का काम सौंपने का वादा किया है। जब मैं अपनी नौकरी पर विचार करता हूँ, तो मैं इच्छा होने पर भी अपने-आपको क़ाबू में रखने में असमर्थ हो जाता हूँ। अभी कोई निश्चय नहीं कर पाया हूँ, यद्यपि अपने वर्तमान जीवन के दृष्टि-कोण से—जिसका आरम्भ प्याटीग़ार्स्क में ही हो चुका था—मुझे अब हिचकिचाना नहीं चाहिए। इसपर ध्यानपूर्वक विचार करूँगा। अभी तक मैं अपने-आपको नियमितता और स्थिरता के अन्दर नहीं ला सका हूँ, यद्यपि इसके लिये प्रयत्न कर रहा हूँ।

मैंने बड़ी भूल की—कल २८ तारीख़ थी, आज २९ है। कुछ लिखकर उसपर विचार किया। अब मेरी कृति मेरी भावना के अनुकूल होती जा रही है।

रेगूलेशन की ५६-वीं धारा पढ़कर मैंने यह निश्चय किया है कि फ़ौज को नौकरी छोड़ दूँ। अलेक्सीव से मैंने कह भी दिया है कि वह इसके लिये समुचित प्रबन्ध करे।......

३० मई—बड़ी सफलता के साथ और काफ़ी लिख गया। मै (अपने) क़र्ज़ के शेष अंश की चिन्ता से व्यग्र-सा हुआ। क़र्ज़ चुका देने के लिये मुझे किफ़ायत से काम लेना चाहिए। इससे मुझे मानसिक शान्ति मिलेगी।

३१ मई—दिन-भर कुछ नहीं लिखा। कार्ल आइवनिच की कहानी कठिन सिद्ध हो रही है।❀ लड़कों के साथ खेला। वे (लड़के) बड़े गुस्ताख़ होते जा रहे हैं; मैंने उन्हें ख़राब कर दिया। बर्यातिंस्की के यहाँ चाय पी, और उस ख़राब अवस्था में भी सद्व्यवहार बर्ता।

२५ जून—लगभग एक महीने से कुछ नहीं लिखा। इन दिनों अपने दोस्तों के साथ वोज़्दविजेंस्क गया। ताश खेले, और सुलतान (घोड़ा) को हार गया। मैं लगभग क़ैदी बन चुका था;× किन्तु इस अवसर पर (मैंने) काफ़ी वीरता

❀ 'बाल्यावस्था' नामक पुस्तक में एक अध्याय है, जिसमें कार्ल आइवनिच मेयर के नाम से टॉल्सटॉय ने अपने पहले शिक्षक फ़ेडर आइवनिच रॉसेल का चित्रण किया है।

× १० जून को सेना की एक टुकड़ी के साथ वे (टॉल्सटॉय) ग्रॉज़्नी की ओर बढ़े थे। टॉल्सटॉय तीन युवक अफ़सर—तातार सादो-आदि के साथ टुकड़ी से अलग होकर, शीघ्र घोड़े दौड़ाकर आगे पहुँचना चाहते थे। यह सैनिक-नियम के प्रतिकूल था;क्योंकि इससे पाश्ववर्ती जंगलों में छिपे हुए चेचन लोग इक्के-दुक्के यात्रियों की टोह में रहा करते थे, और उन्हें पकड़कर तब तक बाँध रखते थे, जब तक कि क़ैदी पत्र लिखकर कहीं से रुपये मँगवाकर, उन्हें दे नहीं देता था। क़िले से तीन मील के फ़ासले पर इन युवक सवारों को चेचनों का एक गिरोह मिला। बैरेन रोज़ेन, शेरबाचेव और पोलटॉरैट्स्की तो मुड़कर सेना की ओर चले, परन्तु टॉल्सटॉय और उनके मित्र सादो ग्रॉज़्नी की ओर घोड़े

से काम लिया, यद्यपि मुझमें भावुकता का तूफ़ान-सा आ रहा था। वापस आने पर, एक मास यहाँ और ठहरकर, 'बाल्यावस्था' समाप्त करने का विचार किया; किन्तु तमाम सप्ताह ऐसी दुर्व्यवस्था के साथ व्यतीत हुआ कि शोक और क्षोभ से मेरा हृदय दब गया। ऐसे अवसरों पर जब कोई आत्म-ग्लानि और असन्तोष का शिकार बनता है, तो ऐसा-ही होता है। कल ग्रिश्का कह रहा था कि जब चेचनों ने मुझे लगभग क़ैद कर लिया, तो मैं भयातुर हो उठा था, और एक क़ज़्ज़ाक़ की सूरत देखकर काँप गया कि कहीं वह मुझे मार न दे। इन सब बातों से मुझे बड़ी घबराहट हुई

बढ़ाते ही चले गये। कुछ (चेचन) लड़ाकुओं ने तो पीछे मुड़े हुए तीनों अफ़सरों का पीछा किया, पर उनमें से सात सरदारों ने टॉल्सटॉय और सादो पर धावा बोल दिया। टॉल्सटॉय का घोड़ा बहुत अच्छा था, और वह उन्हें बचाकर निकल जाता, परन्तु वे सादो को अकेला नहीं छोड़ना चाहते थे। उन्होंने घोड़े को भागने से रोक लिया और अपने साथी के साथ क़ैद हो जाने को तैयार हो गये। सौभाग्यवश सादो के पास एक बन्दूक़ थी। वह यद्यपि भरी हुई नहीं थी, पर जब सादो ने आक्रमणकारियों को धमकाकर बन्दूक़ उनकी ओर तानी, तो वे रुक गये। चूँकि ये ग्रॉज़्नी (क़िले) के समीप पहुँच गये थे, अतः क़िले के सन्तरियों ने उन्हें देखकर शोर-ग़ुल मचाना आरम्भ कर दिया। क़ज़्ज़ाक़ लोग क़िले के बाहर आगये और उन्हें देखते-ही चेचन लोच वहाँ से भाग खड़े हुए।

और मैंने एक ऐसा अद्‌भुत स्वप्न देखा, जिसके कारण मन पर कुछ बोझ-सा लद गया। बहुत विलम्ब से सोकर उठा, और ओबरी ने अपने दुर्भाग्य को किस प्रकार सहन किया, इसकी गाथा पढ़ी। फिर इस बात पर विचार किया कि शेक्स-पियर ने यह क्यों कहा है कि विपत्तियों से ही किसी आदमी की परख होती है। मेरी समझ में यह बात नहीं आती थी कि मैंने इतनी घबराहट का अनुभव क्यों किया। यदि मैं उस परिस्थिति की प्रतीक्षा करूँ, जब यशस्वी और सुखी बनने का सुअवसर आयेगा, तो मुझे सदा प्रतीक्षा करते ही रह जाना पड़ेगा। मुझे अब इस (बात) का निश्चय हो गया है। लड़कियों ने मुझे बहुत बहका दिया। जहाँ तक हो सकेगा, मैं परिश्रमी और उपयोगितावादी बनने का प्रयत्न करूँगा, ओछेपन और बुराई का काम न करूँगा। मैं इस सुविचार के लिये ईश्वर को धन्यवाद देता और उसकी वन्दना करता हूँ—"हे जगन्नियन्ता! मेरी सहायता कर।" मैंने इन दिनों बड़े पाप किये हैं......व्यर्थ में धन फूँका है, और अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ खो दिया है। मैंने थोथा गर्व किया, झगड़े किये, और क्रोध के वशीभूत हो गया।

२५ जून—आज सेरेज़ा के पास से एक पत्र आया, जिसमें उसने लिखा है कि प्रिंसेज़ गोर्शाका ❀ मेरे सम्बन्ध

❀ टॉल्स्टॉय की दादी पेलागिया निकोलावना टॉल्सटॉया प्रिंसेज़ गोर्शाका कहलाती थी।

में वोरोन्तसोव❀ को लिखना चाहती हैं, और उन्होंने मेरे इस्तीफ़े-सम्बन्धी क़ाग़ज़ात देख लिये हैं। मैं नहीं जानता, यह मामला किस प्रकार समाप्त होगा, किन्तु मैं इन्हीं दिनों प्याटीगार्स्क जाना चाहता हूँ। मैं किसी काम को लगातार और हठपूर्वक नहीं कर रहा हूँ। इसके परिणाम-स्वरूप अब मैं अपनी ओर ध्यान देने लगा हूँ, और धीरे-धीरे मुझे अपने प्रति असह्य घृणा होती जा रही है।

यदि मैं अब तक उस अभिलाषा को क़ायम रख सकता, जिसे लेकर मैं यहाँ आया था, तो मैं अपनी नौकरी अच्छी तरह निभा सकता, और मुझे अपने ऊपर सन्तोष भी होता। यदि मैं अब तक उस विचार को क़ायम रख सकता, जो तिफ़लिस में उत्पन्न हुआ था, तो आज मुझे असफलता का सामना न करना पड़ता, और अवश्य ही परितुष्टि का अनुभव करता। छोटी-बड़ी सभी बातों में इस त्रुटि के कारण मेरे आनन्द का सर्वनाश हो रहा है। यदि मैं स्त्री प्राप्त करने के लिए अपनी अभिलाषा क़ायम रख सकता, तो मुझे अब तक सफलता और ज्ञान प्राप्त हो गये होते। यदि मैं शुद्ध विचार जारी रख सकता तो आज मुझे गर्वपूर्ण शान्ति प्राप्त हो

❀ कॉकेशस प्रान्त का वाइसराय, प्रिंस माइकेल सेमेनोविच वोरोन्तसोव—(१७८२-१८५६ ई०) जिन्होंने प्रिंस बर्यातिन्स्की के साथ प्रधान सेनापति की हैसियत से कॉकेशस को क़ाबू में किया था।

गई होती। फ़ौज की इस अभागी टुकड़ी ने मुझे उस सन्मार्ग से विचलित कर दिया, जिस पर चलकर मैं सुखी था, और जिस पर मैं प्रत्येक दशा में इसलिए क़ायम रहना चाहता हूँ, कि वह सर्व-श्रेष्ठ मार्ग है। हे भगवन्, मुझे ज्ञान दो, और सन्मार्ग पर चलाओ। मैं कुछ नहीं लिख सकता मैं बड़ी अन्यमनस्कता के साथ और बड़े भद्दे रूप में लिख रहा हूँ। किन्तु लिखने के अतिरिक्त मेरे पास और काम ही क्या है? मैं अभी अपनी अवस्था पर विचार कर रहा था। मेरे मस्तिष्क में इतने प्रकार के विचार चक्कर लगा रहे हैं, कि मैं कुछ समझ नहीं सकता, केवल यही जानता हूँ कि मेरी अवस्था बहुत ख़राब है और मैं बहुत दुखी हूँ। इस दुःख-पूर्ण विचार के पश्चात् मेरे मन में निम्न-लिखित विचार उठ रहे हैं:—

मेरे जीवन का उद्देश्य इस प्रकार है—मुझे अपने स्वदेश-वासियों और ग़ुलामों के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा करना है। स्वदेशवासियों की सेवा तो इसलिये, कि मैं उनका देशबन्धु हूँ, और ग़ुलामों की इसलिये कि मेरे अन्दर बुद्धि और चातुर्य्य है। इनमें से दूसरे कर्त्तव्य का पालन मैं इस समय कर सकता हूँ, किन्तु पहले कर्त्तव्य का पालन करने के लिए मुझे सब साधन जुटाने पड़ेंगे।

पहले मेरा विचार यह था कि अपने लिए जीवन-क्रम तैयार करूँ, अब मुझे वही काम हाथ में लेना है। लेकिन

समय कितना व्यर्थ गया। कदाचित् ईश्वर ने मेरे जीवन को इस प्रकार बनाकर मुझे अधिक अनुभव प्रदान किया है। मैं अपने उद्देश्य को इस प्रकार भली-भाँति शायद ही समझ सका हूँ, कि मैं अपनी इच्छाओं का अनुसरण कर सकूँ। अपनी क्रियाओं का पूर्व-निश्चय और उनकी पूर्ति बड़ी अच्छी चीज़ है, और अब मैं इसी ओर झुक रहा हूँ। आज सायङ्काल से, मैं चाहे जिस परिस्थिति में रहूँ, प्रति सायं मैं यही काम किया करूँगा। झूठी लज्जा के कारण मैं प्रायः यह कार्य करने से वञ्चित रहा हूँ। जहाँ तक हो सकेगा, मैं इस पर विजय प्राप्त करूँगा। सदा सच्चे और खरे बने रहो, चाहे इसमें कठोरता का प्रदर्शन भले ही करना पड़े, सब के साथ खरा व्यवहार रक्खो—किन्तु इसमें लड़कपन और अनावश्यक कठोरता न हो। अपने-आप पर क़ाबू रक्खो; स्त्री और मदिरा से बचो। आनन्द इतना संक्षिप्त और मिश्रित है, और उसका पश्चात्ताप दुर्धर्ष ! जिस बात को तुम समझते हो, उसमें अपने-आपको पूर्णतः लगा दो, किसी गम्भीर अनुभव के बाद अपनी क्रियायें बन्द करदो; किन्तु उस पर पूर्णतः विचार करने के बाद, चाहे उसमें अपनी ही ग़लती क्यों न हो, दृढ़तापूर्वक कार्य आरम्भ कर देना चाहिये।

आज अलेक्सीव से लज्जित होने के कारण मैं प्रार्थना पर नहीं बैठ सका। मैंने थोड़ा-बहुत बिना कुछ विचार

किए ही लिखा, भोजन अधिक परिमाण में करने के कारण सुस्त होकर सो गया। आर्सलनख़ाँ के आजाने के कारण लिखना बन्द करना पड़ा। मैंने इस बात का गर्व किया कि मेरा गोर्शाका के साथ सम्बन्ध है। बिना किसी कारण यानुशकेविच को बेइज्ज़त किया, स्त्री प्राप्त करने की इच्छा की। गोरोमैन के सामने कार्ल इवानिच की कहानी पढ़ी और बहुत गर्व प्रकट किया।

कल बहुत तड़के उठूँगा, और भोजन के समय तक 'बाल्यावस्था' लिखता रहूँगा। भोजनोपरान्त मैं उकरेनियन के पास जाऊँगा, और बहुत कुछ काम करने का अवसर ढूँढ़ूँगा; इसके बाद कॉकेशस के एक अफ़सर के सम्बन्ध में कुछ टीका-टिप्पणीं करूँगा* और चाय पीने के समय तक यही काम करता रहूँगा। फिर या तो 'बाल्यावस्था' लिखूँगा, या अपना जीवन-क्रम।

२६ जून—तड़के जग जाने पर भी बिस्तरे से देर में उठा। आर्सलनख़ाँ ने मेरे काम में बड़ी बाधा डाली। लिखना आरम्भ किया, किन्तु जो कुछ लिखा वह सब का सब शिथिलता और अप्रासंगिकता से पूर्ण, क्योंकि सम्भवतः मैंने इस पर पहिले विचार नहीं किया था। इसलिए मैं थोड़ा लिख सका। प्रातःकाल का अधिकांश भाग मेज़ हिलने के

*इस पुस्तक का नाम Cossacks हुआ, जो आगे चलकर प्रकाशित हुई।

परीक्षण में गुज़ारा, ❀ और ऐसा करने में काफ़ी लड़कपन का परिचय दिया। भोजन के बाद उकरेनियनों के पास गया, किन्तु कोई अच्छा काम करने का अवसर नहीं प्राप्त कर सका। अपनी आत्मा का आज्ञोल्लंघन किया......। इस अनिवार्य विचार से, मुझे ऐसा प्रतीत होता है, कि मेरे कार्य में बाधा पड़ती है और मुझे सन्तोष नहीं होता; इसमें मेरा अपराध थोड़ा है। क्योंकि जिस अस्वाभाविक अवस्था में भाग्य ने मुझे डाल रक्खा है, उससे मेरा यह अपराध क्षमा किया जा सकता है। अलेक्सीव के घर जाकर मैंने रुपये का सवाल नहीं किया।

भोजन के बाद कोई काम नहीं किया। यदि लिख नहीं सकता था तो कुछ विचार तो अवश्य ही कर सकता था। कल प्रातःकाल 'बाल्यावस्था' पर विचार करूँगा और भोजन के समय तक इसी काम में लगा रहूँगा। अगर विचार न उत्पन्न होंगे, तो जीवन-क्रम लिखूँगा। भोजनोपरांत सत्कार्य पर विचार करके चाय पीने के समय तक 'क्षणस्थायी' (The Fugitive) नामक पुस्तक लिखूँगा; चाय पीने के बाद

❀ इस समय टॉल्सटॉय प्रेतवाद—विशेषतः स्लानचेट (मेज़ पर हाथ रखकर आत्मा बुलाने का कार्य) में विशेष दिलचस्पी लेते थे; किन्तु अन्त में उनका इस पर से विश्वास हट गया, जैसाकि उनके नाटक 'ज्ञान के फल' (The fruits of Enlightenment) से प्रकट होता है।

कॉकेशस के एक अफ़सर के बारे में कुछ लिखूँगा। अलेक्सीव से रुपये मागूँगा।

२७ जून—आज विलम्ब से उठा, किन्तु 'बाल्यावस्था' का काफ़ी हिस्सा लिख डाला। अलेक्सीव से रुपया नहीं माँगा। भोजन के पश्चात् संध्या तक कॉकेशस के अफ़सर के सम्बन्ध में विचार करता रहा। बच्चों के साथ न्याययुक्त व्यवहार नहीं किया......। कल प्रातःकाल बहुत तड़के उठकर यथाशक्ति सावधानी और शांति के साथ 'बाल्यावस्था' के कुछ पृष्ठ लिखूँगा। भोजन के समय रुपये मागूँगा......शाम को कॉकेशस के सम्बन्ध में कुछ लिखूँगा, या यदि विचार मेरी सहायता कर सके, तो 'बाल्यावस्था' जारी रक्खूँगा।

२८ जून—प्रातःकाल पर्याप्त रूप से लिख सका। भोजन के पहिले लड़कों ने आकर मेरे काम में बाधा डाली। आज फिर रुपया माँगा, किन्तु मिला नहीं......इपिश्का बाहर गया था। भोजन के बाद कोई कार्य नहीं किया। प्रातःकाल मैंने बिना कुछ विचार किए ही बरासकिन से कह दिया, कि मैं शिकार के लिए जाऊँगा, और शाम को लज्जा के कारण अस्वीकार नहीं कर सका, इस कारण मैंने अपना बहुमूल्य समय नष्ट किया और अलेक्सीव के घर भोजन करने पर मेरे अन्दर जो स्फूर्ति आ गई थी, वह भी नष्ट हो गई। फिर कॉकेशस के अफ़सर के सम्बन्ध में थोड़ा लिखा, और कुछ

हिस्सा 'काष्ठ-पतन' (Wood-felling)※ का भी लिखा। जब लिखते समय मेरे मन में अनेक प्रकार के अस्पष्ट विचार उठते हैं, तो मैं उन्हें वहीं रोक देता हूँ। कल भोजन के समय तक 'बाल्यावस्था' लिखता रहूँगा। भोजन के पश्चात् शाम तक अपनी डायरी लिखूँगा।

२९ जून—प्रातःकाल अच्छी तरह गुज़रा, किन्तु शाम को मैंने कुछ नहीं किया। कॉकेशस के अफ़सर के सम्बन्ध में मैंने जैसा कथानक लिखने का विचार किया था, वह असन्तोषजनक मालूम हुआ, और भोजन के बाद मैंने अपना सारा समय लड़कों और इपिश्का के साथ व्यतीत किया। मैंने ग्रीशा और वास्का को पानी में फेंक दिया। यह कोई अच्छा काम नहीं हुआ। चाहे कैसी ही बाधा क्यों न पड़े, मुझे लिखना अवश्य चाहिये। जब कोई लिखने का क्रम जारी रखता है, तो अभ्यास पड़ जाता है, और उसकी शैली, कोई सीधा परिणाम न निकलने पर भी, बन जाती है। यदि कोई लिखता नहीं, तो वह अपने विचारों के प्रवाह में बह जाता है, और अनेक कुकर्म कर बैठता है। ख़ाली पेट अच्छा लिखा जाता है⋯⋯कल प्रातःकाल से शाम तक लिखता रहूँगा।

२० जून—तड़के उठकर कुछ लिखा। अब भी सन्देह

※ यह कहानी 'दो हुसार' (The two Hussars etc) नामक पुस्तक में सम्मिलित होकर छपी है।

और शिथिलता से पीछा नहीं छूटा। यहाँ तक कि सिर में दर्द हो गया। इसके पश्चात् सो गया, और (सोकर) उठने के बाद कुछ खेलने का उपक्रम किया। फ.........और पृ.........के सामने लज्जित हुआ, व.........और फ......म.........के साथ शराब पी, जिसके फल-स्वरूप बिल्कुल उन्माद-सा हो गया.........नित्य की भाँति 'बाल्यावस्था' और कॉकेशस के अफ़सर के सम्बन्ध में, भोजन के समय तक कुछ लिखता रहा।

१ जुलाई—कुछ लिखना शुरू किया—ई......ब......ने बाधा डाली, और मुझे जंगल में चलने के लिये कहा। दिन-भर स्फूर्ति का अनुभव करता रहा, और ख़ूब परिश्रम किया। यदि मैं अधिक शरबत पिऊँ, तो तबीयत बहुत अच्छी रहती है, सायंकाल को मुँह से मिथ्या प्रलाप भी नहीं निकलता, और दिन-भर परिश्रम में मन लगा रहता है। आज भोजन के पूर्व और पश्चात् 'बाल्यावस्था' के काफ़ी पृष्ठ लिख डाले।

२ जुलाई—आज विलम्ब से उठा; तो भी काफ़ी लिख सका। किन्तु भोजन के पश्चात् कुछ भी नहीं कर सका। एक धावे में शामिल होना चाहता था; अवरियानोव से मुलाक़ात की। शयन किया, और स्वप्न में एक विलक्षण पुस्तक का अनुशीलन किया। जागने पर तबीयत बहुत प्रसन्न थी, और ई.........द.........तथा ग्रोमैन से

बातचीत करने में इस (प्रसन्नता) का उपयोग किया······ निकोलेंका को एक पत्र लिखा············'बाल्यावस्था' को प्रातः-सायं बराबर लिख रहा हूँ।

३ जुलाई—आज भी बहुत देर से सोकर उठा, और काफ़ी पृष्ठ लिख डाले, किन्तु वराशकिन ने आकर बाधा डाल दी। भोजन के पश्चात् लिखना जारी रक्खा। शिकार के लिए गया, और छः ख़रग़ोश मारे। निकोलेंका और मेरे नौकर के पास से पत्र आये। प्याटीग़ार्स्क में मुझे बुलाया गया है। मैं समझता हूँ कि मैं जाऊँगा······ कल दिन-भर 'बाल्यावस्था' ही लिखता रहूँगा।

४ जुलाई—कल कुछ ज्वराक्रान्त रहा। ऐलेक्सीव आया और उसने मेरी नौकरी के सम्बन्ध में बात-चीत की; इससे मुझे ऐसा क्षुब्ध होना पड़ा कि मैं दिन-भर ब्रिमर को पत्र लिखने में लगा रहा, और मै समझता हूँ कि मैंने यह पत्र बहुत ही सुन्दर लिखा है। कल अवश्य ही 'बाल्यावस्था' लिखूँगा। आर्सलनख़ाँ आया, और मैं समझता हूँ, कुछ ही दिनों में हम दोनों (यहाँ से) रवाना हो जायेंगे।

५ जुलाई—विलम्ब से उठा, लिखा थोड़ा, किन्तु जितना भी लिख पाया, वह सुन्दर और सरस हुआ है। दोपहर के बाद लड़कों के साथ रहा। बहुत अधिक निर्भीकता से काम लेता हूँ। अभी-अभी ग्रीशा से धर्म के सम्बन्ध में वार्तालाप किया है। कल 'बाल्यावस्था' अवश्य लिखूँगा।

६ जुलाई—प्रातःकाल करद्युकी में शिकार करने को गया; किन्तु लज्जावश मैं अपनी पूरी शक्ति नहीं दिखा सका। इसके बाद मदिरा पी, और लेट रहा। स्टीगिलमैन आया और अज्ञात भाव से मुझे अनुकूल बनाने के लिये मेरी चापलूसी की। कल 'बाल्यावस्था' अवश्य ही लिखूँगा।........

७ जुलाई—प्रातःकाल कुछ लिखा, किन्तु ध्यानपूर्वक न लिखे जाने के कारण वह अच्छा नहीं हुआ; कितने ही विचार केवल व्यर्थ में चक्कर लगाकर रह गये। तो भी कुछ न कुछ कर लिया। भोजन के पश्चात् शिकार को गया। मदिरा अधिक पी जाने के कारण खूब परिश्रम किया। कोई अनुचित व्यवहार न करने पर भी प्रातः चार बजे तक लड़कों के साथ इधर-उधर दौड़ता रहा। ग्रौमैन से घबड़ा गया हूँ। कल अवश्य लिखूँगा.........आर्सेनलखाँ के साथ प्याटीगॉर्स्क नहीं जाऊँगा।

८ जुलाई—सोकर देर से उठा, लिखना शुरू किया, किन्तु आगे नहीं बढ़ सका। अपने उद्देश्यहीन और अनियमित जीवन से बहुत असन्तुष्ट हूँ। रूसो की एक पुस्तक पढ़ी। सदा की भाँति इसे पढ़ने पर अनेक उच्च विचार तरंगें मेरे मानस में हिलोरें लेने लगी। हाँ, मेरा सब से बड़ा दुर्भाग्य यह है कि मेरा मस्तिष्क बहुत विशाल है, और मैं एक-साथ बहुत बातें सोच जाता हूँ। भोजनोपरान्त शयन

किया, लड़कों के साथ खेला, और उनको हुल्लड़ मचाने से रोकने के बदले एपिश्का को चिढ़ाने के लिये उत्तेजित किया।

मैं अपने भीतर यह निश्चित करने में असमर्थ रहा कि संसार में ईश्वर का अस्तित्व है—या उसका कोई सन्तोष-जनक प्रमाण मिल सकता है। यह धारणा कोई बहुत आवश्यक भी नहीं है। विश्व के अनन्त आकार की कल्पना और उसकी परम प्रशंसनीय नियमितता का विचार करना सृष्टिकर्त्ता की कल्पना करने की अपेक्षा सहज और साध्य है। मनुष्य का शरीर और आत्मा आनन्द-प्राप्ति के लिये व्याकुल रहता है। यह आनन्द तभी प्राप्त हो सकता है, जब जीवन के रहस्यों को भली-भाँति समझ लिया जाय। जिस समय शारीरिक और आत्मिक अभिलाषाओं में विरोध होता है, तो आत्मिक अभिलाषा की विजय होनी चाहिये; क्योंकि उसी आनन्द की भाँति आत्मा भी अमर है, जिसे प्राप्त करने की हममें उत्कट अभिलाषा रहती है। आनन्द की प्राप्ति विकास की सीढ़ी है। आत्मा की आवाज़ बौद्धिक चमत्कार का स्वरूप है। गर्व एक प्रकार की अभिलाषा है, जो अपने-आपको सन्तुष्ट करती है; लिप्सा एक ऐसी अभि-लाषा है, जो मनुष्य को अपेक्षाकृत अधिक उन्नत होने की प्रेरणा करती है। मैं ईश्वर के अस्तित्व की आवश्यकता नहीं समझता, किन्तु मैं उसमें विश्वास करता हूँ, और इससे सहायता प्राप्त करने की प्रार्थना करता हूँ।

९-१५ जुलाई—स्टैरोग्लैडोव से विना किसी प्रकार का खेद प्रकट किये विदा ली। मार्ग में आरख़ाँ ने मुझे बहुत दिक़ किया। प्याटीग़ास्र्क पहुँचने पर मैंने देखा कि माशा इस समाज में मिल-जुल गई है। मुझे इससे दुःख हुआ। यह दुःख ईर्ष्या-जनित नहीं था; वरन् इसलिये कि वह अब केवल एक परिवार की जननी-ही नहीं रह गयी है। पर वह ऐसे सरस स्वभाव की है कि इस कुत्सित समाज में रहकर भी, अपनी प्रसन्नता को क़ायम रख सकती है। वर्यातिन्सकी को एक सुन्दर पत्र भेजा। साथ ही त्रिमर को एक ऐसा ही, तथा मीर्यू को एक भय-पूर्ण पत्र लिखा। वैलेरियन बड़ा ही बुद्धिमान और ईमानदार आदमी है, किन्तु उसमें उस प्रतिष्ठा का ज्ञान नहीं है, जिसके द्वारा वह किसी भले आदमी से मेरा सम्बन्ध करा सके। वैरन बड़ा अच्छा आदमी है। इसका क्या कारण है, कि वैलेरियन और निकोलेंका लोगों के रीति-रिवाज को बुरा-भला कहने में इतनी दिलचस्पी लेते हैं, जबकि वे 'रीति-रिवाज' के मामले में वे स्वयं ही अल्प-ज्ञान रखते हैं। मुझे साधारणतः इस बात से बड़ा कष्ट हुआ। मुझे निश्चय है कि सेरेज़ा से मिलकर मैं इस प्रकार की भावना का अनुभव न करूँगा, और तातियाना एलेक्ज़ेण्ड्रोवना से मिलकर तो इस बात का ख़्याल और भी पैदा न हुआ। कल मैं जिप्सी-जाति की एक सुन्दरी कन्या से मिला, किन्तु

ईश्वर ने मुझे बचा लिया। अब मैं पुराने मकान में फिर आगया, और यहाँ तब तक ठहरूँगा, जब तक मुझे सेना से छुट्टी मिलेगी, या मैं उससे निकाल दिया जाऊँगा, अथवा मेरी कोई सम्बन्धी यहाँ से चला जायगा।

भोजन के समय तक 'बाल्यावस्था' लिखता रहा। माशा के साथ भोजन किया, और बैण्ड बजने के समय तक 'बाल्यावस्था' लिखता रहा। मुझे इस बात से सतर्क रहना चाहिये कि मेरे हृदय में अहंकार न प्रवेश कर जाय।

बर्यातिन्सकी से मैं मुर्दादिली के साथ क्यों मिला? अब मेरे पास अट्ठाइस रूबल और बचे हैं। छः बूट के लिये, चार ओवरकोट की मरम्मत के लिये—और अट्ठारह बच रहेंगे। किफ़ायत से काम लूँगा।

१६ जुलाई—कल प्रातःकाल लिखा, माशा के घर भोजन किया और उसके बाद घर आकर आज प्रातःकाल तक सोता रहा। पाँच घंटे तक लिखा। 'बाल्यावस्था' की समाप्ति निकट दीखती है—इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता है। मैं चाहूँ, तो इसे आज ही समाप्त कर सकता हूँ, और इसीलिये आज दिन-भर लिखता रहूँगा।

भोजन के समय तक लिखा और इसके उपरान्त पाँच से छः बजे तक। पुस्तक समाप्ति पर है। बोलीवार्ड गया, इसके बाद माशा के पास और वहाँ से भोजनालय। वहाँ मद्य-पान में मैंने बासठ कॉपेक ख़र्च किया। इसके अतिरिक्त

अलेश्का❀ ने ७५ कॉपेक के बूट ख़रीद डाले, और १२ कॉपेक दियासलाई और मोमबत्ती में,५०कॉपेक एक ब्रुश में ख़र्च किया। वै—को ९० कॉपेक देने हैं, और ५ रूबल मदिरा के चुकाने हैं। कल कोशिश करके 'बाल्यावस्था' की रफ़ कापी समाप्त कर दूँगा। स्ट्रोडोरिना का पत्र अच्छी तरह लिया। नशे में चूर हूँ।

१७ जुलाई—विलम्ब से उठा। विचार बहुत अनुकूल थे, और थोड़ा लिखने पर भी बहुत अच्छी तरह समाप्त किया। निकोलेंका आया। मैंने पत्र में उसे जो-कुछ लिखा था, वह उसे पढ़ सुनाया। पत्र बहुत अच्छा मालूम होता है। माशा के घर भोजन किया, वहीं शयन भी किया। इसके बाद कुछ टहलकर नैटाकी के घर पहुँचा। मैंने समय व्यर्थ खोया। मेरे सम्बन्धियों के उपेक्षा-भाव से मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैंने एक रूबल और तीस कॉपेक खाद्य-पदार्थों में ख़र्च किया। यह रक़म मुझे निकोलेंका को देनी है।

१८ जुलाई—आज फिर विलम्ब से उठा। निकोलेंका ने मेरे लिखने में बाधा डाली। मैंने मुश्किल-से थोड़ा-सा लिखा होगा कि इतने में हम दोनों को माशा के घर जाना पड़ा। मुझे दिन-भर वहाँ ठहरना पड़ा। इसके बाद मैं क्रिश्चियनी के गायन में सम्मिलित होने गया। कैसा तुच्छ हूँ! मुझे कोई प्रेम क्यों नहीं करता? न तो मैं मूर्ख

❀ टॉल्सटॉय के नौकर का नाम।

हूँ, न कुरूप, न स्वभाव का बुरा हूँ, और न ऐसा भोंदू ही हूँ। बात समझ में नहीं आती। क्या मैं इस वातावरण के अनुकूल नहीं हूँ? माशा ऐसी सुन्दरी है, कि सब के लिये उसका आकर्षण समझना सम्भव नहीं। रैश और कम्पियनी उसे प्रसन्न रखने की चेष्टा करती हैं। कैसी करुणाजनक अवस्था है! कल वैशातान में भोजन करने के पश्चात् एकदम लिखता ही चला जाऊँगा।

१९ जुलाई—आज प्रातःकाल कुछ नहीं लिखा, और सायंकाल माशा के घर व्यर्थ व्यतीत किया। किन्तु उसी समय वै......से पति-कर्त्तव्य के सम्बन्ध में कुछ बातचीत हुई, जिसमें मैंने काफ़ी दिलचस्पी ली। इस समय ११ बजे हैं। अब मैं लिखूँगा, और शाम होने से पहिले माशा के घर न जाऊँगा।

२० जुलाई—आज दिन अच्छी तरह व्यतीत हुआ। ख़ूब सो लेने के बाद एक निकम्मा उपन्यास पढ़ा, जिसका नाम था 'सावधानी' (Precaution)। इसके बाद लेव्रन का एक सुन्दर उपन्यास पढ़ा। शाम को स्नान करने के बाद माशा के घर गया। कल घर पर ही भोजन करूँगा और शीघ्र उठकर लिखना शुरू कर दूँगा।

२१ जुलाई—११ बजे सोकर उठा, और घर पर भोजन करने के पश्चात् ख़ूब लिखा, और इस प्रकार 'बाल्यावस्था' की पाण्डु-लिपि समाप्त कर दी। किन्तु अब भी इसे मनोयोग-

पूर्वक देखने की आवश्यकता है। रात माशा के घर व्यतीत की। इस समय ४ बजे हैं, और मैं उठकर अपने घर आगया हूँ। अनावश्यक होने पर भी मैं यसन्तुकी जा रहा हूँ।

२२ जुलाई—वैलेरियन भी यसन्तुकी में है। माशा अवश्य ही दुश्चरित्रा है। कोई कार्य नहीं किया। इस समय सिर में दर्द है। और सोने की तय्यारी कर रहा हूँ।

२३ जुलाई—पहला अध्याय फिर से सुधारकर लिखा है। माशा के घर अधिक देर तक नहीं ठहरा। केवल कार्य करूँगा। जिस समय मेरा मन कार्य करने में लगता है, उस समय मैं परमानन्द का अनुभव करता हूँ।

२४ जुलाई—आठ बजे उठा। पहले अध्याय में संशोधन किया। किन्तु दिन-भर कुछ नहीं लिख सका। 'क्लॉड नॉक्स' की पुस्तक पढ़ी। माशा के पास गया। किन्तु आज यहाँ बड़ी शिथिलता का अनुभव कर रहा हूँ। बुल्का❋ खो गया। मूर के पास से आज एक पत्र आया है। त्रिमर ने मुझे नौकरी से पृथक् होने से रोक रक्खा है। शीघ्र उठकर लिखना चाहिये, और जहाँ कहीं लेखन में शैथिल्य आ जाय, उसमें संशोधन करने के लिये ठहरने की बजाय, तब तक आगे बढ़ते जाना चाहिये, जब तक उसका अर्थ ठीक-ठीक समझ में आता रहे, क्योंकि संशोधन तो फिर भी हो सकता

❋ टॉल्सटॉय का प्यारा कुत्ता।

है, किन्तु जो समय व्यर्थ गुज़र जाता है, वह वापस नहीं आ सकता।

२५ जुलाई—तीन घण्टे बोलीवार्ड में व्यतीत करने के अतिरिक्त दिन-भर ख़ूब काम करता रहा, किन्तु केवल डेढ़ अध्याय दुबारा लिख सका। 'नवीन विचार' (The New View) एक ज़बर्दस्ती की रचना है, किन्तु 'तूफ़ान' (The Storm) एक अद्भुत ग्रन्थ है। मैंने ट्योडोरिना से गपशप की। मेरा हास्य कभी-कभी दृढ़ता का द्योतक नहीं होता, जिससे मैं घबड़ा जाता हूँ। कल प्रातः लिखूँगा, और नोट-बुक साथ लेकर माशा के घर भोजन करने जाऊँगा। इसके पश्चात् लिखूँगा।

२६ जुलाई—प्रातःकाल कुछ दोबारा लिखा, माशा के पास गया। वह घर पर नहीं थी। नयताकिस में भोजन किया। यहाँ मेरा उधार चलता है। घर लौटकर 'तूफ़ान' (The Storm) का अध्याय समाप्त किया। इससे अच्छा भी लिखा जा सकता था।

२७ जुलाई—कोई काम नहीं किया। बोलीवार्ड की एक सुन्दरी स्त्री ने मुझ पर बहुत अधिक प्रभाव डाला है। नयता-किस-वालियों के आकर्षण से और सुस्ती हुई है। कल ट्यो-डोरिना ने अपने आश्चर्यजनक लावण्य के साथ बतलाया कि आश्रम में उसका जीवन किस प्रकार व्यतीत हो रहा है।

मैं क़र्ज़ में फँसता जा रहा हूँ, और मेरी दूरबीन (जिसे

में बेचना चाहता हूँ) कोई नहीं ख़रीद रहा है। भगवान् जाने, वे लोग मेरे पास रुपया कब भेजेंगे। अब वैलेरियन पर निर्भर करना व्यर्थ है। मुझे-कोई-न-कोई उपाय करना चाहिए। तुर्गनेव का 'खिलाड़ी का चित्रण' (Sportsman's Sketches) पढ़ा। ऐसा मालूम होता है कि तुर्गनेव की रचना पढ़ने के बाद लिखना दुस्तर है। दिन-भर लिखता रहा।

२८ जुलाई—२५ वर्ष की अवस्था पूरी होने में एक मास बाक़ी रहा है! आज कुछ नहीं लिखा। प्रातःकाल एक रद्दी उपन्यास पढ़ा, भोजन के पश्चात् व्यर्थ की गप-शप की। कल गैलरी में जाना है। वहाँ श्रीमती ग्लोवायस्की से परिचय प्राप्त करके लौटूँगा, और बोलीवार्ड जाने के समय तक लिखता रहूँगा।

२९ जुलाई—एक रद्दी उपन्यास पढ़ने के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं किया। प्रातःकाल गैलरी में गया और मरमेट के यहाँ दो बार स्नान किया।

३० जुलाई—आज प्रातः वैलेरियन मेरे पास दो-सौ रूबल लाया। जिसमें से ५० मैंने अलेक्सीव के पास भेजे, ५० वैलेरियन को दिये, ८ मकान-किराये के चुकाये, और १.५० तथा २.५० नेताकिस को भोजन के बिल के सम्बन्ध में अदा किया। ३ रूबल निकोलेंका को भेजा और ४० कॉपेक भेजने में ख़र्च हुए। अब ८५ रूबल बच रहे हैं। माशा

चली गई। दिन-भर कुछ नहीं कर सका। कल प्रातःकाल लिखूँगा, एक सस्ता घोड़ा खरीदूँगा और उस पर चढ़कर ज़ेलेज़्नोवोस्क जाऊँगा।

३१ जुलाई—कोई कार्य नहीं किया। मेले में गया और एक घटिया घोड़ा २४ रूबल में ख़रीदा। इसके बाद सो गया। बोलीवार्ड होते हुए फिर मेले में गया।...मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैं बीमार पड़ जाऊँगा। कल इस घोड़े को बदल-कर, तब ज़ेलेज़्नोवोस्क जाऊँगा, २५ रूबल घोड़े में और लगेंगे........एक रूबल घोड़ा-गाड़ी में खर्च होगा, और ७० कॉपेक फुटकर—कुल ५८ रूबल बच रहे हैं।

१–४ अगस्त—ज़ेलेज़्नोवोस्क पहुँच गया, और घोड़ा भी बदल लिया। पहले दिन मैंने फ़ल्कनर और वैलेरियन के साथ मदिरा पी। स्नान किया। वैलेरियन ने ५० रूबल लौटा दिये। किन्तु मेरे पास केवल ८२ रूबल शेष हैं। ३ रूबल अभी मुझे और अदा करने हैं। १ रूबल में मैंने दस्ताने ख़रीदे हैं, १.५० रूबल शिकार में खर्च हुए हैं। अब केवल ७८.५० रूबल शेष रहे हैं।❀ आबादी की ओर घोड़े पर चढ़कर जाने के कारण मुझे कल ठण्ड लग गई। आज स्नान नहीं किया। कुछ लिखना चाहता हूँ। कुछ पढ़ा, और गप-शप की। सामाजिक सहयोग और पुस्तकों

❀यह हिसाब ग़लत है। और भी कई जगह टॉल्सटॉय ने गणित-सम्बन्धी भूलें की हैं।

से कहाँ तक दिल बहलता है ? अच्छे और बुरे आदमियों की संगति से बिलकुल विभिन्न प्रकृति के कार्य्य करने लग जाता हूँ । कल लिखूँगा ।

६ अगस्त—दिन-भर कोई कार्य नहीं किया, पर कल लिखूँगा । ट्योडोरिना मुझे बहुत प्रेम करती हैं । कुछ निश्चय अवश्य करूँगा । मैं स्वीकार करता हूँ कि इससे मुझे आनन्द मिलता है । कल प्रातः 'युवावस्था' (Youth) लिखूँगा और भोजन के पश्चात् 'कॉकेशस के अफ़सर' के सम्बन्ध में कुछ नोट लिखूँगा ।

७ अगस्त—प्रातःकाल 'युवावस्था' का कुछ भाग लिखा। मेरे पास समय नहीं बचता । इसके अतिरिक्त मैं सुस्त भी हूँ । ट्योडोरिना की मानसिक अवस्था दिन-पर-दिन ख़राब होती जा रही है । कल मैं उससे अपना निस्तारा कर लूँगा ।

८ अगस्त—कुछ नहीं किया । ट्योडोरिना से विशेष वार्तालाप नहीं किया । आज सायंकाल मेरे जीवन की सभी कुस्मृतियाँ मेरे मस्तिष्क में आ गईं ।

हेल्का, बर्यातिन्स्की, लेबिन, मेरे क़र्ज़ और इसी प्रकार की अन्य वाहियात बातें । सुस्ती और अकर्मण्यता मेरे दुर्भाग्य के मुख्य कारण हैं । कल मैं किस्लोवोस्क के पास जाकर लिखूँगा ।

९ अगस्त—घोड़े पर चढ़कर किस्लोवोस्क गया, और नार्ज़न-नामक प्रसिद्ध धातविक प्रपात में स्नान किया, भोजन

किया, सोया, और शाम तक खेलता रहा। दूसरे दिन १० अगस्त को दो बार स्नान किया, फिर शाम तक जुआ खेलता रहा, ८ रूबल जीत जाने के कारण बड़ा संतोष हुआ। यह बुरी बात है।

आज ११ अगस्त है। ८ बजे रवाना होकर ११ बजे अभीष्ट स्थान पर पहुँचा, स्नान किया, और भोजन करने के बाद सात बजे तक सोता रहा। शाम को मैंने अनेक बार ट्योडोरिना का हस्त-स्पर्श किया। इससे मुझे बड़ी उत्तेजना हुई। मेरे गले में दर्द हो गया। किन्तु कल अवश्य लिखूँगा।

१२ अगस्त—अस्वस्थता के कारण दिन-भर कुछ नहीं कर सका। मेरे गले की अवस्था ख़राब है, और दिन-भर ज्वरांश रहने के कारण कोई कार्य नहीं करना चाहता।

१३ अगस्त—दिन-भर बीमार रहा। मेडेलीन की पुस्तक पढ़ी, और उससे प्रभावान्वित हुआ।

आज १४ अगस्त है—स्वास्थ्य कुछ अच्छा है। बाहर जा रहा हूँ। ७० रूबल शेष रहे हैं। ८ रूबल खर्च हुए हैं।

१५ अगस्त—शाम को फिर अस्वस्थता का अनुभव कर रहा हूँ। कोई कार्य नहीं कर रहा हूँ। घोड़े पर सवार होकर 'आउल' नामक ग्राम को गया। अनिश्चितता और सुस्ती छाई हुई है।

१६ अगस्त—स्वास्थ्य कुछ अच्छा है, कोई विशेष बात नहीं है। वही सदा का-सा जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। कल

सुबह जल्दी उठकर जलपान करूँगा । और फिर भोजन के समय तक 'बाल्यावस्था' लिखता रहूँगा। भोजन के पश्चात् बोलीवार्ड के जाने के पहिले कॉकेशस की कहानियाँ लिखूँगा, और शाम को उपन्यास।

१७-२६ अगस्त—कोई कार्य नहीं किया। 'युवावस्था' लिखना बन्द करके, उपन्यास पूरा करने और कॉकेशस की कहानियाँ लिख डालने का निश्चय किया। मेरी सुस्ती का कारण यह है, कि लिखते समय मेरे मन में .उत्साह नहीं रहता। इस महीने में प्रसन्नता प्राप्त करने की आशा कर रहा हूँ। ख़ास तौर पर छब्बीसवें वर्ष में प्रवेश करते समय कुछ शुभ होने की आशा अवश्य करता हूँ, अपने-आपको ज़बर्दस्ती उस प्रकार का बनाना चाहता हूँ, जैसा एक मनुष्य को होना चाहिये। किशोरावस्था व्यतीत हो चुकी, अब काम करने का समय है। जिन बीस रूबल का मुझ पर क़र्ज़ है, उन्हें घटाकर मेरे पास २१.५० रूबल शेष रह जाते हैं; क्योंकि एक रूबल मैंने ज़ख़ार को दे दिया है। भोजन के समय तक कहानी लिखूँगा, तदुपरान्त उपन्यास। 'युवावस्था' बन्द कर देने का मुझे खेद है, किन्तु किया क्या जाय ?—किसी चीज़ को सुचारु रूप से लिखने की अपेक्षा उसका समाप्त कर देना ही अच्छा है।

२६ अगस्त—कोई कार्य नहीं किया; पर अब 'युवावस्था' को फिर हाथ में लेना चाहता हूँ। चन्द्रमा पर बहुत देर तक

दृष्टि गड़ाकर देखता रहा।* ज़ख़ार को एक रूबल और कॉपेक दिये, तथा ५ कॉपेक का एक तरबूज़ ख़रीदा। अब २०.३५ रूबल शेष रहे हैं। शिकार में ५० कॉपेक ख़र्च हुए हैं—वह भी अदा करने हैं।

२७ अगस्त—ज़ख़ार को १.५० रूबल दिया, २० कॉपेक की जई ख़रीदी, ५० कॉपेक की शराब—इस प्रकार कुल २.२० रूबल ख़र्च हो गये, और १८.१५ रूबल शेष रहे। केवल कुछ लेख लिखने में लगा रहा, और कुछ काम नहीं किया........। इस घृणित जीवन से उकता गया हूँ। कल से नया जीवन आरम्भ करूँगा।

२८ अगस्त—तीन रूबल गाड़ीवाले को, ५० कॉपेक की शराब, वोदका× में २० कॉपेक ख़र्च कर दिये, १५ कॉपेक की सूखी घास ख़रीदी। १.५० रूबल निकिता को दिए। इस प्रकार ५.४५ ख़र्च हुए, और १२.७० रूबल शेष रहे।

प्रातःकाल 'कॉसेक्स' की कहानी लिखनी शुरू की, किन्तु बाद में निकोलेंका के आजाने ओर ट्यूयोडोरिना के रवाना होने के कारण—साथ ही इसलिए कि यह मेरा जन्म दिवस है, शिकार को गया। फिर बस्ती की ओर बढ़ा, और माशा के साथ बोलीवार्ड गया। तबियत प्रसन्न नहीं है। मुझे केवल

---

*भारत की तरह रूस में भी चन्द्र-दर्शन से विविध फल प्राप्त होने का अन्ध-विश्वास चला आता है।

×एक प्रकार की मदिरा।

कार्य्य करने में ही आनन्द और लाभ प्राप्त होता है। अब मैं लेटकर पढ़ूँगा।

२९ अगस्त—५० कॉपेक की शराब, २० कॉपेक निकता को दिये और ५ की सूखी घास—इस प्रकार कुल ८५ कॉपेक खर्च हुए ३.५० और १.३५ रूबल अदा किया।

प्रातःकाल 'उड़ान' (The fugitive)-नामक पुस्तक लिखी और भोजन के पश्चात् सो रहा। शाम को फिर लिखूँगा। १० रूबल और बच रहे हैं।

३० अगस्त—वैलेरियन से २४ रूबल प्राप्त हुए हैं, ३३ रूबल और मिले हैं, और २१ मेरे पास हैं—इस प्रकार कुल ८० रूबल हो गये। दिन-भर काम करता रहा। किन्तु उपन्यास लिखने के लिए समय नहीं मिला।

सप्ताह-भर में जो-कुछ लिखा है, शनिवार को उसका संशोधन करूँगा। निकोलेंका कल जा रहा है, और मेरा भाग्य अभी तक अनिश्चित है।

३१ अगस्त—घोड़े पर चढ़कर प्याटीग़ास्र्क गया और मुश्किल से कोई चीज़ लिख सका। 'सम्मेलन' (The Meeting) नामक पुस्तक पूरी नहीं होती दीखती। 'युवावस्था' के लिए भी समय नहीं बचा है।

१ सितम्बर—निकोलेंका और द·········के साथ गया, और दिन-भर फिर बेकार रहा···········। ताश खेलना चाहता था।

२ सितम्बर—बिल्कुल कोई कार्य्य नहीं किया, और तबियत ख़राब है। कल किस्लोवोस्क जाऊँगा।

ओगलिन को ५ रूबल, दूरबीन के लिए ३ रूबल, धोबिन को ३ रूबल, ज़ख़ार को २ रूबल, होटलवाले का २॥ रूबल, और फुटकर ४ रूबल अदा किए। अब केवल १४.६० रूबल बच रहे हैं। आज घर को पत्र लिखा है कि वे मुझे रुपये भेज दें।

३-४ सितम्बर—किस्लोवोस्क गया था। फ्योडोरिना बड़ी सादी है। मुझे उसके लिए बड़ा खेद है। दो दिन से कुछ नहीं कर रहा हूँ, किन्तु प्रातःकाल कुछ पढ़ लेता हूँ। कल मुझे यह ख़बर मिली थी कि फ़स्ल खराब है। फ़ेड्रकिन ३०० रूबल चाहता है। मैं न छुट्टी ले सकता हूँ, और न इस्तीफ़ा ही दे सकता हूँ। जब तक रुपया न आजाय, मैं यहीं प्रतीक्षा करना चाहता हूँ, और फिर स्टारोग्लैडोस्क में एक संन्यासी बनकर तब तक रहना चाहता हूँ, जब तक कि मैं अपना कोई जीवन-क्रम निश्चित न करलूँ।

५-९ सितम्बर—सुस्ती छोड़ने का प्रयत्न किया। आज कुछ लिखा। शाम को वैलेरियन के साथ गप-शप की। ५ रूबल शेष रहे हैं। सुस्ती के अतिरिक्त सब बातों से संतुष्ट हूँ।

१० सितम्बर—कोई कार्य नहीं किया। माशा के साथ वार्त्तालाप किया। मॉस्को में उस (माशा) के साथ रहने कार्य-क्रम तैयार किया। सुस्ती और उसका अनुभव—दोनों

मुझे बड़ा दुःख दे रहे हैं। चाहे कुछ हो, आत्म-तुष्टि के लिए कल अवश्य कार्य्य करूँगा; क्योंकि जीवन में बराबर पश्चात्ताप करते रहने से दुःख बढ़ता ही जाता है।

११ सितम्बर—माशा और वैलेरियान दोनों यहाँ से चल गये। प्रातःकाल लिखा। शाम को भी लिखने का प्रयत्न किया, किन्तु थोड़ा लिख सका। अपनी सुस्ती पर क़ाबू नहीं पा सकता। अब यह निश्चय किया है कि एक बैठक में एक अध्याय समाप्त करके तभी उठूँगा। भोजन के पश्चात् बहुत देर तक सोता रहा। इस समय चार बजे हैं।

१२ सितम्बर—विलम्ब से सोकर उठा। भोजन के पहले कार्ल आइवनिच का इतिहास समाप्त किया। भोजन के पश्चात् कुछ इधर-उधर टहला। गिरजाघर गया। वहाँ मैं बोलीवार्ड की अपेक्षा ज़्यादा परेशान हुआ। कुलूनिकोव के साथ टहलता रहा, और उसे साथ लिवा लाया। शाम को सोता रहा। कल प्रातः बाग़ में जाकर 'उड़ान' के एक अध्याय पर विचार करूँगा। भोजन के पश्चात् लेटे-लेटे 'बाल्यावस्था' के एक अध्याय पर विचार करूँगा।

१३ सितम्बर—सुबह बेहद सुस्ती रही। भोजन के बाद कुछ टहला, और बुकोसकी तथा कुलूनिकोव के घर गया। इसके बाद एक नई पुस्तक लिखने का विचार किया। ❀

❀ इस पुस्तक का नाम Reminiscences of a Billiard-Marker है।

विचार बड़ा अच्छा है। कुछ लिखा। एसेम्बली देखने गया, और फिर नई पुस्तक का कुछ अंश लिखा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है, मैं बड़ी उमंग के साथ लिख रहा हूँ। बहुत अच्छी तरह से कार्य कर रहा हूँ।

१४ सितम्बर—कच्चा मस्विदा तैयार किया, और शाम को उसकी साफ़ नक़ल लिखी। मैं इतने उत्साह के साथ लिख रहा हूँ कि मेरा हृदय काँप रहा है, और ज़ोर से धड़क रहा है। नोट-बुक पकड़ने में असमर्थ हूँ। कल वैलेरियन और माशा दोनों पहुँचेंगे। स्योडोरिना ने मेरे साथ उपेक्षा-पूर्ण व्यवहार किया। अब मैं उससे मिलने कभी न जाऊँगा।

१५ सितम्बर—प्रातःकाल कुछ लिखा, और आज भोजन नहीं किया। टहलने के लिए बाहर निकला। माशा और वैलेरियन आगये। मिसलियेव वहाँ आठ बजे तक रहा। मैंने कोई काम नहीं किया। आठ से ग्यारह तक लिखा। अच्छी तरह लिखने पर भी शैली ठीक नहीं जमी। आधे से अधिक लिख चुका हूँ।

१६ सितम्बर—बहुत प्रसन्न हूँ, और उत्तम रीति से लिख रहा हूँ। आज कार्य्य समाप्त कर दिया। ड्रोज़डोव के साथ घोड़े पर सवार होकर बाहर गया। मिसलियेव ने रुपये देने का वादा किया है।

१७ सितम्बर—दिन-भर कुछ नहीं किया। निकरासो * को एक पत्र लिखा। प्रातःकाल माशा को कई लेख पढ़कर सुनाये, और सायंकाल मिसलियेव के पास गया।

१८-१९ सितम्बर—आज लिखना आरम्भ किया, पर सुस्ती ने मुझ पर असर जमा लिया। शाम को मिसलियेव के घर गया, और कुछ पद्यात्मक रचनायें कीं।

हास्य उसी अवस्था में सम्भव है, जब मनुष्य को यह निश्चय हो जाय कि उसके द्वारा प्रकट किया हुआ कोई भी शब्द, भाव और विचार ठीक-ठीक समझा जायगा। यह आदमी के मनोभाव पर निर्भर है, और इससे भी अधिक श्रोताओं पर।

२०-२३ सितम्बर—गत दो दिनों से मैंने केवल 'बाल्यावस्था' के कतिपय पृष्ठ लिखे हैं। यदि मैं चाहता, तो यह पुस्तक एक सप्ताह में समाप्त हो सकती थी……।

२४-२६ सितम्बर—कोई कार्य नहीं किया। आज केवल एक छोटा-सा अध्याय लिख सका। इधर-उधर व्यर्थ घूमता रहा—कैसा मूर्खता-पूर्ण जीवन है! कल मैंने लिबरिच को पत्रोत्तर लिखा था। फ़रज़न को भी एक पत्र लिखा था।

---

* निकरासो एक बड़ा कवि था, जो Contemporary नामक तत्कालीन सर्व-श्रेष्ठ मासिक-पत्रिका का सम्पादक भी था। टॉल्सटॉय की आरम्भिक रचना इसी पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

२७-
हूँ। वैले
इसमें पू
इसमें
वैलेरिय
उसे कष्ट
कर रह
चाहिये;

२९
अच्छी
घोड़े
Deat
है—ध
३
लिखा

प्रातः
रूप
में लि

+ इस समय तुर्की और रूस में युद्ध आरम्भ हो चुका था।

रासो ❀
पढ़कर

किया, पर
इसलियेव

को यह
कोई भी
गा। यह
अधिक

'बाल्या-
, तो यह

ज केवल
र्थ घूमता
रिच को
था।

porary
ादक भी
था। टॉल्सटॉय की आरम्भिक रचना इसी पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

२७-२८ सितम्बर—कुछ नहीं किया। लिखने में असमर्थ हूँ। वैलेरियन के जीवन पर लिखी हुई अपनी कहानी पढ़ी। इसमें पूर्णतः परिवर्तन करने की आवश्यकता होगी, किन्तु इसमें निहित विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। या तो वैलेरियन ने दन्त-पीड़ा का बहाना-मात्र किया, अथवा उसे कष्ट है। अब मैं तुर्की-युद्ध + के सम्बन्ध में विचार कर रहा हूँ, परन्तु है यह ग़लत। मनुष्य को सन्तुष्ट रहना चाहिये; ख़ासकर ऐसी अवस्था में, जिसमें मैं इस समय हूँ।

२९ सितम्बर—प्रातःकाल 'बाल्यावस्था' का एक अध्याय अच्छी तरह लिखा। भोजनोपरान्त ६ बजे से ८ बजे तक घोड़े की सवारी की......'दादी की मृत्यु' (Grandmother's Death नामक पुस्तक में मैंने एक अद्भुत चित्रण किया है—वह धार्मिक होते हुए भी निठुर स्वभाव की है।

३० सितम्बर-१ अक्टूबर—कल और आज एक अध्याय लिखा, किन्तु लेखन सुन्दर नहीं हुआ।

२ अक्टूबर—'बाल्यावस्था' का एक अध्याय लिखा। प्रातः पाँच बजे उठा। समस्त 'बाल्यावस्था' नवीन रूप में प्रदर्शित हो रही है, और मैं इसे पुनः संशोधित रूप में लिखूँगा। वैलेरियन और माशा दोनों ही जा रहे हैं। मैं

+ इस समय तुर्की और रूस में युद्ध आरम्भ हो चुका था।

प्रिन्स माइकेल आइवनोविच और सर्जी मित्रीविच को पत्र लिखना चाहता हूँ।

आज तीसरी तारीख़ है। कोई कार्य नहीं किया। आर्स-लनख़ाँ आया हुआ है।

४-६ अक्टूबर—मैं स्थान-परिवर्तन करने का विचार कर रहा हूँ। कई पत्र लिखे, और एक रिपोर्ट तय्यार की। वैलेरियन और माशा को बिदा किया......बहुत घबराया हुआ हूँ। कल विशेष रूप से कार्य आरम्भ करके इस घबरा-हट को दूर कर दूँगा।

७ अक्टूबर—प्रातःकाल प्रिन्स से मिलने गया। उसने मुझसे कई अप्रिय बातें कहीं। जिससे कई घण्टे तक मैं बड़ा विक्षुब्ध रहा। भोजन के बाद 'फ्वाय का पेशा' (Profession of the Foi) नामक पुस्तक पढ़ी, और प्रसन्नता प्राप्त करने का एक-मात्र उपाय सोचा। भोजन के पश्चात् 'कन्या का कक्ष' (The maid-room) आरम्भ किया, किन्तु सुन्दर न होने के कारण लिखना बन्द कर दिया.........इसके आरम्भ पर भली भाँति विचार करने की आवश्यकता है। ड्रोज़डोव के घर गया, और वहीं से शाम को घोड़े पर सवार होकर उसके साथ बाहर गया।

८ अक्टूबर—रुपये प्राप्त किये, और छुट्टी की दरख़्वास्त दी।.........मैंने अपने घोड़ा एक क़ज़्ज़ाक लड़के को दे रक्खा है। मैंने ट्योडोरिना से ३.९० रूबल इसलिये नहीं

लिये, क्योंकि वह मुझे बड़ी करुण दृष्टि से देख रही थी। दो बजे चलकर छः बजे जारजस्क पहुँचा, और यहाँ कन्या का कक्ष' के तीन-चार पृष्ठ लिखे।

९ अक्टूबर—सफ़र में।

१० अक्टूबर—सफ़र में।

११ अक्टूबर—अभीष्ट स्थल पर पहुँच गया। अलेक्सीव ने मेरा अच्छा स्वागत किया। जू मुझे एक अच्छा लड़का जँचता है। एपिश्का के घर ठहरा हूँ।

१२ अक्टूबर—ब्राह्म मुहूर्त में उठकर लिखना आरम्भ किया, किन्तु अच्छी तरह नहीं लिख सका। आधे कॉपेक की बाज़ी से ताश खेला। फिर शिकार को गया। मार्शलोव और और वारास्किल को पत्र लिखे। दो खरगोश मारे। वर्तमान साहित्य का एक आलोचनात्मक ग्रन्थ पढ़ा, जिससे मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि मैं योग्यता और कर्मशीलता, दोनों ही दृष्टियों से एक महत्वपूर्ण लेखक हूँ। आज से मैं इस बात को भली भाँति निबाहूँगा। प्रातःकाल 'बाल्यावस्था' लिखनी है, और भोजन के पश्चात् शाम को 'उड़ान'। मन प्रसन्न हो रहा है।

जो कुछ विचार किया था, पूरा नहीं कर सका—सुस्ती के कारण केवल कुछ पढ़कर रह गया। 'कन्या के कक्ष' का चौथाई पेज लिखा। मैं अब यह नियम बनाना चाहता हूँ, कि जब तक कोई चीज़ समाप्त न कर लूँ, दूसरी में

हाथ न लगाऊँ; और जो कोई विचार मेरे मस्तिष्क में आयें उन्हें क्रमिक रूप में निम्न-लिखित शीर्षकों के अन्तर्गत लिखता जाऊँ। (१) नियम, (२) सूचनायें, (३) पर्यवेक्षण। उदाहरणार्थ पर्यवेक्षण के शीर्षक के अन्तर्गत एपिश्का की गायन-प्रणाली पर कुछ लिखूँगा। सूचना-वाले शीर्षक के अन्तर्गत उत्तरी अस्टीनिया और जॉर्जिया के सम्बन्ध में कुछ लिखूँगा, और नियम-वाले शीर्षक के अन्तर्गत यह लिखूँगा कि जब तक वर्त्तमान कार्य न समाप्त कर लूँ, कोई नया काम शुरू न करूँगा।

१५ अक्टूबर—प्रातःकाल थोड़ा लिखा। इसके बाद गोलोनिन* की रचना पढ़ने में बड़ा आनन्द आया। भोजन किया, ताश खेला, और इस प्रकार तीन घण्टे बरबाद किये 'कन्या का कक्ष' समाप्त किया। चाय पी॥ निकोलेंका को एक बड़ा पत्र लिखना आरम्भ किया। कुछ नियम लिखे, और कुछ सूचनायें।

१६ अक्टूबर—प्रातःकाल शीघ्र उठा। गोलोनिन-कृत यात्रा-सम्बन्धी पुस्तक का पाठ किया। फिर कुछ लिखा। भोजन अलेक्सीव के घर किया। फिर गोलोनिन की रचना पढ़ी। फिर कुछ लिखा। तत्पश्चात् स्टैनित्सा के पास टह-लने गया। पाकुङ्का से भेंट की, और घबड़ाहट के साथ उससे

* वी० एम० गोलोनिन एक विख्यात सैनिक और पर्य-टक थे। इनकी 'जापान-यात्रा' विशेष मनोरञ्जक है।

दो बार प्रश्न किया कि क्या वह तम्बाकू नहीं पसन्द करती? यह प्रश्न बिल्कुल मूर्खतापूर्ण था, और उसका मूल कारण यह था कि मैं लज्जा का अनुभव कर रहा था……भोजन के बाद जुआ खेला, फिर पर्यवेक्षण, सूचनायें, विचार और नियम लिखे, किन्तु यह सब काम बहुत शीघ्रतापूर्वक समाप्त किया।

१७ अक्टूबर—प्रातःकाल शीघ्र नहीं उठ सका। कुछ पढ़ा, कुछ लिखा और तत्पश्चात् ताश खेला (मैं यह आदत छोड़ दूँगा, क्योंकि इसमें बहुत-सा समय व्यर्थ गुज़र जाता है)। फिर कुछ पढ़ने के पश्चात् कार्ड खेला, और शाम को बहुत देर तक गप-शप करता रहा। ज़ू अपनी योग्यता दिखाना चाहता था, और बड़ी दृढ़ता के साथ वार्तालाप करता था, किन्तु फिर भी शुद्ध नहीं बोल पाता था।

१८ अक्टूबर—विलम्ब से उठा। एब, एरियानोव और एपिश्का यहाँ आ गये हैं। आधा पृष्ठ लिखा, भोजन के बाद दूसरा अध्याय लिखा। शाम को ताश खेलता रहा। बड़ी बुरी आदत है। मैं सड़क पर टहल रहा था कि किसी क़ज्ज़ाक़ ने कहा—"पंडित! सैनिक!" शायद यह सम्बोधन मेरे लिये नहीं था। किन्तु इससे मुझे बड़ा कष्ट हुआ।

१९ अक्टूबर—पर्यवेक्षण, सूचनाएँ, विचार और नियम लिखे। ग्रोमैन के साथ बाग़ों में टहलने गया, और वहाँ एक ख़रगोश मारा। ग्रोमैन के साथ भोजन किया। इसके बाद

जब हम कार्ड खेल रहे थे, तो सहसा ज़ू मुझे बड़ा मूर्ख लड़का मालूम पड़ा।

ओबरी, जो ग्रोमैन के पास आया है, बड़ा दुष्ट मालूम पड़ा। लिसियम में अपनी पढ़ाई समाप्त करने के बाद वह अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध सिविल-सर्विस से फ़ौजी नौकरी में आ गया। इसका परिणाम, उसकी आत्म-कथा के अनुसार, यह हुआ कि वह चार वर्ष तक उम्मेदवारी करता रहा, और अब अन्ततः फ़ौज से निकाला जाकर न-जाने-क्यों, कार्गली में रहता है। मैंने फ़ेटीसो की उपस्थिति में क़ज्ज़ाकों के सम्बन्ध में बहुत ही कड़े शब्द कहे। 'बाल्यावस्था' का एक अध्याय लिखा। चाय पी, आज की सूचनायें, पर्यवेक्षण, विचार और नियम लिखे। अब लेटने जा रहा हूँ। ईश्वर को धन्यवाद है कि मैं अपने-आपसे सन्तुष्ट हूँ, किन्तु भीतर से शान्त होते हुए भी मुझे कुछ अजीब बेचैनी-सी मालूम पड़ती है। जैसे मुझसे कोई कह रहा हो, कि अब तुम बहुत ही अच्छी अवस्था में हो, किन्तु इस बात को तुम्हारे अतिरिक्त और कोई नहीं जानता।

२० अक्तूबर—आर्सलनख़ाँ भोजन के समय आया और हमारे यहाँ ठहरा। इसका फल यह हुआ कि हम भी कार्य न कर सके। शाम को भोजन के पश्चात् दो घण्टे तक ताश खेलने की बेवक़ूफ़ी की। और आज प्रातः उठने में भी काफ़ी विलम्ब कर दिया। भोजन के समय तक सैमुएल

वारेन ❀ नामक उपन्यासकार की एक रचना पढ़ी। भोजन के पश्चात् शयन किया और जगने के बाद ब्यालू के पूर्व एक अध्याय का संशोधन किया। किन्तु संशोधन अच्छा नहीं हुआ। ब्यालू के पश्चात् 'रोगी' (The Invalide) × पढ़ा, और दो घंटे तक एटलस के सहारे भूगोल का अध्ययन करता रहा। मेरा विचार है, कि युद्ध होगा। अलेक्सीव ने मुझसे कहा है, कि पैदल सेना के उम्मेदवार अफ़सर परीक्षा के लिये बुलाये गये हैं। यह भी कहा जाता है, कि शमिल+ ने ४० हज़ार आदमी इकट्ठे किये हैं, और प्रिंस वोरोन्तसोव पर आक्रमण करना चाहता है।

२२ अक्तूबर—विलम्ब से सोकर उठा। भोजन के समय तक कुछ लिखता रहा, फिर ग्रोमैन के घर गया। वहाँ एक

❀ यहाँ सैमुएल वारेन (१८०७—१८७७) के प्रसिद्ध उपन्यास 'दस हज़ार प्रति वर्ष' (The thousand a Year) से अभिप्राय है।

× सरकारी फ़ौजी अख़बार।

+शामिल (१७९७-१८७६) कॉकेशिया के पहाड़ियों का आध्यात्मिक और राजनैतिक गुरू था। उसने कई वर्ष तक रूसियों का मुक़ाबला किया, और कॉकेशस की आज़ादी क़ायम रक्खी। वह बड़ा चालाक, साहसी, निठुर और प्रभावशाली था, किन्तु १८५९ ई० में गुनीब की पहाड़ी पर प्रिंस बरिया-तिन्सकी ने ससैन्य घेर लिया, और यह पकड़कर कालुगा नगर को लाया गया। वहाँ पर प्रतिष्ठित क़ैदी की भाँति रक्खा गया।

अफ़सर समर्स्क से वापस आया हुआ था। उसने ज़क़ातअली के सम्बन्ध में बहुत-सी मनोरञ्जक बाते बतलाईं। इसके बाद कुछ लिखा; यद्यपि लड़कों के ऊधम के मारे इसमें बड़ी कठिनाई पड़ी। भोजन के बाद फिर ताश खेला। 'बाल्यावस्था' का मुझ पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। मैं कल ही इसे समाप्त कर देना चाहता हूँ। विचार, पर्यवेक्षण और नियम पृथक्-पृथक् लिखने की मेरी धारणा वहुत विलक्षण-सी मालूम पड़ती है।

२३ अक्तूबर—आज बहुत देर से सोकर उठा। मन बड़ा असंतुष्ट था.........कुछ चिन्ता और कुछ आलस्य ने मेरा कार्य रोक दिया। मैंने ज़ुकोवा की कहानी 'नादेनका' (Nadenka) पढ़ी। पहले केवल इतना जानना-ही मेरे लिये पर्याप्त था कि इस कहानी की लेखिका एक स्त्री है; किन्तु पढ़ने की दृष्टि से नहीं, वरन् इसलिये कि पुरुष-जीवन के सम्बन्ध में स्त्री-लेखिका के विचार विलक्षणता से शून्य नहीं रहेंगे, यद्यपि स्त्रियों को इसके विपरीत हम लोगों की अपेक्षा अधिक सुविधायें प्राप्त हैं। 'नादेनका' में वातावरण का वर्णन् बहुत सुन्दर है। वह (लेखिका) हल्के और अनिश्चित रूप में स्वयं इस कहानी में चित्रित की गई है। यह स्पष्ट है कि लेखिका ने किसी विशेष विचार को लेकर यह कहानी नहीं लिखी।

मैंने अपनी 'बाल्यावस्था' की नोट-बुक निकाली, और

इस प्रकार अपना शैथिल्य दूर करने का प्रयत्न किया। और अत्यन्त निराशापूर्वक—जैसे कोई मज़दूर वाध्य होकर एक व्यर्थ काम करने के लिये उद्यत हो—बिल्कुल ही असावधानी, अनिच्छा और सुस्ती के साथ काम कर रहा हूँ।

जब मैं अन्तिम अध्याय समाप्त कर लूँगा, तो आरम्भ से-ही इसे दोहराने, इस पर नोट लिखने, और इसमें आवश्यक परिवर्तन करने की आवश्यकता होगी। परिवर्तन बहुत-कुछ करने होंगे। 'मैं' शब्द बड़ा-ही कमज़ोर है, किन्तु इसकी क्रिया बहुत ही विस्तृत है, पर समय या विचार के दृष्टि-विन्दु से नहीं। उदाहरणार्थ किसी वर्णन् में विगत कार्यवाहियों के चित्रण की शैली अध्यायों के विभाजन के कारण बिल्कुल नष्ट हो जाती है। भोजन के समय और उसके पश्चात् मैंने अपनी अन्यमनस्कता और सुस्ती पर क़ाबू पाने का प्रयत्न नहीं किया। 'नादेनका' समाप्त करने के बाद मैंने फिर 'बाल्यावस्था' में हाथ लगाया, किन्तु इलियस ने मेरे कार्य में बाधा डाली, और उसे भगाने या समय व्यर्थ गँवाने का विचार न रखने के कारण, मैं उसके साथ शिकार खेलने को गया। मैंने फिर 'बाल्यावस्था' हाथ में ली। किसी प्रकार एक अध्याय लिखा। इसके बाद ब्यालू किया, और तत्पश्चात् ताश खेले। शिकार के बाद उत्तर की ओर से घर की तरफ़ आते समय मैं सरकण्डों के छप्परों के उस तरफ़ खड़ी हुई हरित पर्वतमाला के दृश्य से अत्यधिक आकृष्ट हुआ। एक बाग़ में

दो रँगरूट बातें कर रहे थे। उनमें-से एक दूसरे की विनोद-पूर्ण की बात पर हँसना चाहता था। उसकी हँसी ऐसी थी, मानों कोई उसका गला दबाये हुए था, या उसे खाँसी आ रही थी। ऐसी हँसी अवारागर्दों को ही आया करती है। मैंने आज एक पुस्तक में पढ़ा है कि अपने वर्तमान से सन्तुष्ट रहो। इस वाक्य का मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा। अपने जीवन की प्रत्येक घटना पर जब कभी मैंने इस कथन का अनुसरण नहीं किया, उसका चित्रण मेरे मानस-चक्षु के सामने सजीव रूप में हो गया,—और मुझे इस बात से बड़ा आश्चर्य होता है कि मैंने इसका पालन बहुत कम किया है। मेरी नौकरी के ही सम्बन्ध में लीजिये—मैं एक उम्मेदवार मेम्बर होना चाहता था, फिर काउण्ट और एक धनी व्यक्ति बनकर बड़े-बड़ों से सम्बन्ध जोड़ना चाहता था, और इस प्रकार अन्ततः एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनने की अभिलाषा रखता था। यद्यपि मेरे लिये उपयुक्त और सुविधाजनक यही था; यानी एक उम्मेद-वार अफ़सर—सैनिक—बनना। यदि मैं उसी समय यह बात जान पाता, तो कैसा मज़ा आता!—साथ-ही मैं कितनी क्षुब्धताओं से बच जाता! किन्तु उस समय मेरी अवस्था और थी, इसीलिये मैं इस बात को स्पष्टतः नहीं देख सका। उस समय जो उमङ्ग—गर्व, सुस्ती और शिथिलता—मेरे अन्दर थी, उसने मेरे विचार को भिन्न रूप में परिचालित किया।

जब तुम्हें इस बात का दृढ़ विश्वास हो जाय कि किसी

प्रकार का उफान तुम्हारे अन्दर काम नहीं कर रहा है, तभी अपने निर्णय पर विश्वास करो। जिस समय मनुष्य में भावनाओं का उफान नहीं आता, उस समय उसमें बुद्धि का प्राधान्य रहता है। किन्तु जब वह (उफान) मनुष्य पर क़ब्ज़ा कर लेता है, तो उसकी बुद्धि को भी कुण्ठित कर देता है। और इस प्रकार उसके असत् कार्य को और भी भयानक उत्तेजना मिलती है।

२४ अक्तूबर—कल की अपेक्षा शीघ्र सोकर उठा, और अन्तिम अध्याय लिखने की तय्यारी की। अनेक विचारों ने मस्तिष्क में चक्कर लगाया; किन्तु एक अजेय शक्ति ने मुझे इसे समाप्त करने से रोक दिया। जीवन की भाँति लेखन में भी भूत के द्वारा भविष्य का निर्माण होता है। यह बहुत कठिन है कि किसी परित्यक्त कार्य को उत्साह के साथ हाथ में लिया जाय, और उसे भली भाँति समाप्त किया जा सके। मैंने 'बाल्यावस्था' में कई परिवर्तन करने का विचार किया, किन्तु एक भी नहीं कर सका। किसी ख़ाली वक़्त में कुछ नोट लिखकर उसे पुनः लिखना चाहिये। भोजन के समय तक मैं रूस और फ़ान्स के युद्ध (१७९९ ईस्वी)-सम्बन्धी एक आलोचनात्मक ग्रंथ पढ़ता रहा, और भोजन के पश्चात् बिना किसी प्रकार का विचार किये ग्रोमैन के साथ एक पहाड़ी पर शिकार खेलने गया। मौसिम बड़ा सुहावना था। मैं मुग्ध होकर आगे बढ़ता गया। एक ख़र-

गोश मारा और एक गीदड़ का पीछा रात तक करता रह गया। ब्यालू के पश्चात् १२बजे तक ताश खेलता रहा। कितनी शीघ्रता के साथ और कैसी सरलता से आदतें बनती और बिगड़ती हैं; अब नित्य ब्यालू के पश्चात् मुझे ताश खेलने की आदत पड़ गई है।

एक पुस्तक पढ़ते समय, जो विशुद्धतः साहित्यिक हो, लोग लेखक के चरित्र के कारण अधिक आकर्षित होते हैं, होते हैं, जो उसकी रचना में प्रधानतः पाया जाता है। किन्तु ऐसे भी ग्रन्थ हैं, जिनमें लेखक किसी दृष्टि-विन्दु पर अपना प्रभाव डालता है, या कई बार इतने परिवर्तन कर देता है। वे ग्रन्थ सर्व-श्रेष्ठ समझे जाते हैं, जिनमें लेखक अपना मत छिपाकर यथा-स्थल उसे प्रकारान्तर से प्रकट भी कर देता है। सब से अधिक मनोरञ्जन-शून्य पुस्तकें वे गिनी जाती हैं, जिनमें लेखक अपने विचार इतने परिवर्तित रूप में प्रगट करता है, कि अन्ततः उन्हें बिल्कुल खो-ही बैठता है।

*मिलुतिन महाशय की पुस्तक बहुत अच्छे ढंग से लिखी गई है। यद्यपि उसमें चापलूसी की भरमार है, और बहुत-सी ऐसी सम्मतियाँ प्रकट की गई हैं, जो राजकीय सत्ता के सम्मुख प्रायः भीरु लोग साष्टाङ्ग दण्डवतपूर्वक प्रकट

---

*डी० ए० मिलुतिन कृत १७९९ ई० के युद्ध का इतिहास।

किया करते हैं। मैं समझता हूँ कि पॉल प्रथम का वास्तविक चरित्र—विशेषतः उसका राजनैतिक रूप—उच्च एवं वीरता-पूर्ण था। सत्य के रूप में प्रकट की हुई निन्दा चापलूसी से भरी हुई सचाई की अपेक्षा अधिक शीघ्रतापूर्वक ग्राह्य है।

सन् १७९९ ई० में जब मटन की घाटी से सुवोरो पीछे हटा था, तो उसकी यह कार्य्यशीलता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझी गई थी। रोजेन्बर्ग और मिलोराडोइच मसेना के के विरुद्ध थे। रूस के प्रति ऑस्ट्रिया की दुर्भावना का प्रधान कारण सम्राट् फ्रान्सिस का महामन्त्री थुगट था।

२० हज़ार अंग्रेज़ और ८० हज़ार रूसी हॉलेण्ड में एकत्रित हुये थे, जिनका सञ्चालन क्रमशः ड्यूक ऑफ़ यॉर्क और जनरल हर्मन ने किया। फ़्रांसीसी और बटेवियन सेना का अधिनायक ब्रून था।

शत्रुओं के जहाज़ एक-दूसरे को काल के रूप में दीखते थे। पॉल प्रथम का देहान्त सन् १८०१ ई० में जाने के बहुत दिनों बाद—१८३८ ई० में—काज़ी मुल्ला का प्रादुर्भाव हुआ। यह उस समय का ज़िक्र है, जब पोलैण्ड में विद्रोह-भावना जागरित हो चुकी थी। काज़ी मुल्ला का उत्तराधिकारी × हमज़तबैक था।

× ये दोनों कॉकेशस का प्रान्त रूस में मिलाने के विरोधी थे, और इसलिये इन्होंने ससैन्य इसका विरोध किया।

२५ अक्तूबर—प्रातःकाल 'बाल्यावस्था' की प्रतिलिपि देखने के बाद यही निश्चय किया कि इसे फिर से लिखूँ, और फिर से परिवर्तन तथा परिवर्द्धन करूँ। १० बजे के लगभग शिकार को गया, और रात तक दौड़ता फिरा। पत्रिका का अन्तिम अङ्क पढ़ा। आज का सारा दिन चारित्रिक दृष्टि से बड़ा उत्तम रहा। कभी-कभी मैं ऐसे ही दिन व्यतीत करना चाहता हूँ।

जॉर्जियन-मिलिटरी-रोड पर, आर्डन से ४० कोस दूर, आलागीर-नामक कारख़ाना १८ मई सन् १८५३ को खुला। यह कारख़ाना १२ लाख ६० हज़ार पौण्ड सीसा तैयार कर सकेगा, जो अब तक इङ्गलैण्ड से मँगाया जाता रहा है।

मुझे इस बात का खेद है कि बिलियर्ड-मार्कर की पुस्तक बहुत शीघ्र भेज दी। विषय-सूची में परिवर्तन की विशेष आवश्यकता नहीं थी, किन्तु इसका संकलन बहुत ध्यान-पूर्वक नहीं किया गया था।

२६ अक्तूबर—विलम्ब से उठा। थकावट के मारे तमाम बदन में दर्द था। प्रातःकाल काफ़ी लिख लिया। 'बाल्यावस्था' की प्रतिलिपि तैयार करके, उसे क्रम-बद्ध करने लगा, किन्तु खाना शीघ्र तैयार हो गया, इसलिये शीघ्र चला गया। भोजन के पश्चात् कुछ पढ़ा, अलेक्सीव के पास बैठ-कर बातें कीं, जो मुझसे मिलने आया था। काम थोड़ा हो

पाया। मैं शाम तक काम करता रहता, किन्तु ग्रोमैन मेरी प्रतिलिपि तैयार करने के लिये ज़िद करने लगा, अतः उसे प्रसन्न करने के लिये मैंने उससे बोलना शुरू किया, और वह लिखने लगा।

मेरी बीमारी बढ़ती ही जा रही है। यह वही बीमारी मालूम पड़ती है, जो मुझे आरम्भ में हो गयी थी ......।

शरीर, ओज, भावनायें, स्मृतियाँ और समय की स्थिरताएँ जीवन के अस्तित्व की द्योतक हैं। यदि कोई अपने जीवन पर विचार करने में असमर्थ है, तो भला उसको भविष्य में क्या सुख मिल सकता है? ऐसे मनुष्य का वर्णन् मुझे अस्वाभाविक जँचता है, जिसके हृद्गत कुकर्म और सुकर्म में तब तक संघर्ष होता रहता है, जबकि वह कुकर्म कर चुका होता है, या कर रहा होता है। कुकर्म बड़ी-ही सरलता-पूर्वक और अज्ञात रूप में हो जाता है, और कुकर्मकर्त्ता को अपने कार्य पर आश्चर्य और क्षोभ तब होता है, जब वह कुकर्म समाप्त कर चुकता है।

साधारण स्थिति के लोगों का कार्य और उनका एकाकी जीवन हम लोगों की अपेक्षा इतना उच्च है कि हम लोगों को उनकी निन्दा करने का कोई अधिकार नहीं है। यह सच है कि उनमें बुराइयाँ भी हैं, किन्तु जिस प्रकार मृत पुरुषों का गुण-गान ही अच्छा है, उसी प्रकार उनके गुणों की ही प्रशंसा हमें अपनी लेखनी-द्वारा करना चाहिए। तुर्गनेव में यह कमाल

मौजूद है। ग्रीगॉरोविच ने अपनी पुस्तक 'मल्लाह' (Fishers) में इसके विपरीत चित्रण करके अच्छा नहीं किया है। इस अभागी, किन्तु सुयोग्य, जाति की बुराइयों को पढ़ने में कौन दिलचस्पी लेगा ? इनमें बुराइयों की अपेक्षा सद्‌गुण अधिक हैं, और मनुष्य के लिये यह अधिक स्वाभाविक और उचित है कि वह उनके सद्‌गुणों के-ही कारणों पर दृष्टि डालने का प्रयत्न करे।

मैं यह सोचा करता था कि यदि मैं दृढ़ता और यथार्थता के नियमों का पालन कर सकता, तो अपने कार्य का सम्पादन भली-भाँति कर सकता। इन नियमों को बार-बार दोहराने और उनका अनियमित रूप से कभी-कभी अनुसरण कर सकने के कारण, मेरा यह विश्वास हो गया है कि यह सब व्यर्थ है; किन्तु अब मुझे फिर विश्वास हो चला है कि इस प्रकार की चेष्टाएँ बराबर मुर्झाकर और पुनर्जीवित हो-होकर साधारण अवस्था को प्राप्त हो जाती हैं, और जो लोग कभी-कभी अपनी अवस्था का सिंहावलोकन किया करते हैं, वे इससे लाभान्वित होते हैं। यह अभ्यास डालना चाहिये कि प्रत्येक बात यथार्थ रूप में और स्पष्ट लिखी जाय, अन्यथा लेखक अपने विचार की अस्पष्टता और अयथार्थता को छिपाने की चेष्टा करता है; और ऐसा करने में वह अस्वाभाविक वर्णन्, काट-छाँट, और अलंकार की शरण लेता है। आज भोजन के समय पुश्किन के सम्बन्ध में बात-

चीत हुई, और मैं उसकी कठोरता का अर्थ समझने में बिल्कुल असमर्थ रहा। केवल मनोरंजन के कारण मौलिक मानवीय भावनाओं का बलिदान भला कैसे किया जा सकता है ?

स्मरना से जेरुसेलम जाते हुए मार्ग में साइप्रस आता है। यह सेण्ट-जॉर्ज की जन्म-भूमि है।

१८०५ ई० की लड़ाई में, जिसके फल-स्वरूप वियना में सन्धि हुई थी, ख़ास-ख़ास युद्ध-स्थल अल्म, वैग्राम और ऑस्टरलिज़ थे।

किफ़ायत और लालच में बड़ा अन्तर होता है। किफ़ायत केवल मनुष्य की आवश्यकताओं को ही सीमित करती है, और लालच किसी की आवश्यकताओं की पर्वाह न करके सदा प्राप्ति के लिये उन (आवश्यकताओं) को .कुर्बान कर दिया करता है।

डेविड की फ़िलिस्तीन स्त्री के पुत्र का नाम था—अबसालम। उसने अपने पिता के विरुद्ध अस्त्र-प्रयोग किया और उसे फाँसी पर लटका दिया गया। आज मैंने सेरेज़्ा के बारे में बड़ा बुरा स्वप्न देखा है। यह (स्वप्न) किसी द्वन्द्व-युद्ध और कुछ मिठाइयों के सम्बन्ध में था।

२७ अक्तूबर—आज विलम्ब हो गया, और दिन-भर कोई काम नहीं कर सका; क्योंकि 'न्यू व्यू'-पत्रिका पढ़ने में लगा रहा। इस पत्रिका के सम्बन्ध में मैं कोई राय नहीं क़ायम कर सका……। भोजन के पश्चात् मेरी आँखों में

कड़क पैदा हो गयी। जिसके कारण कुछ पढ़ नहीं सका और सिर में दर्द हो जाने पर सो गया।

इपिश्का ने मुझे बताया कि किस प्रकार ग्रीको और लिसेनेविच ने गर्ज़ेल और उचार-हाजी को स्टारीऑक्से से बुलवाया, जिन पर यह सन्देह किया गया था कि वे शत्रुओं के साथ मिल गये हैं। उन्हें यह समझाकर कि उचार-हाजी का काम क़ानून के विरुद्ध था, और उसे गिरफ़्तार कर लेना ही ठीक था, उन्होंने अन्य तातारों को पुनः आश्वासन देना चाहा। परन्तु दरवाज़े पर, जहाँ उन सब के हथियार छीन लिये गये थे, उचार-हाजी ने अपनी आस्तीन में एक कटार छिपा ली थी, और ज्यों-ही उसे अपनी स्थिति का ज्ञान हुआ, तो वह पहले ग्रीको पर झपटा और उसे कटार भोंक-कर फिर लिसेनेविच पर वार किया। वह मुल्ला ख़ासाइव को भी मार गिराने की चेष्टा कर रहा था; परन्तु बेगीचेव ने तलवार का एक ऐसा हाथ मारा कि वह वहीं गिर पड़ा। वहाँ जितने तातार थे, सब मारे गये, जिनमें इपिश्का का मित्र, शिकारी पोराबोरचेव, और कज़्ज़ाक़ दनीला मुख्य थे।

यह याद रखना चाहिये कि परिस्थिति का चक्र बड़ा कठोर होता है। इसका मुक़ाबला करने के लिये दृढ़ता, कार्यशीलता और निश्चय की आवश्यकता है। सब से भयानक शत्रु है—उदासीनता। दुर्बल आत्माएँ सदा विरुद्ध कार्य किया करती हैं।

२८ अक्तूबर-१ नवम्बर—२८ और २९ नवम्बर इसी प्रकार के अप्रिय विचारों से उत्पन्न निरुत्साह-जनक अकर्मण्यता में व्यतीत हुए।.........२९ नवम्बर को मैं शिकार के लिये गया, और दिन-भर इपिश्का से गपशप की, ताश खेला, और शिलर-महोदय का जीवन-चरित्र पढ़ा। यह जीवनी उनकी सालो की लिखी हुई है। इस महापुरुष की जीवनी एक भावुक स्त्री के हाथ से यथार्थ रूप में नहीं लिखी जा सकी; क्योंकि कवि का अधिक सान्निध्य प्राप्त होने के कारण लेखिका ने उसकी जीवनी में बहुत-सी अतिशयोक्तिपूर्ण और घरेलू बातें भर दी हैं, जिससे कवि के वास्तविक महत्व में भी धब्बा लग गया।

३० अक्तूबर—भोजन के बाद ज़ू और ग्रोमैन के साथ घोड़े पर सवार हो खासाव-अर्ट गया।......रात शेल्कोव में काटी, जहाँ ज़ू ने अपने विचारों—जो नीच न होने पर भी उच्च नहीं थे—और अपनी गपशप से मुझ पर अपनी क्षुद्रता और चारित्रिक तुच्छता प्रमाणित कर दी।

३१ अक्तूबर—सारा दिन सड़क पर व्यतीत हुआ। टेमकिच पर हम 'अवसर' की प्रतीक्षा करने लगे।❀ यहाँ मुझे यह समाचार मालूम हुआ कि एक फ़ौजी सिपाही की

❀ 'अवसर की प्रतीक्षा' का आशय यहाँ उस अवसर (मौक़े) से है, जब ख़ास रक्षक-सेना की रक्षा में सैनिक-अफ़सर एक दुर्ग से दूसरे दुर्ग को भेजे जाया करते हैं।

स्त्री ने तैबून नामक यहूदी को अपनी प्रतिष्ठा-रक्षा के लिये अपना भाई सिद्ध कर दिया।

एक सत्तर-साला तातार भिक्षुक ने मुझसे दिल्लगी की और मैंने उसे रोटी और वोदका ❀ दी। वह मेरी दयालुता से इतना प्रभावान्वित हुआ कि जितने समय मैं वहाँ ठहरा, वह सदा मेरी ओर टकटकी बाँधकर कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से देखता रहा, और एक बच्चे की भाँति यह समझने की चेष्टा करने लगा कि मेरी इच्छा क्या है, और वह किस प्रकार मेरी सेवा कर सकता है। उसने हम सब को विश्वास दिलाया कि अभी उसकी अवस्था केवल चालीस वर्ष की है। अन्य अशिक्षित जातियों की तरह तातारी लोगों में भी वृद्धावस्था समादर की वस्तु न रहकर बाध्यतः सस्ती नौकरी करने की चीज़ हो जाती है। स्पार्टा-वालों का चारित्रिक विकास एक महान चीज़ थी।

जब हम खसाव-अर्ट पहुँच रहे थे, हमसे दो गोली के फ़ासले पर एक दर्जन तातार दिखाई दिये, और हमारे वीर काबरडिन × डरने और भागने लगे। गारद में से एक सिपाही ने कहा—"अगर उनमें से कुछ दूसरी दिशा से आ जायँ ?"……कायर कहीं का! उसने सब को कायर बनाना चाहा! शाम को, जैसा कि खसाव-अर्ट में हमेशा होता

❀ एक प्रकार की मदिरा।
× पहाड़ियों की एक जाति।

है, अफ़सरों ने (यह न जानते हुए कि उस 'अवसर की प्रतीक्षा' में मैं भी हूँ) मेरी उपस्थिति में ही कहा कि आज इस प्रतीक्षा करनेवाली सेना पर आक्रमण हुआ था। कल जू ने ऑलिफ़र के सामने अपने सामाजिक शिष्टाचार और भद्रता का प्रदर्शन करके अपनी यह सम्मति प्रकट की कि अलेक्सीव का जाल बड़ा ही अप्रतिष्ठाजनक है—आदि। यह आश्चर्य की बात है कि इस प्रकार के लोग, जो कीचड़ में बढ़ते और शासन की कठोरता में पलते हैं, अपनी ओर न देखकर दूसरों की हँसी उड़ाते हैं और खुद शर्मिन्दा नहीं होते। यह और भी विलक्षण बात है कि जू-जैसे व्यक्ति, जो सभ्यता, विदेशी भाषा, साहित्य और संगीत के बड़े शौक़ीन हैं, अपनी बातचीत द्वारा लोगों पर किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति की अपेक्षा अधिक प्रभाव डाल सकते हैं। मेरे ख़्याल में मुझे यह बात विलक्षण इसलिये जँचती है कि मैं संकीर्ण विचारवाले लोगों के बीच में रहता हूँ। वे एक-दूसरे को समझते हैं। आज सतर्कता-सूचक घण्टी बजाकर हम लोगों को फिर बुलाया गया था। 'कप्तान की कन्या' × पढ़ी, और, शोक! मुझे यह बात स्वीकार करनी पड़ती है कि पुश्किन की शैली पुरानी है; भाषा ही नहीं—वर्णन-शैली भी; यह सच है कि नयी प्रवृत्ति घटनाओं की अपेक्षा भावनाओं की ओर अधिक है। पुश्किन की कहानियाँ बिल्कुल परिधान-हीन मालूम

× पुश्किन की प्रसिद्ध कहानी The Captain's Daughter

पड़ती हैं। गत चार दिनों से मेरे मन में यही विचार उठ रहे हैं, जिन्हें मैं अपनी पॉकेटबुक में लिखता गया हूँ।

अपनी समुचित और अभिव्यक्त इच्छा के अनुकूल चरित्र बनाना एक असम्भव कार्य है। अपने चरित्र और इन्द्रियासक्ति के सम्बन्ध में सदा अपने मन की रखवाली करनी चाहिये। सत्कार्य सब को सुख-दायक होते हैं; किन्तु इन्द्रियासक्ति प्राय: इसे बुरे रूप में देखती है; और उस समय बुद्धि कुण्ठित हो जाती है—इसलिये बुद्धि-शक्ति और इन्द्रियासक्ति में विरोध उठ खड़ा होता है। इस बात को समझ लेना ही बुद्धिमत्ता है।

शिलर ने यह ठीक कहा है कि एकान्त-वास से बुद्धि पर विश्वास नहीं रहता, और वाह्य उत्तेजन--अच्छी पुस्तकें, सुन्दर वार्तालाप—आदि से वर्षों एकान्त-वास की अपेक्षा अधिक मानसिक विकास होता है। संयोग से ही विचारों का प्रादुर्भाव होता है, और उनका विकास तथा उनकी अभिव्यक्ति एकान्त में होती है।

इपिश्का का कहना है कि जो आदमी राह में चलते समय अपने कपड़ों की ओर देखता हुआ जाता है, समझ लो, कि वह सुअर है। कैसा नीचे दर्जे का गर्व और मूर्खता-पूर्ण उसका तर्क है!

शेलकोव से लगभग दो कोस की दूरी पर इर्मोलोव के समय में इवानोव का क़िला बना था। इपिश्का का कथन है

कि यह क़िला इसलिये तोड़ डाला गया कि इसके सम्बन्ध में यह अफ़वाह फैल गयी थी कि इसके अन्दर चालीस गिरजाघर हैं।

'गुइमा एक दरीनुमा छोलदारी से ढका हुआ ख़ेमा है, जिसमें तातार स्त्रियाँ और लड़कियाँ रहती हैं। हमारे धनिक श्रेणी के लोगों की ग़लतियों में से यह भी एक बड़ी भारी ग़लती है, कि हम नये विचारों के अनुकूल बनने में असह्य विलम्ब कर देते हैं। पचीस वर्ष के ऊपर हमारा समस्त जीवन इन विचारों के विपरीत रहता है। किसानों की अवस्था इससे बिल्कुल विपरीत है, जहाँ केवल पन्द्रह वर्ष की अवस्था में लड़का ब्याह दिया जाता है, और वह ख़ुदमुख़्तार बन बैठता है। मुझे किसान लड़कों की स्वतन्त्रता और उनका स्वावलम्बन देखकर आश्चर्य हुआ, जो चतुर होने पर भी हमारी श्रेणी में शून्य से अधिक महत्त्व नहीं पा सकते।

यह एक विलक्षण बात है, कि हम सब इस तथ्य को छिपाते हैं कि हमारे जीवन का प्रधान श्रोत रुपया है। जैसे यह बात बड़ी-ही लज्जाजनक हो! उपन्यास, जीवन-चरित्र या कहानियाँ—कोई भी चीज़ उठा लीजिये—ये सब रुपये के प्रश्न से बचना चाहते हैं, यद्यपि जीवन का एक प्रधान स्वार्थ रुपये से ही हल होता है, और इसी के द्वारा मनुष्य का चरित्र भली भाँति प्रदर्शित होता है।

सुन्दर और प्रतिष्ठित लोगों की एक पृथक् श्रेणी है

(यद्यपि अधिकांश में उनकी प्रतिष्ठा नहीं है, और वे दुर्भाग्य-मय जीवन व्यतीत कर रहे हैं), जो दूसरों के लिये बलिदान होने के अवसर की प्रतीक्षा में रहते हैं—या प्रतिष्ठा-लाभ के लिये ऐसा करना चाहते हैं, और जिनका जीवन-ही वास्तव में तब से आरम्भ होता है, जब उस बलिदान का आरम्भ हो जाता है। कई बार मुझे इस बात पर आश्चर्य और ईर्ष्या हुई है, कि जिनका पठन-पाठन विशेष नहीं है, उनके विचार बड़े-ही पक्के और शुद्ध होते हैं।

जो काम कच्चे मस्विदे के रूप में तैयार कर चुका हूँ, उसका दोहराना, और जितना अंश फ़ालतू है, उसे काट देना—यही पहला काम है।

एक अँग्रेज़-महिला की कहानी पढ़कर मैं लेखिका की सहज-शैली पर मुग्ध हो गया। मेरे अन्दर यह क्षमता नहीं है, और इसकी प्राप्ति के लिये मुझे परिश्रम और पर्यवेक्षण से काम लेना होगा।

सन् १८४६ ई० में शामिल कबारदा की ओर बढ़ा और रूसी वीरों की भाँति निकोविच से लड़ा, जो अपने छः साथियों और दो क़िलेवाली तोपें लेकर मेका के पास टेरक नदी के इस पार आ गया था, और हमले का मुक़ाबला करके अपने १२० आदमियों के प्राण गँवाये, तथा मैदान छोड़कर भाग गया।

आत्म-विश्वास और आत्म-निर्भरता किसी की पदोन्नति

पर निर्भर नहीं होती; यह तो मनुष्य की उस सफलता पर निर्भर होती है, जो उसे उसके चुने हुये मार्ग में मिलती है, चाहे उसका क्षेत्र कैसा ही नगण्य क्यों न हो।

सन् १८४६ ई० में सुलेमान-इफ़िन्दी को शामिल ने घुड़-सवारों की भर्ती करने के लिये भेजा था; १८४७ ई० में जिस समय 'अचकाया' का निर्माण हो रहा था, वह रूस में आया। वोरोनेज़ से, जहाँ वह रहने के लिये भेजा गया था, उसने मक्के के हज के लिये यात्रा की, और वापसी में वह दुश्मनों से जा मिला।

एल्बुर्ज़ की पहाड़ी पर बसनेवाली काराचे-नामक जाति अपनी विश्वस्तता, सौन्दर्य और बहादुरी के लिये प्रसिद्ध है।

१८४८ ई० में प्याटीग़ॉर्स्क में काराचे-राजा की गिरफ़ारी का हुक्म निकला। उसने अपने शत्रु कबारदीन-राजा से बदला ले लिया; किन्तु उस जंगली राजा ने आत्म-समर्पण नहीं किया और अपने चार साथियों के साथ एक बड़ी सेना द्वारा वह मार डाला गया।

मेरी तरह कितने ही ऐसे लोग हैं (जिनका मैं 'रूसी ज़मीदार' ❀ में चित्रण करने की चेष्टा कर रहा हूँ), जो यह समझते हैं, कि उन्हें गर्वपूर्ण भाव प्रदर्शित करना चाहिये।

❀ Teh story of a Russian landlord जिसका नाम बदलकर पीछे Landcord's morning रख दिया गया था।

पर वे जितनी-ही लापर्वाही प्रकट करते हैं, उतने-ही अहङ्कारी जँचते हैं।

मैं प्रायः लिखते-लिखते पुरानी शैली में विचार-प्रदर्शन करने लग जाता हूँ। यह न तो ठीक है, न शुद्ध, और न काव्योपम। किन्तु अधिकांश में उसी प्रकार के विचार मस्तिष्क में चक्कर लगाते हैं; अतः उसी शैली में लिख बैठता हूँ। इस प्रकार का अविचारपूर्ण और चिर-अभ्यस्त विचार-प्रदर्शन, जिसकी अपूर्णता सब जानते हैं, किन्तु जिसे सहन इसलिये करते हैं, कि वह अभ्यास में अधिक आता है, भावी सन्तान को हमारी कुरुचि का प्रमाण देगा। इस प्रकार के विचार-प्रदर्शन का अर्थ है—अवस्थानुकूल चलना, और उनमें संशोधन करने का अर्थ है—अग्रसर होना।

२-३ नवम्बर—दो दिन सुस्ती में बिता दिये। ऑलिफ़र के घर में लोगों के आने-जाने और मेरी बीमारी-सम्बन्धी परेशानी ने मुझे न तो अपने काम से ही विलग किया, और-न दूसरों का पर्यवेक्षण करने से ही मैं वंचित रहा। मैंने चिकित्सा करवाने का निश्चय किया है; यद्यपि डॉक्टर की बातों से मेरे मन में आशापूर्ण भावना कम जागरित होती है।

कल मेरे और कुछ अफ़सरों के बीच पदवियों के सम्बन्ध में विवाद उठ खड़ा हुआ। इस मौक़े पर ज़ू ने बिल्कुल असंयत भाव से मेरी पदवी के प्रति ईर्ष्या प्रकट की। इस समय यह बात सोचकर मेरे गर्व को बड़ा धक्का लगा था कि

मेरी पदवी के लिये उसने मुझे घमण्डी समझा, किन्तु अब मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि इस विषय में उसने कमज़ोरी दिखलायी। बहस के समय दिमाग़ की गर्मी से जो विचार उत्पन्न होते हैं, उन पर विश्वास करना कैसा ख़तरनाक है!

एक और नियम है, सदा अकेले रहना। मैं इस बात की चेष्टा करूँगा कि मैं सदा इस नियम का पालन कर सकूँ।

जब-कभी मैं किसी अपरिचित और नये व्यक्ति से मिलता हूँ, तो मुझे एक दुःख-पूर्ण निराशा का अनुभव होता है। मैं उसे अपने सदृश समझता हूँ, और उसी दर्जे के अनुसार उसका अध्ययन करता हूँ। मुझे सदा के लिये इस बात के विचार का अभ्यस्त हो जाना चाहिए कि मैं औरों की अपेक्षा एक भिन्न आदमी हूँ, और अपनी अल्प अवस्था में औरों की अपेक्षा अधिक अनुभव रखता हूँ;—या मैं उन बेमेल और असंयुक्त स्वभाववालों में से हूँ, जो कभी सन्तुष्ट नहीं होते। मैं अब (अपने से) निम्नतर दर्जे के परिमाण से लोगों की माप करूँगा। इससे मैं ग़लती में कम पड़ूँगा। मैं बहुत दिनों से यही सोच-सोचकर अपने-आपको धोखा देता आया हूँ कि मेरे ऐसे भी मित्र हैं, जो मुझे भली भाँति समझते हैं। बिल्कुल व्यर्थ ख़याल है! आज तक मुझे एक भी ऐसा आदमी नहीं मिला, जो चारित्रिक दृष्टि से मेरी समानता कर सके, और जो यह विश्वास करता हो कि

मैंने सत्कार्य के लिये जीवन की अच्छी-से-अच्छी चीजों को क़ुर्बान कर दिया है।

इस प्रकार मैं एक ऐसे समाज में पड़ गया हूँ, जिसमें मुझे सुख नहीं मिल रहा है। मैं सदा यह समझता हूँ कि मेरे हार्दिक और शुद्धतम विचार भी ग़लत-ही समझे जायँगे, और लोग मेरी प्रवृत्ति से सहानुभूति नहीं रख सकेंगे।

कल डेरे पर गया। यदि मुझे यहाँ एक मास रहना पड़े, तो निश्चय है कि मैं इसका सदुपयोग करूँगा। कल शाम को मेरे मन में सत्य और उपयोगिता के सम्बन्ध में वैसे-ही विचार उत्पन्न हुए, जैसे तिफ़लिस और प्याटीगॉर्स्क में उत्पन्न हुए थे। कोई भी कुकर्म ऐसा नहीं है, जिसमें कुछ-न-कुछ भलाई न हो। कल यह सोचकर कि, मेरी नाक न कट जाय, मुझे चारित्रिक विकास में सहायता मिली। मैं बड़े आत्म-विश्वास के साथ सोचता हूँ कि मैं बड़ा सुयोग्य और सर्व-साधारण का हितचिन्तक बनूँगा! इस आशापूर्ण विचार ने मेरे आत्म-घात-सम्बन्धी विचारों को तुच्छ और लज्जाजनक बना दिया। तो भी, बेइज्ज़ती के डर से आत्म-घात का विचार एक नक़ली विचार है, जिस पर इस्लाइन का दृढ़ विश्वास था और जिसे मैं बिना किसी निश्चय के यों ही के रट लिया करता हूँ; क्योंकि प्रायः ऐसा होता है कि किसी बात के सुन्दर रूप में व्यक्त किये जाने पर उसे लोग साधारणतः कण्ठस्थ कर लिया करते हैं।

चाहे कैसी-ही महत्त्वपूर्ण बात सुनी जाय, उस पर शान्त वातावरण में।भली भाँति विचार किये बिना, और साथ ही अपने विचारों के साथ उसकी सहमति का अनुभव किये बिना कदापि कण्ठस्थ न करना चाहिये।

४ नवम्बर—कल दिन-भर कोई काम नहीं किया, यात्रियों से कुछ गपशप की, और पत्रिका का एक पुराना अङ्क पढ़ा……।

जिस सम्मति के प्रति तुम्हारे मन में आदर नहीं है, उसका मूल्य व्यर्थ-ही मत बढ़ाओ। मैं कहना चाहता हूँ कि ऐसे लोगों की सम्मतियों का कोई मान न करो; जिनके प्रति तुम्हारे मन में आदर नहीं है। किन्तु यह बात भी ग़लत हो सकती है; क्योंकि जिनको तुम तुच्छ दृष्टि से देखते हो, वे भी किसी समय पूर्णतः सुयोग्य सिद्ध हुए हैं। जिस ग़लती से मैं बचना चाहता हूँ, वह है, इस बात की चेष्टा, (जैसाकि अभिमानी लोग किया करते हैं) कि जिन्हें आप दिल से नहीं चाहते, उन्हें चाहने न लग जायँ।

कल कार्ड खेलने के बाद स्टैसुलेविच ने (जो बड़ा योग्य व्यक्ति मालूम होता है) अपने दुर्भाग्य की गाथा सुनायी।

मेटेखो जेल में लाइन के तीन सिपाही इसलिये क़ैद हैं, कि उनपर ख़ून करने और डाक लूट लेने का अपराध है। इस मामले से जॉर्जिया के राजकुमार अमेलेखवारो और इरेस्टा का भी सम्बन्ध था—साथ-ही इस मामले में कुछ इमरीशि-

यनों का भी हाथ था। सिपाहियों ने, जिनका पत्र-व्यवहार अमेलेखवारों से था, उसे बतलाया था कि उन्होंने शहर में २५,००० रूबल छिपा रक्खे हैं, और यदि वे छोड़ दिये जायँ, तो वह रक़म उसे सौंप सकते हैं। अमेलेखवारों ने गारद-अफ़सर ज़ागोबेल को लिखा कि वह अपने कुछ विश्वस्त इमरीशियनों को सिपाहियों के साथ भेजेगा, जो उनको जीवित या मृत अवस्था में, जैसे होगा, लायेंगे। ज़ागोबेल ने स्वीकार कर लिया। रात को छः अपराधी छोड़ दिये गये, जिन्होंने कुछ मुसाफ़िरों को लूटा-मारा और ५५०० रूबल की रक़म लेकर वापस आ गये। यह रक़म उन्होंने अमेलेखवारों और ज़ागोबेल में यह कहकर बाँट दी कि उन्हें छिपा हुआ सारा ख़ज़ाना नहीं मिल सका, इसलिये इतना-ही ला पाये हैं। ज़ागोबेल ने उन्हें उसी दिन फिर छोड़कर शेष धन लाने को कहा। उसी दिन टैसुलेविच का पहरा आरम्भ हुआ। "मेरा विवाह अभी हाल में ही हुआ हैं," उसने मुझसे कहा— "और कुल दो महीने से ही मैंने गारद का काम आरम्भ किया है।" जब मैं ज़ागोबेल के पास गया और उससे कहा पहरा मुझे सौंप दिया जाय तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह बड़ा-ही निस्तेज होकर घबरा उठा—उसने प्रकट किया कि वह ज्वर से पीड़ित है; यद्यपि मुझे बाद में मालूम हुआ, वास्तविक कारण कुछ और-ही था। सुबह पाँच बजे जब मैं पहुँचा, तो छूटे हुए क़ैदी अभी

तक नहीं लौटे थे, और जिस समय मैं निरीक्षण आरम्भ कर रहा था, उसी समय उन्हें पीछे के दरवाज़े से अन्दर लाया गया।

"क़ैदियों का निरीक्षण करने पर मैंने देखा कि उनमें से दो शराब के नशे में हैं। मैंने उनकी तलाशी लेने का हुक्म दिया। उनके पास रेतियाँ और शराब की बोतलें-आदि बरामद हुईं। मैंने गारद का काम सँभाल लिया। प्रिंस अमे-लेखवारो ग़ैर-कमीशनी अफ़सर सेमेनो से मिला और उससे प्रार्थना की कि वह उस रात को भी क़ैदियों को बाहर जाने दे; किन्तु चूँकि मैं रात-भर नहीं सोया था, मैंने ऐन उसी वक़्त उस (अलेखवारो) को बुला भेजा, जब वह पिछले दर-वाज़े से (जिसकी कुंजी उसी के पास थी) क़ैदियों को निकालने जा रहा था,—अतः उस रात वह अपने विचार को कार्य-रूप में परिणत नहीं कर सका। दूसरी रात जब मैं सो रहा था, क़ैदियों को जॉर्जियन पोशाक पहनाकर निकाल दिया गया, और वे क़र्ज़ानों के घर, उसके अर्दली को रिश्वत देकर, वह रुपये चुराने के लिये गये, जो क़र्ज़ानों को पहले दिन सिपाहियों का वेतन चुकाने के लिये मिला था। चोरी में सफलता नहीं हुई, और मालिक-मकान को पता लग गया, जल्दी में भागते समय एक क़ैदी की टोपी और बोरी वहीं छूट गयी।

"मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता था; किन्तु जब मैं

अपने उत्तराधिकारी को चार्ज दे रहा था तो मैंने देखा कि जिन क़ैदियों को मैंने पहले शराब के नशे में देखा था, वह आज भी नशे में चूर थे।

"दूसरे-दिन मैं गिरफ़्तार हो गया। जो बोरी चोरी के घटना-स्थल पर पायी गयी थी, उसके सम्बन्ध में सेना में तहक़ीक़ात हुई, तो मालूम हुआ कि वह संत्री-पलटन की बोरी है। सेमेनेव से पूछा जाने पर उसने कहा कि क़ैदी मेरी (टॉल्सटॉय की) स्वीकृति से छोड़े गये थे। मैं दो मास तक सेनाध्यक्ष के घर में गुप्त रूप से क़ैद रक्खा गया।

"मैं विचार के लिये पेश किया गया; और इसके लिये एक विशेष कमीशन की नियुक्ति हुई। कमीशन ने मुझे गारद की ड्यूटी में असावधानी प्रदर्शित करने का अपराधी ठहराया; किन्तु क़ैदियों के निकल जाने के अपराध में न तो वह मुझे बरी हो कर सका, न मुझ पर वह अपराध प्रमाणित कर सका; क्योंकि क़ैदियों ने कोई भी बयान नहीं दिया। सिपाहियों ने यही कहा कि उन्होंने हुक्म पाने पर क़ैदियों को छोड़ा। किन्तु हुक्म सेमेनेव ने ही टॉल्सटॉय के नाम पर दिया था। और सीधे टॉल्सटॉय ने उन्हें कोई हुक्म नहीं दिया। सेमेनेव सारा अपराध मेरे सिर थोपने की चेष्टा करता रहा। मुझे तरक्क़ी का समय आने तक तनज्जुली की सज़ा दी गयी; किन्तु मुझसे मेरी सरदारी नहीं छीनी गयी, और मेरा पद पूर्ववत क़ायम रहा। मैंने

सज़ा क़बूल की। वाइसराय के विचार में स्थानापन्न वाइस-राय जनरल वुल्फ़ और कमाण्डेण्ट इस मामले में विशेष रूप से उत्तरदायी हैं, अर्थात् इस मामले का यह रूप हुआ कि कम्पनी-कमाण्डर (सेनाध्यक्ष) की असावधानी और पेट्रोल-अफ़सर की सुस्ती (जिसका दस्तख़त प्रायः हम लोग स्वयं कर लिया करते थे) इसकी ज़िम्मेदार बनायी गयी। कमीशन का फ़ैसला उन्होंने सम्राट् की सही के लिये भेज दिया।

"इसी समय धर्माध्यक्ष को, जिसे अपराधियों से उन का क़सूर स्वीकार करवाने का काम सौंपा गया था, मालूम हो गया कि ज़ागोबेल ने उन (क़ैदियों) को पहले-ही निकाल दिया था। ज़ागोबेल ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया, और वह तुरन्त गिरफ़ार कर लिया गया। अब एक नई तहक़ीक़ात शुरू हो गयी। मैं ने अपना मामला ज़ागोबेल के मामले से अलग रखने और अपने बहाल होने के लिये प्रार्थना की। वाइसराय ने प्रार्थना स्वीकार कर ली, और मैं नौकरी पर वापिस भेजा गया।"

वह अपराधी है या नहीं ?—ईश्वर जानें; किन्तु जब उसने मुझसे अपनी और अपनी स्त्री की दुःख-गाथा सुनायी; तो मैं बड़ी कठनाई से अपने आँसू रोक सका। ११ अगस्त के हमले के बाद जब वह फ़ौज में गया तो वुल्फ़ ने उसे क्रॉस (पदक) देने से इन्कार कर

दिया, और उस (ज़ागोबेल) को मालूम हो गया कि क़ैदियों को बाहर निकालकर उसने घोर पाप किया है, और अब वह सरदारी के पद का अधिकारी नहीं रहा है। इसी बीच ज़ागोबेल का मामला समाप्त कर दिया गया, और सज़ा के फल-स्वरूप उसकी बदली फ़ौज में होगयी।

जिस हुक्म के अनुसार वाइसराय ने अपने स्थानापन्न जनरल वुल्फ़ को अपराधी पाया था, उससे स्वयं वाइसराय को ज़ागोबेल के मामले में फँसना पड़ता था; क्योंकि जब पहले-पहल क़ैदियों को छोड़ा गया था, तो राजकुमार भी वहाँ मौजूद थे। इसी कारण ज़ागोबेल का मामला दबा दिया गया।

"मैंने दरख़्वास्त दी है" स्टैसुलेविच ने कहा—"कि मेरे मामले पर पुनर्विचार किया जाय; क्योंकि मेरी सहमति और सम्राट् के नाम प्रार्थना-पत्र देने से बचने की चेष्टा एक भिन्न बात पर निर्भर थी। मुझसे कहा गया कि मझे ऐसा प्रार्थना-पत्र भेजने का अधिकार नहीं है; बल्कि मैं जो-कुछ कहूँ, उस पर से सेनानायक एक रिपोर्ट तैयार करे। किन्तु हमारा सेनानायक गॉरयानीनो इस प्रकार के झंझटों से बचना चाहता था; और ऐसा डरपोक आदमी था कि छः मास हो गये, उसने इस प्रकार की कोई भी लिखा-पढ़ी नहीं की।"

कुछ ऐसी आकृतियाँ हैं,—विशेषतः पैनी आँखों, चौड़े और पसीने-युक्त गम्भीर मुख-मण्डल-वाली सूरतें, जो लगातार

उकसाये जाने पर अपनी मुख-मुद्रा ऐसी बना लेते हैं, जिससे उनका पहचानना कठिन हो जाता है।

पहाड़ के उस-पार अल्बुर्ज़ के पीछे अबखाज़िया है। यहाँ की आबादी ३०,००० है। यहाँ मुख्य स्थान हैं, सुखमकेल और बैम्बॉरी। इसका शासक सुब-सू में रहता है। अबखाज़िया-वाले ईसाई धर्म को मानते हैं।

आज सुबह मेरे दाँतों में दर्द था, जिसके कारण मैं न तो भली भाँति सो सका, न तड़के उठकर कुछ काम ही कर सका! 'बाल्यावस्था' की कुछ पाण्डु-लिपि दुहराई, किन्तु कुछ संशोधन के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सका। मूर को एक पत्र लिखा, बहुत-से आगन्तुकों से गपशप की, 'अरागो'-नामक पुस्तक पढ़ी और तब तक ताश खेलता रहा, जब तक कि सब-के-सब मुझे अकेला छोड़कर आक्रमण पर नहीं चले गये।

शाम को अक्शेवस्की, जिसे मैंने 'बाल्यावस्था' की नक़ल करने के लिये बुला रक्खा था, अपना पद्यात्मक नाटक लेकर आया, जो उसकी एक विलक्षण और अर्थ-शून्य कृति थी। उसने अपनी रामकहानी भी मुझे सुनायी, किन्तु बड़ी घबराहट के साथ। यह व्यक्ति राजनीतिक अपराधी के योग्य न होकर करुणा का पात्र अवश्य है।

जिस समय कोई व्यक्ति बिना किसी विशेष कारण के

घबरा जाता है, तभी वह किसी दुखिया की अवस्था का क्रियात्मक अनुभव करता है।

मैंने पूर्णतः निश्चय कर लिया है कि मुझे ख्याति प्राप्त करनी चाहिये। इस बात से भी मुझे कुछ दुःख ही होता है। मुझे दृढ़ निश्चय हो गया है कि आवश्यकता केवल इस बात की है कि मेरे अन्दर जो शक्तियाँ हैं, उनका मैं उपयोग कर सकूँ। स्वप्नों में मैंने कई बार तातारी आक्रमण देखे हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह किसी बात का पेशख़ेमा है।

पहाड़ पर रूसियों की स्थिति तीन प्रकार की है:—

(१) व्यक्तिगत भूस्वामियों की गुलामी करनेवाले, (२) वेदेनो ❀ के निर्माण में शिल्पकारी का काम करने-वाले, और (३) भगोड़, जो इन सब से अलग रहते हैं।

६ नवम्बर—मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है, किन्तु चारि-त्रिक दृष्टि से मेरा पतन हुआ है। दिन-भर न तो कुछ विचार कर सका, न कोई पर्यवेक्षण ही किया यद्यपि 'अरोगो' पढ़ने और 'बाल्यावस्था' का संशोधन करने में काफ़ी समय लग गया; जिसकी नक़ल अक्शेवस्की कर रहा है। अन्य लोग भी एक निष्फल आक्रमण के बाद वापस लौट आये हैं।

७-१५ नवम्बर—अक्शेवस्की को 'बाल्यावस्था' की आधी प्रतिलिपि नक़ल करने के लिये दी। सोकोनिन से ४२ रूबल हार गया और खसाव-अर्ट को दस रूबल के क़र्ज़ में छोड़ा।

❀ शामिल का प्रधान सुख-निवास।

वहाँ आगन्तुकों के मारे मुझे दम लेने की फ़ुर्सत नहीं मिली, यहाँ तक कि मैं बिल्कुल घबरा गया। मैं उस चतुर्दश-वर्षीया लड़की को बहुत चाहता हूँ, जो मकान-मालकिन के घर का काम करती है। इन दिनों मैंने मुश्किल से कोई काम किया है। स्टारोग्लैडोस्क आने पर मैं एक बार शिकार के लिये गया।··· इपिश्का और ऑलिफ़र के साथ गपशप की। ऑलिफ़र को मैं बिल्कुल नहीं चाहता। मैंने उससे २५ रूबल उधार लिये थे। आज सुबह मैंने एक ऐसा बुरा काम कर डाला कि उससे मेरे होश उड़ गये। गोर्शाका के पास से एक कृपा-पूर्ण पत्र और एक नोटिस भी आया, जिससे मालूम हुआ कि मेरे क़ाग़ज़ात हेरल्ड ऑफ़िस में रोक लिये गये हैं। 'अरागो' का यात्रा-विवरण मुझे बिल्कुल नहीं पसन्द आया। उसमें फ़्रान्सीसी आत्म-विश्वास, वैज्ञानिक और चारित्रिक दोनों-ही दृष्टियों से, भरा है। इसके अतिरिक्त उसने इस बात के बतलाने के लिये बहुत अधिक लिख डाला है कि उन्होंने यह पुस्तक क्यों लिखी है, और प्रत्येक लेखक को कोई बात क्रियात्मक रूप में न करके पुस्तक के रूप में क्यों लिखनी चाहिये।

अँतड़ी का अर्थ है, पेट का अन्तर्भाग।

'आस्तीन पकड़कर किसी का कोट खींचना,' एक वाक्य है, जिसे सैनिक उस अवस्था में इस्तेमाल करते हैं, जब कोई शराब के नशे में होता है। इसका व्यवहार रूसियों की

वोद्का-नामक हल्के नशे की शराब के लिये विशेष रूप में होता है।

जिब्राल्टर का मुहाना सोलहवीं सदी में स्पेन-निवासियों के हाथ से अँग्रेज़ों के क़ब्ज़े में आगया था। ⊛ अफ़्रीका की पश्चिमोत्तर सीमा में स्थित एक द्वीप में टेनेरिफ़-नामक पर्वत स्थित है। ब्रेज़िल के स्वतन्त्र स्पेनिश उपनिवेश की राजधानी का नाम रिवो-डी-जेनीरो है। केप-ऑफ़ गुड होप (उत्तमाशा अन्तरीप) समुद्र-तट पर स्थित एक अंग्रेज़ी उपनिवेश है, जिसमें स्वतन्त्र जंगली जातियाँ बसती हैं। उपनिवेश के पास ही टेबुल माउण्टेन (मेज़नुमा, या चौरस पर्वत) है।

ऐसे दो आदमियों की हँसी, जो परस्पर पृथक् बातें कर रहे हों, भीड़ या जमघट की हँसी की अपेक्षा अधिक सच्ची और आकर्षक होती है। किसी की विशेष इच्छा के निश्चय को प्रत्येक बात के लिये नियम बना लेना ज़्यादती है, किन्तु किन्हीं अवस्थाओं में ये निश्चय आवश्यक हो जाते हैं।

ताश को हाथ से नहीं छूना चाहिये। जुए की ओर आँख उठाकर देखना भी नहीं चाहिए।

ऐसे भी विचार हैं, जिनकी क्रियात्मक रूप में परिणति बिल्कुल भिन्न बात हो जाती है। इसलिये ऐसे विचारों का

⊛ यह लिखने की ग़लती मालूम होती है, क्योंकि उल्लिखित घटना अठारहवीं शताब्दी की है।

व्यक्त करना जितना-ही साधारण होता है, उतना-ही उससे मस्तिष्क और हृदय के लिये ख़ूराक मिलती है, और उनका गहरा असर पड़ता है। मैंने जो प्रार्थनाएँ संगृहीत की हैं, उन सभी के बदले में केवल भगवत्प्रार्थना का रखना पसन्द करूँगा। मैं भगवान् से जो-कोई प्रार्थना कर सकता हूँ, वह स्वर्गीय शब्दों से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

विचारों को सार-रूप में रखना मनुष्य की मानसिक क्रियाशीलता की कतिपय अवस्थाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इस क्रियाशीलता में बाधा न डालकर उसी पर चित्त एकाग्र कर देना चाहिये, और उस अवस्था को स्मृति-पटल पर चित्रित कर देना चाहिए। कुछ ऐसे विचार हैं, जो मनुष्य के मस्तिष्क में होकर अज्ञात रूप में गुज़र जाते हैं, किन्तु कुछ विचार हैं, जो मस्तिष्क पर एक गहरी लकीर खींच जाते हैं,—यहाँ तक कि मनुष्य कभी-कभी अनिच्छापूर्वक उन्हें पकड़ने की चेष्टा करता है। (जैसे कि मैं इन बातों को लिख रहा हूँ) कभी-कभी मैं मूल विचारों को भूल जाता हूँ, किन्तु उन (विचारों) के जो चिन्ह बन चुके होते हैं, वे क़ायम रहते हैं, और मैं समझता हूँ कि कई महत्त्वपूर्ण विचार मेरे मस्तिष्क से गुज़र चुके होते हैं।

सर्व-साधारण के मिलने-जुलने में अधिक-से-अधिक सुख-संचार करना नम्रता का ख़ास नियम है।

खेरसन प्रान्त का बोरीस्लाव-नामक शहर ज़ैमोरोज़ियन कॉसेक्स की राजधानी थी।

मैंने कभी किसी पर प्रेम प्रकट नहीं किया, किन्तु उस भयानक कुकृत्य को याद करके, जिसे नक़ली हँसी के साथ मैंने उन लोगों पर प्रकट किया, जिन्होंने मुझे आकर्षित किया है, मेरा मुख लज्जा से झुक जाता है। हमारे आज-कल के उपन्यासों में ऐसे-ही वार्तालाप पढ़ने को मिलते हैं। मुझे इस बात को भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि सुस्ती और जीवन-की अनियमियता न-केवल क्रियात्मक मामलों में ही हानिकारक है, वरन् यह मेरे लिये बड़ी भयानक चीज़ सिद्ध हो सकती है, जिसका अनुभव मुझे आज हुआ है। मैं बहुत कमज़ोर हूँ। मुझे सुस्ती और अनियमितता से वैसे-ही डरना चाहिए, जैसे ताश से। इपिश्का से वार्तालाप करते समय निम्न-लिखित बातों की ओर मेरा ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ:—

किस प्रकार एक आँख के काने जादूगर मिनका ने उन थके हुए जानवरों को मारा, जिन्हें शैतान ने पहाड़ों से खींच-कर उसकी ओर कर दिया था। कुछ चेचनों के मिल जाने पर किस प्रकार वह आइवन आइवनिच के साथ झाड़ियों में छिप गया, और किस प्रकार बाद में उस बुड्ढों से घिरे हुए एक गोलाकार मण्डल के अन्दर बैठना पड़ा, जिन्होंने जादू-

गर को झिड़ककर कहना शुरू किया कि—"मिनका ! यह बड़ी बुरी बात है, छोड़ो इसे"—आदि।

इसके अतिरिक्त 'एक दुःख-कहानी' के बाद दो और कहानियाँ, जिनमें यह वर्णन था कि वह (इपिश्का) ऑक्से से अपने दोस्त के साथ एक चेचन की शादी में शामिल होने के लिये किस प्रकार गया, सुनायी, और अपने साले का संरक्षण होते हुए भी वह डर गया, और उसे देखते ही सब आश्चर्य-चकित हो, यह कहकर चिल्ला उठे—"ओहो ! छोटा कॉसेक आ गया !" इसके बाद वह कथा सुनाई कि किस प्रकार एक रात को शिकार में उस (इपिश्का) ने इलिन के नौकर को पीट दिया और दौड़कर अपने साथियों को बुला लाया, तथा उन सब के समक्ष उस नौकर से क्षमा माँगी। तदुपरान्त कैसे सड़क पर एक तातारी गाड़ी पर, जिसमें बड़ी कठिनाई के साथ उन्होंने उसे रक्खा था, उसका शरीरान्त हो गया, और बाद में किस प्रकार वह अपनी बन्दूक़ इलिन को देकर उसके पैरों पर गिर पड़ा, और बाद में जब वह (इपिश्का) लौटकर घर आया, तो देखता क्या है कि उसकी पत्नी घर पर स्त्रियों का नाच करवा रही है। किस प्रकार उसने अपनी स्त्री से कुल कथा सुनाई और सुनते-ही स्त्रियाँ घर से भाग गयीं,—यह सब हाल कह सुनाया।

१५ नवम्बर—प्रातःकाल शीघ्र उठकर लिखने को बैठा। किन्तु विचारों का प्राचुर्य्य होते हुए भी बहुत कम लिख सका।

भोजन के बाद दुरतिक्रमणीय ऑलिफ़र के साथ चौपड़ खेली। घर पर कुछ पढ़ा, और………शाम को नोरिंग के लिए खाना तैयार कराया। मुझे आश्चर्य है कि इस आदमी से मुझे इतनी घृणा क्यों है। यद्यपि हमने एक-दूसरे को बह-काया, किन्तु एक अफ़सर की सारी चारित्रिक त्रुटियाँ, सुस्त और अविवाहित जीवन व्यतीत करने में प्रकट हो जाती हैं।

एक समय था, जब मेरे अन्दर चैतन्यता इतनी अधिक जागरित हुई थी कि उसने विवेक का द्वार बन्द कर दिया था, जिससे मैं सिवा इसके और कुछ नहीं सोच पाता था कि "मैं क्या सोच रहा हूँ ?"

मुझे बहुधा आश्चर्य हुआ करता है कि लोग अपनी बातों से, केवल शब्द-मात्र से, जिनमें विचार का अभाव होता है, आन्तरिक तुष्टि किस प्रकार प्राप्त किया करते हैं। कदाचित् विकास की किसी ख़ास अवस्था में मस्तिष्क शब्दों से-ही उसी प्रकार तुष्टि का अनुभव करने लगता है, जिस प्रकार उच्च अवस्था प्राप्त करने पर विचारों से मनस्तुष्टि होती है। इपिश्का का कथन है कि बुद्धिमत्तापूर्वक बोलने के लिये पहले क्षण-भर चुपचाप सोच लेना चाहिये।

१८-१९ नवम्बर—कल उठा तो शीघ्र, पर लिख थोड़ा सका; 'कन्या का कक्ष' और 'बाल्यावस्था' के दो अध्याय, जिनमें मैं अन्तिम संशोधन नहीं कर सका था, अभी तक अधूरे पड़े थे। इन्हीं के लिये मुझे रुकना पड़ा। भोजन

करने के बाद चौपड़ खेला। इस खेल में यद्यपि मैं पूर्णतः असफल रहा, परन्तु फिर भी मन में गर्व ज़रूर रहा……।

विलम्ब से उठा। ख़ूब सुन्दरतापूर्वक और परिश्रम के साथ लिखा, जिससे 'कन्या का कक्ष' और 'बाल्यावस्था' समाप्त कर दिया; किन्तु इनकी साफ़ नक़ल नहीं तैयार कर सका। शाम को कोचेटोक्सी आया और उसने सुलीमोस्की की शिकायत की। मैंने करमज़ीन का इतिहास मँगवाया और उसके कुछ अंश पढ़े। भाषा बड़ी सुन्दर है। भूमिका पढ़कर मेरे मन में अनेक सुविचार उत्पन्न हुए। आज मैंने अलेश्का को मारा। यद्यपि क़सूर उसी का था; परन्तु क्रोधावेश में बह जाने के कारण मैं अपने-आपसे असन्तुष्ट हूँ। कोलम्बस ने ओरीनोको के मुहाने पर पहुँचकर यह सोचा था कि वह एशिया के पश्चिमी तट पर पहुँच गया। इसी से ईस्ट-इण्डिया और वेस्ट इण्डिया के नाम पड़े।

तम्बाकू का पता १४९८ ई० में लगा था, और आज यह सारे संसार में ३७ करोड़ ४० लाख पौण्ड वार्षिक के परिमाण में इस्तेमाल में आता है।

टेरक-नगर की स्थापना आइवन टेरिबुल ने अपने श्वसुर चरकासियन-राजा की रक्षा के लिये की थी।

कॉसेक्स लोग बन्दूक़ को स्त्री-लिंग मानते हैं, और उसे बड़े प्यार की चीज़ समझते हैं। कैथेराइन के समय में लोग सैनिकों को 'माँ की सन्तान' कहा करते थे। इसी प्रकार

ख़ास-ख़ास चीज़ों के नाम आदमी, जानवर और अन्य वस्तुओं के नाम पर रक्खे जाते थे।

इपिश्का ने मुझे टेरक नदी की कृत्रिम वृद्धि का इतिहास सुनाया। यह नदी धीरे-धीरे गहरी होती रही, और अपना मार्ग पहाड़ की ओर से बदलकर अपेक्षाकृत कोमल भूमि की ओर आगयी, तथा दिन-पर-दिन चौड़ी होती गयी।

उसने मुझे एक गाना सुनाया, जो बहुत प्यारा मालूम हुआ। उसका सारांश निम्न-लिखित है:—

"कीव प्रसिद्ध नगर में प्रिंस व्लादीमीर के साथ एक सुन्दर बालिका रहती थी। उसने ईश्वर के सम्मुख गम्भीर पाप किये। आख़िर उस रूपवती किशोरी के एक बच्चा पैदा हुआ, जो आगे चलकर महान् अलेग्ज़ैण्डर के नाम से प्रख्यात हुआ। इस लज्जाजनक व्यापार के कारण बालिका ने शहर छोड़ दिया। वह सड़क या पगडण्डी से न चलकर एक जानवर के पद-चिह्न के सहारे चलने लगी। अन्ततः उस मनोरम तरुणी की भेंट एक वीर युवक इलिया मुरोमेत्स से हुई, और वह (मुरोमेत्स) उस सुन्दरी से गम्भीरतापूर्वक यह प्रश्न करने लगा कि 'हे सुन्दरी! तू किस जाति या परिवार की लड़की है?' 'मैं साधारण लड़की नहीं हूँ;—एक वीर की पुत्री हूँ।' लड़की ने उत्तर दिया...... ।"

कभी-कभी ऐसा होता है कि जिस समय आश्चर्य का कोई कारण विद्यमान नहीं होता, उस समय भी किसी-किसी के चेहरे पर सहसा आश्चर्य के भाव व्यक्त होते हैं ('कंसर्ट' के एक अध्याय से ।)

किसी ने इपिश्का से कह दिया कि मैंने अपने एक ग़ुलाम को ज़बर्दस्ती सेना में इसलिये भर्ती करवा दिया है कि उसने मेरे एक कुत्ते को मार डाला था। इस प्रकार के भयानक अभियोग से मेरे मन में बड़े उच्च विचार उत्पन्न हुआ करते हैं, और मैं इस बात का अनुभव करता हूँ कि सत्कार्य ही प्रसन्नता की जड़ है। यदि कोई जीवन में एक बार भी कोई अन्य ढङ्ग इख़्तियार करेगा, तो इस प्रकार के अभियोग उसकी सारी प्रसन्नता का नाश कर देंगे।

कुछ लोग अपनी भूत या भावी जीवन-सरणि की प्रशंसा की चेष्टा में वर्तमान को भूल जाते हैं। यह आनन्द-मय जीवन में सर्वोपरि बाधा है, इसलिये कि इससे भविष्य में बहुत-कुछ प्राप्त होने की प्रसन्नता छुपी होती है; जबकि वास्तविक आनन्द के लिये, जो आन्तरिक आत्म-तुष्टि से प्राप्त होता है, भविष्य कुछ नहीं देता, और भूत सब-कुछ देता है।

मनुष्य की उम्र जितनी-ही कम होती है, उतना-ही वह भलाई में कम विश्वास करता है, यद्यपि कुकर्म के लिये उस के हृदय में सहज ही में विश्वास उत्पन्न होजाता है।

मनुष्य के शरीर का गुरुत्व जल के गुरुत्व की अपेक्षा अधिक है। जो हवा जीवित मनुष्य के शरीर को भरती है, वह इस अन्तर की पूर्ति करती है; इस प्रकार जीवित मनुष्य का गुरुत्व जल के गुरुत्व के लगभग बराबर ही है। जब जल में डूबे हुए किसी मनुष्य की पाकस्थली फटती है, तो उस मनुष्य के शरीर में व्याप्त वायु उस स्थान को भर लेता है, और इस प्रकार शरीर पानी की सतह पर तैरने लगता है।

यह सब वाहियात बातें हैं; मैं अभी तक डूबे हुए मनुष्य का शरीर उतरा आने का रहस्य नहीं समझ सका हूँ।

१४-२२ नवम्बर—मैं समझता हूँ कि तारीखें लिखने में मैंने भारी भूल की है, क्योंकि मुझे निश्चित रूप से याद नहीं है कि गत चार दिनों से मैंने क्या-क्या काम किये हैं। २० नवम्बर को घोड़ों पर सवार हो, किज़ल्यार गया। वहाँ बाराश्किन के पास एक कुत्ता मिलने की सम्भावना थी। उसे बहुत-कुछ गालियाँ सुनाकर मैंने अपना काम पूरा किया। किज़ल्यार को न तो मैं अपने साथ रुपये ले गया था, न नौकर या कोई सामान; फिर भी मेरी तबियत प्रसन्न थी, और ऐसी अवस्थाओं में जो तबियत ख़राब होजाया करती है, उसकी शिकायत नहीं रह गयी। दो दिन पहले खास्तातो मुझसे मिलने आया था, जिसमें मैंने चेष्टा करने पर भी कोई विशेषता नहीं पायी। उसके अन्दर केवल एक बात है, और वह यह कि वह मूर्ख नहीं है, और मिलनसार आदमी है।

रात को बहुत विलम्ब तक मैं उससे मॉस्को के सम्बन्ध में गप-शप करता रहा। कुछ उद्दण्डता-प्रदर्शन भी किया। उस से ज़ू के लिये रुपया और दो अध्यायों का मसाला मिला।

कल स्नान करके लौटा, और यद्यपि मैं बहुत थक गया था, फिर भी ऑलिफ़र के पास जाकर बहुत रात व्यतीत होने तक विचारोत्पादक विषयों पर बातें करता रहा। मुझे मालूम होता है कि वह मेरा बड़ा सम्मान करता है, जो पारस्परिक प्रशंसा के मतलब से नहीं, वरन् वास्तविक मालूम पड़ता है। सेरेज़ा के पास से एक संक्षिप्त-सा पत्र आया, जिसमें उसने लिखा है कि १५० रूबल भेजे गये हैं, किन्तु यह रक़म मुझे अभी तक मिली नहीं है।

उन कॉसेक्सों की भूमि की ७ लाख या इससे भी अधिक जन-संख्या है। उसका क्षेत्रफल २४०० वर्ग-मील है। ग़ुलाम-जाति के लोग अधिकांशतः मिउक्स और डोनेत्ज़ ज़िलों में बसे हैं। मेरे प्रधान अवगुणों में एक अत्यन्त अप्रिय अवगुण है, असत्यता। प्रायः ऐसे अवसर आते हैं, जब मैं अभिमान में आकर डींग हाँकने लगता हूँ—उसी समय असत्यता मेरे हृदय में आ घुसती है। इसलिये, अपने गर्व को उस उच्च अवस्था पर न पहुँचने देने के लिये, जहाँ पहुँचकर सोच-विचार करने की गुंजाइश नहीं रहती, मैं अपने लिये यह नियम बनाना चाहता हूँः—जब मैं अपने अन्दर आत्म-श्लाघा के भाव उदय होते देखूँ, तो कुछ कहने की

बजाय चुपचाप बैठ जाऊँ, और सोचूँ कि कोई भी मिथ्या-प्रशंसा सत्य की अपेक्षा अधिक प्रभाव नहीं डाल सकती; क्योंकि सत्य का प्रभाव सब पर बाध्यतः और निश्चयपूर्वक पड़ता है। जब कभी क्रोध और चिढ़ उत्पन्न हो, तो लोगों से मिलना बन्द कर दो—विशेषतः उन लोगों से न मिलो, जो आपके आधीन हैं। ऐसे लोगों का साथ छोड़ दो, जो पियक्कड़ हैं। न तो शराब ही पियो, न वोदका* ही।

ऐसी स्त्रियों की संगति से बचो, जो सहज में ही प्राप्त हो सकती हों, और जब प्रबल इच्छा उत्पन्न हो, तो इतना शारीरिक श्रम करो कि थक जाओ। दिन में जितनी बार इन नियमों का पालन करना पड़े, उसे लिखते जाओ।

फ़ैशन एक ढंग है, जिसके द्वारा दूसरों को अपनी ओर आकर्षित किया जाता है। इसके द्वारा अंग-भंग और महा-कुरूप व्यक्तियों को छोड़, और सब में कुछ-न-कुछ आकर्षण उत्पन्न हो जाता है।

साधारण रूसियों में यह भ्रमात्मक विश्वास फैला हुआ है कि साँवले रंग के व्यक्ति सुन्दर नहीं हो सकते, और 'काला' शब्द तो 'कुरूपता' का वैसा-ही पर्यायवाची है, जैसा 'कंजर'।

संगीत ऐसी कला है, जो मनुष्य के मानस-क्षेत्र में स्वर

---

* हल्की शराब।

के विविध सम्मिश्रण द्वारा देश, काल और पात्र के अनुसार आत्मा की विभिन्न अवस्थाएँ उत्पन्न करती है।

अधिकांश पुरुष अपनी स्त्रियों में उन गुणों के पाने की आकांक्षा रखते हैं, जिनका स्वयं उनमें अभाव होता है।

निम्न श्रेणी के लोगों के लिये धर्मोपदेश उस अवस्था में सरल, सुगम और सर्वोत्तम हो सकता है, जब उपदेशक अपने अहङ्कार को त्यागकर ईसाई धर्म के सिद्धान्तों को शुद्ध और सरल रूप में समझा सकें।

इस प्रकार के उपदेशों को सोचते समय इस बात का ख़्याल रखना चाहिए कि न तो अधिक टीप-टाप और तड़क-भड़क का प्रदर्शन किया जाय, न अधिक भोलेपन का।

साधारण लोगों में यह विश्वास है कि मृत्यु के समय, मरते हुए व्यक्ति को देखने पर आत्मा के लिये शरीर छोड़ना और भी कठिन हो जाता है। जन्म के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार के विचार लोगों में फैले हुए हैं।

जिस व्यक्ति से मैं बातें करता हूँ, उसकी आवाज़ मुझ पर बड़ा बुरा प्रभाव डाल रही है। वह बनकर बातें करता है, तो मैं भी ऐसा-ही करता हूँ; यदि वह धीरे-धीरे, शान्त भाव से बोलता है, तो मैं भी ऐसा-ही करता हूँ; वह मूर्खता प्रदर्शित करता है, तो मैं भी वैसा-ही करता हूँ; अगर वह ग़लत-सलत और टूटी-फूटी फ्रेंच-भाषा बोलता है, तो मैं भी उसी का अनुकरण करता हूँ।

साधारण लोग, विशेष करके धार्मिक विषयों में, पराई भाषा में उपदेश सुनने के अभ्यस्त हैं, और उसकी प्रतिष्ठा उनके मन में इसलिये है कि वे उसे समझते नहीं। ऐसे भी विचार हैं, जो संयुक्त होकर किसी अर्थ के द्योतक होते हैं, किन्तु विशेष अवस्थाओं में उनका कोई अर्थ नहीं होता।

२३ नवम्बर-१ दिसम्बर—कई बार बाहर शिकार खेलने गया और अनेक ख़रग़ोश और चिड़ियाँ मार लाया। इन दिनों कुछ लिखना-पढ़ना मुश्किल-से हो सका। मेरे जीवन में किसी परिवर्त्तन की आशा मुझे अशान्त कर रही है, और नीला कोट ❀ मेरे लिये ऐसा अवांछनीय है; कि इसका पहनना मेरे लिये दुःखद सिद्ध हो रहा है; यद्यपि पहले यह बात नहीं थी। कल सुलतानोव आया। दो दिन पहले आर्सलन-ख़ाँ ने मेरे पास एक पत्र और एक तलवार भेजी थी। मेरे नियमों में से एक—मद्य-निषेध—को मैं नित्य तोड़ रहा हूँ।

यद्यपि इपिश्का ऐसा आदमी नहीं है, जो नये ज़माने के बिल्कुल प्रतिकूल हो, और जिसका शिक्षा से बिलकुल ही सम्बन्ध न रहा हो, किन्तु या तो एकान्त जीवन के कारण, या किसी और वजह से इसके बात-चीत करने का ढंग और उसका स्वभाव ऐसा है, जिसका कहीं अन्यत्र मिलना कठिन है।

❀ सैनिक वर्दी।

यदि पति-पत्नी छोटे बच्चों के द्वारा बनाई हुई स्त्रियों की तस्वीरें देख पायें, तो क्या हो ? ('कंसर्ट' के अध्याय से)।

सैनिक-श्रेणी का अस्तित्व क़ायम रखने के लिये नियम-वद्धता परम आवश्यक है, और नियम-वद्धता क़ायम करने के लिये क़वायद अत्यावश्यक है । क़वायद एक ऐसी चीज़ है, जिसके द्वारा केवल तुच्छ धमकियों से मनुष्य को यांत्रिक अवस्था में परिमित कर दिया जाता है। कठिन-से-कठिन सज़ा देकर भी मनुष्य में इतनी आज्ञाकारिता का भाव नहीं भरा जा सकता, जैसा क़वायद से किया जाता है। नम्रता प्रायः कमज़ोरी और अनिश्चितता की द्योतक समझी जाती है; किन्तु जब अनुभव लोगों को यह बताता है कि वे ऐसा समझकर भूल कर रहे थे, तो नम्रता में नवीन आकर्षण, शक्ति और गौरव उत्पन्न हो जाता है।

(शिलर।) कुछ लोगों में उत्साह की अग्नि परिवर्तित हो-कर ऐसे प्रकाश-स्तम्भ के रूप में परिणत हो जाती है, जिसके पास बैठकर काम किया जा सकता है। वह साहित्यिक सफलता, जो किसी को आत्म-तुष्टि प्रदान करती है, साहित्य के प्रत्येक रूप का ज्ञान प्राप्त करके ही पाई जा सकती है। किन्तु विषय सदा उच्च होना चाहिये, जिससे उसमें किया हुआ श्रम सदा सुखकारी हो।

ज्यों-ज्यों मनुष्य आनन्दोपभोग और सौन्दर्य की ओर

झुकता है, त्यों-त्यों वह अपने जीवन के लिये हानि के सामान प्रस्तुत करता है। इस प्रकार की बातों में केवल परिष्कृत मस्तिष्क-वालों से ही सम्बन्ध रखना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

व्लादीमीर ❀ अपनी प्रजा को अपने विश्वास के अनुकूल बनाने में इसलिये सफलता हुआ कि उसकी शिक्षा-दीक्षा साधारण प्रजा की शिक्षा-दीक्षा से उच्च नहीं थी; चाहे उसका सामाजिक महत्व अधिक ऊँचा था। प्रजा ने उस पर विश्वास किया। किसी शिक्षित राष्ट्र का शासक इस कार्य में ऐसी सफलता नहीं प्राप्त कर सकता था।

इपिश्का ने अपनी एक कहानी में, थोड़े-से चुने हुए शब्दों में स्त्री के महत्त्व पर कॉसेक्सों के विचार प्रकट किये हैं:—"हे स्त्री! तू गुलाम है, जा, तू काम कर!" एक पति अपनी पत्नी से कहता है—"और मैं खेल-कूद और मौज के लिये जाता हूँ।"

जाड़े के मौसम के सम्बन्ध में भी अच्छा वार्तालाप हुआ:—क···कहता है—"आज जाड़ा समुद्र से उड़कर आरहा है।" ख···कहता है–"हाँ, बड़े-बड़े पंखों के सहारे उड़ रहा है।"

❀व्लादीमीर रूस का महान् शासक था। इसका शासन-काल ९८० ई० से १०१५ ई० तक रहा। इसने कीव की सारी जन-संख्या को ईसाई मतावलम्बी बनाने में बड़ी सफलता प्राप्त की थी।

तातार भाषा में 'कॉसेक्स' का अर्थ है, बिना ज़मीन का किसान। दूसरी शताब्दी में कॉकेशिया की ज़मीन को कासाखिया कहते थे। फ़ान्सीसी शब्द क्रोइर (Croire) और नाका (Nackal) के लिये रूसी भाषा में ठीक पर्यायवाची शब्द नहीं हैं।

नियम—आमदनी और ख़र्च का हिसाब। जब भली भाँति विचार प्रकट कर सको; तभी उन्हें लिखने का प्रयत्न करो। सुस्ती और आलस्य के निरुद्ध मैं कोई भी नियम बनाने में सफल नहीं हुआ।

२ दिसम्बर—शीघ्र उठा। 'बाल्यावस्था' का काम हाथ में लेना चाहता था, किन्तु पहली नोटबुकें न होने के कारण बड़ी असुविधा हुई, और अभी तक मैं कुछ भी निश्चय नहीं कर सका हूँ। अपने काग़ज़ात और पत्रों को सुव्यस्थित ढंग पर सजाकर रक्खा। खाना खाया। 'पितृभूमि' (मासिकपत्र) की टिप्पणियाँ पढ़ीं। भोजन के पश्चात् अक्खड़ ऑलिफ़र के साथ शतरंज खेली; कुछ पढ़ा, और बिगड़ा हुआ ज़ुकाम लेकर चारपाई पर लेट रहा।

सुस्ती के विरुद्ध नियम है—जीवन और उसके मानसिक एवं शारीरिक कार्यों में सुव्यवस्था और संयम।

दो अभिलाषाएँ ऐसी हैं, जिनकी पूर्ति मनुष्य को वास्तविक आनन्द दे सकती है—उपयोगी बनना, और शान्त अन्तःकरण रखना।

'बाल्यावस्था' समाप्त कर लेने के बाद अब संक्षिप्त कहानियाँ लिखने का विचार है, जिससे उनका कथानक जल्दी-जल्दी बना सकूँ और सभी गम्भीर एवं उपयोगी विषयों पर लिखते हुए भी मैं घबराहट और थकान से दूर रह सकूँ। इसके अतिरिक्त एक और काम यह है कि दिन-भर के आराम के बाद शाम को मैं एक बड़े उपन्यास का कथानक और दृश्य तैयार करूँगा।

३ दिसम्बर— तड़के उठा, पर कुछ आरम्भ नहीं कर सका। 'कॉसेक्स'-कहानी मेरी प्रसन्नता और कोप दोनों ही का कारण बन रही है। खाने के समय तक 'रूसी राज्य का इतिहास' पढ़ता रहा; और भोजन के बाद ऑलिफ़र, एक नौकर, और नक़ल-नवीस की उपस्थिति में कह दिया कि मैं अपनी सारी जायदाद उड़ाकर तब दम लूँगा। इस बेवक़ूफ़ी और रूखेपन से भरे हुये व्यवहार से मुझे बड़ा क्रोध आ गया। मैंने प्रतिज्ञा कर ली कि इस घृणित व्यक्ति के साथ तब तक भोजन न करूँगा, जब तक अलेक्सीव वापस न आ लेगा। इस अवस्था में उससे मिलना-जुलना भी तब तक नहीं करूँगा।

भोजन के बाद तैयार होकर शिकार को चल देने की स्फूर्ति शरीर में नहीं रही। मेरे पैर भीग गये, जो मेरे जुकाम के लिये हानिकारक होगा।

मेरे अन्दर एक बड़ी त्रुटि है। वह है—काव्यानुमोदित

दृश्यों को मिलानेवाली परिस्थितियों को कहानी में सलरतापूर्वक वर्णन् करने की योग्यता का अभाव।

मैं यह निश्चय नहीं कर सका कि नीचे लिखे चार विचारों में से कहानी के लिये किसका उपयोग करूँ:—(१) कॉकेशस के एक अफ़सर की डायरी, (२) एक कॉसेक्स कविता, (३) एक हंगेरियन लड़की, और (४) एक गुम-शुदा आदमी। इन चारों को सम्मिश्रण अच्छा है। इनमें से जो सरल प्रतीत होगा वही पहले आरम्भ करूँगा। पहले 'अफ़सर की डायरी' से ही शुरू करूँगा।

४-१० दिसम्बर—इन दिनों मैं बड़ा बेचैन-सा हूँ। ज़ुकाम से बहुत तंग आ गया हूँ। अभी तक इससे पीछा नहीं छूटा। इसी अवस्था में मैं स्टीगिलमैन के साथ दो बार शिकार के लिये जा चुका हूँ। फलतः मैं कुछ लिख नहीं सका हूँ, और मन बहलाने के लिये बिना कोई विशेष विचार किये ही 'रूस का इतिहास' पढ़ने लगा। आज ऑसिप को एक पत्र लिखा। अक्रेशेवस्की ने अभी तक मेरी नोटबुक नहीं लौटाई।

तारुमो गाँव से थोड़ी-ही दूर पर, किज़ल्यार की दूसरी दिशा में चक्का-नामक एक पुरानी मोर्चाबन्दी और शस्त्रागार है, जहाँ नोगे-लोगों को पुराने हथियार मिलते रहते हैं।

फिलचैएट नामक पुराना नगर उसी जगह खंडहर बना खड़ा है। ज़मीन में धँसी हुई एक पुराने ढंग की तोप

भी वहीं पड़ी है। इतिहास पढ़ने के लिये पचास या कम-से-कम पचीस वर्ष पुराने नक़शों की आवश्यकता होती है।

चार्ल्स बोनापार्ट के पाँच पुत्र थे:—(१) जोसेफ़, जो नेपिल्स और स्पेन का राजा था, (२) नेपोलियन, फ्रांस का सम्राट्, (३) लूसियन, जो सिनेट का मेम्बर था, और बाद में निर्वासित कर दिया गया, और (४) लुई, जो हॉलैण्ड का बादशाह बना, और जिसकी शादी हार्टेन्स प्यूहारनैस के साथ हुई थी; यह फ्रांस के सम्राट् लुई-नेपोलियन का पिता था, और (५) जेरोम, जो वेस्टफेलिया का शासक बना। यह होटेल-डि-इनवैलिड्स का मुख्याधिष्ठाता और मार्शल था। जेरोम नेपोलियन—जो गद्दी का हक़दार हुआ—इसी का पुत्र था।

रूस का इतिहास समाप्त करके मैं इसे दुहराना चाहता हूँ, और उसमें से ख़ास-ख़ास घटनाओं को नोट करूँगा।

११-१६ दिसम्बर—ज़ुकाम और सिर-दर्द से पीछा नहीं छूटता। तबियत अच्छी न-होने पर भी दो बार सुलीमोस्की के साथ शिकार के लिये जा चुका हूँ, परसों अलेक्सीव वापस आगया। कल मैंने तोपख़ाने के एक सैनिक पर कुछ नोट लिखे; किन्तु आज कुछ नहीं लिखा। करमज़ीन-कृत इतिहास समाप्त कर दिया।

बलवान् हाथ को देखकर मन में शक्ति का विचार अपने-आप उत्पन्न हो जाता है। किसी सुन्दर हाथवाले पुरुष को

देखकर यह विचार उठता है कि यदि मैं इस व्यक्ति के अधीन होता तो कैसी (अच्छी) बात होती ?

अलेक्सीव से २८ रूबल उधार लिये।

जो व्यक्ति शारीरिक परिश्रम न करके दिन-भर सोच-विचार में ही डूबा रहता है, उसमें युवावस्था का अभाव होता है। आनन्दोपभोग के लिये लोग अपने को अपेक्षाकृत अल्पवयस्क समझ लेते हैं, और सुख-लालसा की पूर्ति के पहले ही उसे ऐसा प्रतीत होता, है कि वह धीरे-धीरे अपनी उमर गँवा रहा है।

बोरिस गोदुनो ने दाग़िस्तान में दो छोटे-छोटे क़िले बनवाये थे, जिनमें से एक तो तोज़लुक के द्वीप में (झील के अन्दर) है, और एक बाइनक में।

रौमैनो-घराने का निवास ऐण्ड् कोबिला से है, जो ग्यारहवीं सदी में प्रशिया (जर्मनी) से आकर रूस में बस गया था❀। उसके वंशजों में रोमन यूरे अनस्तासिया का पिता था, जो क्रूर आइवन की प्रथम पत्नी और माइकेल का दादा लगता था।

१७८५ ई० में शेख़मैनोर-नामक एक तुर्की-प्रवासी ने कॉकेशस में पहले-पहल छेड़-छाड़ शुरू की, और १७९१ ई०

❀ डायरी के अंग्रेज़ी अनुवाद में ग्यारहवीं सदी लिखा है, पर यह घटना वास्तव में चौदहवीं शताब्दी की है।

—अनुवादक।

में वह क़ैद होगया। उसे सोलोवेट्स मोनास्री में निर्वासित कर दिया गया।

एक नोगे ऐब ने मेरे गले की बीमारी लिये बलूत के फल का चूर्ण दिया है। उसका विश्वास है कि चिकने फल पुरुषों के लिये और सख़्त स्त्रियों के लिये लाभदायक हैं।

पिसेमस्की की कहानी पढ़ी—इसका नाम है 'जङ्गली राक्षस'। इसकी भाषा बड़ी-ही कृत्रिम है, और घटना असम्भव!

बीमारी के बहाने मैं अपने काम में बड़ा लापर्वाह होता जारहा हूँ, और दिन-पर-दिन ख़राबी बढ़ती जारही है। शारीरिक नहीं, तो चारित्रिक बीमारी (चिन्ता) मुझे तङ्ग कर रही है, यद्यपि उचित यह है कि शान्त-चित्त होकर इसे रोका जाय। प्रातःकाल जल्दी उठना कार्य-क्रम बनाने में बड़ा सहायक सिद्ध होता है। यह होजाने पर आत्म-विश्वास और सफलता की आशा उत्पन्न होती है।

वोदका पीकर लेट रहा। सब को यह बात समझ लेना चाहिए कि मौज करने के लिये जीवित न रहकर, हमें उपयोगी बनकर जीवित रहना चाहिए। ऐसा करने पर आनन्द और मौज अपने-आप पैर चूमेंगे।

आज हजामत बनवाते सगय मेरे मन में यह सजीव विचार उत्पन्न हुआ कि किसी घायल पर यदि दोबारा कोई घातक प्रहार हो, तो उसकी मानसिक अवस्था में तत्काल

कैसा महान् परिवर्तन हो जायगा—निराशा की जगह उसके मन में प्रसन्नता का संचार हो जायगा।

अलेक्सोव मेरी कहानी सुनते-सुनते अकस्मात् शुद्ध भाव से पुकार उठा—"ओह! मेरी दशा कैसी हो रही है—चालीस वर्ष की उम्र में मेरी स्मृति जवाब दे चली है।" यह कहकर वह सहसा गपोड़बाजी, और मिथ्या प्रलाप करने लगा। सुलीमोस्की ने अपनी साधारण रुखाई के साथ बताया कि पिस्टोलकोर्स, रॉज़ैनकैंज़ के कारण मुझे किस प्रकार गालियाँ देता है। इस बात से मुझे बड़ा दुःख हुआ और साहित्यिक कार्य में पड़ने की मेरी अभिलाषा शान्त हो गयी; किंतु 'कण्टेम्पोरेरी' (१८५४ ई०) पत्रिका में प्रकाशित घोषणा ❀ पढ़कर साहित्य-सेवा की इच्छा फिर जागरित हो उठी।

१७ दिसम्बर—मेरी नाक अभी तक रुँधी हुई है, बड़ी बेचैनी है। दिन-भर इतिहास के पन्ने उलटता रहा।

अस्ट्रियालो × ने रूसियों की विशेषता यह बतलायी है कि वे अपने विश्वास के पूरे भक्त और दूसरों की अपेक्षा अपनी श्रेष्ठता के दावेदार होते हैं। यह तो ऐसा लिखा गया है,

---

❀ इस घोषणा में यह प्रकाशित हुआ था कि टॉल्सटॉय रूस के सर्व-श्रेष्ठ लेखकों में हैं।

× इस रूसी इतिहासकार का पूरा नाम एन० जी० अस्ट्रियालो था। इसका जन्म १८०५ ई० में हुआ था, और निधन १८७० ई० में।

मानों अन्य राष्ट्रों में इन गुणों का अभाव ही है, और रूसियों में इनके अतिरिक्त कोई विशेषता ही नहीं है।

पीटर प्रथम के बाद (ग़ैर-क़ानूनी रूप में) उसकी स्त्री कैथेराइन प्रथम (१७२५-२७) शासिका बनी, और उसके बाद पीटर द्वितीय को अधिकार मिला, जो ज़ारेविच अलेक्सीव का पुत्र था। पीटर द्वितीय (१७२७-३०) के बाद ग़ैर-क़ानूनी रूप में ही एनी (१७३०-४०) को राज्याधिकार प्राप्त हुआ, जो नामधारी ज़ार आइवन अलेक्सीव की पुत्री थी। इसके बाद एनी के हाथ से शासन-सूत्र आइवन के पड़पोते और कैथेराइन प्रथम के पोते आइवन (१७४०-४१) के हाथ लगा, जिसके शासन में उसकी माँ अन्नालियोपोल्दोना बेटे की नाबालग़ी के कारण ख़ुद शासिका बनी थी। उसके अधिकार-च्युत होने पर एलिज़ाबेथ (१७४१-६१) शासनाधिकारिणी हुई, जो पीटर की लड़की थी। वास्तव में गद्दी का अधिकारी था, अन्ना पेट्रोना का पुत्र पीटर तृतीय (१७६१-६२)। पीटर तृतीय के बाद उसकी स्त्री कैथेराइन तृतीय (१७६२-९६) का अधिकार ग़ैर-क़ानूनी रूप में क़ायम हुआ।

प्रत्येक ऐतिहासिक तत्त्व की व्याख्या मानवता के दृष्टि-विन्दु से होनी चाहिये, और उसमें ऐतिहासिक जटिलता नहीं घुसेड़नी चाहिए। मैं इतिहास को कहावत के रूप में लिखूँगा। और उसमें कुछ भी नहीं छिपाऊँगा। केवल यही काफ़ी नहीं है कि सीधे तौर पर झूठ बोलने से बचा जाय, वरन्

चाहिए तो यह कि चुप रहकर या इनकार करके भी मिथ्या को न छिपाया जाय। मैंने चिख़िर ❀ पी, चारपाई से उठते-ही दिन-भर का कार्य-क्रम निश्चित करके तब कुछ और करूँगा।

१८ दिसम्बर—अब भी बीमारी और चिन्ता पीछा नही छोड़ती। दिन-भर पढ़कर इतिहास समाप्त कर दिया। मैं समझता हूँ कि अलेश्का चोरी करता है। इससे मुझे बड़ा दुःख होता है। उससे मैंने इस बात की चर्चा की। जब तक मैं इस बात को निश्चय न कर लेता, तब तक मुझे इस बात का जिक्र उससे नहीं करना चाहिए था। निश्चय हो जाने पर मैं उसके साथ अधिक दृढ़ता और कड़ाई से पेश आ सकता था।

१९-२० दिसम्बर—कल कुछ तबियत हल्की रही, फिर भी मैंने कुछ लिखा नहीं। आज मेरी तबियत बहुत ख़राब है। इसका कारण है—कल का उतावलापन। फिर चिन्ता के बहाने दिन-भर लिखने से बचता रहा। मासिक-पत्र पढ़ता और विचार करता रहा।

महीने-भर की अकर्मण्यता की कसर निकालने योग्य एक बात अवश्य हुई है। वह है—एक रूसी ज़मींदार के चरित्र-चित्रण का मसाला, जो मेरे मस्तिष्क में बिल्कुल स्पष्ट रूप से चित्रित हो गया है। विषय-बाहुल्य और विचार-प्रौढ़ता के

❀ रूसी मदिरा।

कारण मैं घटना-क्रम को अबतक लिखता रहा, पर यह नहीं निश्चय कर सका कि इस विचार-समूह में से कौन-कौन सी बातें चुनकर लिखी जायं।

छोटा रूस—रूस का वह भाग है, जो लिटोस्क और ओलगर्ड के भूभागों को तेरहवीं शताब्दी× में मिलाता था—अलेक्सी मिखालोविच के समय में यह पुनः रूस में मिल गया। पोलैंड ने अपने-आप आइवन चतुर्थ को उसके लड़के के लिये सौंप दिया और पीटर के शासनान्तर्गत वह रूस का यहाँ तक अधीनस्थ बन गया कि उसकी इच्छा पर ही ऑगस्ट द्वितीय को दो बार सम्राट् स्वीकार किया; क्योंकि अन्ना आइवनोवना के समय में ऑगस्ट तृतीय कैथेराइन द्वितीय का अधीनस्थ था। ऑस्ट्रिया को हमारी ओर से प्रसन्न और और सन्तुष्ट रखने के लिये और उसे मोलदाविया तथा वालाचिया के बारे में हमारा कार्य दिखलाने के लिये पोलैंड को तीन राज्य-शक्तियों में विभाजित करने का प्रश्न पहले-पहले प्रशिया की सरकार द्वारा किया गया था। फ्रांस की राज्य-क्रान्ति के समय पोलैंड कॉशियस्को के अधीनस्थ अपने खोये हुए भू-विस्तार को फिर प्राप्त करना चाहता था, और वह फिर विभाजित हो गया। अलेग्जैण्डर के समय (१८०७ ई०) में पोलैण्ड को डची प्राप्त हुई, जिसे 'नैपोलियन की डची'

×यहाँ चौदहवीं शताब्दी चाहिए।—अनुवादक।

टॉल्सटॉय की डायरी—

'अनिवार्य लेखकों' का व्यङ्ग्य-चित्र
'कण्टेम्पोरेरी' के सम्पादक नेक्रासोव और पानेव; तथा
ग्रिगॉरॉविच, तुर्गनेव ऑस्ट्रॉवस्की और ल्यू
टॉल्सटॉय, इस पत्र के स्थायी लेखक।

कहते हैं। किन्तु १८१४ ई० में वियना की सन्धि के अनुसार वह रूस को सौंप दी गयी। १८३० ई० में, ग़दर के बाद, उसके शेष अधिकार तोड़ दिये गये, और अन्त में यह रूसी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

सन् १८२१ ई० में जर्मनी में एक सोसाइटी क़ायम हुई, जिसका नाम 'हेटैरिया' था, और जिसका काम था—ग्रीस का पुनर्निर्माण करना। इस संस्था का सञ्चालक हिप्सीलैण्टी-नामक एक व्यक्ति था, जो रूस में नौकरी करता था, और काउण्ट कैपो-डि-इस्ट्रिया का सहयोग चाहता था। तुर्की में हमारी विजय और एड्रियानोपोल पर अधिकार हो जाने के कारण ग्रीस को स्वाधीनता माँगने का अवसर मिला। और सन् १८३० में बवेरिया के प्रिंस ऑटो प्रथम को ग्रीस का सम्राट् बनाया गया।

सन् १८२८ ई० में मिश्र के पाशा मेहमतअली ने तुर्की के विरुद्ध तलवार उठाई; किन्तु हम लोगों* के बीच में पड़ जाने और कुस्तुनतुनियाँ को स्थल और जल-सेना भेज देने के कारण मिश्र कुछ नहीं कर सका।

फ्लोरेन्स की कौंसिल के फल-स्वरूप पन्द्रहवीं शताब्दी में यूनियन चर्च (संयुक्त गिरजाघर) की स्थापना हुई,

---

* ऐतिहासिक प्रकरण में टॉल्सटॉय ने जहाँ-कहीं 'हम लोगों' लिखा है वहाँ रूसी राष्ट्र से अभिप्राय है।

—अनुवादक।

जिसमें सर्विस-सम्बन्धी कोई परिवर्तन नहीं किया गया था, और जो पोप की सेवा से प्रेषित की गयी थी।

ग्रीसो-रशियन और कैथोलिक गिरजाघरों में जो अन्तर था, उसका परिचय निम्न बातों से प्राप्त होता था:—(१) प्रभु-भोज* में खमीरी रोटियों का व्यवहार होता है, या नहीं (२) गिरजाघर का प्रधान पोप समझा जाता है, या पैट्रियार्क, और (३) होली घोस्ट (पवित्र प्रेत) का जलूस केवल पिता× की प्रतिमूर्ति समझी जाय या पिता और पुत्र+ दोनों की ?

सन् १७७७ ई० में अपनी प्रकाशित 'मॉर्निङ्ग लाइट' (प्रभात की आभा) नामक मासिक-पत्रिका का जो दार्शनिक परिचय करमज़ीन ने लिखा है, उसमें उन्होंने बतलाया है कि पत्रिका का उद्देश्य होगा ज्ञान-वर्द्धन के प्रति पाठकों में प्रेम उत्पन्न करना, मनुष्य के मस्तिष्क एवं इच्छा और भावना को विकसित करना और उन्हें सद्गुणों की ओर लगाना। मुझे आश्चर्य हुआ कि हम साहित्य के उद्देश्य—सद्विवेक—की भावना से इतनी दूर जा पड़े हैं कि यदि आज-कल साहित्य में सद्विवेक की आवश्यकता का नाम भी लीजिये, तो आपकी बात को कोई न समझ पायेगा। किन्तु साहित्य के सभी

---

* मतलब है ईसा की यादगार में दिये जाने वाले भोज से।
× परमात्मा।
+ ईसा मसीह।

चेत्रों में—कथा-लेखन की भाँति—सद्विवेक का सन्निवेश कोई बुरी बात नहीं है। 'प्रभात की आभा' में आत्मा की असारता के सम्बन्ध में कुछ विचार प्रकट किये गये थे। इसी प्रकार मनुष्य की आकांक्षा, फीडन की कथा और सुकरात की जीवनी—आदि कितनी ही बातें पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं। बात बहुत आगे बढ़ गयी है; किन्तु हम अभी पतन की चरम सीमा पर नहीं पहुँचे हैं।

यहाँ एक नया उद्देश्य मुझे सूझा है—वह है, एक ऐसी पत्रिका का सम्पादन करना, जिसका ध्येय सत्साहित्य का प्रचार हो। इस पत्रिका में केवल इसी शर्त पर लेख प्रकाशित होंगे कि वे सद्विवेकपूर्ण हों, और उनका सम्मिलित करना न करना लेखक की इच्छा पर हो। इसके अतिरिक्त पत्रिका में विवाद और झगड़े की बातें तथा परिहास-आदि नहीं छपेंगे; क्योंकि इसका झुकाव किसी अन्य पत्र-पत्रिका से वाद-विवाद या विरोध करना नहीं होगा।

मेरे प्रथम विचार और उद्देश्य सदा उत्तम और आदरणीय होते आये हैं; किन्तु जब तक मैं उनका उपयोग करने के लिये तैयार होता हूँ, तब तक मैं उन्हें छोड़ चुका होता हूँ। आरम्भिक जीवन में क्या यह (भूल) स्वाभाविक नहीं है ?

जिस अँग्रेज़-जनरल को जेल में नेपोलियन के निरीक्षण के लिये नियुक्त किया गय था, इसका नाम हडसन लो था।

क्या मानसिक भ्रान्ति, जो आपके अन्दर ऐसी

अनुभूति भर देती है कि जिस अवस्था में आप अब हैं, उसमें पहले भी रह चुके हैं—इस तथ्य से नहीं उत्पन्न होती कि जिस क्षण की चेतना आपके मानस-मन्दिर में है, वह आपको किसी पूर्ववर्ती तत्सम अवस्था का दिग्दर्शन कराते हैं, और यद्यपि वास्तव में परिस्थितियाँ भिन्न हैं, फिर भी आप उसे उसी रूप में लेते हैं।

किसी ने कहा है कि कवि के लिये चित्र-कला का ज्ञान अनिवार्य है। मैंने उसे अब समझा है, जब आज प्रदर्शिनी में प्रदर्शित वस्तुओं के सम्बन्ध में प्रकाशित लेख पढ़ा है।

किसी लेख को आकर्षक बनाने के लिये केवल यही आवश्यक नहीं है कि विचार युक्ति-युक्त हों, किन्तु साथ ही यह भी ज़रूरी है कि वह साद्यन्त प्रकरण-विरुद्ध न हो। 'बाल्यावस्था' में यही त्रुटि है।

२१ दिसम्बर—अब स्वास्थ्य कुछ अच्छा है, किन्तु अब भी पूर्णतः आराम नहीं है। कल तबियत अच्छी रही तो किल्यार जाऊँगा। आज ज़ू और अक्रशेस्की के पास से पत्र आये हैं। उसने अभी तक न तो 'बाल्यावस्था' की प्रतिलिपि तैयार की है, न उसे लौटाया ही है। इससे मुझे बड़ा क्रोध आया। 'युवावस्था' में बहुत-सी शिथिलताएँ हैं। इसमें साहचर्य का अभाव है। इसकी भाषा भी सुन्दर नहीं है। आज कुछ पढ़ भी नहीं सका। सुलतानो आया और हम दोनों ने अपने-अपने कुत्तों का परिवर्तन कर लिया।

२२ दिसम्बर—मेरा स्वास्थ्य तो कुछ अच्छा है, पर उदासी बढ़ती-ही जा रही है। प्रातःकाल उपन्यास की भूमिका लिखी। शाम को भोजन के समय तक सोता रहा। उसके बाद निकोलेंका को एक पत्र लिखा और इपिश्का के साथ गपशप की।

इपिश्का की कहानी में मुझे दो स्थल विशेष रूप से पसन्द आये। एक स्त्री विलाप करती है—"हम ग़रीबों पर चारों ओर से विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है........." और और एक पुरुष से उसकी क़ीमत घटाने के लिये कहते हुए दूसरी कहती है—"दुनियाँ में तुम ५ रूबलों की बदौलत नहीं आये हो।"

२३ दिसम्बर—पत्र भेज दिया। और कोई कार्य नहीं किया।

१३ दिसम्बर—तारीख़ ग़लत पड़ गयी। आज प्रातः शिकार के लिये गया और दो ख़रगोश तथा एक पक्षी मार लाया। स्वास्थ्य अच्छा है।

हाउस ऑफ़ बॉरबन के प्रतिनिधियों के नाम ड्यूक-डी-नेमर्स और कॉमटी-डि-कैम्बर्ड हैं।

सन् १७९८ ई० में जनरल टमारा (रूसी) को नेपोलियन की ओर से यह प्रस्ताव मिला कि वह रूसी सेना में सम्मिलित होना चाहता है, किन्तु उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की गयी, क्योंकि नेपोलियन मेजर का पद चाहता था।

व्लादीमीर सेवोलोडोविच मोनोमाख (सन् ११२३ ई०) यारोस्लाव का पोता और कॉमनेनस का समकालीन था। कॉमनेनस ग्रीक-राजकुमारी ऐनी का पुत्र था, जो कॉन्सटैंटाइन मोनोमैकस की लड़की थी।

२४ दिसम्बर—मैं विलम्ब से उठा और बहुत रात व्यतीत हो जाने तक शिकार में लगा रहा। एक ख़रगोश और एक पक्षी मार लाया। मेरा स्वास्थ्य नैतिक और शारीरिक दृष्टि से अभी सुधरा नहीं है।

ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे अपने नियमों में परिवर्तन करना चाहिये, और उनको नये ढंग से सुव्यवस्थित करके अपने को उस पर चलाने का प्रयत्न करना चाहिए—प्रत्येक नियम के पालन में मैं कई मास लगाऊँगा, और जब तक एक नियम में पूर्णता न प्राप्त हो जायगी, तब तक दूसरे का अभ्यास करना आरम्भ न करूँगा।

२५-२६ दिसम्बर—कल देर से उठा, अलेक्सीव से मिलने गया और लौटकर दिन-भर बेकार रहा। आज दिन-भर, सिवा इसके कि जब कोई मुझसे मिलने आया हो, मैंने सारा दिन अपने नियमों को सुव्यवस्थिव करने में लगाया। शाम को भोजन के पश्चात् मैंने अपनी चाची तातियाना अलेग्ज़ैंड्रोवना को एक दुःख-पूर्ण पत्र लिखा।

चार नियमों का निश्चय मैंने किया है—प्रत्येक श्रेणी के

लिये एक नियम लागू होता है। किन्तु मैंने अभी तक यह निश्चय नहीं कर पाया है कि यह ढंग उचित है।

२७-२८ दिसम्बर—कल शिकार के लिये गया—एक खरगोश और दो पक्षी मार लिये। अलेश्का अभी तक नहीं गया। यह मेरे लिये प्रसन्नता की बात है; क्योंकि जो पत्र मैंने चाची को लिखा था, वह मेरे पहले नियम के अनुकूल नहीं है—इसे पढ़कर उस (चाची) को बड़ा दुःख हुआ होता। आज सुबह 'रूसी ज़मीदार'-नामक उपन्यास के कुछ ही पृष्ठ लिखे, किन्तु लिखा अपने मन-माफ़िक। दोपहर को भोजन के पश्चात् 'रोगी'-नामक उपन्यास पढ़ा, और 'एक सैनिक की नोटबुक'-नामक उपन्यास लिखना शुरू कर दिया; किन्तु अलेक्सीव की इस मूर्खतापूर्ण माँग से, कि अलेश्का को स्टारी-अर्ट भेजकर फिर शाम का भोजन करना चाहिये, मैं घबरा गया हूँ। भोजन के पश्चात् इपिश्का के साथ गप-शप करते हुए सारी रात गुज़ार दी।

अलेश्का चला गया। वैलेरियन की एक चिट्ठी आई है, साथ-ही माशा का भी एक पत्र प्राप्त हुआ। इससे माशा के प्रति मेरी धारणा बदल गई। मैंने आरम्भ से छोटे परिच्छेद लिखने का जो ढंग अख़्तियार किया है, वह बहुत-ही सुविधा-जनक है। एक परिच्छेद केवल एक विचार और एक भावना का द्योतक होना चाहिये।

[१८५४]

१ जनवरी—परसों मुझे अपनी तनख़्वाह—५४ रूबल—प्राप्त हुई, और सब-का-सब फुटकर चीज़ें ख़रीदने में ख़र्च हो गया।

आज विलम्ब से उठा, और भोजन के पूर्व अनेक लोगों ने आकर समय बर्बाद कर दिया। इन दर्शकों में वोज़वीज़ेंस्क चेचन नामक मेरा मित्र भी था। हिपोलिट से मैं बड़ी मित्रता के साथ मिला। अज़ोनोवना से मिलकर मैं घबरा-सा गया। चेख़टोवस्की से मिलकर मैं लज्जित-सा हुआ। वास्का भी, जिसको, मैंने अरबाज़* देने का वादा किया था, आया। अन्त में बराश्किन आया, जिससे मिलकर मैंने कमज़ोरी का परिचय दिया, और जिसने अन्त में मुझे लूट लिया। सुलीमोस्की+ का एक पत्र आया है, जिसके कारण मैंने फूफी पॉलिन ÷

---

* एक फ़ारसी सिक्का।

+ टॉल्सटॉय की पल्टन का एक सब-लेफ्टिनेंट।

÷ इनका पूरा नाम पेलागेया इलिनिश युशकोवा था। इन्हें नी काउण्टेस टॉल्सटॉया भी कहते थे। ये टॉल्सटॉय के पिता की सगी बहन थीं।

को कुछ लिखने का विचार त्याग दिया है। ईश्वर जानें, मेरी अभिलाषा पूरी होती है, या नहीं। भोजन के पश्चात् मैंने कॉफ़ी पी, और फिर ज़ुकेविच के साथ बाहर गया। तेरेनतेवना के साथ मैंने वाद-विवाद किया, और एक ऐसा साधारण मूर्खता का काम कर डाला, जो उद्देश्यहीन आवारागर्दी के फल-स्वरूप हुआ करता है।

२ जनवरी—देर से उठा। 'उसका भूत काल'-नामक पुस्तक के तीसरे परिच्छेद का कुछ अंश लिखा। यह अच्छा मालूम पड़ता है। कम-से-कम इसके लिखने में मुझे आनन्द मिल रहा है।

मैंने भोजन के बाद मूर्खतापूर्वक ज़ुकेविच को छेड़ दिया। उसने मेरा दो घण्टे का समय मुफ़्त में बर्बाद कर दिया। इसके पश्चात् मैं १० बजे तक लिखता रहा। काम अच्छी प्रगति के साथ हो रहा है।

डायरी में मैंने अपने विचार, सूचनाएँ और अपने काम के सम्बन्ध में कुछ नोट किया। प्रत्येक नये कार्य का आरम्भ करने के लिये डायरी में देखकर दूसरी नोटबुक में नक़ल करना—आदि, इन सब की गणना काम में की जायगी। नियमों की नक़ल प्रति मास होनी चाहिये। प्रति दिन याद करके नियमों का जब-जब उल्लङ्घन हो, नोट कर लेना चाहिये, और फिर उसे डायरी में चढ़ा लेना चाहिये।

३ जनवरी—मेरा विचार 'एक रूसी ज़मींदार की कहानी'❋ लिखने का था, और मैंने वैसा ही किया, किन्तु ज्यादा देर तक नहीं लिख सका। शाम को 'सैनिक की नोटबुक' का कुछ अंश लिखा, यद्यपि तातियाना अलेग्ज़ैण्ड्रोवना × का पत्र दोबारा पढ़ने के लिये बैठ जाने के कारण विशेष नहीं लिख सका। रुपया ज़रूर माँगूँगा। प्रातःकाल निश्चय न कर सकने के कारण ऐसा नहीं कर सका था। शाम को भी हिम्मत नहीं पड़ी; क्योंकि वार्तालाप का विषय गम्भीर था। झूठी शर्म ही इसका कारण हुई।

चूँकि मौसिम ख़राब था, इसलिये शिकार के लिये नहीं गया। पहले नियम—मद्य-निषेध—का मैंने उल्लङ्घन किया। दूसरा नियम है, प्रातःजागरण,—तीसरा, भविष्य के लिये बेफ़िक्री,—चौथा, ताशों से अपने भाग्य का निश्चय न करना,—पाँचवाँ, नियमबद्धता,—छठवाँ,—एक समय में एक-ही कार्य करना,—और सातवाँ है, कार्य निश्चयपूर्वक करना।

❋ यह कहानी पीछे 'ज़मींदार का प्रभात' के नाम से और 'सैनिक की नोटबुक', 'देहाती सुन्दरी' के नाम से प्रकाशित हुई।

× यह दूर के रिश्ते में टॉल्सटॉय की चाची लगती थीं, और बचपन में टॉल्सटॉय का शिक्षा-दीक्षा का भार इन्हीं पर पड़ा।

बोरोदिनों+ की लड़ाई के बाद धर्माचार्य लोग कर्तव्य-पालन-मात्र के लोभ से उन लाशों को दफ़न करने का कार्य करने लगे, जिनकी लाश नेपोलियन के वापस चले जाने पर सड़ रही थीं। इस प्रकार के कार्य तथा साथ-ही सैनिक अत्याचारों का न-केवल भर-पूर बदला मिला, वरन् जिन लोगों ने ऐसे अत्याचारों में भाग लिया था, उन्होंने डर के मारे उसकी चर्चा तक बन्द कर दी, क्योंकि वे इस ग़ैर-क़ानूनी कृत्य की सज़ा से जान छुड़ाना चाहते हैं। उदाहरणार्थ, जिस धर्माचार्य ने फ़्रांसीसियों से युद्ध किया, वह कभी पुरस्कार पाने की इच्छा नहीं रख सकता; हाँ, सज़ा के डर से उसकी पिंडली ज़रूर काँपती रहती है।

बिना नियमों का भली-भाँति परीक्षण किये मैं उनका प्रयोग नहीं करूँगा। एक पुराने ज़माने की दयालु स्त्री, जो आजकल के नवयुवक और नवयुवतियों की व्यंगोक्तियों को नहीं समझ सकती, और वह उनके प्रेम-शैथिल्य को देखकर डरती है कि कहीं उनके अन्दर से प्रेम-भावना सदा के निर्वासित न हो जाय।

आज्ञा सदा स्पष्टतापूर्वक, क्रोधहीन अवस्था में और समझाकर देना चाहिए।

+यह लड़ाई नेपोलियन के मॉस्को-प्रवेश के सात दिन पूर्व, अर्थात् ७ सितम्बर, १८१२ ई० को हुई थी। १५ अक्तूबर को नेपोलियन ने मॉस्को छोड़ दिया था।

४ जनवरी—प्रातःकाल 'रूसी जमीदार' की कहानी लिखने का निश्चय किया और शाम को 'सैनिक की नोट-बुक'। यदि मौसिम अच्छा रहा, तो शिकार के लिये जाना है। रुपया भी माँगना है। प्रातःकाल 'रूसी ज़मीदार' की कहानी लिखी, किन्तु वह इतनी अपर्याप्त और त्रुटिपूर्ण हुई कि मैं दिन-ढले से सायंकाल के भोजन के समय तक उसमें काट-छाँट करता रहा। भोजन के बाद 'रोगी' का अध्ययन किया।

वालकोव के साथ वार्तालाप करने की मेरी चेष्टा सफल नहीं हुई। मौसिम खराब है, इसलिये मैं बाहर नहीं गया। रुपया नहीं माँगा। शाम को चेकाटोवस्की अपने रास्ते में था। भोजनोपरान्त एक बुढ़िया दो रूबल की मदद माँगने आयी। मैंने उसकी सहायता का वचन देकर अपने हृदय में अत्यानन्द का अनुभव हुआ।

क्रोंसटाट फ़िनलैण्ड की खाड़ी में एक द्वीप पर स्थित है। पीटर्सबर्ग के जहाज़ इसके, और ओरानीनबॉम के दरम्यान होकर जाते हैं। इस मुहाने की रक्षा के लिये बैटरीज़ लगी हैं, जिन पर ३६ तोपें लगी हैं। इनमें से प्रत्येक के फ़ायर में १८ सेर का गोला दगता है।

विरोध और विवाद से बचते रहो; विशेषतः उन लोगों के साथ जिनसे तुम प्रेम करते हो।

जिन नियमों पर चलने का मैंने निश्चय किया है, उनका

श्रेणी-विभाजन, स्थायी और सांयोगिक चारित्रिकता तथा स्पष्ट एवं अस्पष्ट रूप में निम्न-लिखित ढंग से होगाः—

उल्लङ्घन—(१) विलम्ब से उठा (२) 'रोगी' पढ़ने के बाद सुस्ती आगयी, (३) तरह-तरह के विचार मन में उठकर उसकी क्षुब्धता बढ़ाते रहे, (४) कैथेराइन के सम्बन्ध में नकाज़ ❋ लिखने का बहाना करके मिथ्या-भाषण किया, (५) मन में अहङ्कार को स्थान दिया, और (६) दृढ़ता न प्रदर्शित करके रुपया माँगने में सकुचा गया।

रुपया मिलने पर एण्ड्री का मुख़्तारनामा रद्द कर दिया।

५ जनवरी—प्रातःकाल 'रूसी ज़मीदार' की कहानी लिखी। भोजनोपरान्त भी ख़ूब परिश्रम किया और चौथा परिच्छेद समाप्त करने का पूर्ण प्रयत्न किया; परन्तु कृत्रिम ढंग से ही इसे समाप्त कर सका हूँ; तो भी मैं पूर्णतः सन्तुष्ट हूँ।

अलेक्सीव से रुपये उधार लिये। प्रातःकाल उनके पास गया, किन्तु वह घर पर मिला नहीं। भोजन के बाद उसने मुझे स्वयं (रुपये) दिये।

❋ जिस समय टॉल्सटॉय क़ज़ान विश्व-विद्यालय में थे, तो सिविल क़ानून के अध्यापक मेयर की प्रेरणा से उन्होंने कैथेराइन द्वितीय के नक़ाज़ की तुलना माण्टिस्की के 'एस्प्रिट-डि-लुई' से करते हुए एक लेख लिखा था, इसीलिये उनका उक्त लेख के सम्बन्ध में 'मिथ्या-भाषण' लिखना ठीक ही है।

यदि सूर्यदेव के दर्शन हुए तो सुबह शिकार के लिये जाऊँगा। बादलों के कारण बाहर नहीं निकला। शाम को 'सैनिक की नोटबुक' लिखी। विचार बहुत उत्पन्न हुए, किन्तु लिखने में मैंने काफ़ी असावधानी का परिचय दिया। भोजन के बाद उस बुढ़िया के पास गया, और लारका को दो रूबल दिये। शाम को गोधूलि तक जुकेविच के साथ बैठा रहा। चाय पीते समय मैंने सन् १८४५ ई० में प्रकाशित सैनिक-नियम पढ़े।

सन् १८४५ ई० में पहला कार्य यह हुआ कि अर्चीमीर की पहाड़ी पर क़ब्ज़ा कर लिया गया और दूसरे धावे में ऐण्डीस्क भी अधिकार में आ गया।

लिखने में प्रायः इसलिये विलम्ब अधिक हो जाया करता है कि प्रौढ़ विचारों का समावेश करने की इच्छा रह-रहकर जागरित होती है। ऐसी अवस्था में जब कभी तुम अपने लेख में प्रौढ़ विचारों को सन्निविष्ट करने में कठिनाई का अनुभव करो, तो अपने उन विचारों को अलग डायरी में नोट कर लो, और इस बात का ख़याल छोड़ दो कि तुम्हें उन विचारों को यथा-स्थान रखने में विलम्ब या अधिक परिश्रम होगा। विचार अपने-आप उचित स्थान ढूँढ़ लेंगे।

उल्लङ्घन—(१) विलम्ब से सोकर उठा, (२) यह कहकर झूठ बोला कि मैं हर्मिटेज (मठ) हो आया हूँ, (३) घसीट और

समझ में न आने-योग्य लिखावट लिखी। जब तक मैं इन नियमों की प्रणाली छोड़ नहीं देता, तब तक उनका सुविधा-जनक विभाजन उन स्थायी और अस्थायी प्रयोगों में है। प्रत्येक को अलग-अलग नोटबुकों में दर्ज करना। स्थायी नोटबुकों को नित्य लिखना। सप्ताह में एक बार उन्हें साद्यन्त पढ़ना और कठिन अवस्थाओं में उनसे सहायता प्राप्त करना। स्थायी नोटबुकों में से जो परमावश्यक हों, उन्हें चुन लेना और उन्हें नम्बरवार डायरी में उतार लेना। फिर केवल उल्लङ्घन देखने के लिये ही उन्हें खोला जाय।

अलेक्सीव से २५ रूबल उधार लिये।

६ जनवरी—प्रातःकाल 'रूसी ज़मींदार' की कहानी लिखी। पुरानी नोटबुक में से 'आइवन चुरिस'-नामक पाँचवें परिच्छेद की नक़ल की, किन्तु ज़ुक़ाम के बहाने सुस्ती फिर बढ़ने लगी। भोजन के समय तक कुछ घूमने-फिरने का निश्चय किया; पर बाहर निकलते-ही खाना खाने के लिये बुला लिया गया। खाना खाकर फिर कुछ टहला, काफ़ी पी, और बच्चों के साथ खेला। 'सैनिक की नोटबुक' के कुछ पृष्ठ लिखे। नोटबुक खोली, पर उसमें कुछ लिखा नहीं; फिर शाम के भोजन का समय आने तक चेखाटोवस्की के साथ लोगों के सम्बन्ध में गपशप करता रहा। भोजन के समय कुछ आत्मज्ञान-सम्बन्धी चर्चा हुई। भोजनोपरान्त मैं इपिस्का के साथ आनन्दपूर्वक गपशप करता रहा।

बड़े-बूढ़ों का क़ौल है कि जीवन पर सदा सावधानी के साथ दृष्टि रखना ही इन्द्रिय-निग्रह और संयम है।

दानोव-नामक फ़ौजी सिपाही ग़रीब रँगरूटों को रुपये और कपड़े देता है।

तोपख़ाने-वाला रुबिन जब रँगरूट था, तब उसने उस (दानोव) से सहायता और आदेश प्राप्त करके पूछा था कि "चचा, यह तो बतलाइये कि मैं इस उपकार का बदला आपको कब चुका सकूँगा ?" दानोव ने उत्तर दिया, कि "अगर मैं मर न गया तो तुम अवश्य चुकाओगे; परन्तु यदि मैं मर गया, तब तो यह बात पीछे ही रह जायगी।"

मैंने एक उदासीन टोली-संचालक को देखा। उसका एक पाँव ग़ायब था। मैंने उससे पूछा कि उसे अभी तक क्रॉस❀ क्यों नहीं मिला, तो उसने मुँह फेरकर कहा कि "क्रॉस घोड़ा साफ़ करनेवालों—साईसों—को मिला करता है।" "और उन्हें मिल सकता है, जो अच्छा खाना बनाना जानते हैं !" उसके पीछे-पीछे चलनेवाले कुछ लड़कों ने हँसकर कहा।

कॉर्पोरल स्पेवाक को रुबिन ने ९ रूबल रखने को दिये। वह उन्हें अपने रुपयों के साथ जेब में रखकर बाहर

❀ आदर-सूचक सैनिक तमग़ा, जो सेना में अफ़सरों के विजयी या घायल होने, अथवा कोई अन्य वीरतापूर्ण कार्य करने पर दिया जाता है। इसके साथ क्रॉस के प्राप्तकर्ता को पेंशन भी मिलती है।

सैर को गया। उस रात उसके वह सब रुपये चोरी गये। यद्यपि रुबिन ने उसे कोसा नहीं, पर वह बहुत रोया। इस बद-नसीबी से वह बहुत दुखी हुआ। रङ्गरूट ज़ाखरोव ने रुबिन को तसल्ली दी और उसके पास जो-कुछ—एक रूबल—था, वह उसने उसे दे दिया। टोली ने चन्दा करके उसका क़र्ज़ चुका दिया।

अपने वस्त्र स्वच्छ रक्खो—इससे आत्म-विश्वास और शांत आचरण की वृद्धि होती है।

उलङ्घन—(१) बिना विचारे ही एक टोपी ख़रीद डाली, (२) विलम्ब से उठा, (३) प्रातःकाल सुस्त रहा, (४) सुव्य-वस्था के विरुद्ध कार्य किया, (५) अलेक्सीव के आजाने पर लड़कों के साथ खेलने का कार्य-क्रम अनिश्चित ही रहा, (६) उद्देश्यहीन होकर इधर-उधर फिरता रहा—कोई काम नहीं किया।

एक कमरपेटी ख़रीदी। रूमालों के लिये लिखना है।

७ जनवरी—प्रातःकाल शिकार को जाने का विचार किया। काफ़ी तड़के उठा, पर रवाना होने के पूर्व एक पत्र लिखा। बर्फ़ काफ़ी पड़ रही थी, इसलिये शिकार में बिना कुछ मारे-ही भोजन के समय तक वापस आ गया। ग्रोमैन वापस आ गया है, और अब तिफ़लिस को जा रहा है। यह (ग्रोमैन) ईमानदार और अच्छे स्वभाव का आदमी है। भोजन के बाद 'सैनिक की नोटबुक' लिखी। अफ़सरों के चले जाने

पर मैं सो गया और चाय-पीने के समय तक सोता ही रहा। चेख़ाटोवस्की ने फिर आकर मुझे बाधा दी। ब्यालू के उपरान्त ज़ुकेविच के पास जा बैठा, और दिन-भर बेकार रहने के बाद अब सोने की तैयारी कर रहा हूँ।

एक रूसी—या कोई भी रूसी आदमी—ख़तरे के समय उस चीज़ को खोने के डर से अधिक भयान्वित होता है, जो उसे सौंपी होती है, या उसके पास अगर कुछ बहुमूल्य चीज़ होती है, तो वह अपने जीवन की अपेक्षा उस (चीज़) के खो-जाने से अधिक डरता है।

चुड़ैलों का काम क्या है। बच्चों के पीछे जंगली सुअर लगा देना, उन्हें घसीटकर एकान्त स्थान में ले जाना और उनका रक्त चूस लेना।

एक प्रकार की ऐसी घास होती है, जिसे 'भड़कनेवाली घास' कहते हैं। इस (घास) का काम है—दरवाज़े, हथकड़ी-बेड़ियाँ और ताले खोलना। कछुआ इसे अपना टटिहर का घोंसला खोलने के लिये लाता है।*

इपिश्का और गिचिक शाम को गो-धूलि के समय तूफ़ान

---

*यह रूसी ग्रामीणों का अन्ध-विश्वास है, जो चुड़ैलों को 'भड़कानेवाली घास' कहते हैं। वह सब बातें टॉल्सटॉय को बुड्ढे इपिश्का ने बतायी थीं, जो उनके साथ शिकार को जाया करता था, और कॉसेक्स (देहाती सुन्दरी) में इरोश्का के नाम से आया है।

में रवाना होते थे, और सुबह कौवा बोलने तक घोड़े पर सवार चले-ही जाते थे। इस प्रकार वे तातारी गाँवों और घोड़ों के गिरोह का पता लगाया करते थे। इपिश्का गीदड़ की बोली बोल लेता था। जब जवाब में कुत्ते भूँकते थे, तो इपिश्का गाँव की दिशा जानकर उधर ही बढ़ता था, और वहाँ घोड़े पकड़कर अपने साथ भगा लाता था; पर वे प्रायः रास्ता भूल जाया करते थे और दिन निकलने के पहले घर नहीं पहुँच पाते थे। उस वक्त़ तक़दीर की आज़माइश होती थी; क्योंकि दिन निकल आने के कारण उन्हें पकड़े जाने का भय रहता था। ऐसी अवस्थाओं में इपिश्का घोड़े से उतर कर उसे प्रताड़ित करने का भय दिखाकर अभीष्ट स्थान पर ले जाता था। घोड़ा उसे ठीक उसके गाँव पर पहुँचा देता था। फिर घोड़ों को घाट से उस पार उतारने का काम गिचिक लेता था, और इपिश्का को पार उतारकर घोड़ों को भी उस पार ले जाता था, तथा पहाड़ी की ओर लेजाकर उन्हें दशमांश मूल्य पर बेच-बेचकर, रुपया जेब में डाल, चुप-चाप घर चला आता था।

उल्लङ्घन—(१) तबियत को क़ाबू में न रख सकने के कारण इपिश्का को गाली दी, (२) अनियमितता का व्य-वहार किया—भोजन के बाद सो गया, (३) अनिश्चितता की अवस्था में पड़ा रहा—इपिश्का और चेख़ाटोवस्की को, जब वे मेरे रास्ते में थे, मैंने बुलाया नहीं ।

८ जनवरी—प्रातःकाल 'रूसी ज़मीदार' की कहानी लिखी। अच्छी तरह लिख नहीं सका। मज़मून जोड़े बिना ही व्यर्थ लिखे गये शब्दों को काट देने का नियम पालन करना चाहिए। आज खाना जल्दी खा लिया। कुछ देर इधर-उधर टहला। दोपहर को भी खाना खाने के बाद टहलता रहा। शाम को 'सैनिक की नोटबुक' लिखी। लिख अच्छी तरह सका, पर ठंड के कारण लिखना देर से शुरू किया। गोधूलि के समय दो घंटे के क़रीब अँगीठी के पास बैठा। एकान्त में बैठा रहा। कोई बात करनेवाला नहीं आया। गत दो दिनों से भयानक ठंड के कारण बड़ा कष्ट हुआ और मैं कुछ विशेष नहीं कर सका।

कुछ कच्चा मस्विदा लिखूँगा, जिसमें विचारों की क्रम-बद्धता या शुद्धता का विचार नहीं रक्खूँगा। उसकी फिर नक़ल करके उसमें से व्यर्थ का मज़मून निकाल दूँगा, और प्रत्येक विचार को उचित स्थल पर रक्खूँगा; अशुद्धियों एवं त्रुटियों को दूर कर दूँगा।

लोगों की बुराई करना छोड़ो—चापलूसी भी।

ऐसे आचरण से बचो, जिससे किसी को दुःख होता हो।

उल्लङ्घन—(१) सोकर देरी से उठा, (२) 'रूसी ज़मीं-दार' की कहानी को ढंग से लिखा, (३) मानसिक अव्य-वस्था और अशान्ति रही—चारपाई पर पड़े-पड़े ऊँघता रहा, (४) इपिश्का को नाराज़ कर दिया, (५) ल्युबाशा के

सम्बन्ध में मिथ्या-भाषण किया, (६) ग्रोमैन का विरोध किया।

अलेक्सीव से २० रूबल प्राप्त किये।

९ जनवरी—नियमों की प्रतिलिपि तैयार करनी थी। शाम को यह काम किया, किन्तु नक़ल अलग न करके एक नोटबुक में करली। साधारणतः मैंने नियमों का निश्चय अभी तक नहीं किया। मैं जानता हूँ कि ये (नियम) उपयोगी हैं, पर मैं नहीं जानता कि उनका उपयोग करूँ कैसे। सम्भवतः मैं इन्हें परीक्षित और अपरीक्षित—दो श्रेणियों में विभाजित करूँगा।

जो कुछ लिखा था, उसे दुहराया। यह भी मैंने शाम को किया और फिर संशोधन मुश्किल से थोड़ा-बहुत कर पाया।

भोजन के समय तक मटरगश्त करता रहा। अलेक्सीव से पूछा कि क्या मुझे क्रॉस (पदक) दिये जाने की सिफ़ारिश की गयी है। यह बात मैंने उससे तब पूछी, जब वह मुझसे मिलने आया था।

ठंड भयानक रूप में पड़ रही है, और ज़ुकाम के मारे मेरा बुरा हाल है। इसके कारण मुझे दिन-भर बेकारी में काटना पड़ा। कुछ विचार भी नहीं कर सका। समय मिला तो 'सैनिक की नोटबुक' लिखूँगा। शाम को तबियत हाज़िर होने पर भी लिखने के लिये समय नहीं मिला।

उल्लङ्घन—(१) देरी से उठा, (२) क्रोध में आकर अलेश्का

को पीटा, (३) सुस्त पड़ा रहा, (४) असंयमपूर्वक काम किया, (५) बेचैन रहा।

१०-११ जनवरी—१० को प्रातःकाल 'एक ज़मींदार का प्रभात'········विलम्ब से उठा, और कुछ कर नहीं सका। ठंड से बड़ी तकलीफ़ है, इसके अतिरिक्त ज़ुकेविच, इपिश्का और नोगे लोगों ने मेरे काम में काफ़ी बाधा डाली। कुछ टहलने के बाद पॉलिना इलीनिशा को लिखे हुए पत्र की नक़ल की। फिर टहलने गया; पर ठंड के मारे तुरन्त वापस आगया। पत्र फिर लिखने का निश्चय किया। विचारों और नियमों की ख़ानापुरी करनी थी; पर नहीं कर सका। शाम को 'सैनिक की नोटबुक' लिखी। खाने के बाद ठंड के मारे ज़ुकेविच के पास गया और सारी रात बेवक़ूफ़ी में गँवायी।

(१) लेटा रहा, (२) बेचैनी का अनुभव किया, (३) क्रुद्ध हुआ और बिल्ली को पीट दिया, (४) नियमों की बात बिल्कुल भूल गया, (५) भाग्य बतलाने की कोशिश की।

११ जनवरी—प्रातःकाल घर लौटा; पर ज़ुकेविच और अन्य लोगों ने आकर कुछ काम नहीं करने दिया। भोजन के बाद ओगलिन ज़ुकेविच और स्टारी-अर्टवाले मेरे दोस्त ने आकर शाम तक ऊधम मचाये रक्खा। चाय पीने के समय चेख़ाटोवस्की आया। उससे मैंने अपने दुर्भाग्य का रोना रोया। 'सैनिक की नोटबुक' का केवल आधा पेज लिख सका। यह ख़बर सुनी कि नोरिंग मार डाला गया।

(१) झूठ बोला, (२) सुस्ती की, (३) निश्चय से मुकर गया, (४) बेचैनी का अनुभव किया, (५) तक़दीर का हाल बताते-बताते परेशान हो गया।

१२ जनवरी—प्रातःकाल टहलने के बाद 'एक ज़मींदार का प्रभात' लिखना था; पर उठने में विलम्ब बहुत हो गया। फिर अँगोठी के पास बैठकर कुछ गर्म हुआ। धुवें के मारे दम घुटा जारहा है—ज़ुकाम और भी बिगड़ रहा है। ओग-लिन के आजाने के कारण कुछ लिख नहीं सका। टहलने अवश्य जाऊँगा। टहल आया। भोजनोपरान्त विचारों और नियमों की ख़ानापुरी की। टहलकर वापस आने पर बिस्तर पर पड़कर सोगया। जागकर नोटबुक खोली, और कुछ विचार किया, पर एक मौलिक विचार मन में आने पर भी उसे लिखा नहीं। शाम को 'सैनिक की नोटबुक' लिखी। फिर अपनी नोटबुक खोली, पर कुछ लिखने के बजाय तुर्की की लड़ाई और ख़िलाफ़त के प्रश्न पर विचार करने लगा। ब्यालू के बाद सुना कि मेरी बदली १२ वीं ब्रिगेड❀ को हो गयी। घर जाने का निश्चय किया।

❀ बारहवीं ब्रिगेड मोलदाविया और वालाचिया (आधु-निक रूमानिया) में क्रियाशील सेना थी। उस समय वह स्थान रूसी सेना के अधिकार में था। चूँकि कॉकेशस से मोलदाविया जाने के लिये काफ़ी समय दिया जाता था, इस-लिये टॉल्सटॉय को इस बीच घर जाकर सम्बन्धियों से मिल आने का अच्छा अवसर मिल गया था।

झूठी शान के लिये फ़ज़ूलख़र्ची न करूँगा।

शारीरिक आसक्ति से केवल वर्त्तमान (क्षणिक) तुष्टि मिल सकती है, और मानसिक आसक्ति—धन-लिप्सा—से भावी। आत्मिक तुष्टि भूतकालीन सत्कार्यों से ही मिलती है।

(१) विचार-मग्न रहा, (२) सुस्त पड़ा रहा, (३) अनियमितता से काम लिया, (४) ताश से लोगों को भाग्य-दशा बतलाई।

१३ जनवरी—प्रातःकाल 'युवावस्था' की प्रतिलिपि लिखी, विलम्ब से उठा और चांसलरी जाकर वहाँ से जुकेविच और किरका के यहाँ गया। सुलीमोस्की को पत्र लिखा। शाम को 'सैनिक की डायरी' लिखी। शाम अफ़सरों और उम्मीदवार अफ़सरों के साथ काटी। केवल 'हंस के गान' में से कुछ नक़ल किया और फिर लिखी हुई पाण्डु-लिपि के संशोधन में लग गया। ऊनी कोट की बाबत दरियाफ़्त करना है। पूछ लिया। रुपया उधार लेना है—नहीं माँग सका। ब्यालू के बाद 'कंटेम्पोरेरी' के सम्पादक-महोदय को एक ज़ोरदार पत्र लिखा।

(१) सुस्त रहा, (२) अपने-आप पर क़ाबू नहीं रक्खा, (३) नियम-पालन में त्रुटि की, (४) वर्दी पहनते समय क्रोधावेश में आगया, (५) माकालिस्की के सम्बन्ध में कुछ निश्चय नहीं किया, (३) ताश का खेल देखा।

१५ जनवरी—सुबह-शाम 'युवावस्था' ही लिखूँगा। प्रातः-

काल 'हंस का गान' समाप्त किया। अफ़सरों की वजह से बड़ी वाधा पड़ रही है। अलेक्सीव ने मुझे रुपये दिये। स्टीगिलमैन आगया है। उसने मेरे काम में बड़ा हर्ज किया।

(१) गर्व किया, (१) अनिश्चित अवस्था में रहा। ………बस, और कुछ याद नहीं आता।

१६ जनवरी—दिन-भर 'युवावस्था' में लगा रहूँगा। सोकर देर से उठा, क्योंकि रात-भर लिखता रहा था, और सुबह कौवा बोलने पर सोया। यानुशकेविच पहले लिख गया था, और जागते ही मकार्लिस्की आपहुँचा। उसके साथ किज़ल्यार नहीं गया; पर अपनी ज़रूरत की चीज़ एक सिपाही से मँगवा ली। ओगलिन आगया, जिसके कारण मैं उसके साथ बाहर जाने के पूर्व दैनिक प्रार्थना नहीं कर सका। १० बजे घर लौटकर मैंने एक अध्याय में यथेष्ट संशोधन किया। भोजन के समय मेरे मन में उदासी छायी रही, और क्रॉस के सम्बन्ध में किसी से कुछ नहीं पूछा, जिसके लिये मैं इतना बेचैन हूँ। भोजनोपरान्त 'मित्रता' का एक अध्याय अच्छी तरह लिखा और यानुशकेविच के लिखे हुए मज़मून में संशोधन किया। पर 'युवावस्था' शीघ्र समाप्त करनी है। स्नान करके कुछ पेय पिया और बिछौने पर लेट रहा। मैं बड़ी सुस्ती का अनुभव कर रहा हूँ और अभी तक ग्रॉज़्नी जाने के सम्बन्ध में कुछ निश्चय नहीं कर पाया हूँ।

निकोलेंका और अलेग्ज़ैण्ड्रोवना के पत्र प्राप्त किये।

कोई काम समाप्त कर लेने पर वह बिल्कुल भिन्न और सुन्दर चीज़ बन जाता है। यह याद रखना चाहिये कि जब किसी चीज़ की सफलता के लिये प्रयत्न करना हो, तो पहले नीचे से शुरू करना चाहिए—उदाहरणार्थ, कचहरी का काम पहले मुंशी के द्वारा शुरू करना चाहिए।

जाड़े के मौसिम में प्राकृतिक दृश्यों का सौन्दर्य कितना बढ़ जाता है, इसका काव्यमय दिग्दर्शन मैंने आज ही किया। आकाश में एक बादल उठता है, और वह सूर्य को अपनी आड़ में छिपा लेता है—केवल उसकी श्वेत आभा ही दीखती है। सड़कों पर नन्हीं-नन्हीं बूँदें झर रहीं हैं—वायु-मण्डल में नमी छायी हुई है।

(१) सुबह किज़ल्यार से भेड़ की खाल-वाला कोट मँगाते समय विचार-शून्यता में पड़ा रहा, (२) क्रॉस प्राप्त करने और ग्रॉज़्नी जाने के सम्बन्ध में कुछ निश्चय नहीं कर सका।

घटनाएँ—नोरिंग की मृत्यु और मेरा तबादला। कार्य—'युवावस्था' को प्रतिलिपि दुहराई।

विशेष उल्लङ्घन—सुस्ती, अनिश्चितता, अनियमितता और बेचैनी। साधारणतः इस सप्ताह मैं अपने-आपसे असन्तुष्ट हूँ।

१७ जनवरी—'युवावस्था' की प्रतिलिपि और आगे तक दुहराई। प्रातःकाल अफ़सरों के आ जाने के कारण मैं दैनिक प्रार्थना नहीं कर सका था। उनके साथ मैं गिरजाघर

गया। वहाँ से घर वापस आकर स्मरण आया कि मैं शनिवार का नियम, बिल्कुल भूल गया हूँ-- फिर डायरी देखकर दो-एक चीज़ें नक़ल कीं।

खाने के लिये बुलाया गया। बाद में कॉफ़ी पी। तोपख़ाने में जाकर सब से बिदा ली और ओगलिन के यहाँ चाय पी। मैंने दो अध्याय बदलकर लिखने का इरादा किया था, किन्तु बाल्टा ने आकर बाधा डाल दी।

अनावश्यक खरापन दिखाने से बचना चाहिए।

जिन लोगों के सम्बन्ध में तुम्हें निश्चय न हो, उनकी घनिष्टता और मित्रता से बचो।

अनिश्चितता की अवस्था में शीघ्रता से काम लेना चाहिए। और चाहे तुम्हारी यह शीघ्रता व्यर्थ ही क्यों न मालूम हो, क़दम बढ़ा दो।

परसों ओगलिन ने पारिवारिक़ बॉण्ड पर हमला किया और अपने भाई के मामले का हाल बतलाया। उसने कहा कि "वह (भाई) मेरी जायदाद क्यों रेहन रखना चाहता है? मैं सुख से जीवन व्यतीत करने का अभ्यस्त हूँ।" मुझे भी ऐसी आदत डालकर प्रसन्न होना चाहिए।

इपिश्का ने दो और आदमियों की सहायता से एक जङ्गली रीछ मारा है। इस समय उन (शिकारियों) का अजीब हाल है—शराब पीकर कुत्तों की तरह मस्त होकर

भौंक रहे हैं, और बड़ी मग्नता के साथ अपने शिकार का हाल सुना रहे हैं।

(१) कल अलेश्का को हिसाब के मामले में गाली दी, (२) ओगलिन की उपस्थित के कारण प्रार्थना नहीं कर सका, (३) अस्थिरता के साथ सिपाहियों के पास गया, (४) सुस्त रहा, गर्ववश.........दिया।

१८ जनवरी—'युवावस्था' का संशोधन किया। दो अध्याय लिखे। प्रातःकाल मित्रों और इपिश्का के बाधा देने पर भी काफ़ी लिख लिया। भोजन के बाद फिर लिखा। शाम को कुछ अफ़सर आये। अलेक्सीव ने मुझे रुपये दिये।

१८ जनवरी (मङ्गलवार)—'युवावस्था' समाप्त करके यहाँ से चल देना है। कार्य-क्रम के अनुसार ही काम किया। तड़के उठा, और जब तक बाहर नहीं गया, या तो लिखता रहा, या किसी अन्य कार्य में लगा रहा। गर्व में आकर मैं गिरजाघर की प्रार्थना में सम्मिलित हुआ। अलेक्सीव बड़ी दयापूर्वक मुझसे विदा हुआ। जाते समय वह और ज़ुकेविच—दोनों ही आँखों में पानी भर लाये! मैं शेड्रिन तक (उनके साथ) गया। 'युवावस्था' को पूरा पढ़कर निश्चय किया कि अब जब तक घर न जाऊँगा, उसमें हाथ न लगाऊँगा। रास्ते में 'सैनिक की नोट बुक' लिखूँगा॥

कल मैंने एक प्रारम्भिक पुस्तक में उन नियमों को अपेक्षा-

कृत सुन्दर रूप में पढ़कर आश्चर्य किया, जिन्हें सुव्यवस्थित रूप में लिखने के लिये मैंने इतना परिश्रम किया था। इससे मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि नियमों का कोई दोष नहीं, मेरा उन्हें लिख डालना ही लड़कपन और तुच्छता है। फ्रैंकलिन का जर्नल बिल्कुल पृथक् चीज़ है।

जितने प्रधान दोष हैं उन्हें लिखकर उनसे बचते रहना चाहिए, साथ ही अपने विचारों को भी लिखते जाना चाहिए। इस प्रकार मेरे कार्य में केवल इतना परिवर्तन करना है कि नोटबुक छोड़कर फ्रैंकलिन का-सा जर्नल तैयार किया जाय।

आज मैंने इस तथ्य पर विचार किया कि मेरा लोगों के साथ अनुराग बढ़ गया है। सहयोगी अफ़सरों का पहले मैं कुछ भी आदर नहीं करता था; अब मैं समझता हूँ कि निकोलेंका मुझे प्रेम करता, तो मुझे कैसा विलक्षण मालूम होता था। मैं अपने विचारों में कॉकेशस की नौकरी से एक विशेष परिवर्तन देख रहा हूँ। यहाँ के वातावरण में पड़कर इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मनुष्य को यह देखना चाहिए कि अमुक मनुष्य में गुण क्या हैं।

एक क़ज़्ज़ाक़फ़िर्क़े की स्त्री ने मुझ से कहा कि उसने तुर्की के टुकड़े-टुकड़े हो जाने की बात सुनी है।

'युवावस्था' में मैं निम्न-लिखित संशोधन करना चाहता हूँ:—

(१) 'चाराबैंक की यात्रा'-वाले परिच्छेद को संक्षिप्त करना, (२) विचार की अभिव्यक्ति का ढंग सरल बनाना, और 'तूफ़ान' में जहाँ पुनरावृत्ति-दोष आ गया है, उसे काट देना, (३) माशा को और उचित रूप में चित्रित करना, (४) 'बुरे निशान' को 'संघर्ष' के साथ मिला देना, (५) 'बसन्त' का खण्ड जो बस्ते में मिला है, जोड़ देना, (६) 'माँ के दिवा-स्वप्न' को बदल डालना, (७) 'ठोक-पीटकर वैद्यराज' की जगह कोई और शीर्षक बैठाना, (८) 'डबको' और 'निको-लेंका' का आरम्भिक भाग बदल देना, और वार्तालाप के समय हम लोगों का रुख़ क्या रहता है, इसका कुचित विस्तृत वर्णन्।

(१) गिरजे की प्रार्थना के समय अन्यमनस्क रहा, (२) सोच-विचार में पड़ गया था—उस स्त्री को एक रूबल दिया, (३) अब अनियमित अवस्था में हूँ।

२० जनवरी—विलम्ब से उठा। निकोलेव और स्टारी-अट के पास पहुँचा। इस ख़बर से मुझे बड़ा दुःख हुआ कि मुझे क्रॉस नहीं मिलेगा; पर आश्चर्य है कि एक-ही घंटा बाद मेरा मन फिर प्रफुल्लित हो गया। सुलीमोस्की ने मेरी रवा-नगी का प्रबन्ध कर दिया है, और कल मैं रवाना हो जाऊँगा—(रास्ते में) कहीं नहीं रुकूँगा।

सुलीमोस्की को मैंने बड़ा खरा पाया। उसने अपने पिता के प्रति अविनीत बनने का सच-सच कारण मुझे

बतला दिया। सुलीमोस्की ने मुझे इस बात के समझने का अच्छा मौक़ा दिया कि सम्बन्ध का वास्तविक रूप में क़ायम रखना कैसा आवश्यक है।

२१ जनवरी—तड़के उठा और बाल्टा के लिये काफ़ी समय तक प्रतीक्षा की। विचार-शून्यता के साथ शराब में मस्त सिपाहियों के हाथ पड़ गया। सौभाग्यवश फ़ौज का ख़ज़ाञ्ची मेरी मदद को आ गया। निकोलेव में चेकिन से भेंट हो गयी। हम दोनों ने संयुक्त रूप से अलेक्सीव को एक पत्र लिखा। अब हम गैलुचे पहुँच गये।

यह एक तथ्य है, जिस पर प्रायः विचार करते रहना चाहिये। थैकरे अपना पहला उपन्यास लिखने के लिये तीस वर्ष तक तैयारी करता रहा; किन्तु ड्यूमा ने सप्ताह में दो-दो उपन्यास लिख डाले।

जब तक अपनी चीज़ पूरी न लिख लो, तब तक उसे किसी को न दिखलाओ; क्योंकि कोई वास्तविक परामर्श प्राप्त करने की जगह तुम्हें हानिकारक बातें अधिक सुनने को मिलेंगी।

एक ख़ास तरह का सिपाही मैंने ऐसा देखा, जिसके पैर पीछे की ओर बहुत मुड़े हुए थे।

(१) तक़दीर का हाल बतलाया, (२) शान में आकर सिपाहियों को शराब पीने के लिये रुपये दिये, (३) तबियत में सुस्ती रही, (४) मार्ग में और शाम को ठहरने पर भी चञ्चल-चित्त बना रहा।

२२-२७ जनवरी—२४ जनवरी को बेलोगोरोसेत्व पहुँचा। चर्न से १०० वर्स्ट* की दूरी पर मैं रस्ता भूल गया और रात-भर इधर-उधर भटकता फिरा। मुझे 'बर्फ़ीला तूफ़ान'-नामक एक कहानी लिखने की बात सूझी। ठीक तौर पर अपने-आपको परिचालित नहीं कर सका। दो दिन और दो रात से बर्फ़ीला तूफ़ान चल रहा है, जिससे कपड़े-आदि काफ़ी भीग गये हैं। तबियत ख़ूब साफ़ है। लोगों से मिलने को तबियत बहुत चाहती है, इसलिये अपने नियमों को ढीला करके भी लोगों से मिलकर गपशप में व्यर्थ समय काट देता हूँ—कभी-कभी तो मैं ऐसा बनकर बैठता हूँ कि मेरे लिये नियमों का अस्तित्व-सा ही मिट जाता है।

रास्ते-भर किसी और चीज़ ने मुझे रूस की याद ऐसी नहीं दिलाई, जितनी स्लेज गाड़ी के घोड़े ने, जो दोनों कान पीछे-की ओर मोड़े हुए गाड़ी के हचक-हचककर चलने पर भी सरपट दौड़ने की कोशिश करता था।

(१) राह में मिलनेवाले लोगों से मिलने-जुलने और नम्रता-प्रदर्शन के कारण मैं अपने कर्त्तव्य से चूकता जा रहा हूँ, (२) सुस्त पड़ा रहा,—ऐसे समय में भी यात्रा नहीं की, जब सरलतापूर्वक कर सकता था, (३) बर्फ़ीले तूफ़ान के कारण डर गया (४)..............

जोवन में सफलता प्राप्त करने के लिये नुष्य में इन

---

* वर्स्ट पौन मील के लगभग होता है।

गुणों का होना आवश्यक है—(१) साहसिकता, (२) स्वकीय निर्णय, और (३) शान्तचित्तता।

ये प्रधान गुण हैं, जिनकी उपेक्षा करने पर मैं उसे नोट-बुक में दर्ज करूँगा। यह उपरोक्त उल्लङ्घनों से एक पृथक चीज़ होगी।

२८-३१ जनवरी तथा १-२ फ़र्वरी—दो सप्ताह से सफ़र में हूँ। केवल बर्फ़ीला तूफ़ान ही एक स्मरणीय घटना हुई है। अपने-आपको सुचारु रूप में परिचालित कर रहा हूँ। मेरी भूलें यह थीं—(१) अन्य यात्रियों के साथ कमज़ोरी का इज़हार, (२) मिथ्याचरण, (३) डरपोकपन, (४) दो बार अति क्रुद्ध हो उठना।

निकोलेंका और सेरेज़ा यहाँ नहीं हैं। और मेरे सोचने, करने और अनुभव करने के लिये काफ़ी विषय पड़े हैं; मैं अब डायरी में अधिक बातें लिखूँगा।

२ फ़रवरी—विलम्ब से उठा, गाँव के मुखिया से बात कीं। ऑसिप से भी कुछ गप-शप हुई। प्रत्येक वस्तु मेरी आशा से अधिक सुव्यवस्थित रूप में मिली। कुछ दूर टहला। तबियत अच्छी नहीं मालूम पड़ती। वैलेरियन आ पहुँचा है।

(१) झूठ बोला, (२) चंचल-चित्त रहा।

३ फ़रवरी—तड़के उठा। गले में दर्द है; फिर भी मैं घोड़े पर चढ़कर घोड़साल के लिये उपयुक्त स्थान देखने के लिये

गया। प्रधानतः कृषि के सम्बन्ध में बातें कीं। ओगलिन को एक पत्र डाला। सुनने में आया है कि मेरी तरक्क़ी हो गयी है। (मेरी) जायदाद बड़ी अच्छी अवस्था में है। कितने-ही लोग मर चुके है। ऑर्सेनेव, चेरकास्की और नेराटोव ने आत्म-घात करके जानें दे दीं।

(१) जर्मन और मुखिया के साथ मिल के सम्बन्ध में चंचलता, और दुर्बलता का व्यवहार (२) अनिश्चितता।

नोट-बुक कहीं खो गयी; किन्तु सफ़र में मैंने लगभग ६० रूबल ख़र्च किये हैं।

४ फ़रवरी—तड़के उठा। रात-भर बेचैनी और अनिद्रा ने बेहद तंग किया। गॉटियर* को एक पत्र लिखा, घोड़े पर चढ़कर गिरजाघर गया। भोजन के पश्चात् पत्र लिखे और अपनी चाची से मुलाक़ात की। तबियत अच्छी नहीं है।

(१) सरायवाली भठियारिन को किराया चुकाना भूल गया, (२) मौरिकिया के साथ चित्त चंचल हो रहा है, जिसने मुझे गिरजाघर में व्याकुल कर दिया था, (३) प्रातःकाल बड़े आलस्य में व्यतीत हुआ, (४) इरेमोव-वाले क़र्ज़ के सम्बन्ध में चाची से झूठ बोला। जब मैं उससे मिला, तो स्वाभाविक रीति से न मिलकर अपनी उग्रता का पूर्ण प्रदर्शन किया।

मेरी प्रधान त्रुटि यह है कि मैं चारित्रिक दृष्टि से अब-तक लड़कपन से दूर नहीं हुआ हूँ, जिसके कारण मुझमें

---

* मॉस्को का एक पुस्तक-विक्रेता।

उच्छृङ्खलता है, और अब पचीस वर्ष की अवस्था में पुरुषत्व की स्वतन्त्र आदतें मुझमें आ पायी हैं, जो औरों को वह सब बीस वर्ष में ही प्राप्त हो जाती है।

५ फ़रवरी—तड़के उठा। ड्रोगडो और गोर्शाका को पत्र लिखे, अब भी तबियत से सुस्ती दूर नहीं हुई। भोजन के बाद घोड़े पर सवार हो, ग्रुमाण्ट❀ गया। कल जो-जो हुक्म दे आया था, आज उनमें कुछ और जोड़ आया। कल तुला जाऊँगा। दिन-भर शिथिल पड़ा रहा। एक दरिद्र स्त्री को तीन रूबल दिये। अब मेरे पास २६ रूबल ३० कॉपेक शेष रहे हैं। मुझे २४० रूबल का क़र्ज़ अदा करना है।

६ फ़रवरी—सुबह शीघ्र उठा। कुछ हुक्म देकर ६०० रूबल कौंसिल के लिये साथ ले, तुला की ओर रवाना हुआ। गीक से मिला, और उससे मामला तै कर लिया, यद्यपि बहुत अच्छी रीति से नहीं, फिर भी जो कुछ फ़ैसला हुआ, सन्तोषजनक है। मेरी तरक्क़ी का समाचार आया। माशा से मिलने गया। अब भी तबियत सुधरी नहीं है—जवानी में-ही बुढ़ापे का भान हो रहा है।

दिन-भर अपने-आपको भली-भाँति परिचालित करता रहा। तुला में तीन रूबल ख़र्च किये। दफ़्तर से १० रूबल और लिये। अब ३३ रूबल मेरे पास हैं। अलेकसीव को

❀ गुमाण्ट, पोल्याना के निकटस्थ एक कृषि-केन्द्र का नाम है। यह नाम टॉल्सटॉय के दादा का रक्खा हुआ था।

१०० रूबल भेज दिये हैं। अब मुझ पर १४० रूबल क़र्ज़ के रह गये हैं।

१७ जनवरी से ३ फ़र्वरी तक की घनटाएँ—१९ को स्टारी-अर्ट से रवाना हुआ, और क्रॉस के सम्बन्ध में अपनी असफलता की बात सुनी। सफ़र बहुत ख़राब रहा। एक चिरस्मरणीय रात्रि को मैं रास्ता भूल गया। २ फ़रवरी को थकावट और बीमारी से परेशान होकर वासनामा पोल्याना (ग्रुमाएट) पहुँचा। सब काम सुचारु रूप से चल रहा था; केवल मैं ही पिछड़ा हुआ, परिवर्तित और वयःप्राप्त हो गया था। मेरे भाई मॉस्को गए हुए हैं। ऑर्सेनीव का देहान्त हो चुका है, चेरकास्की और नेरातो ने अपने-अपने गले काटकर आत्म-हत्या कर ली हैं। ६ तारीख़ को मैं तुला में था, गीक के साथ (एक) मामले का फ़ैसला किया, और अपनी तरक्क़ी का समाचार सुना।

कार्य—'युवावस्था' की समाप्ति। नियमों को श्रेणी-वद्ध करके नहीं लिखा करूँगा। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये तीन आवश्यक नियमों को कार्यान्वित करने का निश्चय किया है। बहुत-से हुक्म दिये, कुछ पत्र भी लिखे; पर साधा-रणतः हुक्म देने और क्रियाशील बने रहने का अभ्यास जाता रहा है।

बीस दिन में १२० रूबल ख़र्च कर चुका हूँ। क्या-क्या चीज़ें ख़रीदीं, इसका हिसाब नहीं लिखा।

७ फ़रवरी—देरी से उठा, पत्र लिखे, गिरजाघर गया। एक ख़ाका खींचा। व्लास को देखने के लिये ऑसिप और तदनन्तर ऑर्सेनेवा गया। वहाँ से वर्गानी* को अपने साथ वापस लाया। फिर कुछ अन्तिम हुक्म दिये।

८ फ़रवरी—दोपहर को चलकर ९ बजे……पहुँचे। रास्ता अच्छी तरह नहीं कटा। माशा और चाची ने मुझे बड़ा प्यार किया। मालूम नहीं, कब दिन व्यतीत हो गया।

९ फ़रवरी—विलम्ब से उठा। पास के कमरे में गया, और उस (माशा) के साथ प्यानो बजाते-बजाते सारा दिन न-जाने कब बीत गया; चाची और बच्चों के साथ भी काफ़ी आनन्द से समय व्यतीत हुआ।

(१) मन में अत्यन्त दयालुता के भाव उत्पन्न हो रहे हैं, (२) अनियमितता ने अभी तक पिण्ड नहीं छोड़ा है।

१० फ़रवरी—९ बजे के लगभग उठा। फिर पासवाले कमरे में गया। वहीं अलेक्सीव को एक पत्र लिखा। बैरोनेस से मुलाक़ात करने गया, और यद्यपि उसको मिलना बेढंगा-सा मालूम पड़ा; पर मैं लजाया नहीं। भोजन के बाद अपना वसीयतनामा लिखा और कुछ गपशप की।

१३ फ़रवरी—वसीयतनामा पूरा लिखकर १० बजे रवाना हो गया। रास्ते में वर्गानी के साथ खूब गपशप की, और घर

* वर्गानी, मिस आर्सेनेव्स की सहेली थी। कुछ दिनों तक टॉल्सटॉय इस पर बहुत आसक्त थे।

आकर देखा, तो मेरे भाई और पर्फ़िलिव्स आये हुए थे। मितेंका (मित्री) को देखकर मुझे शोक हुआ और सेरेज़ा को देखकर मैं प्रसन्नता से मुग्ध हो गया। नेकरासो के पास से एक पत्र आया, वह 'बिलियर्ड मार्कर की कहानी' से सन्तुष्ट नहीं हुआ।

दो दिन से कुछ नहीं किया; किन्तु गले की बीमारी हो जाने पर भी दोनों दिन प्रसन्नतापूर्वक काटे।

१४ फ़रवरी—दूसरे दिन तबियत वैसी दुरुस्त नहीं रही, तो भी दिन अच्छी तरह व्यतीत हुआ। दफ़्र से २३५ रूबल और लिये हैं। सेरेज़ा के पास से २३५ रूबल आये हैं। एक बन्दूक़ के लिये १० रूबल पेशगी दे दिये हैं, एक रूबल मैक्सिम को दिया है। अब मेरे पास १६९.४५ रूबल शेष रहे हैं।

१६-१८ फ़रवरी—इसके अतिरिक्त और कुछ याद नहीं कि मैं मॉस्को पहुँच गया। शारीरिक और नैतिक अवस्था अच्छी नहीं। रुपया बुरी तरह ख़र्च कर डाला है। एक कोट पर १३५, फ़ाल्तू कपड़ों पर ३५, फुटकर चीज़ों पर १० और जूतों पर १० रूबल—कुल १९० हुए। बाक़ी रहे ४४२.६०। निकोलेंका के २०० और अलेक्सीव के १४० रूबल देने हैं।

१४ मार्च १८५४—(बुख़ारेस्ट) क़रीब एक महीने के बाद नई नोट-बुक में डायरी शुरू कर रहा हूँ। इस अवधि में इतना व्यस्त और व्यग्र रहा, कि कुछ सोच तक न सका; इतना भी नहीं, कि डायरी तो लिख सकूँ।

कॉकेशस से तुला गया, चाची-ताइयों से मिला, बहन के दर्शन किये, और वैलेरियन तथा झुण्ड-के-झुण्ड साथियों से भेंट की। मेरे तीनों भाई और अन्य लोग मुझे देखने आये, और मुझे मॉस्को ले गये।

मॉस्को से मैं पॉक्रोव्स्क गया। वहाँ मैंने सब लोगों से विदा ली। यह विदा के क्षण मेरे जीवन की अत्यन्त सुखद घड़ी थी। वहाँ से मैं मितेंका के पास गया, जो सिर्फ़ मेरी सलाह मानकर ही मॉस्को छोड़ गया था। तब पोल्तावा और किशिनेव इत्यादि की सैर करता हुआ मैं, दो दिन हुए, बुख़ारेस्ट पहुँचा हूँ। इन दिनों में मैं ख़ूब प्रसन्न रहा।

मेरी सरकारी स्थिति अभी तक अनिश्चित है। पिछले हफ्ते से मैं किसी कुग्रह के चक्कर में बीमार पड़ गया हूँ। क्या फिर मेरा परीक्षा-काल आरम्भ होगया? पर कुछ भी हो, क़सूर मेरा ही है। भाग्य ने मेरा सर्वनाश कर दिया। मैंने अपने हाथों अपने पैर कुल्हाड़ी मारी है। कुर्स्क छोड़ने से अब तक के समय पर विचार करके अपने-आपको धिक्कारता हूँ। कैसे दुःख की बात है, कि जिस प्रकार दुर्भाग्य की घड़ी मुझे दुःख देती है, उसी तरह सुख का समय भी मुझे सहता नहीं। आज सेना के हेड-क्वार्टर में कमाण्डर के पास जाऊँगा। कुछ चीज़ें ख़रीदनी हैं, फिर इधर-उधर घूम-घाम कर घर लौटूँगा, और पत्रादि लिखकर भोजन करूँगा। भोजन के बाद कुछ काम करूँगा, और शाम को स्नान करने

जाऊँगा। शाम को घर पर ठहरूँगा, और 'युवावस्था' की जाँच करूँगा।

१५ जून—एक दम तीन मास का विश्राम ! सुस्ती और काहिली के तीन महीने, जिनमें ऐसा जीवन बिताया गया, जिससे मैं कदापि सन्तुष्ट नहीं हो सकता। तीन सप्ताह स्केडी-मन के साथ बिताये, और खेद की बात है, कि वहाँ टिक न सका। अफ़सरों के साथ पट सकती थी, और कमाण्डर से निभाव होना सम्भव था। इसके सिवा, कुसङ्ग-दोष और दबी हुई वासनाओं के उभाड़ पर भी वहाँ अच्छा प्रभाव पड़ सकता था। मुझे वहाँ रहकर अपनी काहिली और चिड़चिड़े मिज़ाज को बदलना चाहिये था, और वर्तमान परिस्थित से अपना नैतिक उत्थान करना चाहिये था। मैं सुधर सकता था, और काम में मन लगा सकता था।

मेरी बदली ठीक उस समय हुई, जबकि मैं कमाण्डर से लड़ पड़ा था। इससे मेरे आत्म-सम्मान पर चोट पहुँची। मेरी बीमारी ने—जिसके कारण मैं कुछ भी काम न कर सका—मुझे दिखा दिया, कि मैंने अपने-आपको कहाँ तक गिरा लिया है। समाज की दृष्टि में मैं जितना ऊँचा चढ़ रहा हूँ, अपनी में उतना ही नीचे गिर रहा हूँ। मैंने झूठ बोला। शेख़ी बघारी और सब से अधिक शोचनीय बात यह है, कि आशा के अनुकूल मैं युद्ध के मैदान में गोलियों की बौछार के मध्य में नहीं गया।

सिलिस्ट्रिया का धावा रोक दिया गया है। मैंने अभी काम शुरू नहीं किया है। मेरे साथी-अफ़सरों में और कमाण्डर के सम्मुख मेरी अच्छी प्रतिष्ठा है। मेरा स्वास्थ्य सन्तोषजनक है। नैतिक दृष्टि से, मैंने अपने पड़ौसियों की सेवा में अपना जीवन अर्पण करने का निश्चय कर लिया है। मैंने अपने-आपसे कहा है—"अगर तीन दिन के भीतर-भीतर मैं किसी की कुछ सेवा न कर सका, तो आत्म-हत्या कर लूँगा।" भगवान्! मेरी रक्षा करो।

भोजन के समय तक सेरेज़ा, चाची और वॉल्कोन्स्की को पत्र लिखूँगा। भोजन के बाद 'एक घुड़सवार के अनुभव'।

२३ जून—सिलिस्ट्रिया से मॉड की तरफ़ कूच करते हुए मैं बुख़ारेस्ट गया। वहाँ जुआ खेला, और क़र्ज़ लेने पर विवश हुआ। यह स्थिति बड़ी लज्जाजनक है—ख़ासकर मेरे लिये! चाची और मित्री को चिट्ठियाँ लिखीं। नेक्रॉसा* और ऑस्का को भी पत्र लिखे। अभी तक यह तय नहीं कर

* पिछली तरफ़ ऑस्ट्रियावालों के उत्पात के कारण रूसी सेनाओं को टर्की से हटना पड़ा, और सिलिस्ट्रिया पर धावा बोलना पड़ा, जो क़रीब-क़रीब जीत लिया गया था। टॉल्सटॉय ने, जो इस गढ़ी के युद्ध में भाग लेने को बेहद उत्सुक थे, बाद में, इसकी जगह अपने को सेवस्टॉपॉल की रक्षा करते पाया।

पाया, कि किस काम में लगूँ। इसलिये कुछ भी नहीं कर रहा हूँ। मेरा ख़याल है, कि 'ज़मींदार का प्रभात' को हाथ में लेना उत्तम होगा।

२४ जून—सुबह काम करने बैठा, पर कुछ न किया। जब गोर्शाका × ने आकर विघ्न डाल दिया, तो मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। जनरल के मकान पर खाना खाने के बाद मैंने क़ुरान पढ़ी। फिर डॉक्टर के पास गया, जिसने मुझे बताया कि मुझे ऑपरेशन कराना होगा। आराम होने में डेढ़ महीना लगेगा। रात होने तक शुबिन से गप-शप करता रहा। गप-शप का विषय था—रूसी दास-प्रथा। यह सच है, कि ग़ुलामी बुरी चीज़ है, लेकिन हमारे यहाँ की ग़ुलामी में सद्भावना है।

२५-२९ जून—एक-एक दिन करके मैं ऑपरेशन को बुख़ारेस्ट जाने की प्रतीक्षा में टालता रहा; और यहाँ आकर मैंने किसी सन्तोषजनक डॉक्टर और स्थान के बहाने उसे टाला। गिर्गिवो में एक ऐसा काम हो रहा है, जिसमें—अगर मैं अच्छा होता, तो हिस्सा ले सकता था। मेरे पास धेला भी

× प्रिन्स एम० डी० गोर्शाका के, जो मेन्शिका की जगह सेवस्टॉपॉल की सेना का कमाण्डर नियुक्त हुआ था, दो भाई और तीन भतीजे थे। 'डायरी' में यह बात स्पष्ट नहीं होती, कि पाँचों में से कौन-से गोर्शाका का ज़िक्र टॉल्सटॉय ने किया है।

नहीं बचा है, और क़र्ज़ सिर पर सवार है। कल वैलेरियन का एक पत्र मिला है, जिसमें उसने लिखा है, कि वहाँ न तो घोड़े हैं, और न रुपया।

एक ख़तरनाक इलाज कराने की सोचता हूँ। लापर्वाही और आनन्द का जीवन बिताना चाहिये। नहीं जानता, इस इच्छा का परिणाम क्या निकलेगा।

३० जून—आज क्लोरोफ़ॉर्म के द्वारा ऑपरेशन किया गया। बहुत ही अप्रतिभ रहा। कुछ नहीं किया; क्योंकि कर ही न सका। आशा है, कि मैं अच्छा होजाऊँगा।

१ जुलाई—वैलेरियन और ओगलिन को पत्र लिखा। स्वास्थ्य न अच्छा है, न बुरा है। अकेला रहता हूँ, और पढ़ता हूँ, मगर काम कुछ शुरू नहीं करता; यद्यपि 'एक घुड़-सवार के अनुभव' मुझे विशेष रूप से आकृष्ट कर रहा है।

२ जुलाई—'गिल्बर्ट एट् गिल्बर्ट' पढ़ा। मेरा स्वास्थ्य बदस्तूर है। 'एक घुड़सवार के अनुभव' निखार पर है। मेरा विचार है, अब मैं उसे हाथ में ले लूँगा—तीन जुलाई को।

३ जुलाई—दिन-भर पढ़ता रहा। काम आगे बढ़ने से इन्कार करता है। सन्ध्या-समय प्रुश, ओलख़िन और एपट्रॉपा से गप-शप हुई। बेवक़ूफ़ी से पोलेनका का पोर्ट-फ़ोलियो प्रुश को दे डाला; उसने बहुतेरा इन्कार किया, पर मैंने दे ही दिया। जैसे ही मैं एकान्त में होता हूँ, और अपनी आलोचना करने लगता लगता हूँ, मैं स्वयमेव अपने पिछले विचार पर पहुँच

जाता हूँ—वही अपने-आपको 'पूर्ण' बनाने का। लेकिन सब से बड़ी ग़लती—पूर्णता के मार्ग पर मेरे धैर्य्यपूर्वक न चल सकने का प्रधान कारण—यह है, कि मैं पूर्णता और किसी के पूर्ण बनने के विधान के झंझट में फँस जाता हूँ। सब से पहले आदमी अपने को, और अपने दोषों को भली प्रकार समझे, और उन्हें सुधारने की कोशिश करे; यह नहीं कि एक-दम अपने-आपको पूर्ण बनाने के प्रयत्न में लग जाय, जो कि मेरे-जैसी परिस्थित में पड़े हुए मनुष्य के लिये न-सिर्फ़ असम्भव है, बल्कि जिसका ध्यान करने तक से आदमी हिम्मत हार बैठता है।

वही बात है, जो खेती करने में मुझे दरपेश आती है—या पढ़ने में, साहित्य रचना करने में, या जीवन-यापन करने में, जिससे सामना पड़ता है। खेती के काम में पूर्ण दक्ष बनना चाहता था, लेकिन मैं यह भूल गया, कि आदमी को पहले अपनी अपूर्णताओं को दूर करना चाहिये—जो मुझ में अत्याधिक संख्या में विद्यमान हैं। मैं खेतों का ठीक-ठीक विभाजन करना चाहता था, यद्यपि मेरे पास न खाद था, न बीज·······

आदमी अपने-को उसी रूप में ले, जैसाकि वह है, और अपने भीतर जो ग़लतियाँ हैं, उन्हें सुधारे। प्रकृति, जो स्वभाव-से ही सुन्दर है, मुझे बिना किसी नोटबुक की सहायता के अच्छाई की तरफ़ ले जायगी। यह सदा ही मेरा

सुख-स्वप्न रहा है। मेरा चरित्र ऐसा है, जो चाहता है, खोजता है, और तैयार है, हर एक अच्छी वस्तु को ग्रहण करने को तैयार रहता है, सिर्फ़ इसी कारण से इच्छा के अनुकूल नहीं बन सकता।

४ जुलाई—मेरे ख़ास दोष यह हैं:—(१) अस्थिरता (इससे मेरा अभिप्राय है, निश्चय-हीनता, परिणाम पर विचार न करना, कच्चापन और अविवेक) (२) एक उदासी से भरा हुआ, कठिन स्वभाव—क्रोध-मूढ़ता, अत्यधिक स्वानुराग, और अहङ्कार।। (३) काहिली की आदत।

इन तीनों प्रधान दोषों पर सदा सतर्क दृष्टि रक्खूँगा, और जब कभी इनका शिकार बनूँगा, तभी नोट कर लूँगा। थोड़ी देर पहले एण्ट्रॉपा के साथ क्रोधान्ध होकर लड़ चुका हूँ। बड़ी तू-तू-मैं-मैं हुई। बात सिर्फ़ यह थी, कि वह गिरगोव जायेगा, या नहीं।

घर पर काफ़ी शान्ति से भोजन किया। सन्तुष्ट था। भोजन में ज़्यादे ख़र्च नहीं किया। बारटोलोमी ने 'इटली के चित्र' मेरे साथ पढ़ने का वादा किया था, पर बेचारे को पाठ बहुत ही कठिन लगा, इसलिये मैंने रात में देर तक उससे बातें करते रहना ज़्यादे उचित समझा। वह एक भले स्वभाव का, अच्छा लड़का मालूम होता है; लेकिन है युवक ही………

मेरा स्वास्थ्य कुछ अच्छा मालूम होता है, पर मैं इस पर विश्वास करते अभी डरता हूँ।

नेवरज़्स्की से कुछ तय नहीं हुआ, और रिपोर्ट का काम पूरा न कर पाया। एण्ट्रॉपा क्रुद्ध हो गया, और—खेद—फिर आलस्य में पड़ा रहा, और डायरी का यह पृष्ठ लिखने के अतिरिक्त कुछ भी काम नहीं किया। चाची और मितेंका का पत्र मिला है। कल उत्तर दूँगा।

५ जुलाई—चाय, भोजन और फलाहार के समय पढ़ता रहा। सुबह के वक्त सिर्फ़ चाची को एक चिट्ठी लिखी, जो ठीक तौर पर लिखी गयी; यद्यपि उसकी फ़्रान्सीसी वाक्य-रचना मुझे ज़रा नहीं भाई! दिन-पर-दिन अपनी स्थिति स्पष्ट करना और फ़्रेञ्च में लिखना, मेरे लिये दूभर होता जा रहा है। यह कैसा वाहियात रिवाज है, कि जिस भाषा को हम अच्छी तरह जानते नहीं, उसमें पत्र-व्यवहार करें! और कितना तरद्दुद, कितना समय का अप-व्यय, विचार-प्रदर्शन में अस्पष्टता, और अपनी मातृ-भाषा की तुलना में भावों की पवित्रता और शुद्धता में कमी—इस रिवाज के परिणाम-स्वरूप होते हैं! फिर भी करना ही पड़ता है।

कल 'एक घुड़सवार के अनुभव' का क़रीब एक परिच्छेद लिखा। अच्छी तरह लिख गया। ओलखिन दो बार मुझे देखने आया, जिसका उल्लेख करना मेरे निकट बहुत ही अतिशयोक्ति-पूर्ण है। यह लिखने के बाद मुझे उसकी वह

मूर्खतापूर्ण भाव-भङ्गी याद नहीं रहेगी, जो उसने मुझे देख-कर प्रकट की। दस्त लग रहे थे, तो भी मैंने फल खाये, और ओलखिन को एक पियानो किराये पर लाने का काम सौंपा। विवेक-बुद्धि के प्रतिकूल यह दो बातें थीं। मेरा खास दोष इस सत्य में छिपा है, कि मैं न तो अपने प्रति धैर्य्य रखता हूँ, और न दूसरों के प्रति। यह कोई नियम नहीं है, सिर्फ़ विचार है। क्यों नहीं मैं उसे यहाँ लिख दूँ? यह बात मुझे कुछ समय पहले की उस नैतिक अवस्था का पुनर्स्मरण करा देगी, ५ जुलाई, १८५४ को मैं जिसमें पड़ा हुआ था।

६ जुलाई—सारे दिन पढ़ता रहा,—पहले लर्मन्तोव, फिर गेटे, फिर अलफ़ॉन्स कर की रचनायें पढ़ीं। अनेक बार मैं अपने-आपसे कहता हूँ, कि मैं आगे बढ़ने की हविस नहीं रखता। कोशिश करता हूँ कि अपने इस कथन में मैं बनावट को न आने दूँ। मुझे यह सुनकर कष्ट हुआ कि ऑसितॉ सर्ज़-पुटोवस्की को हल्के-से ज़ख्म लगे, और बादशाह से इस घटना का ज़िक्र किया गया। ईर्ष्या······कैसी साधारण बात पर, और कैसे तुच्छ साथी पर!

यह सारा दिन कष्टकर स्मृतियों में बीता। सब से पहले ज़बकोव के ऊपर अपने उपकार की बात ने मुझे वेदना पहुँ-चाई। (उसके लिये मैंने घुड़सवार-सेना में जाने से क़रीब-क़रीब इन्कार कर दिया था, लेकिन बाद में '५५ के साल तक सब ज्यों-का त्यों चलते रहने का निश्चय कर लिया था)।

तब इस ख़याल ने मुझे दुःख पहुँचाया, कि मैंने अपने जनरल को शायद कुछ ज़्यादा मुँह लगा लिया। लेकिन जब ध्यान-पूर्वक विचार किया, तो मालूम हुआ, कि इसके विरुद्ध मैं हो उसके प्रति अधिक धृष्ट और उद्दण्ड हो गया था।

स्वाभाविक रीति से आत्माभिमानी बनने के लिये, आदमी को या तो मूर्ख बनना चाहिये (जो मैं हर्गिज़ नहीं हो सकता), या फिर सदा अपने-आपसे सन्तुष्ट रहना चाहिये, (जबसे फ़ौज में पहुँचा हूँ, मैं कभी नहीं रहा)। आज के लिये दो बातों पर मुझे पश्चात्ताप करना चाहिये। (१) दिन-भर का अक्षम्य आलस्य; और (१) उससे अनुनय.........

७ जुलाई—मुझमें शालीनता नहीं है। यह मेरा दोष है। मैं क्या हूँ ? एक रिटायर्ड लेफ्टिनेण्ट-कर्नल के चार पुत्रों में से एक, जो सात वर्ष की उम्र होने पर ही औरतों और बे-जान-पहचान के लोगों में अनाथ छोड़ दिया गया, जिसे सामाजिक और वैज्ञानिक शिक्षा नाम-को नहीं मिली, और जो सतरह बरस की उम्र में ख़ुद अपना कर्त्ता-धर्त्ता बन गया; जिसके सम्मुख कोई ऊँची आशाएँ नहीं थीं, जिसकी सामाजिक स्थिति शून्य थी, न जिसका कोई सिद्धान्त था;—सिर्फ़ एक ऐसा आदमी, जिसने अपने-आपको पूरी तरह नष्ट कर डाला है, जिसने जीवन के सर्वोत्तम समय को निरुद्देश्य, निरानन्द रीति से बिताया, और जो अन्त में ऋण के भार से भयभीत होकर चुपचाप कॉकेशस में भाग गया, और वहाँ भी अपनी

सारी आदतों के ख़िलाफ़ कमाण्डर-इन-चीफ़ के साथ अपने पिता के सम्बन्ध का उपयोग करके, डेन्यूब की फ़ौज में भर्ती हुआ; एक छब्बीस बरस का सहकारी-अफ़सर, वेतन के अतिरिक्त बिना किसी सहारे के (क्योंकि जो सहारे हैं, उनके द्वारा उसे अपना ऋण चुकाना है), बिना रसूख़-वाले दोस्तों के, समाज में रहने की स्थिति से पतित, नौकरी का कुछ भी ज्ञान न रखते हुए, सांसारिक योग्यताओं से हीन, मगर अहङ्कार से भरा हुआ ! हाँ, यही मेरी सामाजिक स्थिति है। अब देखें, मैं ख़ुद कैसा हूँ।

मैं—बदसूरत, बेहूदा, ढीला-ढाला और सामाजिक दृष्टि से असभ्य हूँ। मैं क्रोधी हूँ, दूसरों के लिये भार-रूप हूँ, शीलता मुझे छू नहीं गई, सहन-शक्ति का नाम नहीं, और हरेक से आँखें चुराता हूँ। मैं बिल्कुल घोंघाबसन्त हूँ। जो कुछ मुझे आता है, मैंने आप ही सीख लिया है—वह भी इधर-उधर से छीन-झपटकर, असम्बद्ध और अनियमित रीति से,—जिसका बहुत ही तुच्छ मूल्य है। मैं असंयमी, अनिश्चित और अस्थिर हूँ। कायरता, वासना और चरित्र-हीनता मुझ में कूट-कूटकर भरी हुई है। न मुझमें वीरता है, न मेरे जीवन में नियम-बद्धता। मैं इतना आलसी हूँ, कि यह आलस्य मेरे जीवन का एक अजेय स्वभाव बन गया है।

मैं प्रतिभावान् हूँ। पर मेरी प्रतिभा का किसी भी विषय

में ठीक-ठीक परीक्षण नहीं हुआ है। न मुझमें सांसारिक योग्यता है, न सामाजिक, न व्यापारिक।

मैं ईमान्दार हूँ—यानी, मैं अच्छाई से प्रेम करता हूँ, प्रेम करने की आदत बना ली है, और जब मैं ऐसा नहीं कर पाता हूँ, तो अपने-आपसे असन्तुष्ट हो जाता हूँ, और पुनः अपने विचारों की शुद्धि करके सुखी होता हूँ। लेकिन एक चीज़ और है, जिसे मैं अच्छाई से ज़्यादे पसन्द करता हूँ। वह है—ख्याति। मैं ऐसा ख्याति-इच्छुक हूँ, और इस भावना ने मेरे मन में इतना घर कर लिया है, कि अगर कभी ख्याति और अच्छाई में से कोई एक चुननी पड़े, तो मुझे भय है, मैं पहली को-ही श्रेय दूँगा।

हाँ, मैं नम्र नहीं हूँ, और इसीलिये भीतर-ही-भीतर अहङ्कारी हूँ, मगर समाज में बड़ा चुप-चोर बना रहता हूँ।

सुबह यह पृष्ठ लिखा, और 'लुई-फ़िलिप' पढ़ा। भोजन के बहुत देर बाद 'एक घुड़सवार के अनुभव' लिखना शुरू किया, और सन्ध्या तक काफ़ी लिख डाला, यद्यपि ओलखिन और एण्ड्रोनोव मुझे देखने आये। इसके बाद मैं खिड़की के रेलिंग पर झुककर खड़ा हुआ, और गली के अपने प्रिय लैम्प की तरफ़ देखने लगा, इसकी रोशनी पेड़ों में से छन-छन कर चमकती रहती है। इतने समय में, वर्षा के दल-बादल के मिट जाने के बाद, जिसने दिन में ज़मीन पर ख़ासा छिड़काव कर दिया था, एक बहुत बड़े बादल ने उमड़

कर आकाश के समस्त दक्षिणी भाग को ढाँक लिया और हवा में एक मज़ेदार हल्केपन और तरावट का उद्भव हुआ।

घर की मालिकिन की सुन्दरी कन्या मेरी ही तरह खिड़की पर कुहनियाँ टेके, खड़ी थी। गली में से बाजा बजता हुआ आगे बढ़ गया, और जब उसकी आवाज़ सुनाई देनी बन्द हो गई, तो लड़की एक ठण्डी साँस लेकर खिड़की से हट गई। मेरे दिल में ऐसी कसक-सी हुई, कि मैं आप-ही-आप मुस्करा पड़ा; और बहुत देर तक गली के लैम्प की तरफ़ देखता रहा, जिसकी रोशनी हवा चलने के कारण कभी-कभी पेड़ की हिलती हुई पत्तियों की ओट में छिप जाती थी। कभी मैं उस पेड़ को ही देखने लगता, कभी लकड़ी के घेरे को और कभी आकाश को। पहले की अपेक्षा सभी चीज़ें अच्छी दिखाई दे रही थीं। आज मुझे तीन भूलों पर पछतावा करना है। (१) पियानों के विषय में याद न रहा; (२) अपनी बदली की दरख़्वास्त पर ध्यान नहीं दिया; (३) दस्तों की शिकायत होने पर भी खान-पान में असंयम किया।

८ जुलाई—सुबह के वक़्त पढ़ता रहा, और कुछ लिखा भी। शाम को कुछ ज्यादे काम किया। पर सब-कुछ न-सिर्फ़ बिना किसी उत्साह के, बल्कि एक दुर्दमनीय उदासीनता के साथ। निश्चय कर लिया, कि पियानो नहीं ख़रीदूँगा, और ओलखिन को साफ़ जवाब दे दिया—कि मेरे पास रुपया

नहीं है, जिससे निस्सन्देह वह बड़ा नाराज़ हुआ, ख़ास तौर से इसलिये कि मैंने 'तुम्हारा ही' लिखकर हस्ताक्षर किया था, आज लर्मन्तोव और पुश्किन में एक और कवित्वपूर्ण बात का आविष्कार किया। पहले में,'मरता हुआ खिलाड़ी'* (मृत्यु के पूर्व अपने घर का सुख-स्वप्न वास्तव में अद्भुत था); और दूसरे में 'याङ्को मार्नाविच'* जिसने अकस्मात अपने मित्र की हत्या कर डाली। गिर्जे में देर तक मननपूर्वक प्रार्थना करते रहने के पश्चात् वह घर लौटा, और बिस्तर पर लेट गया। तब उसने अपनी पत्नी से पूछा, कि क्या उसने खिड़की में से कुछ देखा था। उसने जवाब दिया, कि उसने कुछ नहीं देखा। उसने वही प्रश्न किया। तब उसकी पत्नी ने उत्तर दिया कि उसने नदी-पार एक प्रकाश-रेखा देखी थी, जब उसने तीसरी बार पूछा, तो उत्तर मिला, कि उसने प्रकाश-रेखा को आकार में बढ़कर अपनी तरफ़ आते हुए देखा। वह मर गया। कैसी अद्भुत कल्पना है—पर क्यों ? इसके बाद, कवित्व-पूर्ण वर्णन् !

९ जुलाई—सुबह का सारा वक़्त और दिन-भर 'एक घुड़सवार के अनुभव' लिखने में लगा रहा। उसे ख़त्म कर डाला है। पर मुझे वह इतना नापसन्द आया, कि बिना सब-का-सब दोबारा लिखे मुझे सन्तोष नहीं हो सकता। या फिर लिखना ही बन्द कर दूँ—न सिर्फ़, 'घुड़सवार के

* लर्मन्तोव और पुश्किन के दो प्रसिद्ध पात्र।

अनुभव' ही बल्कि साहित्य-सृजन का काम ही समाप्त कर दूँ। क्योंकि जिस चीज़ का प्लॉट बढ़िया हो, और उसका नतीजा ऐसा वाहियात हो, तो उसका निर्माता प्रतिभा-शून्य है.........

तब गेटे, लर्मन्तोव और पुश्किन की रचनाएँ पढ़ीं। गेटे को मैं अच्छी तरह समझ नहीं पाता। बात यह भी है, कि जर्मन-भाषा मुझे कुछ हास्यास्पद-सी दिखाई देती है। लर्मन्तोव के 'इस्माइल बे' को मैंने बहुत पसन्द किया। शायद यह इसलिये भी ज़्यादे पसन्द आया कि कॉकेशस के प्रति मेरा अनुराग बहुत बढ़ गया है।

वह अमानुषिक स्थल, जहाँ स्वातन्त्र्य और युद्ध-नामक दो परस्पर विरोधी वस्तुओं का सामंजस्य अद्भुत रीति से चित्रित किया गया है, सचमुच बहुत ही चमत्कार-पूर्ण है। पुश्किन के 'जिप्सी' को मैं अभी तक नहीं समझा। मैं बहुत हैरान हूँ।

१० जुलाई—कुछ लिखने को जी नहीं चाहता। ला फॉएटेन और गेटे की रचनाएँ पढ़ीं, जिसे मैं दिन-दिन अधिकाधिक समझता जाता हूँ। 'एक घुड़सवार के अनुभव' का कुछ अंश लिखा, लेकिन बहुत ही कम, और निहायत सुस्ती से। इसके लिये मुझे पश्चात्ताप है।

११ जुलाई—'आधुनिक वीर'* को दोबारा पढ़ा। गेटे

---

*लर्मन्तोव की एक छन्द-वद्ध कहानी।

की रचना पढ़ी। शाम के वक्त थोड़ा-सा लिखा। क्यों भला? आलस्य, अनिश्चय, और अपनी मूँछ और खाल की सुन्दरता देखने में सारा दिन बिता दिया! इसके लिये मुझे पश्चात्ताप है। आज मैंने अपनी बदली की अर्ज़ी बॉबोरिकिन को सौंप दी, जो जनरल के पास जा रहा था। बॉबोरिकिन की उपस्थिति में ओलखिन की दिल्लगी उड़ाने के लिये भी मेरे मन में पछतावा है।

११ जुलाई ×—सुबह ओलखिन मेरे पास आकर बोला कि वह मोवो जा रहा है, और अपने घोड़े और सारी चीज़-वस्तुएँ मुझे बेचना चाहता है। मैंने यह कहकर इन्कार कर दिया कि मेरे पास रुपया नहीं है।

वास्तव में मैं फिर बड़ी कठिन आर्थिक समस्या में आ पड़ा हूँ। अगस्त के मध्य तक सिवा घास-दाने के मैं कहीं से किसी तरह की आमदनी की आशा नहीं रखता। उधर डॉक्टर का ऋण अलग सिर पर चढ़ गया है। मैंने कहा कि 'आशा नहीं रखता'; यह इसलिये कि 'पत्रिका' मुझे आज मिल गई है, और मेरा ख़्याल है, कि मेरी भेजी हुई पाण्डुलिपि किसी चुङ्गी के दफ़्तर में पड़ी सड़ रही है। ज़रा अच्छा होने पर मै इस मामले को साफ़ करूँगा। आज शाम को मुझे फिर यह आलसी जीवन बिताने के कारणों पर विचार

×इसी तारीख़ को दूसरा नोट।

करने का मौक़ा मिला। गृह-स्वामिनी की सुन्दरी कन्या ने मुझे फँसाने की पूरी कोशिश की। ख़ूब प्रयत्न करने पर भी मैं अपनी झेंपने की आदत से छुटकारा न पा सका।

आज डॉक्टर से वार्त्तालाप के समय मेरे वे विचार दूर हो गये, जो मैं वैलेशियन लोगों के प्रति रखता था—जो आजकल समस्त सेना में सामान्यतः प्रचलित हैं, और जो उन मूर्खों से मैंने ग्रहण किये हैं, जिनसे अबतक मेरी भेंट हुई है। इन लोगों का भाग्य बड़ा मार्मिक और दुःखद है। आज मैंने गेटे की एक रचना तथा लर्मन्तोव का एक नाटक (जिसमें बहुत कुछ अच्छी और नवीन सामग्री पाई) पढ़ा। डिकेन्स का 'ब्लीक हाउस' भी पढ़ा। यह दूसरा मौक़ा है कि मैं कविता लिखने का प्रयत्न कर रहा हूँ। देखूँगा, क्या नतीजा निकलता है।

आज मुझे आलस्य के लिये पश्चात्ताप करना है। यद्यपि मैंने जो कुछ लिखा, और दिमाग़ में कल्पना के जो कुलाबे मिलाये, वह अच्छा था, लेकिन वह बहुत कम था, और बहुत सुस्ती से किया गया था।

१२ जुलाई—सुबह से सिर भारी है, और काम में मन नहीं लगा। दिन-भर 'पत्रिका' पढ़ता रहा। एस्थर (ब्लीक हाउस) में कहती है, कि उसकी दैनिक प्रार्थना में भगवान् के प्रति दिये गये इन वचनों का समावेश होता था—(१) सदा परिश्रमी रहना; (२) सच्चा रहना; (३) शान्त रहना;

(४) अपने आस-पास के लोगों का प्रेम प्राप्त करने में सदा प्रयत्नशील रहना। कैसे सीधे, कैसे मधुर, कैसे आसान, और फिर कितने ऊँचे यह चारों सिद्धान्त हैं! शाम को मैंने एण्ट्रोपोव को अन्दर बुलाया, और रुपये का सवाल किया, और बाद में उससे लड़ बैठा। मतलब यह, कि उसकी उपस्थिति ने मुझे परेशान कर दिया। मैं उसे पसन्द करता हूँ; यद्यपि मेरे मन में सदा यह भावना रहती है, कि वह मेरे विचारों की क़द्र नहीं करता।

क्यूबिन भी आया। वही धूर्त्ततापूर्ण, पिटा हुआ-सा चेहरा, और मेरी तरफ़ ताकने का वही तरीक़ा! छिः! भला मैंने यह क्यों लिख डाला? मुझे अपने आलस्य पर अनुताप है।

१३ जुलाई—मेरी प्रार्थना—मैं केवल एक सर्व-शक्तिमान् परमात्मा में, आत्मा के अमरत्व में, और कर्म-फल में विश्वास रखता हूँ। मैं अपने पूर्वजों के धर्म में विश्वास रखना और उसका आदर करना चाहता हूँ।

"हे हमारे पिता!" और फिर आगे—"मेरे माता-पिता की तुष्टि और आत्म-शुद्धि के लिये।" "हे परमात्मा, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ—तेरी दया के लिये, इसके लिये······और उसके लिये (जीवन के समस्त प्रसन्नता के अवसरों को स्मरण करते हुये) मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ, कि तू अच्छी बातों को ग्रहण करने के लिये मुझे उत्साहित कर, मुझमें

अच्छे विचार भर, और मुझे सुख और आनन्द प्रदान कर, अपने दोष दूर करने में मुझे सफलता प्रदान कर, दुःख-तकलीफ़ से मेरी रक्षा कर, ऋण, झगड़ों, और अपमान से मुझे बचा। मैं जिऊँ, तो तुझमें विश्वास रखकर, और मरूँ, तो तुझमें विश्वास रखता हुआ। दूसरों को मैं प्यार करूँ, और दूसरे मुझे प्यार करें। अपने पड़ौसियों के लिये मैं उपयोगी सिद्ध हो सकूँ। सदा अच्छाई करूँ, और बुराई से दूर रहूँ। जब कभी अच्छाई-बुराई जाँचने का अवसर आवे, तो तू मेरी सहायता कर। जो वास्तव में अच्छा हो, उसी को मैं ग्रहण करूँ। भगवन्, दया करो! भगवन्, दया करो! भगवन्, दया करो!"

सुबह बहुत देर हो गई। दस बजे उठा। मॉण्टेनिग्रो के विषय में पढ़ा। थोड़ा-सा लिखा, और फिर साथियों से वार्त्तालाप किया, जो मुझसे मिलने आये थे। भोजन के पश्चात् मैंने ज़बर्दस्ती थोड़ा-सा लिखा। लेकिन स्पष्ट कुछ नहीं लिख सका। नौ बजे रात के क़रीब बॉर्टोलोमी ने आवाज़ दी, और घोड़े पर सवार होकर पहले-पहल उसके साथ गया। ख़िरेस्त्र के घर गया, और आधी रात तक गप-शप उड़ती रही। आलस्य के लिये अपने-आपको धिक्कार सकता हूँ, लेकिन अपने कष्ट और रोग का ख़याल करके क्षमा करता हूँ।

१४ जुलाई—सुबह के वक़्त गेटे की रचना तथा कुछ और

पुस्तिकाएँ पढ़ने के अतिरिक्त 'डानोव'* का कुछ अंश लिखा, और अभी तक 'वैलेञ्चक' के व्यक्तित्व के विषय में कुछ तय नहीं कर पाया हूँ।

शाम को नेवरेज़ेस्की, शुबिन और एण्ट्रोपा मेरे पास आ बैठे। गाँव के मुखिया का एक पत्र मैंने पाया है। टेरण्टी ज़ेवेतका और दो अन्य दास भर्ती किये जायेंगे। अच्छा चुनाव है।

बदली होने के पहले ही बुड्ढा बाशीबाज़क निश्चित रूप से प्रिन्स को सूचित कर देगा। क्या बदली के विषय में फिर विचार करूँ ? मैं अपना स्वभाव तो शायद ही बदल सकूँगा, उल्टे उसे बदलने की चेष्टा करके एक ख़तरनाक ग़लती कर बैठूँगा। क्या अनिश्चय बहुत बड़ा दोष है—जिससे आदमी को तुरन्त छुटकारा पाना चाहिये ? क्या दो प्रकार का स्वभाव समान रूप से प्रशंसनीय नहीं है—एक दृढ़ और दूसरा चिन्ताशील ? क्या मैं दूसरी कोटि का आदमी नहीं हूँ, और क्या अपने-आपको सुधारने की मेरी अभिलाषा, उसकी इच्छा नहीं है, जो मैं नहीं हूँ ? अलफ़ॉन्से करने भी इसे इसी रूप में रक्खा है। मेरा ख़याल है कि यही सत्य है। दोष और भी हैं, जो अधिक विचारणीय हैं। जैसे आलस्य, असत्य, क्रोधान्धता, और अनियमितता। यह दोष सदा दोष ही रहेंगे।

---

* टॉल्सटॉय की एक रचना का पात्र, जो पीछे दूसरे नाम से प्रकाशित हुई।

१५ जुलाई—डॉक्टर ने मुझे जल्दी जगा दिया, और इसी कारण मैं सुबह के वक्त बहुत-सा काम कर गया। हमेशा पुरानी चीज़ों को शुद्ध करता रहता हूँ। आज सिपाहियों के वर्णन × पर क़लम चलाई। शाम को भी थोड़ा-सा लिखा और जर्मन-कवि शिलर का एक नाटक (फ़िस्को का षड्यन्त्र) पढ़ा। साधारण रीति से नाटक समझ में आने लगे हैं। इसमें मैं सर्व-साधारण की तरह ही आनन्द ले रहा हूँ। यह एक ऐसी चीज़ है, जिसने मुझे नूतन कवित्व-पूर्ण आनन्द प्रदान किया है। चाय के पश्चात् शुबिन, टिश्केविच और वर्ज़बिस्की मुझसे मिलने आये, और बड़ी शान के साथ स्लोबज़्नी के दिलचस्प मामले का वर्णन करने लगे। मैं अपने-आपसे असन्तुष्ट हूँ (१) क्योंकि दिन-भर मुँह की और बदन की फुन्सियों को छीलता रहा, जिनसे नाक, मुँह और शरीर भर गया है, और जो अब खुलकर बड़ा कष्ट पहुँचा रही हैं, (२) खाने के समय अलेश्का के ऊपर मूर्खतापूर्वक क्रोधित हो उठा।

१६ जुलाई—१० से २ तक ख़ूब मेहनत से काम किया, और सिपाहियों-वाला परिच्छेद समाप्त कर डाला। पर इसके बाद समय कटना दूभर होगया। शाम को डी० गोर्शाका मुझे देखने आया। उसने जैसी मित्रता का भाव प्रकट किया,

---

× एक कहानी के स्थल का उल्लेख।

उससे मेरे हृदय में उस अनिवर्चनीय आह्लाद का अनुभव हुआ, जो शुद्ध भावनाओं के फल-स्वरूप ही मुझमें उत्पन्न होता है, और जो एक अरसे से मैंने अनुभव नहीं किया था। इसके बाद बॉर्टोलोमी अन्दर आया, और मेरा ख़याल है, मैंने यह कहकर उसे ज़रा नाराज़कर दिया, कि उसका उच्चारण अशुद्ध है। इस समय मैंने अपने से कम-उम्र लोगों से मिलना बन्द कर दिया है, यद्यपि पूरी तरह तो मैं कभी भी उनसे नहीं मिला हूँ। बात यह है, कि अब मेरे लिये वृद्धों और छोटे बच्चों से मिलना अधिक आसान और सुखकर है।

मेरा स्वास्थ्य ज्यों-का-त्यों है। आज कोई अच्छी और महत्वपूर्ण बात लिखने से रह गई है—याद नहीं क्या! आज मुझे सिर्फ़ बॉर्टोलोमी के विषय में अपनी निन्दा करनी है।

१८ जुलाई—आज की दावत में मज़ा नहीं आया। न गोर्शाका आया, न डॉक्टर। सिर्फ़ बॉर्टोलीमी ने मेरे साथ सुअर का शोरबा खाया, और शिलर की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा करता रहा। दावत के पहले मैं पढ़ता रहा, दावत के बाद भी मैंने पढ़ा, और ताज्जुब की बात है, कि ८ बजे ही सोगया; काम-धाम कुछ हो नहीं सका। नेवरेज़स्की ४५ रूबल लाया। इस में ४० डॉक्टर को दे देने का विचार है। बाक़ी से—कुछ थोड़ा गोर्शाका से उधार माँगना होगा—बज़ियो जाकर अपना इलाज करूँगा। आज इन बातों पर मुझे पश्चात्ताप करना है:—(१) एक मूर्खतापूर्ण और समझ में न

आनेवाला विचार:—यह कि निकोलिव से एक घोड़ा ख़रीद लिया जाय; (२) सारे दिन कुछ भी न करने के लिये।

१९-२० जुलाई—कल सुबह पढ़ने और तैयारी करने में बीती। शाम के वक्त, मलीशेम के साथ बड़े ही भद्दे ढङ्ग से घोड़े पर सवार होकर मोरेडोम्यान्स्क की यात्रा की। वहाँ मैं आज रात तक रहा। इन दो दिनों में मुझे दो बातों के लिये अपनी ताड़ना करनी है:—(१) रवाना होती दफ़ा की अनिश्चितता; (२) अलेश्का के साथ कल सुबह की क्रोधान्धता; (३) कुछ हद तक कल की सुस्ती के लिये।

२१ जुलाई—सुबह गजरदम जगा दिया गया, और सिमेएटी ले जाया गया। साधारणतया आज का दिन असन्तोषजनक रहा। आज आलस्य तो नहीं किया, लेकिन भोजन और तम्बू-डेरे के झगझट में सारा दिन उड़-सा गया। दिन-भर कुछ न कर सका; पढ़ भी न सका। अब यहाँ हूँ और कुछ अप्रतिष्ठित व्यक्तियों का साथ कर लिया है। मैं स्वीकार करता हूँ, खेद भी करता हूँ, कि मुझे भले आदमियों का साथ नहीं मिला। ख़ैर, अलावा इसके, कि इस परिस्थिति में मुझे काम करने का काफ़ी मौक़ा मिलता है, मुझे अपने व्यवहार पर सन्तोष है।—बल्कि मैं तो उनसे कन्नी ही काटता रहता हूँ, और कभी उन्हें मुँह नहीं लगाता। वह बेवक़ूफ़ बुड्ढा तो कभी मुझे सलाम तक नहीं करता। इससे मुझे बड़ा क्रोध आता है। उसका दिमाग़ ठीक करना होगा।

कल यह लिखना भूल गया, कि शिलर की एक रचना पढ़कर मुझे बड़ा आनन्द आया। उसकी कुछ अद्भुत दार्शनिक कवितायें भी पढ़ी थीं। उसकी शैली में एक सुन्दर सौम्यता है, अद्भुत चित्रण-कला है, और सब से पहले तो वास्तविक शान्तिपूर्ण कविता है। दूसरे, मुझ पर जिस चीज़ का प्रभाव हुआ—जिसके लिये बॉर्टोलोमी ने कहा था, कि मेरे हृदय पर खुद गई—वह यह विचार था, कि किसी ऊँची वस्तु की उपलब्धि के लिये, आदमी को अपनी सारी शक्ति एक विन्दु-स्थल पर लगा देनी चाहिये।

पश्चात्तापः—(१) आत्म-संयम की कमी, खाना खाते समय की अधीरता; (२) दिन-भर का आलस्य, ख़ास तौर पर तब, अगर मैं अब भी कुछ काम न कर सकूँ।

२२ जुलाई—फिर सफ़र! तो भी आज के दिन से सन्तोष ही होता, अगर क्रिज़्नोवस्की की एक सनक के कारण मोवो जाना न पड़ता। सुबह के वक्त उससे मिलने गया, पर जगाने की हिम्मत न हुई। इसके बाद मैं सोगया, भोजन किया, और थोड़ा-सा लिखा। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है, और कल मैं दोनों सेना-नायकों के सम्मुख उपस्थित होकर रिपोर्टें पेश कर दूँगा। प्रताड़ना—क्रिज़्नोवस्की के साथ अनिश्चितता का व्यवहार करने के लिये।

२३ जुलाई—आज सुबह जाकर कैफ़ियत देने के लिये नायकों के समक्ष उपस्थित हुआ। मालूम होता है, क्रिज़्नो-

वस्की ने तोपख़ाने में भर्ती होजाने की सलाह दी थी। टिश्के-विच ने यह बात मुझसे कही। मैं क्रोध से काँपता हुआ क्रिज़्नोवस्की के पास गया। लेकिन मेरे क्रोध के बावजूद मेरी शारीरिक दशा अच्छी नहीं थी, और मामला शान्त होगया। बाक़ी तमाम दिन में मैंने बैनार्ड की एक सुन्दर कहानी का अध्ययन किया, और वैलेरियन को एक चिट्ठी लिखी।

जब से मैं स्वस्थ होने लगा हूँ, समाज में मिल-जुलकर रहना और परितुष्ट जीवन-यापन करना मुझे असम्भव-सा जँचने लगा है।

बदली के लिये दूसरी दरख़्वास्त पेश कर दी है।

आलस्य के लिये पश्चात्ताप है। सारे दिन कुछ भी नहीं कर पाया।

२४ जुलाई—सुबह के वक़्त नेवरेज़श्की अजीब तरह का मुँह बनाकर, क्रिज़्नोवस्की के हस्ताक्षर-सहित मेरी दर-ख़्वास्त वापस ले आया। इन ज़रा-ज़रा-सी घटनाओं ने मुझे इतना परेशान कर दिया, कि दिन-भर मैं आपे में नहीं रहा। सारे दिन सुस्त और दुखी भाव से पड़ा रहा। न कुछ काम हुआ, न किसी से बात करने को जी चाहा। बॉबोरिकिन के मकान पर इसका अनुभव हुआ था,—पहले ज़िबिन, फ़ीड और बल्यूज़ेक के साथ, और शाम को क्रिज़्नोवस्की और स्टॉलीपिन के साथ। मैं इतना ईमानदार आदमी हूँ कि इन

लोगों के साथ मेरी पट नहीं सकती। यह आश्चर्य की बात है, कि मैंने अब आकर अपना एक ख़ास दोष अनुभव किया है। वह है, अपनी महानता प्रकट करने की भावना—जिससे दूसरों के मन में ईर्षा का उद्रेक होता है। सर्व-साधारण का प्रेम प्राप्त करने के लिये आदमी को अपनी महानता छुपानी चाहिये। बहुत देर बाद मैंने इसे समझा। जब तक घोड़े मेरे पास हैं, दरख़्वास्त नहीं दूँगा, और इस दिशा में पूरा प्रयत्न करूँगा। इस समय के अन्दर किसी से कुछ सम्पर्क न रक्खूँगा, सिवा उन लोगों के, जिनसे नौकरी के कारण वास्ता पड़ेगा, आलस्य के लिये अपनी ताड़ना करता हूँ।

२५ जुलाई—सुबह गजरदम·········के लिये चल पड़े। दिन-भर शारीरिक कष्ट से व्याकुल रहा, (मेरा चेहरा जल रहा था, और लाल हो गया था)। नैतिक अवस्था भी ठीक न रही। शान से रहनेवाले एकाधिपतियों से मुझे बड़ी ईर्ष्या होती है। मैं बड़ा क्षुद्र और ईर्ष्यालु जीव हूँ।

भोजन के बाद मैं बूढ़े को देखने गया, और वहाँ सेनापति के कई सहायक-अफ़सरों को देखा, जिनके साथ रहना मेरे लिये एकबारगी असम्भव हो गया। बाद में, जब तीसरी बार मैंने याद करने की कोशिश की, कि हम लोगों की भेंट कहाँ हुई थी, तो एल्टीकोव बोला—"उस समय को याद करो, जब हम और तुम एक-साथ रहे थे।" मुझे वह समय याद

नहीं आया। और रात-भर जागते रहने पर मुझे उस समय का स्मरण हुआ, उससे मेरे शरीर के रोंगटे खड़े हो गये। शाम को मैं फ़िरज़न के साथ उससे मिलने गया। वहाँ बेचारे टिश्केविच से लड़ पड़ा, और उसे नाराज़ कर दिया।

"कैसा बेपेंदी का आदमी है," इस पृष्ठ को पढ़ने-वाले पाठक सोचेंगे। "बिगड़ी हुई आदतोंवाला, एक अभागा…" क्या यह सम्भव है, कि कभी इसका इलाज ही न हो सके? बुराई को पा लेना, बुराई का आधा इलाज कहा जाता है। कितने दिन से, और कितने सच्चे हृदय से मैं चेष्टा कर रहा हूँ, पर सब बेकार! सदा सन्तोष, शालीनता और परिश्रम का जीवन बिताना सर्वोत्तम है। काश, कि मैं इन नियमों पर चल सकता! अपना सुधार करते-करते अब मुझे थक जाना पड़ेगा, पर अब मुझे अब भी आशा है, और मैं कोशिश करूँगा।

मुझे पश्चात्ताप है:—(१) आलस्य पर, (२) दो तरह की विभिन्न अभद्रता—सहायक-अफ़सर और टिश्केविच के सामने।

२६ जुलाई—फिर सफ़र—बज़ियो को। सब लोग रास्ते में प्रसन्न थे। मैं फिर क्रोधित हो गया, और मैंने टिश्केविच को नाराज़ कर दिया। साधारणतया मुझे कोई ऐसा अवसर याद नहीं आता, जब मैं ऐसी स्थिति में रहा होऊँ, जैसी में इस समय हूँ। रुग्ण, क्रोधान्ध, अस्त-व्यस्त,—सब-कुछ मैंने

अपने प्रतिकूल बना लिया है—मैं नौकरी करते हुए बहुत ही बुरी और अनिश्चित अवस्था में हूँ। अपने इलाज का मुझे ज़्यादे ख़्याल रखना चाहिये। नये साथियों से मिलकर जो अप्रसन्नता का भाव उदय होता है, उसे दूर करना चाहिये। जनरल और क्रिज़्नोवस्की के साथ अपनी नौकरी की एक कैफ़ियत थी, उसी के सहारे रुपया प्राप्त हुआ। प्रताड़ना (१) सुस्ती पर, (२) सुस्वोलेन और टिश्केविच के साथ अभद्रता और (३) विचारशून्यता, असन्तोष, तथा अपनी स्थिति सुधारने में अनिश्चितता।

२७ जुलाई—दिन-भर यहीं रहा, और टिश्केविच तथा नायकों के अतिरिक्त किसी से नहीं मिला। ये लोग शायद मुझे अप्रतिष्ठित समझकर मेरी उपेक्षा करते हैं। यह बड़ी वाहियात बात है। अगर आज आलस्य न करता, तो आज के दिन से सन्तुष्ट रहता। दिमाग़ में कुछ अच्छे विचार आये थे, लेकिन मेरी स्मरण-शक्ति न-जाने कैसी ख़राब हो गई है! प्रेम, आदर और विश्वास—जो अच्छे भाव मुझ में विद्यमान थे, वे सब क्रमशः ग़ायब हो रहे हैं। मैं आगे बढ़ने की जगह विचारों के संसार में प्रवेश करता जा रहा हूँ। दुनियाँ में होता यह है, कि आदमी सदा आगे बढ़ने की चेष्टा करता है। इस विचार के फल-स्वरूप मेरे मन में जिस भाव का उदय हुआ, वह यह है:—अपने पड़ौसी का प्रेम प्राप्त करना व्यर्थ है। डिकेन्स ने इस सत्य

को अन्य नियमों के साथ रक्खा है। लेकिन यह कोई मूल सिद्धान्त नहीं है, क्योंकि इसमें कई नियम मिश्रित हैं, और कई अर्थ निकलते हैं। फिर भी, इसके बावजूद, मन में यह भावना बहुत-ही आसानी से प्रवेश पा जाती है, अधिक स्पष्टतर प्रतीत होती है, और ऐसा लगता है, कि यह हृदय के अधिक निकट है। शेष गुण, जैसे—शालीनता, सन्तोष, और नम्रता—दूर प्रतीत होते हैं। आज प्रताड़ना करनी है, (१) सुस्ती के लिये, और (२) लड़कियों के साथ बच्चों का-सा अनिश्चय।

२८ जुलाई—बड़ी सुन्दर मानसिक स्थिति में लिखता रहा हूँ। यह स्थिति शाम को सारे समय में रही है। सुबह मैंने पढ़ा था, खाना ज्यादे खा लिया था। स्टॉलीपिन और सर्ज़पुटोवस्की को इनाम मिले, परन्तु मेरे मन में ईर्ष्या-भाव का उद्रेक नहीं हुआ। सारा दिन सुखपूर्वक कट गया। शाम को स्क्वार्ट वेनर्न और ग्रेम्बिच के साथ दो ग्लास शेम्पेन पी, और इसके बाद शुबिन और साशा गोर्शाका से गप-शप की। सिवा आलस्य के आज के दिन से मैं पूर्णतया सन्तुष्ट हूँ।

२९ जुलाई—मेरा सुधार बहुत सुन्दरतापूर्वक चल रहा है। जब से मैंने नम्र और भलमनसी का व्यवहार करने का निश्चय किया है, तब से सभी तरह के लोगों से मेरे सम्बन्ध सुखद और सरल बनते जा रहे हैं। मुझे विश्वास हो गया,

कि सदा शान और अकड़ में चूर रहना आवश्यक नहीं है। मुझे बड़ी खुशी हो रही है। परमात्मा करे, यह खुशी मेरे ही भीतर से प्रस्फुटित हो रही हो। मेरा विश्वास है, कि ऐसा ही है; क्योंकि मैं सब को सुख देने की चेष्टा करता हूँ, नम्र रहता हूँ, अपराध करने से डरता रहता हूँ, और क्रोध-पूर्ण भावनाओं से सतर्क रहता हूँ। तब तो मैं सदा प्रसन्न और सुखी रहूँगा। सुबह मैंने घर पर रहकर ही कुछ काम करने का निश्चय किया था, पर शाम होते-होते आवारा-गर्दी करने से अपने को रोक न सका। ताड़ना करता हूँ—चरित्रहीनता के लिये, घर पर अनुपस्थित रहने के लिये, और दिन-भर के आलस्य के लिये। यही ख़ास बात है।

३० जुलाई—घोड़े पर सवार होकर रियनिक गया। वह बुड्ढा अब भी मुझे सलाम नहीं करता। इन बातों से मुझे बड़ा क्रोध होता है। बाशी-बॉज़क लोगों से मिलकर अच्छी तरह पेश आया। क्रिज़्नोवस्की से बात-चीत हुई। वह किसी कारणवश मुझे कॉसेक-ब्रिगेड से सम्बद्ध रहने की सलाह देता है। यह सलाह ऐसी है, जिसे मैं कदापि न मानूँगा। फ़ीडे और बॉबोरिकिन से व्यर्थ का विवाद छेड़ दिया। सर्ज़पुटोवस्की को गालियाँ सुनाईं, और कुछ नहीं किया—इन्हीं तीनों बातों के लिये मुझे पश्चात्ताप करना है।

३१ जुलाई—फिर फ़ोक्शानी के लिये कूच। स्टॉलीपिन के साथ रहा। आदमी बहुत हल्का है, और दृढ़, पर झूठे

विश्वास रखता है। शायद इसीलिये सेनापति ने मेरे स्वास्थ्य के विषय में पूछ-ताछ करने का कष्ट किया! सुअर कहीं का! नाक की फुंसियाँ खुरचता रहा, और करा-धरा कुछ नहीं।— आज के लिये यही दो प्रताड़नाएँ हैं। पिछली तो अधिक बार उपस्थित होती जारही है। यद्यपि युद्ध का होना इसे कुछ हद तक क्षन्तव्य ठहराता है। साथियों के साथ मेरे सम्बन्ध इतने अच्छे होते जा रहे हैं, कि नौकरी छोड़ते हुए मुझे रञ्ज हो रहा है। मेरा स्वास्थ्य पहले से अच्छा दिखाई देता है।

१ अगस्त—देर से उठा, और दोपहर तक शिलर की रचना पढ़ता रहा। पर उत्साह और आनन्द का अभाव था। भोजन के पश्चात् यद्यपि लिखने के भाव में था, तो भी सुस्ती के मारे ज़रा-सा लिखकर रह गया। सारा सन्ध्या-काल आवारागर्दी में बिता दिया। आज बहुत-सी मज़ेदार बातें हुईं, दिन-भर के हुक्म पढ़ना, बाग़ की मुलाक़ात, और शुबिन को धोखेबाज़ी। इस विषय में सब-कुछ कल लिखूँगा; क्योंकि ढाई बज चुका है। आज आख़िरी दफ़ा आलस्य के लिये अपनी प्रताड़ना करता हूँ। अगर कल भी कुछ न कर सका, तो गोली मार लूँगा। अक्षम्य अनिश्चितता के लिये भी मुझे पश्चात्ताप है।

२ अगस्त—सुबह के वक्त 'एक घुड़सवार के अनुभव' का कुछ अंश लिखा। खाने के बाद लेट रहा, और ज़ेम्फ़र की सफलता पर उससे मिलने चला। सुबह स्टॉलीपिन को देखने

गया था, और वह मुझे अच्छा नहीं लगा। फिर सुस्ती से पीछा नहीं छूटा।

३ अगस्त—देर से उठा। शिथिल हूँ, तबियत अच्छी नहीं है। सिर्फ़ १२ बजे बाद—जब ओलखिन आकर चला गया—मैं काम पर बैठ सका। दिन-भर लिखा, लेकिन लापर्वाही से, बेध्यानी से, और अनिश्चितता से। फिर भी अच्छा लिख गया। शाम को गोर्शाका से मिलने गया। वहाँ नम्रता और सुशीलता से पेश आया। माम और नोवरेज़श्की को मैंने नाराज़ कर दिया, क्योंकि मैंने असभ्यतापूर्वक कह डाला, कि अगर वे मुझे वहाँ......मिल जाते, तो मैं उनकी टाँग पर टाँग धरकर चीर देता। आज इन बातों पर प्रताड़ना करनी है:—(१) सुबह-सुबह की चिड़चिड़ाहट, (२ नेवरेज़श्की और माम के प्रति असभ्यता और (३) लिखने में अपनी अनिश्चितता के लिये। वैलेरियन का एक पत्र मिला।

४ अगस्त—सुबह के वक्त. अच्छा व्यवहार किया, और लिखा भी अच्छा ही। खाने के वक्त. एक भुक्खड़ अफ़सर के साथ ओलख़िन आया। खाने के बाद कुछ नहीं किया। नेवरेज़श्की से रुपया उधार लिया, और ओलख़िन से एक घोड़ा ख़रीदा। कुछ हद तक आलस्य, पर-निन्दा और मूर्खतापूर्ण निश्चय के लिये अपनी निन्दा करता हूँ।

५ अगस्त—देर से उठा, और तुरन्त ख़ुशी-ख़ुशी लिखने बैठ गया। कहानी का अन्तिम भाग बड़ी प्रसन्नता के साथ

समाप्त किया, लेकिन अफ़सोस ! १२ बजे के क़रीब मैंने अनुभव किया, कि मैं अभी आरोग्य नहीं हुआ हूँ, और सदा की तरह इस अनुभव ने मुझ पर ऐसा प्रभाव किया, कि उसके बाद मैं कुछ भी न लिख सका। खाने के बाद घोड़े पर सवार होकर गोर्शाका के पास गया, और ज़ोलोतारिव के साथ थोड़ी देर शतरंज खेली। शाम के वक्त़ बेकार और निरुद्देश्य डैननबर्ग के बग़ीचे में घूमने चला गया। पिछले दिनों एक नया भाव मुझ में पैदा हुआ है:—किसी की न तो निन्दा करो, और न किसी के विषय में अपने विचार प्रकट करो। शाम के वक्त़ की अपनी सुस्ती के लिये और डैननबर्ग में चकर-दण्ड लगाने के लिये मेरे मन में ग्लानि है।

६ अगस्त—दिन-भर कुछ न किया। ताश खेले। दो प्रतारणाएँ।

७-११ अगस्त—बर्लेंड तक की सवारी की, और काम पूरा कर डाला। क्रिज़्नोवस्की ने अपने व्यवहार से मुझे असन्तुष्ट कर दिया।—"प्यारे दोस्त !……" जब से लौटा हूँ, दोनों वक्त़ पड़ौसियों के यहाँ जाकर ताश खेलता हूँ। एक दफ़ा तो इस पर अपने-को बधाई दी, और दूसरी दफ़ा लानत; खासकर इसलिये कि इन दिनों में कुछ भी नहीं किया।

१२ अगस्त—सुबह तो ख़ासी गुज़री। कुछ काम भी किया। लेकिन शाम ! हे भगवान् ! क्या कभी मेरा सुधार नहीं होना है ? सारा अवशिष्ट रुपया मैंने खो दिया—बल्कि

३७ रूबल का क़र्ज़ कर लिया। कल घोड़ा बेच दूँगा। मुझे करना क्या है, यह मैं ख़ुद नहीं जानता। विचित्र स्थिति का अनुभव कर रहा हूँ। शाम को बाग़ की सैर को गया। फुर्ती और आत्म-संयम का अभाव!

१३ अगस्त—काफ़ी सवेरे उठा, और काम भी किया, पर खाने के बाद Our own people, We'll arrange ❀ नामक प्रहसन को पढ़ने के अतिरिक्त दिन-भर आवारगी में बीता, और बातों के साथ-साथ राइफ़लों के मामले में गोर्शाका से झगड़ पड़ा। नेवेरेज़्स्की से कुछ रुपया मिल गया, उसे मैंने एण्ड्रोनोव के हाथ श्रृपशेंको के पास भेज दिया। गोर्शाका के प्रति आत्म-संयम और फ़िलिपेस्को की उपस्थिति में उत्पन्न हुए अहंकार के लिये अपनी ताड़ना करता हूँ।

१४ अगस्त—इतना थोड़ा लिखा, जिसका उल्लेख करना भी व्यर्थ है। खाने के बाद घुड़सवारी की, स्नान किया और शाम को स्टॉलीपिन के दर पर जा मौजूद हुआ, जहाँ से एक खेद-पूर्ण भावना मन में लिये हुए लौटा। पर दो बातें बुरी हुईं:—मैं दो बार क्रोध में आगया; एक बार टिश्केविच पर और दूसरी बार स्क्वाट्र्स पर और कुछ नहीं किया।

१५ अगस्त—जल्दी उठा, और घोड़े पर सवार होकर ऑडोवेश्टो गया। यह यात्रा सफल न रही। ज़रा-सा लिखा, सो भी बुरी तरह से। शयन किया, घुड़दौड़ में गया, और

❀ ऑस्ट्रॉवस्की का एक प्रहसन।

सन्ध्या-काल घर पर बिताया। जो कुछ लिखा था, उसे दोहराया। मुझमें तीन ख़ास दोष हैं:—(१) चरित्रहीनता, (२) आवेश, और (३) सुस्ती, जिनसे मुझे छुटकारा पाना चाहिये। इन तीनों दोषों का निरीक्षण अत्यन्त ध्यानपूर्वक करूँगा, और उन्हें नोट करता रहूँगा। तब बाद में, अगर मैं इनसे छुटकारा पा लूँ—तो दो नियमों का पालन करने का प्रयत्न करूँगा:—आत्म-सन्तोष और दूसरों के प्रेम की प्राप्ति।

१६ अगस्त—सात बजे के क़रीब उठा। काफ़ी अच्छा लिखा, लेकिन बहुत कम। खाना खाया, और फिर थोड़ा-सा लिखा। स्टॉलीपिन के मकान पर बैठक जमी, और असल अपराध पर झगड़ा हो गया। अतएव बुरी भावनाओं के साथ सोने जा रहा हूँ। सुबह निकिता पर झल्ला उठा था (१) एण्ड्रोनोव की उपस्थिति में बहुत सुस्त रहा, (३) चरित्रहीनता, (४) क्रोधान्ध होकर झगड़ा किया। जोड़ = आवेश, चरित्रहीनता, सुस्ती। इन तीन दोषों का निराकरण मेरे जीवन का सब से महत्त्वपूर्ण कार्य है। आज से आगे अपनी डायरी के अन्त में प्रति दिन यह वाक्य लिखा करूँगा।

१७ अगस्त—फ़ोक्शानी से टेकुचा को रवाना हुए। सेनापति और स्टॉलीपिन संयोगवश साथ थे। सारा समय आनन्दपूर्वक कटा, सिवा उस वक़् के, जब नाश्ता करती दफ़ा मैं व्यग्र और लज्जित था। दोपहर को ख़ूब सोया, और ऑस्ट्रोवस्की-कृत 'निर्धनता पाप नहीं है।', Poverty's not a Crime-नामक प्रहसन पढ़ा। कुछ देर घूमा-फिरा और

कुछ पृष्ठ लिखे। आज के लिये प्रताड़ना—(१) अलेश्का पर झल्ला पड़ा, (२) बूढ़े के प्रति व्यवहार में निश्चित नहीं था। (३) और शाम को क्रिज्नोवस्की से मिलती बार भी (४) नेवरेज़श्की को देखने गया; यद्यपि मेरी इच्छा यह करने की थी नहीं। (५) शाम को सुस्ती के मारे ऊँघने लगा। इन तीन दोषों से मुक्त होना मेरे जीवन का सबसे बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य है:—(१) सुस्ती (२) चरित्रहीनता (३) क्रोधान्धता।

१८ अगस्त—टेकुशा से बर्लेंड को कूच किया। दिन-भर ठीक तरह से बीता। हाँ, यह ग़लतियाँ ज़रूर रहीं:—(१) सेनापति से पहली बार मिलते हुए अनिश्चितता, (२)गोर्शाका बन्धुओं से भेंट करती बार, जिनसे कि मैं लड़ चुका हूँ। 'डाई रॉबर' ❀ पढ़ने की बजाय मुझे कुछ और पढ़ना चाहिये था। मेरे जीवन में सब से महत्त्वपूर्ण कार्य है—अपने तीन प्रधान दोषों से मुक्त होना।

१९ अगस्त—जल्दी उठा, और काफ़ी लिख डाला। शाम को स्टॉलीपिन के पास गया, और कुछ विषएण भाव लिये हुए लौटा। आज के दिन से सन्तुष्ट हूँ, सिवा इसके कि काम करती बार कुछ सुस्ती आ गई थी। कम काम करके भी सन्तुष्ट रह सकता था, लेकिन असन्तोष इस बात का है कि काम के वक़्त मुझे विश्राम की सूझी।

जीवन में सब से ज़्यादे महत्वपूर्ण कार्य है, अपने तीन प्रधान

❀शिलर-कृत एक नाटक।

दोषों को दूर करना—आलस्य, आवेश और चरित्रहीनता। अन्तिम दोष में आज ग्रस्त हो गया।

२१ अगस्त—दिन-भर दाँतों में दर्द रहा। सारा दिन ख़राब हो गया। प्रताड़ना (१) आलस्य (२) मकान-मालिकिन के साथ वादा-ख़िलाफ़ी........(३) क्रिज़्नोवस्की की बुराई और आवेश-पूर्ण टीका-टिप्पणी।

२२-२३ अगस्त—बर्लेंड से असलुई तक की दो मंज़िलें। भयानक दाँत-दर्द और अत्यन्त आलस्य। इन दो दिनों की प्रताड़नाएँ, (अलावा उस चुस्ती के अभाव के, जो इन दिनों में होनी चाहिए थी) क्रोधान्धता, सर्ज़पुटोवस्की और स्वाट्र्स की निन्दा, और अलेश्का पर आवेश। फ़्रीडे की सहनशीलता, भद्रता और शान्ति-प्रियता मुझे अधिकाधिक प्रभावित करती जाती है। उसकी उन खूबियों के कारण खुद उसके विषय में मेरे विचार बहुत ख़राब होते जा रहे हैं, तिस पर भी उन्हें ग्रहण करने की मेरी अभिरुचि होती है। जीवन के लिये वे बहुत ही मधुर और सफलतादायिनी हैं। मेरे लिये जीवन में सब से महत्त्वपूर्ण कार्य है, इन तीनों दोषों से मुक्त होना—आवेश, चरित्रहीनता, आलस्य।

२४ अगस्त—आज का दिन असलुई में बीता। आज दो दृढ़, मधुर और उपयोगी भावों का अनुभव हुआ। (१) 'बाल्यावस्था' के सम्बन्ध में निक्रासोव का एक बहुत प्रशंसा-पूर्ण पत्र प्राप्त हुआ। इससे मुझे बड़ी खुशी हुई, और काम

में लगे रहने के लिये प्रोत्साहन मिला। और (२) एक सुन्दर पुस्तक पढ़ी। कैसी अद्भुत बात है, कि अब कहीं मुझे इस बात का निश्चय हुआ है, कि आदमी सर्व-साधारण की निगाहों में जितना ऊँचा दीखने की चेष्टा करता है, दुनियाँ उसे उतना ही नीचा समझती है। आज यह ग़लतियाँ कीं। (१) स्टॉलीपिन की निन्दा की, (२) नेक्रासोव के पत्र से अहङ्कार हो गया (३) आलस्य किया। जीवन का सब से मुख्य कार्य, आवेश, आलस्य और चरित्रहीनता से मुक्त होना है।

२५-२६ अगस्त—प्रिफ़ेवेल्स्की की निन्दा की। अलेश्का, निकिता और कुछ अन्य व्यक्तियों पर क्रुद्ध हो गया। जासी को कूच किया। जीवन का मुख्य कार्य तीन दोषों से छुट्टी पाना है।

२७ अगस्त—(१) अलेश्का से क्रुद्ध हो गया। (२) सुबह ज़रा-सा लिखा और जॉर्ज सैण्ड का एक बढ़िया उपन्यास पढ़ा—इसके अतिरिक्त कुछ नहीं किया। (३) गोर्शाका से दिल खोलकर बात नहीं की। (४) एक उम्मेदवार अफ़सर की निन्दा की। (५) निकिता को थप्पड़ मार दिया।

२८ अगस्त—छब्बीस वर्ष का हो गया। लिखा तो ज़रा-सा ही; मगर सोचा बहुत कुछ। ऑब्लोब्ज़ के साथ दिन बिताया। शाम को 'टाम काका की कुटिया' Uncle Tom's Cabin पढ़ी। (१) निकिता पर दो बार ग़ुस्सा हो गया। (२) गोर्शाका से अपने भाई की बाबत कुछ ज़िक्र नहीं किया।

(३)गोलिश की निन्दा की । (४) सेनापति से मिलने नहीं गया । (५) 'टाम काका की कुटिया' खरीद डाली । (६) ज्यादे बात-चीत नहीं की । सब से अधिक आवश्यक है—आवेश, आलस्य और चरित्रहीनता से मुक्त होना ।

२९ अगस्त—बहुत बीमार हूँ । मेरा ख़याल है—तपेदिक़ है । लिखा कुछ नहीं, 'टाम काका की कुटिया' पढ़ता रहा । सब से मुख्य तीन दोषों से मुक्त होना है ।

३० अगस्त—स्वास्थ्य बहुत ख़राब है । रात-भर नींद न आई । जब दाँत-दर्द कम हुआ, तो 'टाम काका की कुटिया' पढ़ता रहा । सब से मुख्य तीन दोषों से मुक्त होना है ।

३१ अगस्त—'टाम काका की कुटिया' पढ़ी । शाम को कसोवस्की से गप-शप की । सब से मुख्य तीन दोषों से मुक्त होना है ।

१-२ सितम्बर—स्वास्थ्य कुछ अच्छा है । कल ग़लती हो गई । आज नेवरेज़ेश्की से रुपया उधार लिया । चरित्र-हीनता और आलस्य के लिये अनेक प्रताड़नाएँ । सब से मुख्य कार्य, क्रोधान्धता, आलस्य और चरित्रहीनता पर विजय पाना है ।

३ सितम्बर—स्कुलेनी को कूच किया । ऐन सीमा पर मैंने पाप-कर्म किया । डेवडेङ्को को पीटा । सब से मुख्य अपने तीन दोषों से मुक्त होना है ।

४ सितम्बर—स्कुलेनी में । दिन-भर कूच करते रहे । दो

बार लिखने की कोशिश की, पर हाथ चला नहीं। शाम को ताश खेले। पैसा पास नहीं है, और परिचित तथा मित्र मुझे कष्ट दे रहे हैं। सब से मुख्य तीन दोनों से मुक्त होना है।

५ सितम्बर—मेरी और मेरी डायरी की अजीब हालत होती जा रही है। ठीक तौर से कुछ लिखना हो नहीं रहा है। निकोलेंका को एक आवेशपूर्ण पत्र लिखा। सब से मुख्य तीन दोषों से मुक्त होना है।

६ सितम्बर—मेरे जीवन का मुख्य कार्य आवेश, चरित्र-हीनता और आलस्य से छुटकारा पाना है। सब को प्यार करो, अपनी निन्दा करो।

७ सितम्बर—कोलोरम को कूच किया। खुशनुमा दिन था। सब से मुख्य तीन दोषों से मुक्त होना है।

८ सितम्बर—खुदा जाने, कहाँ को······कूच किया। स्वास्थ्य और मानसिक अवस्था अच्छी है। जिस भद्रता और आनन्द का मैं अपने को अभ्यस्त बनाता जा रहा हूँ, वह मुझ पर अच्छा असर कर रही हैं, और मैं सुख का अनुभव करता हूँ। सब से मुख्य तीन दोषों से मुक्त होना है।

९ सितम्बर—किशिनेव को कूच किया।······कौंसिलर की पत्नी के प्रति मेरा व्यवहार अभद्रतापूर्ण था। सब से मुख्य तीन दोषों से मुक्त होना है।

१० सितम्बर—एक दूर जगह किसी काम से भेज दिया गया हूँ। पत्रिका पढ़ता रहा (१) टिश्केविच से लड़ बैठा।

(२) करा-धरा कुछ नहीं (३) तीन मुख्य दोषों से छुटकारा पाना।

११-१६ सितम्बर—घोड़े पर सवार होकर लेटीशेव गया, गया और दिलचस्प मसाला काफ़ी हाथ लगा। दाँतों में फिर दर्द शुरू हो गया। सेवस्टॉपॉल के निकट की असफलता मुझे दुःख दे रही है। आत्म-श्लाघा और भीरुता हमारी सेना के सब से अधिक दुःखदायी दोष हैं।—और यह दोष उन सभी देशों की सेनाओं में साधारणतः पाये जाते हैं, जो बहुत बड़े और दृढ़ कहलाते हैं। सब से मुख्य कार्य तीन प्रधान दोषों से मुक्त होना है।

'बाल्यावस्था' और 'धावा' (The Raid) मिल गये। पहली में बहुत-सी कमियाँ देखता हूँ। मेरे जीवन का अस्थायी उद्देश्य है—अपने चरित्र का सुधार, अपने झमेलों को साफ़ करना, और साहित्य तथा कर्तव्य के क्षेत्र में अपना अच्छा स्थान बनाना।

१७ सितम्बर—आज का आचरण बहुत ख़राब रहा। शाम को कुछ नहीं किया, सिर्फ़ लड़कियों के पीछे भागता फिरता रहा, जो मेरी इच्छा और भावना के सर्वथा प्रतिकूल था। कोई सोसायटी क़ायम करने की स्कीम मुझे भा रही है। तीन प्रधान दोषों से मुक्त होना है।

१८ सितम्बर—सुबह उस स्कीम पर कुछ विचार किया, और तब शुबिन के साथ बाहर गया। खाने के बाद कुछ देर

मौज मारी, और फिर स्टॉलीपिन के यहाँ गया। कुछ नहीं किया। तीन प्रधान दोषों से मुक्ति पाना है।

१९ सितम्बर—सुबह कुछ नहीं लिखा। खाने के बाद बाहर निकल गया। तीन प्रधान दोषों से मुक्त होना है।

२० सितम्बर—सुबह के वक्त बदली और पैसे की फ़िक्र में लगा रहा। माम ने तो साफ़ इंकार कर दिया, नेवरेज़ेश्की ने कुछ का वादा किया है। कल गोर्शाका के पास जाऊँगा। शाम को ताश खेले। स्टॉलीपिन के यहाँ गया। फिर क्लब गया। मेरा स्वास्थ्य सोलह-आने अच्छा नहीं है। गोर्शाका से दिल खोलकर बात न हो सकी। मन में बड़ा क्षोभ है। तीन प्रधान दोषों से मुक्ति पाना है।

२१ सितम्बर—सुबह के वक्त सोसायटी के कमरे पर बॉबोरिकिन और शुबिन से वार्तालाप किया। स्टॉलीपिन और नेवरेज़श्की से मिलने गया। तीन प्रधान दोषों से मुक्ति पाना है।

२२ सितम्बर—बड़ी शान हाँकी। तीन प्रधान दोषों से मुक्ति पाना है।

२३ सितम्बर-२ अक्तूबर—सोसायटी बनाने की जगह मासिक-पत्र का सम्पादन करना ❀ निश्चित किया है। इस

❀ यद्यपि सोसायटी का इरादा टॉल्सटॉय को मजबूर होकर छोड़ना पड़ा, परन्तु सेना-सम्बन्धी किसी प्रसिद्ध मासिक-पत्रिका का सम्पादन करने का विचार उनके दिल में

पत्रिका के कारण ही मैं ठहरा हुआ हूँ। काम चला ही जा रहा है। काम-धाम कुछ नहीं कर रहा हूँ, और व्यवहार दिन-दिन ख़राब होता जा रहा है। कल उच्च अफ़सर आरहे हैं। चलो, इसी समय कोई अद्भुत घटना घटित हो जाय ! नमूने के अङ्क के लिये कोई लेख लिखना चाहिये। सब से मुख्य कार्य तीन प्रधान दोषों से मुक्ति पाना है।

३ अक्तूबर—'ऑडेसा में एक हृदय-द्रावक घटना का वर्णन वे कर रहे थे। सेनापति का सहकारी हॉस्पिटल में आया। वहाँ चौथी टुकड़ी के घायल सिपाही पड़े हुए थे, जो क्रीमिया के युद्ध-स्थल से लाये गये थे। उसने उनसे कहा—"सेनापति

बहुत दिनों से था, जो उनमें सदा उत्साह का सञ्चार करती रहे, और युद्ध का उद्देश्य समझती रहे। उन्होंने कुछ अफ़सरों पर दबाव डाला, कि वे इस कार्य में योग दें। अपने भाई सर्जी को एक पत्र में उन्होंने लिखा—"हमारे मिलिटरी-स्टाफ़ में—जिसमें, मैं पहले कह चुका हूँ, बहुत ही सभ्य और सज्जन पुरुष हैं—एक सेना-सम्बन्धी मासिक-पत्रिका निकालने का विचार हुआ है, जिसका उद्देश्य सेना में उत्साह क़ायम रखना होगा। यह मासिक-पत्रिका बहुत सस्ती (तीन रूबल प्रति वर्ष की) होगी, और बहुत पसन्द की जायगी। हमने पत्रिका की योजना स्थिर करके सेनापति को सौंप दी है। वह उस विचार से बहुत प्रसन्न हुआ, और हमारी योजना को, नमूने के अङ्क-समेत बादशाह के पास भेज दिया। उसका प्रकाशन-व्यय मेरे और स्टॉलीपिन के द्वारा अदा किया जायगा। मुझे सम्पादक चुना गया है। कॉन्सटेण्टिनोव

प्रिन्स गोर्शाका ने मुझे आज्ञा दी है, कि मैं आपकी सेवाओं के लिये आपको धन्यवाद दूँ और प्रार्थना करूँ........"
"धन्य है !" घायल सिपाहियों का निर्बल कण्ठ-स्वर एक-के-बाद-एक सुनाई दिया। गोर्शाका के साहस का यह बड़ा प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण पारितोषिक है ! स्वयं बादशाह के दिये हुए सम्मान से अधिक।

निकोलेव को चलती बार बोट के चालक ने मुझसे कहा कि २६ तारीख़ को वहाँ कोई युद्ध हुआ था, कम्यूटोव ने बड़ी ख्याति प्राप्त की। उसने बहुत से दुश्मन के सिपाहियों को क़ैद कर लिया, और बहुत-सी बन्दूक़ें छीन लीं। लेकिन साथ

नामक एक व्यक्ति—जो'कॉकेशस' नामक पत्र का सम्पादक रह चुका है—मेरा सहकारी रहेगा।

"पत्रिका में हम लड़ाइयों का वर्णन लिखेंगे, ऐसा निकम्मा नहीं, जैसा कि दूसरे पत्रों में प्रकाशित होता है—साहसिक विभ्राटों का चित्रण, आत्म-कथाएँ, और बहादुर सिपाहियों का मृत्यु-समाचार प्रकाशित करेंगे। युद्ध-विषयक कहानियाँ, सिपाहियों के गीत और युद्ध तथा कला-विषयक उपयोगी लेख देंगे।"

डेढ़ महीने बाद टॉल्सटॉय ने इस पत्रिका के दुःखद अन्त का वर्णन अपनी चाची अलेग्ज़ैण्ड्रोवना को लिखाः—
"हम लोगों में सब बातों पर पार्टीबन्दी होती है। कुछ लोग पत्रिका के व्यापारिक संघर्ष से डर गये। इसलिये बादशाह ने मंज़ूरी नहीं दी। मैं स्वीकार करता हूँ, इस असफलता से मेरे हृदय पर बड़ी चोट लगी है।"

ही यह बात भी थी कि हमारे ८००० आदमियों में से केवल २००० लौटकर गये। निकोलेव पहुँचने पर इन बातों की पुष्टि हो गई। नाख़ीमोव* और लिपरान्दी × घायल हुए। दुश्मन को नई कुमक मिल गई है, धावे की तैयारी है। परमात्मा जाने क्या सच है, क्या झूठ है! चालक ने एक कॉसेक की कहानी भी मुझे सुनाई। उसने फन्दे की मदद से एक अँग्रेज़ सरदार को पकड़ लिया था, और प्रिन्स मोन्शिकोव के पास ले चला। युवक सरदार ने कॉसेक पर फ़ायर कर दिया। "अरे गोली न चला।" कॉसेक ने चिल्लाकर कहा। सरदार ने फिर गोली चलाई, और निशाना चूक गया। कॉसेक फिर चिल्लाया—"अरे! बेवक़ूफ़ी मत कर!" सरदार ने फिर फ़ायर किया, और चूक गया। (ऐसी बातें तीन बार ही होती हैं) तब कॉसेक ने अपने चाबुक से उसकी खबर लेनी शुरू की। जब सरदार ने मेन्शीकोव से शिकायती की कि कॉसेक ने उसे चाबुक से मारा, तो कॉसेक बोला—"मैं उसे निशानेबाज़ी सिखा रहा था। क्योंकि अगर बिना जाने ही वह ऐसा करने

---

*एक प्रसिद्ध फ़ौजी सरदार, जो 'ब्लैक-सी' नामक सेना का कप्तान था। ३० नवम्बर १८५३ ई० के दिन उसने सिनॉय के निकट तुर्की तोपख़ाना नष्ट कर दिया था। वह सेवस्टॉपॉल की रक्षा करते हुए मरा।

× एक अफ़सर, जो इटैलियन माता-पिता की सन्तान था, पर रूस की सेना में नौकर था।

लगेगा, तो कॉसेक उसे जीता न छोड़ेंगे।" मेन्शीकोव हँस पड़ा। असल में ऐसी कहानियाँ अँग्रेज़ों की बाबत ही ज्यादे सुनी जाती हैं; फ्रान्सीसियों की नहीं।

४-५ अक्तूबर—निकोलेव में कुछ नहीं देखा। अब मैं अफ़वाहों को नोट नहीं किया करूँगा; क्योंकि उनमें कुछ भी तत्व नहीं होता। २४ तारीख़ से अब तक सिवा घेरा डालने के कुछ भी नहीं हुआ। खेरसॉन् और ऑलेश्को से हम नाव पर चढ़कर आये। एक मल्लाह ने हमें सिपाहियों के आवागमन की बातें सुनाईं। एक सिपाही बरसते मेंह में, नाव के भीगे पेंदे में पड़कर ख़र्राटे लेने लगा। एक अफ़सर ने फुंसियाँ नोचते देखकर एक सिपाही को चाँटा मार दिया। एक सिपाही ने इस डर से अपने-आपको गोली मार ली, कि छुट्टी से दो दिन ज्यादे वह घर ठहर गया था, उन्होंने बिना दफ़नाये ही उसे नाव से नीचे फेंक दिया था !!

ऑलेश्को में मुझे रुकना पड़ा। इसलिये कि यहाँ एक उकरेनियन सुन्दरी से मेरा प्रेम हो गया, और खिड़की की राह जाकर मैंने उससे चूमा-चाटी की।......इसी कारण मैं अपने साथी-अफ़सरों से पिछड़ गया। सर्ज़पुटोवस्की, बॉबोरिकिन और शुबिन आगे चले गये। व्योल्स्की के द्वारा मैंने सुना, जो मुझे पेरेकोप में मिला, कि सारी भयानक अफ़वाहें निराधार थीं। शुबिन के चले जाने से मैं व्यग्र हो गया हूँ। मैं इस युवक का आदर किये बिना नहीं रह सकता।

फ़्रान्सीसी और अँग्रेज़ क़ैदियों को देखा है, लेकिन उनसे बात करने का समय नहीं मिला। केवल उनकी शक्ल-सूरत और चाल-ढाल देखकर मैं इस दुःखद परिणाम पर पहुँचा हूँ, कि यह लोग हमारी अपेक्षा कहीं अच्छे सिपाही हैं। फिर भी, हमारी सेना में ऐसे कुछ सिपाही निकल आयेंगे, जिनकी तुलना इनसे की जा सकती है।

जो संत्री-लड़का मुझे यहाँ लाया, वह कह रहा था, कि अगर हमें विश्वासघात का दोष लगने का भय न होता, तो हम २४ तारीख़ को अँग्रेज़ों का सर्वनाश कर देते। कैसी खेद-जनक और हास्यास्पद बात है। "और दूसरे दिन" वह बोला—"वे एक लोहे की छः घोड़ों-वाली गाड़ी के साथ आये—शायद मैन्शिकोव की तलाश में।" अपने कुछ घायल साथियों से मैंने भी भेंट की। नायकों की मृत्यु का उन्हें बड़ा अफ़सोस है। कहने लगे, कि वे तो कई बार हमला करने के लिये आगे बढ़े, मगर सम्हल न सके; क्योंकि उनके बायें पक्ष में भग-दड़ पड़ गई। उन्हें क्या मालूम—उनके साथ कैसा विश्वास-घात किया गया!

९-१० अक्तूबर—रुपया मिल गया है। बहुत-सा फ़िज़ूल-ख़र्च कर डाला, और ताश खेले। एक घोड़ा ख़रीदकर नये मकान में आगया हूँ। पत्रिका की स्कीम मन्दी है। उधर मैं धीरे-धीरे दृढ़ होता जा रहा हूँ।

२१ अक्तूबर—पिछले दिनों में बहुत-से झमेले जान को

लगे रहे ! सेवस्टॉपॉल के सारे झगड़े जैसे कच्चे तागे पर लटके हुए हैं। नमूने का अङ्क आज तैयार होजायगा। मैं फिर कूच का विचार कर रहा हूँ। स्टॉलीपिन, सर्ज पुटोवस्की, शुबिन और बॉबोरिकिन भी जारहे हैं, या शायद चले भी गये हों। ताश खेलती दफ़ा सब-का-सब रुपया खो बैठा।

२ नवम्बर—ऑडेसा। अँग्रेज़ी और फ़्रान्सीसी सेना के पड़ाव से लेकर अब तक, तीन बार मुठभेड़ हो चुकी है। पहली आल्मा ❀ (८ सितम्बर ❀) पर, जिसमें दुश्मन ने हमला करके हमें हराया। दूसरी, लिपरान्दी का १३ सितम्बर का मोर्चा था, जिसमें हमने हमला किया, और जीते, और तीसरा डैनिनबर्ग का भयङ्कर हमला था, जिसमें हमने हमला किया, और फिर हारे। मुख़बिरी का काम उल्टा ही पड़ा जारहा है। १० वीं और ११ वीं डिवीज़न ने दुश्मन के बाँयें पक्ष पर हमला किया, उन्हें पीछे हटा दिया, और दुश्मन की सैंतीस तोपों में किल्ली ठोंक दी। तब दुश्मन के ६००० आदमी

❀ पाठकों को स्मरण रखना चाहिये, कि टॉल्सटॉय पुराने समय की तारीख़ों का व्यवहार करते हैं, जो नये तरीक़े से १२ दिन के आगे-पीछे चलती हैं। अर्थात् पुराने तरीक़े की ८ सितम्बर नये की २० सितम्बर हुई। लेकिन ऐसा मालूम होता है, टॉल्सटॉय अक्तूबर की जगह 'सितम्बर' लिख गये हैं। बलाकवा का युद्ध १३=२५ अक्तूबर को हुआ था। और तीसरा युद्ध २५ अक्तूबर (पुराना तरीक़ा) या ५ नवम्बर (नया तरीक़ा) को हुआ था।

आगे बढ़े—३०००० के मुक़ाबले में सिर्फ़ ६०००—और हमें अपने क़रीब ६००० वीर खोकर वापस लौटना पड़ा। हमें लौटना इसलिये भी पड़ा कि हमारी आधी सेना के पास तोप-ख़ाना न था; क्योंकि सड़कें अच्छी नहीं थीं। और—ख़ुदा जाने क्यों—हमारे पक्ष में कोई भी टुकड़ी अच्छे निशाने-बाज़ों की नहीं थी। भयानक हत्याकाण्ड! बहुत-सी आत्माओं पर इसका भार रहेगा। परमात्मा, मुझे क्षमा करे! इस घटना के समाचारों ने एक असर पैदा किया है। मैंने ऐसे बुड्ढों को देखा है, जो ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे, और ऐसे युवकों को देखा, जो डैनिनबर्ग की हत्या करने की क़स्में खा रहे थे। रूसी लोगों की नैतिक शक्ति बड़ी प्रबल है। रूस के इस कष्ट-समय में बहुत-से राजनीतिक सत्य प्रकट होकर फैलेंगे, मातृ-भूमि के प्रति तीव्र प्रेम और भक्ति का जो भाव रूस में आजकल पैदा हो रहा है, वह बहुत दिन तक अपना प्रभाव क़ायम रक्खेगा, यही लोग जो अपने प्राणों की बाज़ी लगा रहे हैं, रूस के सच्चे नागरिक होंगे, और अपने बलि-दान को भूलेंगे नहीं। वे सार्वजनिक कार्यों में गौरव और प्रतिष्ठा के साथ भाग लेंगे, और युद्ध के कारण जो उत्साह उनमें उत्पन्न हुआ है, वह उनके चरित्र में सदा के लिये आत्म-त्याग और बड़प्पन की छाप लगा देगा।

इन वीर शहीदों में से सिमोनोव और कॉम्सटेडियस भी थे, जो उस दिन के अभागे युद्ध में काम आये। सिमोनोव

की बाबत कहा जाता है, कि वह समस्त रूसी सेना में अत्यन्त सम्मान-प्राप्त और मेधावी सेना-नायक था, दूसरे को मैं अच्छी तरह जानता था; वह हमारी सोसायटी और पत्रिका का एक मेम्बर था। प्रधानतः इसी के मृत्यु-समाचार से विचलित होकर मैंने सेवस्टॉपॉल भेजे जाने की दरख़्वास्त दी है। मैंने अनुभव किया, मानों मैं उसके समक्ष लज्जित हूँ।

अँग्रेज़ी जहाज़ ऑडेसा के मार्ग को रोके जा रहे हैं। समुद्र, दुर्भाग्यवश, शान्त है। सुना है, कि २७ तारीख़ को फिर मुठभेड़ हुई,—बिना किसी निश्चित परिणाम के, और यह भी ख़बर है, कि ३ री तारीख़ को फिर हमला होगा। मैं तो वहाँ पाँच से पहले पहुँच नहीं सकूँगा। लेकिन मेरा ख़याल है, फिर भी देर नहीं हो पायेगी।

११ नवम्बर—मैं ७ तारीख़ को पहुँचा। रास्ते में जो अफ़वाहें सुनकर मुझे कष्ट हुआ था, वह सब ग़लत साबित हुईं। मुझे थर्ड बैटरी में शामिल होने का हुक्म दिया गया है। मैं स्वयं शहर में रहता हूँ। अपनी सारी नयी कुमक को मैं दूर से देख चुका हूँ। कुछ के पास जाकर भी देख आया हूँ। सेवस्टॉपॉल का लेना बिल्कुल असम्भव है—दुश्मन को इसका विश्वास है। मेरा ख़याल है, वह पीछे हटने का बहाना करेंगे। २ नवम्बर के तूफ़ान के कारण तीस बोट, एक जहाज़ और तीन स्टीमर किनारे से हट गये। इस ब्रिगेड के अफ़सरों की सङ्गति वैसी ही है—जैसी और जगह रहती थी।

उनमें एक ऐसा है—जिसकी सूरत लुइसा वोल्कोन्स्की से मिलती है। मैं जानता हूँ, कि मैं शीघ्र ही उससे तङ्ग आ-जाऊँगा, इसलिये मैं उससे बहुत कम मिलता हूँ, ताकि यह छाया मन पर अधिक समय तक बनी रहे।

नायकों में सब से सज्जन पुरुष नाखीमोव, टॉटलबेन,❀ और इस्तॉमिम जान पढ़ते हैं,—तथा, मेन्शीकोव × एक अच्छा सेनापति मालूम होता है। मगर उसने दुर्भाग्यवश, एक निर्बल सेना के भरोसे ऐसी शक्ति से लोहा लेना स्थिर किया है, जो उससे कम-से-कम तीन-गुनी शक्ति रखता है, और जिसके पास हर्बे-हथियार भी अधिक हैं। दोनों तरफ के सिपाही ऐसे हैं, जो पहले कभी युद्ध-क्षेत्र में नहीं आये, इसलिये संख्या की अधिकता उसकी महत्ता को दस-गुनी बढ़ा देती है। अशिक्षित सिपाही दाँव लगाकर पीछे नहीं हटते—उनमें तो एक-दम भगदड़ ही मचती है।

१२-१३ नवम्बर—कल एकजा सूस ने ख़बर दी कि दुश्मन की तरफ़ से २६ (१३ पु० त०) को एक हमले का

❀ जनरल ई० जी० टॉटलबेन, बुद्धिमान् सेना-नायक, जिसने सेवस्टॉपॉल की मुक्ति का छन्दबद्ध वर्णन् लिखा था।

× प्रिन्स ए० एस० मेन्शीकोव, रूसी जल और थल-सेना का सेनापति, जो आल्मा में पराजित होने के बाद क्रीमिया में कुछ दिन इस पद पर रहा। प्रिन्स माइकेल गोर्शाका की जगह उसे क्रीमिया में सेनापति का पद प्रदान किया गया था।

निश्चय किया गया है। अब १२ बज चुके हैं, पर अभी तक कुछ नही हुआ। कहा जाता है, कि दुश्मन के पास अस्सी तोपें लैस हैं। वे लोग सहसा हमला करके तोपों को नष्ट कर देना चाहते हैं। यह ख़बर सन्दिग्ध होने पर भी एक सत्य पर प्रकाश डालती है। भला उन्होंने ६ तारीख़ को हमला क्यों नहीं किया, जब कि हमारी सारी तोपें अस्त-व्यस्त थीं ?

२० नवम्बर—

कब तक सहना होगा, हमको, हा ! जीवन उद्देश्य-विहीन,
प्रणय-काल की सुखद मधुरिमा, हुई सदा के लिये विलीन।
अन्तस्तल में पीड़ा उठती, प्राणों पर बन आती है,
किससे कहूँ, करूँ क्या औषधि, बुद्धि नष्ट हो जाती है।
ईश्वर ही केवल जाने, केवल, अन्तर में किसने घाव किया,
पीड़ा सदा सताती रहती, जब से मैंने होश लिया।
अन्धकारमय चिन्ता से, मेरा भविष्य है भरा हुआ,
खेद निराशा, सन्देहों के दल-बादल से घिरा हुआ।*

(सिम्फ़ेरोपोल-नामक स्थान पर लिखी हुई एक कविता)।

---

* How long, oh, how long, will it be ere I cease
This aimless and passionless life to endure,
And deep in my heart must still suffer the wound
For which I'm unable to find any cure.
And Heaven alone knows who dealt me this wound
This pain which from childhood I'm never without,
Of future nonentity's wearisome lot
Of depression that tortures, and sorrow and doubt.

२५ नवम्बर—१५ तारीख़ को सेवस्टॉपॉल छोड़कर सीमा-प्रान्त के लिये रवाना हुआ। रास्ते में पहले की अपेक्षा अधिक निश्चय हो गया, कि सब से पहले या तो रूस का एक बार घोर पतन हो जाय, अथवा वह फिर नये सिरे से अपना सङ्गठन करे। सभी बातें उल्टी-उल्टी हो रही हैं। हम दुश्मन को ख़ेमाबन्दी से नहीं रोकते; यद्यपि ऐसा करना बहुत ही आसान होता। और हम, बहुत कम सेना की सहायता से, बिना कहीं से किसी प्रकार की कुमक की आशा रक्खे, गोर्शाका जैसे ख़र-दिमाग़ आदमी के सेनापतित्व में, अपनी रक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं कर रहे हैं। कॉसक लोग लूट करना चाहते हैं, लड़ना नहीं। हुसार और अहलन लोग समझते हैं, कि हरामकारी और शराबखोरी में ही सिपाहियत की शान है। पैदल सेना का यह ख़्याल है, कि बहादुरी लूट-मार और पैसा कमाने में ही है। सेना और राज्य के लिये एक बड़ा ही दुःखदायी वातावरण है।

दो घंटे अँग्रेज़ और फ़्रान्सीसी घायलों से बातें करते बीते। उनमें से हरेक अपने स्थिति पर गौरव करता है, और अपने व्यक्तित्व का मान करता है, और विश्वास करता है, कि वह अपनी सेना का एक अत्यन्त उपयोगी अङ्ग है! अच्छे हथियार और उन्हें इस्तेमाल करने की अच्छी शिक्षा-दीक्षा, नई उमर और कला और राजनीति के विषय में साधारण ज्ञान—यह सब बातें उन्हें अपनी प्रतिष्ठा का ज्ञान कराती है।

मेरे यहाँ है—कोरा गदहा-पचीसी ! वर्दी वाहियात, बन्दूक़ उठाकर सलाम करने का तरीक़ा भद्दा, व्यर्थ-के हथियार, अज्ञानता, खाने और ठहरने का प्रबन्ध बेहद ख़राब—यह सब बातें युद्ध में प्रति आदमी का अनुराग, गौरव की अन्तिम भावना नष्ट कर देती हैं, और शत्रु के प्रति उनके मन में बहुत ऊँची भावता उत्पन्न कर देती हैं।

सिम्फ़ेरोपोल में मैंनें ताश खेलकर सारा रुपया उड़ा दिया। और इस समय बैटरी के साथ तातारों के एक गाँव में रह रहा हूँ। इस समय जीवन के कष्टों का अनुभव कर रहा हूँ।

२६ नवम्बर—बड़ी लापर्वाही से रह रहा हूँ। न अपने पर जब्र कर रहा हूँ, न संयम। शिकार खेलने जाता हूँ, सब कुछ सुनता हूँ, सब कुछ देखता हूँ, और लड़ाई-झगड़ा भी कर बैठता हूँ। एक बात बहुत खराब है—मेरी यह आदत शुरू हो गई है, कि मैं अपने-को अपने साथियों से श्रेष्ठ समझने लगा हूँ—या समझने की कोशिश करने लगा हूँ। देखता हूँ, अब वे मुझे पहले जितना पसन्द नहीं करते। सेवस्टॉपॉल से कुछ ख़बरें, क़रीब-क़रीब निश्चित, प्राप्त हुई हैं। १३ वीं तारीख़ को दुश्मन की खाइयों पर धावा बोला गया। हमारी एक टुकड़ी ने खाइयों पर क़ब्ज़ा कर लिया, दुश्मन को मार भगाया, और अपने सिर्फ़ तीन आदमी खोकर टुकड़ी का नायक लौट आया। सेना के उस भाग का अफ़सर ग्राण्ड

ड्यूक निकोले निकोलेविच के सामने उपस्थित किया गया।

"तो उस धावे के नायक तुम्हीं थे ?" ग्राण्ड ड्यूक ने उससे पूछा—"उसका पूरा वर्णन् करो।"

"जब मैं खाई की तरफ़ बढ़ा, तो सिपाही ठहर गये। वे आगे बढ़ना नहीं चाहते थे।"

"क्या कहा………?" ग्राण्ड ड्यूक ने आसन से सरक-कर कहा।

"यह क्या बात है—तुम्हें शर्म नहीं आती ?" फ़िलो-सोफ़ोव ने झिड़ककर कहा।

"जाओ, यहाँ से !" आख़िर मेन्शीकोव ने बात समाप्त कर दी।

मेरा विश्वास है, अफ़सर सच्ची बात कह रहा था, और अपनी पूरी कैफ़ियत नहीं दे पाया।

दूसरी टुकड़ी का धावा असफल रहा। दूर से दुश्मन के पहरेदारों को देखकर नायक लौट आया और इसकी ख़बर समाचार-विभाग के अफ़सरों को दी। इतने समय में दुश्मन को तैयारी का मौक़ा मिल गया।

तीसरी टुकड़ी के धावे का कोई विस्तृत समाचार मुझे नहीं मिला। सब मिलाकर यह ख़बरें सोलह-आने विश्वस्त नहीं हैं। यद्यपि तीस तोपों के छीन लेने की बे-सिर-पैर की ख़बर की निस्बत यह अधिक युक्तिसङ्गत मालूम होती है।

लिपरान्दी सेवस्टॉपॉल की सेना का अधिनायक नियुक्त

हुआ है। धन्य भगवान्! उसकी उन सफलताओं के अतिरिक्त, जो उसने इस युद्ध में प्राप्त की हैं, लोग उसे प्यार करते हैं, और उसकी खासी ख्याति भी है—उसकी धार्मिकता के लिये नहीं, वरन् उसके प्रबन्ध और उसकी योग्यता के लिये। अच्छे को, या बुरे को, पैसे के अभाव में मुझे यहाँ टिकना पड़ रहा है। अन्यथा, या तो मैं इस समय यूपैटोरिया के किनारे होता, अथवा सेवस्टॉपॉल वापस लौट जाता।

७ दिसम्बर—५ तारीख़ को थोड़े सिपाहियों के साथ, मैं कुछ तोपें लेनें सेवस्टॉपॉल गया था। वहाँ बहुत नवीनता है, और सभी कुछ सन्तोषजनक है। साकेन*की उपस्थिति सभी चीज़ों में व्याप्त है। और बल्कि उसकी उपस्थिति इतनी नहीं, जितनी कि नये सेनापति की—जो कि अभी बेकार नहीं हुआ है, और जो सिर्फ़ स्कीमों और आशाओं के संसार में प्रवेश नहीं करता है। जहाँ तक सम्भव है, साकेन के ही धावा बोलने के लिये सेनाओं को उत्तेजित किया होगा। (मैंने कहा 'जहाँ तक सम्भव है;' क्योंकि असल में तो सिवा मेन्शीकोव के कोई उन्हें उत्तेजित नहीं कर सकता, जो केवल तुरन्त उचित पारितोषिक वितरण करने से ही हो सकता था, और जिसका उसने ख्याल नहीं रक्खा।) फाँसी के तख्ते पर चढ़े

---

* काउण्ट ऑस्टेन-साकेन जर्मन-जाति का एक सेनानायक था। टॉल्सटॉय-परिवार का इस परिवार से शादी-ब्याह का सम्बन्ध था।

हुए आदमी की जाँबख़्शी की सिफ़ारिश करना क्या उपयोग रखता है ? लेकिन मनुष्य का निर्माण ऐसी मूर्खतापूर्वक हुआ है, कि मरते-दम भी वह इनाम-इकराम की इच्छा और उनका स्वागत करने को तैयार रहता है। साकेन ने खाइयाँ तैयार कराली हैं। ख़ुदा जाने, यह योजना अच्छी है, या बुरी—पर यह कार्यशीलता की द्योतक अवश्य है। कहा जाता है कि, आठ आदमियों समेत एक ऐसी खाई दुश्मन के पंजे में पड़ चुकी है। पर सब से महत्त्वपूर्ण बात यह है, कि इन खाइयों से घायलों की रक्षा के प्रयत्न में ख़ुद घायल होने का भय है। साकेन ने घायलों के आवागमन का प्रबन्ध भी किया है, और जगह-जगह उनकी सेवा-सुश्रूषा की व्यवस्था कराई है। सेवस्टॉपॉल कितना सुन्दर है ! दो दिन पहले मैं बेहद उदास था। दो घंटे तक मैं हस्पताल मैं घायलों का निरीक्षण करता रहा। अधिकांश हस्पताल त्याग चुके थे; कुछ मरकर, कुछ अच्छे होकर,—बाक़ी का इलाज हो रहा था। पाँच को मैंने एक लोहे के चूल्हे के इर्द-गिर्द बैठे देखा। फ़्रान्सीसी, अँग्रेज़, रूसी—सब अपनी-अपनी भाषा में गपशप कर रहे थे। सिपाही लोग उनकी भाषायें न समझकर कभी-कभी चिल्ला उठते थे।

जब मैं घाट पर पहुँचा, तो सूरज अँग्रेज़-सेनाओं के पीछे छिप रहा था। धुएँ के बादल उठ रहे थे, और जगह-जगह तोप-बन्दूक़ों की आवाजें सुनाई दे रही थीं। समुद्र शान्त था,

और उसमें बहुत-से बड़े-बड़े जहाज़ चल-फिर रहे थे। छोटी-बड़ी नौकायें, तेज़ी से पानी पर दौड़ रही थी। ग्राफ़्स्की घाट पर बाजा बज रहा था, और ढोल पिट रहे थे। गैलित्सिन और कुछ अन्य सज्जन भी घाट पर उपस्थित थे, और बारजों पर झुके खड़े थे। अच्छा दृश्य था।

धावे-हमलों की अफ़वाहों में केवल निम्न-लिखित सत्य था—धावे बहुत-से हुए। इनमें रक्त-पात की कमी होने पर भी क्रूरता बहुत बर्त्ती गई। दो तो उल्लेखनीय थे। एक तो पिछले मास के अन्त में, जिसमें कि तीन जहाज़ों पर कब्ज़ा कर लिया गया था, (उस एक के अतिरिक्त जो खाइयों के आगे ही रोक दिया गया था) और एक फ्रान्सीसी अफ़सर तथा बहुत-सी बंदूक़ें अधिकार में ले ली गईं थीं। दूसरा वह था, जिसमें लेफ्टिनेण्ट तितोव तीन भयानक इकहरी तोपों के साथ आगे बढ़े थे, और रात के वक़्त दुश्मन की खाइयों पर निशाना बाँधकर गोलाबारी करते रहे थे। दुश्मन की खाइयों से चीख़-चिल्लाहट की आवाज़ दूर-दूर तक सुनाई पड़ी थी।

ऐसा मालूम होता है, कि शीघ्र ही चले जाना पड़ेगा। कह नहीं सकता, मेरी इच्छा है या नहीं।

[१८५५]

एक महीने से ज़्यादा सिम्फ़ेरोपोल के निकट एस्कलॉर्ड स्थान में बीता। वातावरण बहुत ही उदासीनतापूर्ण था। अब याद आती है, तो मुझे दुःख होता है। दूसरी टुकड़ी में भेजे जाने पर भी मैंने यहाँ कोई विशेषता नहीं देखी।

फ़िलीभोनोव, जिसकी बैटरी में मैं हूँ, बहुत ही गन्दा आदमी है। बड़ा अफ़सर ऑडाख़ोवस्की उसका भी उस्ताद है। अन्य अफ़सर अपना कोई अलग स्वभाव नहीं रखते, और इन्हीं दोनों का प्रभाव उन पर पड़ा हुआ है। और मैं इन्हीं लोगों के बन्धन में हूँ—इन्हीं पर निर्भर हूँ! मैं सेवस्टॉपॉल गया था, रुपया लाया था, टॉटलबेन से मिला था, और ताश भी उड़ाये थे। अपने-आपसे अत्यन्त असन्तुष्ट हूँ। कल हम्माम में नहाने अवश्य जाऊँगा।

'छोटे हथियार से हत्या-काण्ड' ❀ नामक लेख फिर-से लिखा। रिपोर्ट लिखी है।

❀ मिनी-नामक छोटी-सी पिस्तौल, जिसे अँग्रेज़-सेना क्रीमिया-युद्ध में सन् १८५५ तक उपयोग में लाती रही, और एनफ़ील्ड-पिस्तौल, जो कि उसी समय प्रचलित हुई थी, दोनों चिकने मुँह की रूसी बन्दूक़ों से बहुत-ज़्यादे अच्छी थीं। टॉल्सटॉय ने शायद इसी विषय पर लेख लिखा था।

२८ जनवरी—दो दिन और दो रात तक बराबर स्टॉस+ खेलता रहा। परिणाम स्पष्ट है—यश्नाया पोलयाना÷का मकान हार बैठा। यह लिखना व्यर्थ मालूम होता है। अपने-आपसे मैं इतना क्षुभित हो उठा हूँ, कि अपना अस्तित्व भी भूल जाने की इच्छा करता हूँ। कहा जाता है, कि फ़ारस ने तुर्की के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी है, और कहते हैं, आख़िर में सुलह ही होगी।

२ फ़रवरी—सर्वस्व खो बैठना भी मेरे लिये काफ़ी नहीं था। मेश्केरेश्की का १५० रूबल का क़र्ज़ भी सिर पर चढ़ा लिया। इस दौरे में मैंने सेनाओं का पुनर्संगठन करने की इच्छा साकेन से प्रकट की। वह मुझसे सहमत है। अब इस बात को स्वीकार करता हूँ, कि इस योजना को कार्य-रूप में परिणत करने के बदले में मैं पारितोषक की आशा करने लगा हूँ। अपनी हानि के दण्ड-स्वरूप और उनका प्रायश्चित्त करने के लिये मैं रुपये के लालच से काम करने के कारण

+ स्टॉस (ताश का एक खेल) का विस्तृत वर्णन् टॉल्सटॉय की दो हुसार (The Two Hussars)-नामक पुस्तक के २५६ पृष्ठ पर लिखा हुआ है। यह पुस्तक 'सेवस्टॉपॉल, कहानी के साथ एक ही जगह 'कॉन्सटेबिल' (प्रकाशन-संस्था) द्वारा प्रकाशित हुई है।

÷टॉल्सटॉय ने अपने जन्म-स्थान का भारी लकड़ी का घर जुए में हार दिया था। उसका एक-एक टुकड़ा अलग लेजाकर नये सिरे से बनवाया गया था।

अपनी निन्दा करता हूँ। मगर, मैं देखता हूँ, इसके बिना काम चलेगा नहीं। निकोलेंका को अपनी हानि की बात साफ़ लिख भेजूँगा। फ़ीडे को भी लिख दूँगा कि वह सोसा-यटी की योजना का विचार स्थगित कर दे।

३-५ फ़रवरी—सेवस्टॉपॉल गया था। काशिन्स्की को अपनी स्कीम समझाई। वह असन्तुष्ट जान पड़ा। मैं कुज़्नो-कुत्स्की को न देख पाया, जिसने मुझसे मिलने को इच्छा प्रकट की थी, और जो आने पर मेरा पता न लगा सका। जहाज़ी बेड़ा इकट्ठा हो रहा है। शायद कुछ होनेवाला है। यूपैटोरिया में एक लड़ाई हो चुकी है। मैंने वहाँ जाने की दरख़्वास्त दी थी, मगर व्यर्थ!

६-८ फ़रवरी—फिर ताश खेला, और २०० रूबल हार गया। खेलना किसी तरह भी छूटता नहीं। मैं तो चाहता हूँ, किसी तरह नुक़सान की भरपाई होजाय; पर उल्टे और फँसता जाता हूँ; मैं २००० रूबल की पुनर्प्राप्ति चाहता हूँ, जो असम्भव है; यद्यपि और ४०० रूबल खो देना क्षण-भर का काम है। और फिर क्या होगा? बहुत ही भयानक!—स्वास्थ्य और समय के नाश की बात कहना तो व्यर्थ ही है। कल ओडाख़ोवस्की के साथ अन्तिम बार खेलूँगा। फिर ताशों को हाथ भी न लगाऊँगा।

हेन की रचना का एक अंश मैंने अनुवादित किया है।

ग्रिबोदो का प्रहसन 'चालाकी का दुष्परिणाम' भी पढ़ा। कल अवश्य लिखूँगा, और बहुत लिखूँगा।

१२ फ़रवरी—फिर ७५ रूबल खो बैठा कुछ समय के लिये परमात्मा ने खिन्नता से मुझे बचा लिया है। लेकिन आगे क्या होगा? मुझे केवल ईश्वर का भरोसा है। यूपैटोरिया से अच्छी ख़बरें नहीं मिली हैं। हमारे एक हमले को मुँह-तोड़ जवाब मिला। समय—नौजवानी का वह समय, जिसमें, बड़े-बड़े हौसलों, वलवलों और ऊँची-ऊँची अभिलाषाओं का समूह मन में छिपा बैठा रहता है—निकल गया। अब उसका कोई चिह्न अवशेष नहीं है। मैं ज़िन्दा नहीं हूँ, दिन काट रहा हूँ। मेरी हानि ने मुझे अपने विषय में कुछ विचार करने पर विवश किया है।

१४ फ़रवरी—ख़्रुलोव * १२० हल्की और ४०० बड़ी तोपें शहर के पार लेगया, और गोलाबारी करने लगा। दुश्मन ने बहुत मन्द-गति से जवाब दिया। हमारी दो टुकड़ियाँ आगे बढ़ीं, और पास पहुँचते ही उन पर गोलियों की बौछार छोड़ी गई। ६०० से ८०० तक की हमारी हानि कूती गई है। सेना वापस आगई है। सिपाही अपने डेरों में चले गये हैं। ११ से १२ फ़रवरी तक हमारी एक टुकड़ी ने धावा किया था। २०० से ५०० आदमी तक काम आये थे। मेरे

* एस० ए० ख़्रुलोव—सेवस्टॉपॉल के युद्ध में ख्याति-प्राप्त सेना-नायक।

मन में यह विचार बार-बार टक्कर लगा रहा है, कि या तो छुट्टी ले लूँ, या फिर युद्ध-विभाग में भर्त्ती होजाऊँ। स्टॉलीपिन को लिखा, कि वह मुझे किशिनेव भेजे जाने का प्रबन्ध कराये। वहाँ जाकर मैं दोनों में से एक काम करूँगा।

१५ फ़रवरी—और ८० रूबल हार गया। चरित्र-चित्रण लिखने बैठा। यह कल्पना मौलिक है—विचार में भी, और कार्य में भी। एक बार फिर ताश खेलकर अपनी तक़दीर-आज़माई करना चाहता हूँ।

१७–१९ फ़रवरी – २० रूबल कल और हार गया। अब कभी नहीं खेलूँगा।

२० फ़रवरी—कुछ नितान्त अविश्वस्त व्यक्तियों ने आज बहुत-सी नयी ख़बरें सुनायीं। हमारी दो टुकड़ियों ने दुश्मनों के छक्के छुड़ाये। बादशाह की आज्ञा से मेन्शीकोव पीटर्सबर्ग चले गये हैं, और उनकी जगह गोर्शाका आगये हैं। जर्मनी ने ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी है। कल के बाद सेवस्टॉपोल जाऊँगा, और सच-झूठ का पता लगाऊँगा। आज और कल साकेन को दिखाने के लिये अपनी स्कीम का मस्विदा तैयार करूँगा।

१ मार्च—एनेकोव दोनों सेनाओं का प्रधान नियत किया गया है। गोर्शाका मेन्शीकोव की जगह आगया है। धन्य भगवान्! बादशाह १८ फ़रवरी को मर गया! आज हमें नये बादशाह के प्रति राज-भक्ति की शपथ लेनी है। रूस में

भारी परिवर्तन होनेवाला है। हरेक को काम करना और आनेवाले क्रान्ति-युग में भाग लेने को तैयार हो जाना चाहिये।

२-५ मार्च—दो दिन से स्कीम के मस्विदे में लगा हूँ। बड़ी मुश्किल पड़ रही है, पर मैं मानूँगा नहीं। आज कुछ साथी मिले हैं। कल भक्ति और ईश्वरत्व के विषय में विवाद हुआ। इस विवाद से मेरे मन में उस वस्तु को समझने का आभास उत्पन्न हुआ, मैं जिसे प्राप्त करने की कोशिश में हूँ। वह आभास है, एक ऐसे धर्म की उत्पत्ति, जो मनुष्यता के अर्वाचीन विकास के अनुकूल हो। ईसा के धर्म का संशोधित संस्करण—जिसमें मिथ्यात्व और रहस्यवाद को स्थान न हो, तथा जो संसार को शान्ति का सन्देश सुनावे। मैं समझता हूँ, इस विचार को पूरा करने के लिये सदियों के सतत प्रयत्न की आवश्यकता होगी। एक पीढ़ी दूसरी को पाठ देगी, और किसी दिन कट्टरता या मनुष्य की सहज-तर्क-बुद्धि इसे स्वीकार करेगी। धर्म के द्वारा मनुष्य-मात्र, समझ-बूझकर, एकता के सूत्र में बँधें—मेरे मन में यह भावना मुख्य रहेगी।

६-११ मार्च—ओडाखोस्की को २०० रूबल और हार गया। इसका अर्थ है, कि मैं पूर्णतया इस दोष में फँस गया हूँ। गोर्शाका सब अफ़सरों के साथ आ पहुँचा है। मैं उससे मिलने गया, और मेरा अच्छा आदर किया गया। लेकिन

सेनापति के अफ़सरों में मेरी भर्ती होना, जिसकी मुझे मुद्दत से अभिलाषा है, सम्भव दिखाई नहीं दिया। मैं इसके लिये अपने मुँह से कुछ नहीं कहूँगा; केवल प्रतीक्षा करूँगा कि वह स्वयमेव मुझे प्राप्त हो जाय। या फिर चाची से कहूँगा— कि वह एक पत्र लिख दे। यह मेरी दुर्बलता थी, कि मैंने गश्ती सेना के साथ शामिल होने की स्टॉलीपिन से प्रार्थना की। पर अब मुझे उसके लिये बड़ी खुशी है; बल्कि इस बात का अफ़सोस भी है, कि लड़ाकू सेना के साथ क्यों नहीं गया। साधारणतया ९ से ११ तारीख़ तक का यह दौरा खूब दिलचस्प रहा। ब्रोनेवस्की बहुत ही अच्छा आदमी है। मेरे लिये सेना में रहना उपयुक्त नहीं है। जैसे ही मैं इससे छुट्टी पाऊँगा, साहित्य-सेवा का कार्य आरम्भ कर दूँगा।

१२ मार्च—सुबह 'युवावस्था' का एक पृष्ठ लिखा। उसके बाद 'बाबकी' का खेल खेलता रहा। ब्रोनेवस्की से वार्तालाप भी किया। हमने एक विश्रान्ति-गृह भी योजना स्थिर की है। मेरे विचार से वह बिल्कुल सहमत है।

१३ मार्च—'युवावस्था' लिखी, और तातियाना अलेग्ज़ैण्ड्रोवना को एक पत्र भेजा। विश्रान्ति-गृह की योजना स्थिर होती जा रही है। मैंने आज तक इतनी बातों में असफलता प्राप्त की है, कि इसे पूरा करने के लिये मैं कुछ उठा न रक्खूँगा।

१४-१६ मार्च—कल 'युवावस्था' लिखी, पर आज बिल्कुल कुछ नहीं किया। इसका एक कारण यह भी था, कि शाम को मुझे ल्युज़िनिन ने रोक लिया, और मैं देर से आकर सोया। दूसरा कारण यह भी था, कि कल मुझे क़वायद में जाना पड़ा था।

१७ मार्च—'युवावस्था' का एक पेज अच्छी तरह लिख डाला। लेकिन चाहता, तो ज्यादे, और अच्छा लिख सकता था। सोने को बहुत देर हो गई।

१८ मार्च—डायरी के उन पेजों को दोबारा पढ़ा, जिसमें मैंने अपने सुधार के मार्ग और उपाय खोजने का प्रयत्न किया है। शुरू से ही मैंने अत्यन्त तर्क-पूर्ण तथा वैज्ञानिक मार्ग का अवलम्बन किया, परन्तु एक बात बिल्कुल अव्यावहारिक थी,—वह यह कि सदा अतिशय सुन्दर और लाभ-प्रद गुणों की खोज और उन्हें ग्रहण करने का प्रयत्न करना। बाद में मैंने अनुभव किया, कि बुराई का उल्टा ही भलाई है। क्योंकि मनुष्य स्वभाव से ही 'भला' है, और मुझे अपनी बुराइयों से छुटकारा पाना था। लेकिन उनकी संख्या बहुत अधिक थी, और आध्यात्मिक ढङ्ग से उनका सुधार किसी आध्यात्मिक व्यक्ति के लिये ही सम्भव हो सकता है। परन्तु मनुष्य के स्वभाव के दो सर्वथा भिन्न पहलू होते हैं—दो भिन्न-भिन्न इच्छायें होती हैं। तब मैंने समझा, कि क्रमबद्धता सुधार के लिये अत्यावश्यक है। परन्तु यह भी असम्भव है। आदमी

को अपनी तर्क-बुद्धि द्वारा ऐसी स्थिति लानी चाहिये, जिसमें 'पूर्णता' सम्भव हो सके, और जिसमें शारीरिक और आत्मिक इच्छायें क़रीब-क़रीब एक-दूसरे के अनुकूल हों। आत्म-सुधार के लिये आदमी को ख़ास उपायों का अवलम्बन करना पड़ता पड़ता है। और मैंने संयोगवश इनमें से एक उपाय पा लिया। मुझे एक धरातल पा गया,जब मैं यह स्थिर कर सका, कि किन परिस्थितियों में भलाई कठिन है, और किन में सरल। साधारणतः मनुष्य आध्यात्मिक जीवन बिताने की इच्छा करता है, और आध्यात्मिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये ऐसी स्थिति ढूँढ़ता है, जहाँ उसकी शारीरिक इच्छायें टकराती नहीं, वरन् मानसिक भावनाओं के साथ सहयोग करती हैं। यह शारीरिक इच्छायें हैं—उच्चाभिलाषा, स्त्री-प्रेम, प्रकृति-प्रेम, कला और साहित्य के प्रति अनुराग—इत्यादि। मेरे उन पुराने उद्देश्यों में, जिन पर मैं एक मुद्दत से चलता आ रहा हूँ, यह नई वृद्धि है:—परिश्रमी, युक्तिसङ्गत और शीलवान् होना, आध्यात्मिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सदा तत्पर रहना, अपने विचारों की सदा इस उद्देश्य से आलोचना करते रहना कि वही विचार उत्तम हैं, जो आध्यात्मिकता की ओर ले जाते हैं, तथा शान्त-भाव से रहना—जिससे अपने भीतर स्वयं सन्तुष्ट रहने की जगह यह इच्छा न होने लगे, कि सुननेवाले आश्चर्य-विमुग्ध होकर मेरी प्रशंसा करें! मैं अकसर अपनी शारीरिक कुशलता के लिये भी कोई नियम

स्थिर कर लेने पर विचार किया करता था। लेकिन यह विचार भी कई-तर्फ़ा था, और इसके अतिरिक्त एक कठिनाई यह भी थी, कि मैंने परिस्थितियों पर दृष्टि-पात किये बिना उसे प्राप्त करने की कोशिश की। अपने प्रस्तुत नियम के अनुसार मैं अपने सुधार के लिये यहाँ तक प्रयत्न करूँगा, जहाँ तक वह मेरे आध्यात्मिक जीवन में सहायक सिद्ध हो सके। मैं केवल कुछ निश्चित नियमों के आधार पर चलकर कार्य करूँगा; परिस्थितियों के प्रवाह में बह नहीं जाऊँगा। मेरा कार्य-क्रम, जहाँ तक कि मैं अपने पिछले दस वर्ष के अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ, कभी व्यवहारिक नहीं रहा। उदाहरणार्थ खेती करना मेरी मानसिक इच्छाओं के अत्यन्त प्रतिकूल है। आज मेरे मन में विचार आया, कि मैं अपनी जायदाद-ज़मींदारी अपने बहनोई के हाथ बेच दूँ। इस प्रकार मुझे कई उद्देश्यों की प्राप्ति होगी। मुझे खेती के झंझट से छुटकारा मिल जायगा, जवानी की मूर्खताओं से मुक्ति हो जायगी, अपना जीवन संयमित बना सकूँगा, और अपना क़र्ज़ उतार सकूँगा। आज 'युवावस्था' का एक पृष्ठ लिखा।

२० मार्च—दो दिन से क़रीब-क़रीब कुछ भी नहीं लिखा, सिर्फ़ वैलेरियन को एक पत्र लिखने के लिये मज़मून बनाया है, और एक पत्र नेक्रासोव को लिखा है;—उसकी एक चिट्ठी के जवाब में, जो आज मुझे मिली, जिसमें उसने युद्ध-

विषयक लेख भेजने को लिखा है। लेख मुझे स्वयं ही लिखने होंगे। सेवस्टॉपॉल का चित्रण कई तरह से करना होगा। नायक-जीवन का वर्णन भी करना होगा।

२१ मार्च—कुछ नहीं किया। माशा ने एक मज़ेदार पत्र भेजा है। उसमें उसने लिखा है, कि तुर्गनेव से उसकी जान-पहचान कैसे हुई। बड़ा ही प्रेमपूर्ण और मनोरञ्जक पत्र है। इस पत्र ने मुझे अपनी ही आँखों में ऊँचा उठा दिया है, और काम करने के लिये मेरे मन में उत्साह पैदा कर दिया है। लेकिन मैं शारीरिक और नैतिक पीड़ा से दिन-भर तपता रहा। २४ तारीख़ को हम लोग सेवस्टॉपॉल जा रहे हैं।

२७ मार्च—ईस्टर का पहला दिन। परसों सेवस्टॉपॉल में था। यह दौरा विशेष तौर पर सफल रहा। मेरे जो उत्तर-प्रान्तीय साथी मुझसे मिले, सभी मुझे देखकर प्रसन्न हुए। अपनी एक पुस्तक (The Remniscences of a Billiard-Marker.)की अतिशय सुन्दर आलोचना पढ़कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ। यह इसलिये आनन्ददायक और लाभप्रद है, कि उससे मेरा गौरव बढ़ता है, और काम करने के लिये मेरा उत्साह बढ़ता है। दुर्भाग्यवश इस समय पिछला प्रभाव साफ़ तौर पर नहीं हुआ; क्योंकि पिछले पाँच दिनों से 'युवावस्था' का एक पृष्ठ भी नहीं लिखा है। अलबत्ता 'रात-दिन का सेवस्टॉपॉल' अवश्य आरम्भ कर दिया है। न अभी तक उन सुन्दर पत्रों का उत्तर दिया है,—जिनमें से दो नेक्रासोव

के हैं, और एक-एक वैलेरियन, माशा, निकोलेंका और चाची के पास से आया है।

नेवरोज़्स्की की सिफ़ारिश से मुझे सीनियर सेना-नायक के पद का वचन दिया गया है। मैंने अच्छी तरह विचार कर उसे स्वीकार कर लिया है—लेकिन नहीं जानता, इसका नतीजा क्या होगा। तुर्गनेव का यह कथन सत्य ही है, कि हम लेखक-लोगों को किसी एक वस्तु में लग जाना चाहिये। और मैं साहित्य के कार्य में ख़ूब अच्छी तरह लग सकता हूँ। अपनी उच्चाभिलाषाओं को दबा दूँगा,—तरक्क़ी और पदकों की लालसा को—जो कि बड़ी ही भद्दी वासना है,—ख़ासकर उसके लिये, जिसने पहले काफ़ी सफलता प्राप्त कर ली है। आज कुछ करा-धरा नहीं, ख़ासकर इसलिये, कि मैं बड़ी ही आवेश-पूर्ण मनोव्यथा का अनुभव करता रहा। सेवस्टॉपॉल हम २४ को न जाकर १ ली अप्रैल को जा रहे हैं।

२८ मार्च—सुबह 'युवावस्था' के कुछ पृष्ठ लिखे, पर शाम को 'सेवस्टॉपॉल' के कुछ शब्द लिखने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। इसका कुछ कारण यह था कि कई मिलने-वाले आ गये, और कुछ यह कि मेरी तबियत अच्छी नहीं थी।

२९ मार्च—'युवावस्था' के क़रीब आठ पृष्ठ लिखे। लिखा भी बुरा नहीं। पर पत्र आज कोई न लिख सका। कल अपनी टुकड़ी का अधिनायक बनाकर सेवस्टॉपॉल जा रहा हूँ। वहाँ

जाकर स्वयं मालूम करूँगा, कि तीन दिन से जो बराबर गोलियों की आवाज़ें आ रही हैं, इसका असली कारण क्या है।

३०-३१ मार्च, १ अप्रैल—पिछले छः दिन से बमबाज़ी के अतिरिक्त कुछ नहीं हो रहा है। सेवस्टॉपॉल में मेरा यह चौथा दिन है। बदली होने की बात फिर खटाई में पड़ गई, क्योंकि वह कहते हैं, कि मैं केवल एक सहकारी-सेना-नायक हूँ। खेद की बात है! हमारे पास गोला-बारूद कम हो गया है।

२ अप्रैल—सेना की टुकड़ी कल आ पहुँची। मैं सेवस्टॉ-पॉल में ही रह रहा हूँ। हमारी जन-हानि पाँच हज़ार तक पहुँच चुकी है। लेकिन इस समय हम न-सिर्फ़ पूरी तरह जमे हुए हैं, बल्कि दुश्मन के लिये सेवस्टॉपॉल की तरफ़ बढ़ना भी दुश्वार हो रहा है। शाम के वक्त 'सेवस्टॉपॉल' के दो पृष्ठ लिखे।

३-७ अप्रैल—सुबह। इन तमाम दिनों में, रोज़ होने-वाली घटनाओं से और अपनी ड्यूटी के कारण इतना व्यस्त रहा, कि 'युवावस्था' का एक अएट-शएट पृष्ठ लिखने के अति-रिक्त कुछ करने का समय न पा सका। चार तारीख से बम-बाज़ी हल्की पड़ गई है, लेकिन बन्द अब भी नही हुई है। समुद्र में दुश्मन का एक जहाज़ खड़ा है, जो बार-बार गोला-बारी करता है। कल एक बम गली में खेलते हुए दो बच्चों के

पास आकर गिरा। दोनों एक-दूसरे से लिपट गये, और गिर पड़े। लड़की एक मल्लाह की कन्या है। वह प्रतिदिन गोले-गोलियों की बौछार में बाप के क्वार्टर पर जाती है। आज इतने ज़ोर का ज़ुकाम हुआ, कि कुछ भी न लिख सका।

११ अप्रैल—चौथा नाका*। 'बाल्यावस्था' अथवा 'सेवस्टॉपॉल' का बहुत ही कम अंश इन दिनों में लिखा है। मेरा ज़ुकाम और बुख़ार ही इसके कारण थे। इसके अतिरिक्त मैं यह सोचकर क्षुब्ध भी हूँ (ख़ासकर तब, जबकि मैं रुग्ण हूँ) कि लोग तोप के पास कुर्सी पर धरे रहने के अतिरिक्त मेरा कुछ भी उपयोग नहीं समझते। मैंने घायलों की रक्षा करने-वाली मण्डली में एक नर्स देखी है। मेरे मन में उसके प्रणय की आकांक्षा है।

१२ अप्रैल—चौथा नाका। 'सेवस्टॉपॉल' लिखा। मेरा ख़्याल है, बुरी तरह नहीं लिखा। कल तक शायद ख़त्म कर दूँगा। जहाज़ी लोगों में कैसी अदभुत फुर्ती है! हमारे सिपाहियों की अपेक्षा वे कितने उत्तम हैं! वैसे हमारे सिपाही भी अच्छे ही हैं; और मैं तो उनमें मिल-जुलकर बहुत ही प्रसन्न होता हूँ। कल एक सुरंग और उड़ाई गयी। गोलाबारी

---

*चौथा नाका, जिसपर टॉल्सटॉय को भेजा गया था, सेवस्टॉपॉल के पड़ाव का सब से उत्तरी और सब से ख़तर-नाक भाग था। अँग्रेज उसे 'झण्डे का नाका' कहते हैं।

हमारी तरफ़ घटती और उनकी तरफ़ बढ़ती नज़र आ रही है।

१३ अप्रैल—वही चौथा नाका, जिसे मैं क्रमशः बहुत पसन्द करने लगा हूँ। बहुत-कुछ लिख रहा हूँ। आज 'सेवस्टॉपॉल' समाप्त कर डाला, और 'युवावस्था' का कुछ अंश लिखा। हर समय ख़तरे का डर, जो अपने साथी-सिपाहियों, जहाज़ियों और युद्ध के ढँगों को देखकर मेरे मन में पैदा हो रहा है, कुछ ऐसा आनन्द दे रहा है, कि मैं यह स्थान परित्याग नहीं करना चाहता; ख़ासकर इसलिये भी, कि अगर आस-पास मार-काट हो, तो मैं उसमें भाग ले सकूँ।

१४ अप्रैल—वही चौथा नाका। ख़ूब मज़े में समय बीत रहा है। कल मैंने 'युवावस्था' का एक अध्याय समाप्त किया। ख़ासा रहा। आज मैं 'सेवस्टॉपॉल' का संशोधन आरम्भ करूँगा, और अन्य चीज़ें लिखना शुरू करूँगा।

हे भगवान्! मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, कि तूने अब तक मेरी रक्षा की। कैसी निश्चितता के साथ तूने सदा मुझे भलाई के रास्ते पर चलाया, और अगर तेरी कृपा मुझ पर से हट जाय, तो मैं कैसा असहाय व्यक्ति बन जाऊँगा! हे भगवान्! मुझे भूल न जाना। मेरी सहायता करो, मेरे अस्पष्ट और महत्वहीन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये नहीं, वरन् अपनी सत्ता के उस अमर, महान् और अदृश्य उद्देश्य की रक्षा के लिये, जिसका अनुभव मैं प्रत्येक समय किया करता हूँ।

२१ अप्रैल—सात दिन बीत गये, और मैंने 'सेवस्टॉपॉल' के दो पेजों को दोबारा लिखने और एक मान-पत्र का मज़मून बना देने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। परसों हम लोग पाँचवें नाके पर इकट्ठे हुए, और हमें बड़ी शर्मनाक हार उठानी पड़ी। सिपाहियों की हिम्मत दिन-दिन गिरती जाती है, और सेवस्टॉपॉल के दुश्मनों के हाथ पड़ जाने की आशङ्का बढ़ती जा रही है।

२४ अप्रैल—चौथा नाका। ३०० रूबल घर से आये। मिश्चेरिस्की और बोनेवस्की का क़र्ज़ अदा कर दिया, पर और लोगों का नहीं। बात यह है, कि मैं कुछ खेलना भी चाहता हूँ। चाची ❀ के पास से एक चिट्ठी आई, जो मैंने प्रिन्स के पास पहुँचा देने के लिये कोवालेवस्की को दे दी है। इन दो आनन्दमयी घटनाओं ने, मेरे ख़याल से, आज मुझे कार्य से विलग रक्खा।

८ मई—कल नाके की ड्यूटी पर आया। इन दिनों में कुछ भी नहीं किया, पर समय आनन्द के साथ कटा है। चाची की चिट्ठी का कोई प्रभाव नहीं हुआ। शायद इसी में मेरी भलाई छिपी हो।

१९ मई—१५ तारीख़ को मैं एक पहाड़ी टुकड़ी का नायक

❀ टॉल्सटॉय की चाची का नाम पेलेगिया इलिनिशना युशकोवा था।

नियुक्त हुआ, और सेवस्टॉपॉल से १२ मील दूर आना पड़ा। + बहुत-सा काम करना है। मैं अपने को नये साँचे में ढालना चाहता हूँ। देखता हूँ—चोरी करना बहुत आसान है; इतना, कि चोरी न करना बड़ा ही मुश्किल है। चोरी के विषय में मेरे सम्मुख बहुत-सी स्कीमें हैं। लेकिन इन सब का नतीजा क्या होगा—यह मैं नहीं जानता❀। मौसिम अच्छा है, पर गर्म है। इतने समय में काम-धाम कुछ नहीं हो सका।

३१ मई—२६ तारीख़ को कई ठिकानों पर हमारा क़ब्ज़ा होगया। अगले दिन मैं सेवस्टॉपॉल आ गया था, और मुझे विश्वास हो गया था, कि वह हाथ से जायगा नहीं। मेरा ऊँचा पद मुझे ख़ासी तकलीफ़ दे रहा है—ख़ासकर आर्थिक

+ रूस के ज़ार अलेग्ज़ैण्डर द्वितीय ने टॉल्सटॉय की कहानियाँ पढ़ीं थीं, और हुक्म दिया था, कि इस नवयुवक-लेखक की जान का ख़याल रक्खा जाय, और उसे ख़तरे की जगह से दूर भेज दिया जाय।

❀ टुकड़ियों के नायक जब शाही ख़ज़ाने से सिपाहियों में वितरण करने के लिये रुपया पाते थे, तो वे उसका चाहे जिस प्रकार उपयोग करते थे, और अपने लिये चाहे जितना रख लेते थे। 'सेवस्टॉपॉल—अगस्त १८५५ में'-नामक रिपोर्ट की १७ वीं धारा में इसका ज़िक्र किया गया है। टॉल्सटॉय ने यह देखकर कि तमाम रुपया वह ख़र्च नहीं कर पाते, शेष धन शाही ख़ज़ाने को वापस भेज दिया था, और इस प्रकार अन्य नायकगण बड़ी लज्जाजनक स्थिति में पड़ गये थे।

हिसाब-किताब। सचमुच मैं व्यावहारिक कार्य-कलाप के सर्वथा अयोग्य हूँ, और अगर हूँ भी, तो उसके लिये मुझे ख़ास प्रयत्न की आवश्यकता पड़ती है। पिछले दिनों से विचारों और योजनाओं के समूह के समूह मेरे दिमाग़ में चक्कर लगा रहे हैं। क्या यह सच है, कि मैं अपने-आपको कार्य-शीलता और सुव्यवस्था के साँचे में नहीं ढाल सकता? मैं अन्तिम बार अपना परीक्षण कर रहा हूँ। अगर मैं फिर लापर्वाही, विरक्ति, या सुस्ती का शिकार बनूँ, तो इससे यह नतीजा निकलेगा कि मैं सिर्फ़ आकस्मिक उत्तेजनावश ही कार्य कर सकता हूँ, और तब मैं इसके लिये प्रयत्न करना छोड़ दूँगा। अब मैं पुनः अपनी स्पष्टवादिता का क्रम आरम्भ करता हूँ। (१) आलस्य (२) आवेश (३) विचार-शून्यता (४) अहंकार (५) अव्यवस्था (६) चरित्रहीनता।

३१ मई, रातको ग्यारह बजे—सुबह 'फॉस्ट'-(Faust) पढ़ना समाप्त किया। दोपहर बाद डायरी लिखनी शुरू की थी, कि गोर्शाका आ पड़ा, और मैं अपनी टुकड़ी के निरीक्षण के लिये निकल गया। आज दो घटनायें चारित्रिक अस्थिरताओं की हुईं; एक आलस्य की, एक अव्यवस्था की और एक अहंकार की। कुल पाँच।

१ जून—क़रीब छः बजे उठा, और यों-ही कुछ-पढ़ता पढ़ाता रहा। भोजन के समय वोदका पी। दोपहर-बाद बाग़ गया। फिर थोड़ा-सा लिखा। चींटियों के मारे न कुछ काम

ही कर सका, न सो सका। साशा के घर शाम बिताई। फिर वही पाँच दोष बन पड़े हैं।

२ जून—देर से उठा। एक पुस्तक पढ़ते रहने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। डॉक्टर के पास गया। उसने मुझे तसल्ली देनी चाही, पर दे न सका। अफ़सरों के सम्मुख ख़ूब शान बघारी। ब्यालू के बाद सोना चाहा; पर सो न सका। फिर वोल्कोव के डेरे पर पहुँचा। आज फिर वही पाँच दोष बन पड़े।

३ जून—बेहद आलस्य। दिन-भर कुछ नहीं किया। चारित्रिक अस्थिरता, और अव्यवस्था। पर क्षम्य है, आज का आलस्य।

४ जून—वही सब बातें। किताब पढ़ी, और शाम को पहाड़ी की सैर करने निकल गया। दाईं तरफ़ से चन्द्र-दर्शन किया। सुस्ती और चारित्रिक अस्थिरता।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा दिखाई देता है।

५ जून—सुस्ती, सुस्ती, सुस्ती! नदी पार गया, और शाम को शुया पहुँचा। टुकड़ियों के अन्य अफ़सरों के सामने बेहद शेख़ी बघारी, और दो बार चारित्रिक दृढ़ता का अभाव प्रकट हुआ। आगे की नाकेबन्दी के विषय में बॉबोरिकिन को पत्र लिखना है।

६ जून—देर से उठा। तीन बार स्नान किया। घोड़े पर सवार होकर स्टारकॉय गया, जहाँ से एक घोड़ा ख़रीदा।

एक पुस्तक पढ़ी, और स्टॉलीपिन और गोर्शाका से गप-शप की। कल एक हमले का जवाब दिया गया था। सुस्ती! सुस्ती! अपने दोषों से मुक्ति नहीं मिलती।

७ जून—आज एक पुस्तक समाप्त कर डाली। सेनाध्यक्षों से मिलने गया, जो बिल्कुल गधे हैं। तीन दफ़ा नहाया, और कुछ नहीं। सुस्ती! सुस्ती। सुस्ती! कल बहुत तड़के उठूँगा।

८-९ जून—सुस्ती! सुस्ती! मेरा स्वास्थ्य बहुत ही ख़राब है। दिन-भर 'वैनिटी फ़ेयर' पढ़ता रहा।

१० जून—शाम को मैंने डॉक्टर को डेरे पर बुलाया। उसने मुझे धैर्य दिया। मेरा स्वास्थ्य वास्तव में कुछ अच्छा है भी—ख़ासकर आज। स्टॉलीपिन से आज 'अर्थ-शास्त्र' के विषय में बातचीत हुई। वह मूर्ख नहीं है, स्वभाव भी उसका अच्छा है। आलस्य—क्योंकि सिवा लापर्वाही के साथ 'वैनटी फेयर' पढ़ने के मैंने कुछ नहीं किया।

११ जून—सुबह के वक़्त बहुत आसानी से और ख़ुशी-ख़ुशी काम किया। परन्तु शाम को कुछ नहीं कर सका। आज तीन दोष बन पड़े। यह आश्चर्य की बात है, कि पंद्रह वर्ष की आयु से जीवन के सिद्धान्तों को लिपिवद्ध करते रहने पर भी तीस वर्ष का हो जाने तक वही कर रहा हूँ। आजतक उनमें से किसी का पालन नहीं कर सका, लेकिन अबतक उनमें विश्वास रखता हूँ, और उन्हें ग्रहण करने की

इच्छा रखता हूँ। सिद्धान्त सदा नैतिक और व्यावहारिक होने चाहिये। ये दो ऐसे ही व्यावहारिक सिद्धान्त हैं, जिनके बिना जीवन में आनन्द का उद्रेक हो ही नहीं सकता। वह हैं—उदारता और क्षमा-भाव।

१२-१५ जून—दो दिन से मुझे ड्रिल करनी पड़ रही है। कल बख़्शीसराय (तातार देश की प्राचीन राजधानी) आया, और पानेव ('कंटेम्पोरेरी'-नामक पत्र का सहकारी-सम्पादक) की एक चिट्ठी के साथ अपना लेख वापस पाया। पत्र बहुत ही विनय-पूर्ण भाषा में लिखा हुआ था। यह सुनकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ, कि मेरा यह लेख बादशाह को पढ़कर सुनाया गया। यहाँ रूस में भी नौकरी इसी तरह मेरा दिमाग़ बिगाड़े दे रही है, जिस तरह कॉकेशस में होता था। आज ड्रिल के समय सिपाहियों को पीटा ! मैं कैसा निर्दयी व्यक्ति हूँ, और कितना दुःखी और इस जीवन से विरक्त !

१६ जून--दिन-भर काम किया, और यद्यपि मेरा स्वास्थ्य बहुत ख़राब है, मैं आज के दिन से सन्तुष्ट हूँ, और कोई बात ऐसी नहीं पाता हूँ, जिसके लिये अपनी ताड़ना करूँ। शाबाश ! आज 'काष्ठ-पतन' (Wood falling) समाप्त कर लिया।

१७ जून—देर से उठा। स्वास्थ्य असन्तोषजनक है।

१८ जून—आज 'काष्ठ-पतन' को भेज दिया। भोजन

के बाद सुस्ती आ गई। ड्रिल कराने नहीं गया। शाम को एक संक्षिप्त स्कीम का मस्विदा तैयार किया। तबियत सुस्त रही।

१९ जून—सुबह तो गोदाम-घर के झमेले में रहा। किया कुछ नहीं; सिर्फ़ थोड़ा-सा पढ़ा। खाने के बाद थोड़ा-सा लिखा। सुस्त, अनियमित और अव्यवस्थित रहा।

२० जून—देर से उठा, कुछ पढ़ा, और काम में लगा। कुछ लिखा भी। भोजन के बाद बेहद सुस्ती आ गई। कुछ पढ़ता रहा। मेरा स्वास्थ्य बहुत ख़राब है।

२१ जून—देर से उठा, थोड़ा पढ़ता रहा, फिर माशा को एक पत्र लिखा। खाने के बाद कुछ सुस्ती छाई थी, पर चाय पीते ही बहुत-सा लिख डाला; और ख़ासे मज़े से। स्वास्थ्य अच्छा है। पेन्सिल के मामले में क्रुद्ध हो गया।

२२ जून—अजी सुनिये! आज अपनी ताड़ना करने-लायक़ कोई बात नहीं। तातियाना एलेग्ज़ैण्ड्रोवना को एक पत्र लिखा, और कुछ पढ़ता रहा। खाने के बाद कुछ सुस्ती आई, पर वह कुछ नहीं!

२३ जून—दिन-भर लिखा। कापी साफ़ की। स्टॉलीपिन के सामने बेहद शेख़ी बघारी।

२४ जून—लेखन-कार्य में एक कार्य-क्रम पर चलने का नियम बनाना चाहिये। हरेक रचना की साफ़ कॉपी करनी चाहिये, और हर एक जगह उसमें संशोधन करना चाहिये।

अगर कोई अपनी रचना को बार-बार पढ़ता है, तो ग़लती करता है।……दिन-भर काम करता रहा, और कोई असन्तोषजनक घटना नहीं हुई।

२५ जून—दिन में कुछ आलस्य ने आ घेरा। स्टॉलीपिन के घर शाम को जाने पर कुछ शंकाशील-सा रहा। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। नियम—हरेक चीज़ बड़े शहरों से मँगाओ। दो नोटबुकें रक्खो; पहली नियम-क़ायदों के लिये, दूसरी अनुभवों और पर्यवेक्षण के लिये। या फिर डायरी के चार भाग करने चाहिये। (१) नियम, (२) अनुभव और पर्यवेक्षण, (३) विचार, (४) तथ्य।

२६ जून—आज किसी बात के लिये प्रताड़ना नहीं करनी है।

२७ जून—बख़्शीसराय गया। मेरा स्वात्म-अनुराग भी जाग उठा, और मैंने क्रिज़्नोवस्की को डाँट दिया। इसका कारण यह था कि कोवालेवस्की ने मुझे बताया, कि बहुत दिन पहले मुझे ब्रुसेल्ज़-पत्रिका में काम करने का निमन्त्रण मिल चुका था। रेवस्की भी कैसा अद्भुत जीव है! लोग कहते हैं, वह पियक्कड़ है। कल यह बात मालूम करके मेरे मन पर ऐसी चोट लगी, कि लोदो, जो सब ज़बानें बोलता है, सुस्ती से रहता है, और सड़ा-बुसा सस्ता तम्बाकू काम में लाता है,—उससे पूछ ही बैठा कि वह ऐसा भद्दा जीवन क्यों बिताता है।

२८ जून—आज का दिन कैसा बीता। सुबह गजरदम बख़्शीसराय को छोड़कर अपने डेरे पर जा पहुँचा, खाने को कुछ लिया, आवश्यक ऑर्डर पास किये, डायरी में थोड़ा-सा लिखा, और घोड़े पर सवार होकर सेवस्टॉपॉल में गश्त लगाने चला। इन्करमैन के घर पर एल्चेनीनोव को रुपया दिया, अफ़सरों के पास गया—जो दिन-दिन मेरी तरफ़ से विरक्त होते जा रहे हैं—और अन्त में युद्ध-भूमि में पहुँचा। सब से पहले एक बम पर मेरी नज़र पड़ी, जो निकोलास्की और ग्राम्की-मोहल्लों के बीच गिरकर फटा था। (अगले दिन लाइब्रेरी के पास छर्रे भी पाये गये)। दूसरे, यह ख़बर सुनी कि नाखीमोव को कारी ज़ख़्म लगा है। ब्रॉनेवस्की, मेश्चेरस्की, और कालोशिन—सब अच्छे आदमी हैं, और मेरे प्रशंसक हैं। दूसरे दिन—२९ जून को—वापस आते हुए—जिस दिन सुबह का अधिकांश भाग मैंने अफ़सरों की मंडली के साथ बिताया था, ख़ास करके मेश्चेरस्की और इन्करमैन के डेरे पर—अकस्मात् मेरी भेंट बैरन फ़र्ज़न से हो गई और उसे बेहद प्रसन्नता हुई। ऐसा लगता है कि पीटर्सबर्ग में दिन-दिन मेरी सम्मान-वृद्धि हो रही है। बादशाह ने मेरी 'दिसम्बर में सेवस्टॉपॉल'-नामक पुस्तिका का अनुवाद फ्रेंच में कराने की आज्ञा दी है। आज मैं बहुत ही भद्दी मानसिक अवस्था में हूँ। सिपाहियों के वेतन के धन में से चोरी करना मेरे लिये असम्भव है। बाक़ी लोग चुराते हैं, और बुरी तरह से।

आज शराब पी, और एक बार अहङ्कार प्रदर्शित किया।

तथ्य—बहुत-से ऐसे आदमी होते हैं, जो नङ्गे घोड़ों की-सी हिम्मत रखते हैं,—जब उन्हें बाहर निकाला जाता है, तो भयानक रूप से उछल-कूदकर देखनेवाले को डरा देते हैं, लेकिन जब ज़ीन-लगाम से कस दिये जाते हैं, तो बिल्कुल सीधे बन जाते हैं। स्वर्गीय त्युर्त्युकोस्की एक बड़ा सुन्दर रूसी अफ़सर सुना जाता है। टुकड़ी के सम्मुख खड़ा होकर वह ज़मीन पर पैर मारता था, और ज़ोर से हाथ मलकर पुकारता था—"एक ! दो ! तीन···!" आमने-सामने के युद्ध के पहले, एक के बाद दूसरा बम गिरने लगता था, और सब का निशाना अचूक होता था।

नियम और विचार—घर छोड़ते वक़्त मुझे हमेशा एक आदमी को साथ रखना चाहिये। हर महीने २०० रूबल बचाने चाहिये।—इसमें से कुछ रुपया तो सेना के वेतन में से उड़ाना होगा, और कुछ अपने लेखों का पुरस्कार। गाँव में यह लिख दूँगा, कि वे ज़ुबको, दुस्यू, शिवैलियर सरायवालों और चार्मर दर्ज़ी को मेरा ऋण चुका दें। किसी तरह भी हो, नये वर्ष तक मुझे १५०० रूबल जमा कर लेने चाहिये, विशेष कार्यः—गाँव को पत्र लिखना, तथा 'अमीर और काली मिट्टी'* का संशोधन करना।

---

* एक कहानी, जिसमें टॉल्सटॉय ने दो प्रकार के अफ़सरों का चित्रण किया है।

३० जून—डेरे पर लौटा। अत्यन्त लज्जाजनक मानसिक अवस्था में था। वैलेरियन और चाची को पत्र लिखे। पढ़ा, और हुक्म जारी किये, आवेश के लिये मुझे अपनी घोर ताड़ना करनी चाहिये, कल से 'युवावस्था' में हाथ लगाऊँगा।

तथ्य—कमसरियट के एक अफ़सर ने एक लौंडिया को ३०० रूबल इसी बात पर दे दिये, कि वह उसके साथ दो दिन तक सराय में टिकी रही।

१ जुलाई—बहुत बुरा आचरण था, यद्यपि 'युवावस्था' का प्लॉट सोचना चाहता था, पर कुछ नहीं कर सका। निकोलेंका को एक पत्र लिखा। पर वह बहुत ही बुरे विचारों में डूबकर लिखा गया, फिर-से लिखूँगा। कल वैलेरियन और चाची को पत्र लिखे थे। तथ्य—क्या हमारा वह काम मूर्खता से भरा हुआ नहीं था, कि बादशाह के जन्म-दिन पर हमने व्यर्थ १०१ गोले दुश्मनों की फ़ौज पर छोड़े ?

२-३ जुलाई—स्वास्थ्य बहुत ख़राब। सेरेज़ा को एक पत्र लिखा। फ़र्ज़न और कालोशिन मुझे देखने आये। विचार—मेरे सामने तीन प्रकार के मनुष्य हैं:—(१) जो मेरे मस्तिष्क पर कुछ भी प्रभाव नहीं डालते, यानी, गुम रहते हैं, और बिल्कुल शून्य, (२) वे, जो असर डालते हैं, पर अच्छा और सुखद नहीं, (३) वे, जो असर डालते हैं, और ठीक प्रकार से। वे मित्र लोग हैं।

४ जुलाई—सुबह के वक्त एक लेख दोहराया। खाने

के बाद भी कुछ देर यही किया। पानेव को एक चिट्ठी भी लिखी। उसे कल कालोशिन के पास भेज दूँगा। शाम के वक्त गोर्शाका मेरे पास आ बैठा। मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब है।

५ जुलाई—मैं बहुत आलसी होता जा रहा हूँ। अहङ्कार के द्वारा असली व्यसन पर पहुँच गया हूँ। अगर स्वाधीनता-पूर्वक ❀ लिख पाता, तो बहुत बढ़िया लिखता। तथ्य—सिपाही लोग घोड़ों की पीठ पर बैठकर गाने के बहुत शौक़ीन होते हैं।

६ जुलाई—शायद उस सुस्ती का आज अन्तिम दिन है, जिसमें मैं हफ्ते-भर पड़ा रहा। आज दिन-भर वालज़क का एक वाहियात उपन्यास पढ़ता रहा। केवल अभी-अभी क़लम हाथ में ली है।।

७ जुलाई—स्वास्थ्य बहुत ख़राब…बुख़ार। आज निश्चय-पूर्वक कोई ऐसा कार्य नहीं किया, जिसके लिये अपनी ताड़ना करूँ। अपने ऊपर जब्र करूँ, तो थोड़ा बहुत लिख सकता हूँ।

❀ सेन्सर के कारण टॉल्सटॉय परेशान थे। सेवस्टॉपॉल के उनके सच्चे अनुभव सेन्सर की भेंट हुए, और सिपाही-जीवन की अन्य देश-भक्ति पूर्ण टिप्पणियाँ भी निकाल दी गईं। टॉल्सटॉय ने क्रोध में आकर उस समय डायरी में जो क्रोध-पूर्ण उद्‌गार प्रकट किये, अँग्रेज़ी-अनुवादक (अल्मर मॉड) से अनुरोध करके उन्होंने उन्हें निकलवा दिया है।

८ जुलाई—स्वास्थ्य बहुत ख़राब, काम कर नहीं सकता, बिल्कुल कुछ नहीं किया। मुझे रुपया इकट्ठा करना चाहिये, (१) क़र्ज़ चुकाने के लिये, (२) अपनी जायदाद छुड़ाने के लिये, (३) अपने नौकरों को स्वतन्त्र करने के लिये। फ़ौज को चुकाकर जो बचेगा, उसे मैं लौटाऊँगा नहीं; न किसी से उसका ज़िक्र ही करूँगा। कभी संयोगवश जवाब देना पड़ा, तो कह दूँगा—मैंने रख लिया, क्योंकि मैंने ऐसा करने में कोई बेईमानी नहीं देखी। सुस्ती ! सुस्ती ! सुस्ती ! कल ज़रूर काम करूँगा। पूरे आठ दिन सुस्ती में बिता दिये।

९ जुलाई—गोर्शाका और वी० ने मुझे काम न करने दिया, और मेरे पास आकर ताश खेलने के लिये ज़िद करने लगे। मैंनें हार-जीत के विषय में जो नियम बनाया था, उसका उल्लंघन कर गया। १०० रूबल हार गया। पर बाद में गोर्शाका से उन्हें वापस जीत लिया—वल्कि २५ ज़्यादे··· आलस्य और चरित्रहीनता।

१० जुलाई—मैं स्वयं नहीं जानता, कि स्वास्थ्य कुछ अच्छा होने पर कुछ क्यों नहीं किया। सारा वक़्त खेल के नियम बनाने में बिता दिया। सेवस्टॉपॉल में भयानक बम-बाज़ी हो रही है। मुझे इस समाचार से दुःख हुआ। 'युवावस्था' के विषय में बड़े-बड़े विचार चक्कर लगा रहे हैं। मैं शीघ्र ही उनका उपयोग करूँगा। सुस्ती ! सुस्ती ! सुस्ती !

११ जुलाई—सुबह लुई वल्कोन्सकी को एक पत्र लिखा,

इससे मुझे सन्तोष नहीं हुआ। बालज़क के विषय में कुछ अद्भुत बातें पढ़ीं। शाम के वक़्त गोर्शाका और बर्नेशेव ताश खेलने आये। बर्नेशेव एक सेना-नायक की हैसियत में शीघ्र ही ऑरेनबर्ग भेजा जानेवाला है, और यह बात मु. भी दख़्वास्त देने की प्रेरणा करती है। जनवरी में (जब अप. क़र्ज़े चुका लूँगा, और १००० रूबल के क़रीब इकट्ठ क. लूँगा) एक सेना-नायक की हैसियत में मॉस्को या तुला * जाऊँगा। आज 'मई का सेवस्टॉपॉल' भेज दिया।

१२ जुलाई—दिन-भर कुछ नहीं लिखा। बालज़क की रचना पढ़ता रहा, और कैश-बक्स की सम्हाल की। मुझे विश्वास है, कुछ भी शेष नहीं रहेगा। शाम के वक़्त जुए में आठ रूबल हार गया। कल 'युवावस्था' लिखूँगा।

१३ जुलाई—बालज़क का एक उपन्यास पढ़ने में संलग्न रहा। लिखा कुछ नहीं। शाम को इज़ार्स्की के साथ ताश उड़े। इरादा कर लिया था, कि दस रूबल से आगे नहीं बढ़ूँगा, और समझुच नहीं बढ़ा। इसी प्रकार की कुछ हानियाँ मेरे लिये लाभ-प्रद सिद्ध होंगी। इस प्रकार मैं अपने चरित्र का परीक्षण कर सकूँगा, और आत्म-विश्वास करना सीखूँगा। सुस्ती!

१४ जुलाई—दिन-भर पढ़ता रहा। वर्षा के कारण निकट

---

* तुला, टॉल्सटॉय की ज़मींदारी के निकट ही एक स्थान था।

के गाँव में आना पड़ा। शाम को स्टॉलीपिन और गोर्शाका के साथ ताश खेले। सुस्ती ! सुस्ती ! सुस्ती ! स्वास्थ्य गिरा हुआ मालूम होता है।

१५ जुलाई—महीना-भर की हार के लिये रक़म स्थिर कर लेनी चाहिये। इसमें जीत का रुपया न मिलाया जाय। इस वर्ष पहली जुलाई तक के लिये मैं ७५ रूबल मासिक की रक़म स्थिर करता हूँ। १७ रूबल ९० कॉपेक खो चुका हूँ। इस महीने के अन्त तक अधिक-से-अधिक ८२ रूबल १० कॉपेक खो सकता हूँ।

रॉज़ेन् और स्टॉलीपिन आये थे। दिन-भर सुस्ती में पड़ा रहा। स्वास्थ्य अच्छा नहीं—बुख़ार और सिर-दर्द। खटिया पकड़ने का डर है। सुस्ती ! चरित्रहीनता ! सुस्ती ! चरित्र-हीनता !

१६ जुलाई—आज फिर दिन-भर कुछ नहीं किया। ताश खेले, १३ रूबल खो दिये, और इस तरह कुछ ६९ रूबल १० कॉपेक हारने के लिये रह गये। 'अफ़सर की डायरी' लिखना चाहता हूँ। शाम को साविस्की कह रहा था, कि स्किडेमैन मुझ से घृणा करता है। इस बात ने मुझे आपे से बाहर कर दिया। स्किडेमैन के प्रति मैंने जैसे कड़े शब्दों का व्यवहार किया, उसका मुझे अनुताप है। बेकार कभी किसी की निन्दा नहीं करनी चाहिये।

१७ जुलाई—स्वास्थ्य बहुत खराब है। कुछ नहीं किया।

नियम—(१) मैं जो-कुछ हूँ, वही बना रहना, (२) कभी किसी की निन्दा न करना, (३) रुपये-पैसे के मामले में बहुत मितव्ययी होना।

१८ जुलाई—......कुछ नहीं किया। सुस्ती! सुस्ती! सुस्ती!

१९-२० जुलाई—पानेव की एक चिट्ठी आज मिली है। 'अफ़सर की कहानी' से वे लोग सन्तुष्ट हैं। आठवें अङ्क में वे उसे छाप रहे हैं। हैगमैन के घर बाज़ी जमी। मेरी बीमारी पहले ही जैसी है। लिखना चाहता था, लेकिन सुस्ती! सुस्ती! सुस्ती! २ रूबल ७० कॉपेक हार गया। ६६ रूबल ४० कॉपेक हारने के लिये रहे।

२१ जुलाई—कुछ नहीं किया, पर कई आदमी—स्टॉलीपिन-इत्यादि—मिलने आये। समय बड़े आनन्द से बीता। (१) लोगों की निन्दा की, और (२) सुस्ती!

२२ जुलाई—स्टॉलीपिन और दूसरे मित्र दिन-भर बाधा डालते रहे। शाम को चारित्रिक अस्थिरता और अनिश्चितता का एक भयानक प्रमाण दे डाला। आठ रूबल ८० कॉपेक हारा। इस महीने के लिये ५७ रूबल ८० कॉपेक बचे। परन्तु २५ रूबल मैंने उधार दे दिये हैं। इस प्रकार ३२ रूबल ८० कॉपेक शेष रहे।

२३ जुलाई—निश्चित जीवन बिताना चाहता था, अपने सभी कार्यों पर पहले से निश्चय करना, और उन निश्चयों

का पालन करना। बाद में सुस्ती आगई, यद्यपि विघ्न भी डाला ही गया।

२४-२५ जुलाई—कल 'युवावस्था' शुरू की, पर आलस्य ने धर दबाया—सिर्फ़ आधा पृष्ठ लिख पाया। फिर दिन-भर अकेला ताश खेलता रहा। नियम—हर रोज़ कम से कम एक पृष्ठ लिखना, और संशोधित करना। इससे पहले बिस्तर पर न जाना, (२) प्रत्येक ऐसे आवश्यक कार्य को शीघ्र-से-शीघ्र निबटा देना, जिसके लिये मन में उत्साह का अभाव हो।

कह नहीं सकता, किस विचार-शृङ्खला में पड़कर अथवा किन अतीत स्मृतियों को याद करके, आज ख़ाँज़ेनी से वार्तालाप करते हुए मेरे ध्यान अपने पिछले जीवन के पहलू पर जा पड़ा, जब जीवन का उद्देश्य कल्याण तथा आदर्श दया-भाव था। यह स्मृति वास्तव में बड़ी ही आनन्ददायक थी। मुझे यह देखकर बड़ा भय और खेद है, कि इस विचार से मैं कितना परे हट गया हूँ, और मेरे वर्तमान जीवन के विचार और नियम कैसे भद्दे और निन्दनीय रहे। फिर भी वे मेरे लिये लाभ-प्रद सिद्ध होंगे। अच्छा जीवन बिताने के लिये उन नियमों से मिलनेवाली सफलता आवश्यक है। हाँ, फ़ौज की संगति ने मुझ पर अपना असर डाला है। कल मैं सारे नियमों को लिपिवद्ध कर डालूँगा। महीने का अन्त। आज मुझे दो पत्र गाँव से मिले, और एक अलेक्सीव के पास से। 'बाल्यावस्था' के लिये एक दृश्य!

तूफ़ान आने पर लोग किस प्रकार अपने घरों की खिड़कियाँ बन्द कर लेते हैं !

२६ जुलाई—सुबह और खाने के बाद थोड़ा-सा लिखा। कुछ पत्र लिखने चाहिएँ। शाम को शतरंज और ताश की बाज़ी उड़ी। ४ रूबल ८० कॉपेक हारे। २८ रूबल ५३ कॉपेक बचे। ७५ रूबल प्रति-मास की जगह १०० रूबल प्रति-मास ख़र्च और रखे लेता हूँ।

२७ जुलाई—गोर्शाका आ पहुँचा, और दिन-भर विघ्न डालता रहा। पर मैं भी सुस्त था। मैंने सिर्फ़ आधा पृष्ठ लिखा। १ रूबल ५० कॉपेक हारे। २६॥ रूबल ५१॥ कॉपेक शेष रहा। पहली से खर्च की व्यवस्था अपने हाथ में लूँगा। सुस्ती और दो बार पर-निन्दा।

२८ जुलाई—दिन-भर अकेला बैठा ताश खेलता रहा।

२९ जुलाई—दो दिन बड़ी ही मूर्खता में काट दिये। बड़ी ही बुरी बात हुई। 'फ़्रॉपोस्ट' पत्रिका में अपनी रचना पढ़ी। आज खेला, और ७५ रूबल हार गया।

३० जुलाई—घोड़े पर सवार होकर गया, स्टॉलीपिन के घर खाना खाया, मगर करा-धरा कुछ नहीं। टुकड़ी में कई तरह के हुक्म प्रचारित किये। स्वास्थ्य अच्छा नहीं। बुख़ार और सिर-दर्द। कूच की तैयारी की। सुस्ती !

३१ जुज़ाई—स्वास्थ्य ख़राब है। बुख़ार और भयङ्कर निर्बलता। इसी के कारण मैंने कुछ नहीं किया। फ़िल के

पास पत्र लिखा। दो दफ़ा हिम्मत करके फिर ७५ रूबल हार गया। सुस्ती ! सुस्ती ! सुस्ती !

१ अगस्त—फिर बड़ा दाँव लगाकर खेला, और ७५ रूबल हार गया। दिन-भर कुछ नहीं किया; सिर्फ़ एक रिपोर्ट तैयार की, और कुछ नोट लिखे। सुस्ती ! सुस्ती ! सुस्ती !

रूस की दास-प्रथा के विषय में आज स्टॉलीपिन से बात-चीत हुई। मेरे मन में यह विचार स्पष्टतर होता जा रहा है, कि 'रूसी ज़मीदार की कहानी' के चार खण्ड रक्खूँ। उसके नायक में मैं स्वयं अपना चित्रण करूँगा। कहानी की प्रधानता इस विचार पर निर्भर होगी, कि इस ज़माने में ग़ुलामी की प्रथा होते हुए किसी शिक्षित ज़मींदार के लिये शान्तिपूर्ण जीवन बिताना असम्भव है। दास-प्रथा की सारी विभीषिकाएँ दिखानी होंगी, तथा उसमें सुधार करने के उपायों का उल्लेख भी होगा।

२-४ अगस्त—शाम को राज़ेन् के साथ खेला। अपने नियमों का पाबन्द न रहा। ५८० रूबल जीत गया, जिसमें ५५० रूबल उस पर मेरे क़र्ज़ हो गये। सब से ज़रूरी बात यह है, कि खेल नक़द का होना चाहिये। ३ और ४ तारीख़ को मैं एक मुहिम पर गया था, और वहाँ अच्छी ख़ासी लड़ाई हुई। चाची के पास एक चिट्ठी भेजी।

७ अगस्त—सेवस्टॉपॉल में इन्करमैन के पास गया था। १०० रूबल ओडाखोवस्की से जीते, और अब मैं क्रीमिआ

में किसी का ऋणी नहीं हूँ। ख़ूब प्रसन्न रहा। आज से केवल अपने वेतन के आधार पर गुज़ारा करने का निश्चय किया है। जो रुपया घर से आयेगा, सिर्फ़ उसी से खेलूँगा। जो कुछ लोगों पर मेरा क़र्ज़ है, उसे मैं जोड़ता जाऊँगा। जो कुछ जीतूँगा, या सिपाहियों के वेतन-आदि में से बचेगा, वह भी जमा करूँगा। अब २०० रूबल सिर्फ़ रॉज़ेन् से लेने हैं। मैंने बड़ी ख़ूबसूरती से अपने-आपको सम्हाल लिया।

८ अगस्त—बख़्शीसराय गया था। सिम्फ़ेरोपूल से बहुत से मित्रों का निमन्त्रण था। पर वहाँ जा न सका। पानेव (पत्र-सम्पादक) को पत्र लिखा। सेरेज़ा और वैलेरियन को भी पत्र लिखे। स्वास्थ्य अच्छा है। तोप की गाड़ी के विषय में एक रिपोर्ट तैयार की। कुछ और काग़ज़ात भी तैयार किये। 'युवावस्था' का कार्य शुरू करने का समय नहीं मिला। कल सही। शाम को कुछ कर सकता था।

९ अगस्त—कुछ नहीं किया। कामाग्नि मुझे जला रही है। सर्जी टॉल्सटॉय से भेंट की, और नये सेना-नायक टिमासेव के पास गया।

१०-११ अगस्त—बख़्शीसराय गया, एक घोड़ा ख़रीदा, विषय-गमन किया, और साधारणतया व्यवहार अच्छा नहीं रहा। सुस्ती पर अभी तक क़ाबू नहीं पाया है। कल सुबह से निश्चयपूर्वक 'युवावस्था' का काम हाथ में लेना चाहिये। सुस्ती! सुस्ती! चरित्रहीनता!

१२ अगस्त—जल्दी उठा, 'युवावस्था' में पहले परिच्छेद का अन्तिम अंश लिख डाला, पर वह वहुत ही कम था। अपने-आप ताश खेलता रहा। दस बजे इस निश्चय पर पहुँचा, कि अपने विषय ने सब से पहले मुझे जो-कुछ करना है, वह है—अपनी धारणा-शक्ति को बढ़ाना। इस विचार को निरन्तर अपने सामने रखना चाहिये। आज (१) वोदका पी, (२) दिन में अपना भाग्य-वर्णन् किया और (३) सुस्ती!

१३ अगस्त—फिर अपना भाग्य-बखान किया। एक पत्र लिखता-लिखता रुक गया, यद्यपि मन में उसके लिये उत्साह था। सुस्ती, क्रोधान्धता।

१४-१६ अगस्त—बख़्शीसराय गया। वहाँ मेरा समय ख़ासे आनन्द में कट गया। ४० रूबल जीते। और कुछ नहीं किया।

१७ अगस्त—जल्दी उठा। टिमाशेव के घर गया। बोरमैन के घर खाना खाया। रॉज़ेन् से ४०० रूबल वसूल हुए। कॉवल पक्का बदमाश है। नैतिक दृष्टि से मेरा घोर पतन हो चुका है। कहा जा सकता है—कि परमेश्वर को भूल गया हूँ। कॉवल से जो कहा-सुनी हुई, उसके लिये मुझे ख़ुशी है। चाँदनी रात कैसी बढ़िया है। मन में एक विचार आया। अपनी दिन-चर्या का परीक्षण अपनी भलाई और बुराई के कामों से करना चाहिये। आज मैंने कॉज़ेल्कोव और मिख़ा-

लेस्की का अपमान किया और कुछ नहीं किया। कॉज़ेल्कोव को अधिक अपमानित किया था।

१८ अगस्त—सुबह कोवालेस्की मुझसे मिलने आया। हमारे कार्टर भयानक हैं। ज़ुकाम हो गया। बहुत थोड़ा लिखा। न कुछ अच्छा काम किया, न बुरा। सुस्ती !

२५ अगस्त—अभी आकाश पर नज़र फेरी। क्या मज़ेदार रात है ! भगवान् मुझ पर दया करें। मैं बहुत ही बुरा हूँ। भगवान् मुझे अच्छा और सुखी बनाये। आकाश के तारे भी क्या अजीब चीज़ हैं। सेवस्टॉपॉल में बमबाज़ी हो रही है, और यहाँ कैम्प में गाना। कोई भलाई नहीं की। बल्कि इसके विरुद्ध कोर्स्मकोव से कुछ रुपया जीत लिया। सिम्फ़ेरोपूल होकर आया हूँ।

२ सितम्बर—एक हफ्ते से डायरी में कुछ नहीं लिखा। नक़द १५०० रूबल खो चुका हूँ। सेवस्टॉपॉल ने आत्म-समर्पण कर दिया। मैं उस दिन नहीं था। वह मेरा जन्म-दिवस था। आज रिपोर्ट तैयार कर रहा हूँ। ❀ रॉज़ेन् के ३०० रूबल मुझ पर क़र्ज़ हैं, और मैंने उससे मिथ्या-भाषण किया है।

१७ सितम्बर—कल मुझे यह समाचार मिला, कि 'रात्रि' × नष्ट-भ्रष्ट कर दी गई, और छाप भी दी गई। जान

❀ सेना के हमला करने की स्कीम।

× 'सेवस्टॉपॉल में एक रात'-नामक कहानी—जो बाद में 'मई मास में सेवस्टॉपॉल' कहलाई, पहले सेन्सर-द्वारा थोड़े

पड़ता है, नीले लोग (रूसी ख़ुफ़िया-पुलिस) मुझ पर कड़ी नज़र रक्खे हुये हैं। यह मेरी भावना है, कि रूसी-भाषा में आदर्श लेखकों का जन्म हो, परन्तु मेरे लिये असम्भव है, कि मैं क़लम में चाशनी लपेटकर लिखूँ, न-ही मैं छायावाद (यह शब्द हिन्दी-अनुवादक का है। अंग्रेज़ी वाक्यांश है— From the empty into the void) लिख सकता हूँ,

---

से संशोधन के बाद पास कर दी गई, पर जब कि मैटर कम्पोज़ हो चुका था, सेन्सर ने अकस्मात् उसे वापस मँगा लिया, और सेन्सर-कमेटी के प्रधान के पास उसकी पाण्डु-लिपि भेज दी। उसे पढ़कर प्रधान आग-बबूला होगया, और सम्पादक को अच्छी तरह डाँटा। तब उसने अपने हाथ से इस रचना में संशोधन किया। पानेव (सम्पादक) ने जब यह देखा, कि रचना का सत्यानाश कर दिया गया है, तो उसने उसे छापने से इन्कार कर दिया। लेकिन सेन्सर-कमेटी के प्रधान ने ज़ोर दिया, कि वह कहानी, संशोधित रूप में ही, अवश्य छपनी चाहिये। पानेव को झुकना पड़ा, लेकिन उसने टॉल्सटॉय का नाम हटा दिया। दूसरे सम्पादक नेक्रा-सोव ने इस विषय में टॉल्सटॉय को लिखाः—"आपकी रचना को जिस प्रकार काट-छाँटकर भ्रष्ट कर दिया गया है, उससे मुझे बड़ी वेदना हुई। अब भी उसकी याद करके मैं आपे से बाहर हुआ जा रहा हूँ।...यह लिखकर मैं आपको कैसे सन्तोष दूँ, कि आपकी रचना के अवशिष्ट अंश भी बहुत-से पाठकों ने बहुत पसन्द किये हैं। जो लोग इस कहानी के असली रूप से परिचित थे, उनके लिये तो यह केवल एक अर्थ-हीन शब्द-समूह ही है।"

जिसका न कोई उद्देश्य हो, और जिसमें न कुछ विचार शीलता हो। सिवा एक क्षणिक आवेश के, जिसमें मैंने झुँझलाकर प्रतिज्ञा कर डाली कि कभी क़लम को हाथ न लगाऊँगा, मैंने सदा अपने जीवन का प्रधान और अन्तिम लक्ष्य साहित्य-सेवा ही बनाया है। मेरा उद्देश्य है, साहित्यिक प्रसिद्धि प्राप्त करना, और अपनी रचनाओं द्वारा संसार की भलाई करना। कल क्रॉलोज़ के पास जाकर इस्तीफ़ा पेश कर दूँगा। सुबह 'युवावस्था' लिखूँगा। मैंने कभी किसी का भला नहीं किया; बल्कि सदा बुरा ही करता रहा हूँ। (१) क्राज़ोवस्की को नाराज़ कर दिया, (२) शेपिन को गालियाँ दे डालीं। एलेश्प को देखने नहीं गया। मेरी आर्थिक दशा यह है। २२०० रूबल मुझे देने हैं, और २०० लेने। साल में २५०० मुझे घर से मिलेंगे। हाथ में इस वक्त सिर्फ़ ८ रूबल नक़द हैं।

१९ सितम्बर—क्रिमेनेशग में हूँ, और जासूस के घर में ठहरा हूँ। बड़ा ही मनोरञ्जक स्थान है। यहाँ थोड़ा लिखा। न किसी का कुछ भला किया, न बुरा। किसी-न-किसी तरह प्रसिद्धि प्राप्त करनी है। 'युवावस्था' को मैं स्वयं प्रकाशित कराना चाहता हूँ। दक्षिणी सीमा पर काम करके और कुछ रुपया इकट्ठा होने पर घर जाने के लिये छुट्टी लूँगा।

२० सितम्बर—यहाँ बड़ी सुन्दर-सुन्दर छोकरियाँ हैं। और मुझे कामाग्नि सता रही है। फ़त्सियाली पर फ़ान्सी-

सियों ने हमारी सेना को हरा दिया। आज न भलाई की, न बुराई।

२१ सितम्बर—अगर अपना सुधार नहीं कर सका तो मर जाऊँगा। अपने चरित्र, अपनी शिक्षा, परिस्थिति और योग्यता में सुधार करना है। अपने चरित्र की सारी शक्ति मुझे अपने सुधार को तरफ़ लगा देनी चाहिये। मेरे प्रधान अवगुण हैं:—(१) चरित्रहीनता और निश्चय पर दृढ़ न रहना। सुधार के उपाय हैं:—(१) अपना सामान्य उद्देश्य स्थिर करना, (२) अपनी आइन्दा कार्रवाइयों पर ध्यान रखना, और उन्हें नोट करते रहना। मेरे उद्देश्य हैं:—(१) परोपकार (२) अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करने लायक़ योग्यता प्राप्त करना। इनमें से पहले की अपेक्षा दूसरा अधिक महत्वपूर्ण है। मेरे सामान्य उद्देश्य हैं—साहित्यिक ख्याति प्राप्त करना, परिश्रम करके पैसा पैदा करना, और अपनी नौकरी में नाम कमाना। मैं अपनी डायरी में इसका उल्लेख किया करूँगा, कि चारों उद्देश्यों में से मैंने किसे कितना ग्रहण किया।

कल चाची और भाई मित्री को पत्र लिखूँगा। साथ ही यहाँ के निवासियों के खान-पान और रहन-सहन के विषय में पूछ-ताछ करूँगा। एक नये लेख का ख़ाका तैयार करूँगा, और ख़ूब मन लगाकर लिखूँगा। अपना हिसाब-किताब देखूँगा, और गाँव का निरीक्षण करूँगा।

२३ सितम्बर—चाची को चिट्ठी लिखी। एक लेख का संशोधन किया। घोड़े पर सवार होकर गाँव का निरीक्षण किया। कल निकोलेंका को एक पत्र लिखूँगा, और एक बैल और कुछ सूखी घास ख़रीदूँगा। 'युवावस्था' और 'सेवस्टॉ-पॉल' लिखूँगा। हिसाब ठीक करूँगा। सेना की टुकड़ी का निरीक्षण करूँगा।

२३ सितम्बर*—न घास ख़रीदी, न चिट्ठी लिखी। न कुछ लिखा ही। हिसाब भी ठीक नहीं किया। सर्जपुटोवस्की से १५० रूबल जीत लिये। सेना का निरीक्षण किया। (चरित्र-हीनता के विरुद्ध प्रयत्न करने की एक लाइन को मैंने छोड़ दिया है)।

२४ तारीख के लिये कुछ स्थिर नहीं किया है; क्योंकि बाहर जाना है। लेकिन मैंने अपने पहले उद्देश्य के प्रतिकूल कार्य किया, और जुआ न खेलने के अपने निश्चय को तोड़कर जो कुछ पास था, उससे ज्यादे खो बैठा। अन्य-पुरुष की पर्याय में दादी को एक चिट लिखकर भेजी है, एक चिट्ठी क्राज़ोवस्की को भी लिखी है। आज कूच का हुक्म दिया था, लेकिन रात में कूच हो नहीं सका। कल २५ तारीख़ को सुबह साढ़े सात बजे उठूँगा, और कोई हानिकर वस्तु न खाऊँगा, न पिऊँगा। क्वार्टर के सिपाहियों के बिछाने के लिये सूखी घास ख़रीदूँगा। 'युवावस्था' और 'सेवस्टॉपॉल'

---

* उसी तारीख़ को दूसरी बार लिखा गया।

लिखूँगा। हिसाब ठीक करूँगा, और वैलेरियन को चिट्ठी लिखूँगा। पास-पड़ौस का पर्यवेक्षण करूँगा, कठोरतापूर्वक अपना कर्तव्य-पालन करूँगा, और मिटन के पास जाऊँगा।

२६ सितम्बर—क़त्सियाली के नाके पर। यहाँ मेरा यह दूसरा दिन है। दोनों दिन १२ से ६ तक ख़तरा रहा। नाका ऐसा बेढंगा है, कि हमें तुरन्त हटना पड़ेगा। तेतेरिनिका, मिटन की अपेक्षा अधिक योग्य मालूम होता है।

२७ सितम्बर—तड़के उठा, और कोई हानिकर पदार्थ नहीं खाया-पिया। सूखी घास ख़रीदी, पर लोगों के प्रति अच्छा व्यवहार नहीं किया। काग़ज़ न होने के कारण कुछ न कर सका। मिटन से भिड़न्त होगई। शराब भी नहीं पी। सुस्ती रही। आस-पास घूमा। कल सुबह ही 'युवावस्था' अथवा 'सेवस्टॉपॉल' के दो बड़े पृष्ठ लिखूँगा, और अपने ऊपर संयम रक्खूँगा। लोगों पर दया-भाव रक्खूँगा। हिसाब ठीक करूँगा, और वैलेरियन को पत्र लिखूँगा। ड्रिल कराऊँगा, और आवश्यक रिपोर्ट के बाद आस-पास गश्त लगाऊँगा।

२८ सितम्बर—पूरे दो पृष्ठ नहीं लिख सका। थोड़ा-सा लिख पाया। तबियत हाज़िर नहीं है। दया-भाव रखने का मौक़ा ही नहीं आया। आज दुश्मन की टुकड़ी से हल्की-सी भिड़न्त हुई। स्वास्थ्य मेरा अच्छा नहीं है। कल कुछ लिखूँगा, और बीमारों की सुश्रूषा का समुचित प्रबन्ध भी

करूँगा। वैलेरियन को पत्र भी लिखना है। नेक्रासोव को भी लिखना है, और 'युवावस्था' को आगे चलाना है। आस-पास का निरीक्षण करना भी ज़रूरी है।

१ अक्तूबर—पिछले तीन दिन बराबर कूच में बीते हैं। न नहाना हुआ, न धोना, न कपड़े बदले गये। मेरा व्यवहार बहुत ख़राब रहा। अपने उद्देश्य मुझे क़तई भूल गये। न तो इन दिनों में कुछ काम हुआ, न अपने-आप पर नियंत्रण रख सका। सिपाहियों के पारितोषिकों के लिये मैंने दरख़्वास्त भेजी है। अब चाहे जो-कुछ हो जाय, 'युवावस्था' और 'सेवस्टॉ-पॉल' लिखूँगा। निकोलेंका और क्रिज़्नोवस्की को पत्र भी अवश्य लिखूँगा, हिसाब ठीक करूँगा, और वैलेरियन को चिट्ठी भी लिखूँगा।

२ अक्तूबर—कुछ नहीं लिखा। सिर्फ़ एक रिपोर्ट तैयार की। पत्र या हिसाब भी नहीं लिखा। आज के दिन से अत्यन्त असन्तुष्ट हूँ। दिन-भर चौथी टुकड़ी के अफ़सरों के साथ उलझा रहा। लेकिन कल दिन-भर काम करूँगा। क्रिज़्नोवस्की को पत्र भी लिखूँगा। हिसाब ठीक करूँगा।

१० अक्तूबर—कई दिन से अत्यन्त लज्जाजनक, निराशा-जनक और अपमानजनक आलस्य से घिरा हुआ हूँ। ताशों में १३० रूबल और जीत लिये हैं। एक घोड़ा और उसका साज़ १५० रूबल में ख़रीदा है। क्या वाहियात बात है। मेरा लक्ष्य साहित्यिकता है। लिखना और लिखना! कल से,

जीवन-भर लिखता रहूँगा, और सब काम बन्द कर दूँगा—नियम, धर्म, भलाई—सब-कुछ।

२३ अक्तूबर—नक़द ६०० रूबल जीते, और ५०० मुझे लेने हैं। कल और आज कुछ लिखा, पर वह बहुत आसान था। सुबह पिचकारी लगाई। उर्सोव से मिलने जाऊँगा।

२४-२७ अक्तूबर—कल ५०० रूबल हार गया। मैं आज शपथ लेता हूँ, कि खेल में उधार न करूँगा। घोड़ा मैंने बेच दिया। भयंकर आलस्य। इस वाहियात सैनिक-जीवन से छुटकारा पाना आवश्यक है। इससे मेरा बड़ा अहित हुआ है।

२१ नवम्बर—मैं पीटर्सबर्ग में तुर्गनेव के मकान पर हूँ। यहाँ आने के पहले २८०० और ६०० रूबल पर पानी फेर चुका हूँ। बड़ी ही मुश्किल से यह रुपया अपने कर्ज़ख्वाहों पर उतरवा सका हूँ। गाँव से ८७५ रूबल लिये। अपना व्यवहार यहाँ बहुत सुन्दर रखना मेरे लिये अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिये मुझे आवश्यकता है—(१) जिन लोगों से मुझे अहित की आशङ्का हो, उनके साथ साहस और सतर्कता से पेश आना (२) ख़र्च-बर्च देख-भालकर करना, और (३) काम में लगे रहना। कल मैं 'युवावस्था' लिखूँगा, और डायरी का कुछ अंश भी।

[१८५६]

९-१० जनवरी—आजकल ऑरेल में हूँ। मेरा भाई मित्री मर रहा है। उसके प्रति मेरे मन में जो दुर्भावनाएँ थीं, वे स्वतः विलुप्त हो गयीं। माशा* और तातिआना अलेग्जैण्ड्रोवना उसकी सुश्रूषा में लगी हैं। मैं वैलेरियन को फिर घृणा की दृष्टि से देखने लगा हूँ। तबियत बहुत दबी जा रही है। कुछ कर नहीं सकता; पर एक खेल का ख़ाका तैयार कर रहा हूँ।

२ फ़रवरी—पीटर्सबर्ग में हूँ। मित्री का देहान्त हो गया। मैंने आज यह ख़बर सुनी। कल से मैं अपने दिन इस प्रकार व्यतीत करूँगा कि उसकी स्मृति ही सुखकर प्रतीत हो। कल पेलागिया इलिनिश्ना और कारिन्दे को लिखूँगा और 'बर्फ़ीले तूफ़ान' की साफ़ प्रतिलिपि तैयार करूँगा। क्लब-घर में

---

*माशा एक वेश्या थी, जिसका उद्धार महात्मा टॉल्सटॉय ने एक वेश्यालय से किया था, और उसे अपनी स्त्री बनाकर रखना चाहते थे। उसकी मृत्यु और माशा के साथ उनके सम्बन्ध का वर्णन् 'एना करेनिना' नामक टॉल्सटॉय के वृहत् उपन्यास में आया है। तातिआना अलेग्जैण्ड्रोवना का नाम उक्त उपन्यास में 'किटी' रक्खा गया है।

भोजन करने के बाद नक़ल करने का काम हाथ में लूँगा। शाम को तुर्गनेव से मिलने जाऊँगा। प्रातःकाल एक घण्टा टहलूँगा। मैंने अपनी डायरी के एक बड़े क्रियात्मक पृष्ठ का मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया, जिसमें मैंने लिखा है कि हमें पूर्णता का दावा करके पूर्णता को धोखा नहीं देना चाहिए, और दोनों के लिये निषेधार्थक साधनों द्वारा काम करना चाहिए। मेरी प्रधान त्रुटि है, सुस्ती की आदत, अनियमितता इन्द्रियासक्ति और जुए की प्रवृत्ति। इनके विरुद्ध युद्ध करूँगा।

४ फ़रवरी—प्रातःकाल कुछ लिखा। बल्गाकोव ने आकर मेरे काम में बाधा डाली। सो गया, इसके बाद कटलर आया। क्लब-घर में खाना खाया। फ़ेट× बड़ा ही सुन्दर है। सहायक की कहानी और शराबी का दृश्य! शाम को टॉल्सटॉय के घर गया।❀ निकोराशेव से रुपये प्राप्त किये और कटलर के साथ दो बजे तक बैठा रहा।

ईश्वर को धन्यवाद है कि दूसरे दिन भी मेरी तबियत

×ए० ए० फ़ेट एक गायक कवि था, और वह बहुत वर्षों तक टॉल्सटॉय का मित्र था। राजनीति में वह अनुदार दल से सहानुभूति रखता था। उसका मत था कि कोई भी सुधार करने के बजाय केवल प्रान्तों और नगरों में अच्छे शासक नियुक्त कर दिये जाने चाहिए।

❀ टॉल्सटॉय के घर से मतलब कदाचित् टॉल्सटॉय के पितृ-गृह से था।

ठीक रही । ब.........और क.........को प्रेम-कहानी । अपने पास उद्विग्नता को फटकने न दूँगा । स्त्रियों का आदर करना चाहिए । कल सुबह इन विचारों और तथ्यों को इस रूप में सुव्यवस्थित करके लिखूँगा कि इन्हें फिर स्मरण कर सकूँ । इसी उद्देश्य को लेकर डायरी लिखने का समय नियत करूँगा ।

सहायक की कहानी—एक किसान कारिन्दे ने अपने मालिक (ज़मींदार) का अनाज सात हज़ार रूबल को बेच दिया और किसी काम से बाहर जाते समय अपने सहायक से कह गया कि वह रुपये को सावधानी के साथ रक्खे । सहायक रुपये लेकर ऑडेसा भाग गया और वहाँ एक धनी व्यक्ति बन बैठा । छुटकारा प्राप्त करने के लिये उसने दो हज़ार की रक़म वहाँ के ज़मींदार को देकर गुलामी से मुक्ति प्राप्त करने का सर्टीफ़िकेट प्राप्त किया । दस वर्ष बाद वह सहायक घरेलू झगड़ों से तंग आकर अपने दो लाख के वर्द्धित धन में से दस हज़ार साथ लेकर अपने गाँव को लौटा । अपने चचा से मिलने के बाद उसने उससे कहा कि मुझे अपने भाइयों के पास ले चलो और इस प्रकार वहाँ अपने-आपको प्रकट कर दिया । उसने अपने चचा को दो हज़ार रूबल दिये और अपने दोनों भाइयों में से भी प्रत्येक को दो-दो हज़ार रूबल देने का वचन दिया । उसका चचा उसे गाँव की ओर लेगया और गाँव में घुसते

ही उसकी गर्दन पकड़कर गोहार लगायी—"दौड़ो-दौड़ो ! चोर ! चोर !!" सहायक क़ैद हो गया और उसे सख़्त सज़ा का हुक्म हुआ। उसके चचा ने चोर पकड़ाने के उपलक्ष्य में ज़मींदार से कुछ पुरस्कार स्वीकार नहीं किया, और उसने वह दो हज़ार की रक़म ज़मींदार को सौंप दी, जो उसे सहायक से मिली थी।

शराबी का दृश्य— वोज़नेसेंस्की-प्रॉस्पेट प्रथम में आकर मैंने एक भीड़ देखी। दो भलेमानस, मज़दूरों की पोशाक पहने, एक नंगे-सिर बुड्ढे की ओर झुककर उसे गाड़ी में डालने की चेष्टा कर रहे थे। गाड़ीवाला पहले किराया तय कर लेने पर ज़ोर दे रहा था, और उसने गाड़ी का बरसाती पर्दा बाँध रक्खा था। मज़दूरों की पोशाकवाले दोनों सज्जन उत्तेजित हो रहे थे। भीड़ के छोर पर बढ़िया चमड़े के दस्ताने पहने पुलिसमैन अल्हड़पन के साथ आता दिखाई दिया। बुड्ढा बिल्कुल सिकुड़ रहा था। मज़दूरों की पोशाकवालों ने गाड़ीवाले को छोड़ दिया और बुड्ढे को एक तरफ़ ले चले। कॉन्सटेबिल ने डाँटकर कहा—"क्या कर रहे हो ?" और इसके बाद उस लम्बी कहानी की अभिवृद्धि हुई, जिसकी ओर कॉन्सटेबिल ने ध्यान नहीं दिया। "इसे लिये जा रहे हो !" कहकर कॉन्सटेबिल उसी तरह अल्हड़ गति से उन तीनों की ओर चला और शौक़ के मारे दस्ताने सँभालता रहा। भीड़ छँटने लगी। एक व्यर्थ की चीड़ लग गयी थी।

ब·······और क·······की प्रेम कहानी—एक बुड्ढा खूसट और एक युवती महिला देहात से चलकर रेल में कहीं जा रहे थे। वे एक-दूसरे से नितान्त अनभिज्ञ थे, पर घंटे-भर पास बैठने से उनमें इतनी घनिष्ठता हो गयी कि दोनों एक दूसरे को 'तुम' कहकर सम्बोधन करने लगे। ब·······ने बाद में निश्चय किया कि वह मुफ़्त में किसी चीज़ का त्याग नहीं करना चाहता। युवती ने उसे लिखा कि वह उससे प्रेम का एक बड़ा प्रमाण प्राप्त करना चाहती है। वह यह है कि ब·····उसे १० रूबल इसलिये भेज दे कि क·····वह रक़म नौकरानी को रिश्वत के रूप में देकर रात्रि को दो बजे ब··· से मिलने आये। बड़ी ही सुन्दर और हृदय-स्पर्शी कहानी होगी।

उदासीनता को पास न फटकने दो, और जब कभी कोई उदासीनताजनक बात सामने आये, तो तुरन्त सावधान होकर कह दो कि इससे तो मैं उदासीन हो जाऊँगा।

स्त्रियों के प्रति आदर—स्त्रियों से तीन प्रकार का सम्बन्ध हो सकता है। कुछ स्त्रियों की तुम किसी कारण प्रतिष्ठा करते हो, (जिनका कारण बिल्कुल ही मूर्खतापूर्ण है) और यह समझते हो कि उनके सम्बन्ध तुमसे उच्च-कोटि के हैं। यह एक दुर्भाग्य की बात है। कभी तुम किसी स्त्री को प्रेम करते हो, तो उसके साथ बच्चों का-सा व्यवहार करते हो। यह भी दुर्भाग्य की बात है। कभी तुम उसे इसलिये प्रेम

करते हो कि मत-भेद से दुःख उत्पन्न होता है, और तुम तर्क करना चाहते हो—प्रेम ऐसा सुन्दर है।

७ फ़रवरी—तुर्गनेव के साथ झगड़ा किया।......

८ फ़रवरी—वोलकोंस्की ने दावत दी थी। कल प्रार्थना में जाना है। लिट्वाइल-डु-नॉर्ड जाकर दिन-भर बम-फ़ैक्टरी में रहा। टिम ❀ बलगाकोव, और इरेमीव शाम को मेरे साथ थे।

१० फ़रवरी—कल थोड़ा लिखा। जिमनास्टिक में बहुत समय लग जाता है। थियेटर के सम्बन्ध में अपनी स्वीकृति दे देनी मेरी मूर्खता थी। क्रैवस्की × के पास गया।

११-१२ फ़रवरी—'बर्फ़ीला तूफान' समाप्त करके बहुत प्रसन्न हुआ हूँ।

१३-१९ फ़रवरी—कोई कार्य नहीं किया। मंडी की ओर जाकर भीड़ का अध्ययन करने में आनन्द मिला। इस बात का निरीक्षण किया कि रूसी भीड़ वक्ताओं के भाषण किस प्रकार सुनती है। तुर्गनेव के साथ खाना खाया। हमने तैयारी कर ली। शाम को गॉर्डीव के घर स्त्रियों का जमाव होगा। मेरी अभीष्ट लड़की बड़ी सयानी है; किन्तु यद्यपि उसकी हँसी

❀ वी० एफ़० टिम एक चतुर चित्रकार का नाम था।

× ए० ए० क्रैवस्की, एक मशहूर अख़बार-नवीस था, जो Fatherland News और दैनिक Petersburg Gazette का सम्पादक था।

बड़ी मनोहर होती है, फिर भी उसमें हृदय-शून्यता झलकती है। वोलकोंस्की प्रेम करना चाहती है; पर सोचती है कि कोई उसे चाहनेवाला मिले, जो पहले उसपर प्रेम-प्रदर्शित करे। कल मैं छः घण्टे काम करूँगा। और जब तक काम समाप्त न कर लूँ, सोने का नाम न लूँगा। पहले 'डेज़र्टर'+ से इपिश्का का चरित्र लेकर लिखूँगा, फिर सुखान्त और उसके बाद 'युवावस्था'।

१२ मार्च—अर्से से कोई बात नहीं लिखी। तीन सप्ताह से बिल्कुल अन्धकार-से में पड़ा हुआ हूँ। इसके अतिरिक्त तबियत भी ख़राब है। सुखान्त का कथानक तैयार करने के लिये मैं अधीर हो रहा हूँ। शान्ति का सामान हो चुका है। मैं समझता हूँ, मैं तुर्गनेव से सदा के लिये पृथक् हो गया। सैज़ोनोवा ने यहाँ आकर मेरे मन में अवर्णनीय घबराहट भर दी है। 'पिता और पुत्र'❀ का कथानक तैयार कर लिया है।

२१ मार्च—परसों इत्तफ़ाक़ से मैंने लांगिनोव× का पत्र

+ 'Deserter'—The Cosscks का एक आंशिक पूर्व रूप था।

❀ Father and Son.

× एम० एन० लांगिनोव ने साहित्यिक इतिहास लिखते हुए अनेक साहित्यिकों के जीवन चरित्र और निबन्ध लिखे थे। उसे कोई विशेष ख्याति नहीं मिल सकी।

पढ़ लिया और मैंने उसे एक चुनौती लिख भेजी है। ईश्वर जाने इसका परिणाम क्या होगा, पर मैं तो दृढ़ बना रहूँगा, इस मामले से मुझ पर अच्छा ही प्रभाव पड़ा है। मैं घर लौटने का निश्चय कर रहा हूँ। वहाँ पहुँचकर यथा-सम्भव शीघ्र ही शादी कर लूँगा। इसके बाद अपने नाम से कुछ भी नहीं लिखूँगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति के साथ वार्तालाप में मित-भाषण और सावधानी का विशेष ख्याल रक्खूँगा। क्रियाशीलता, विशुद्ध-हृदयता, वर्तमान अवस्था में सन्तुष्टि और प्रेम की खोज—ये सब वांछनीय गुण हैं। जीवन में मेरी महान् भूल यह हुई कि भावना का स्थान मैंने बुद्धिवाद को दे दिया। इससे, जिसे आत्मा अच्छा समझती है, उसे मैं बुरा समझ लेता हूँ और बुरे को अच्छा। जिस प्रेम का निवास आत्मा के अन्दर है, वह प्रेम-पात्र को अपने सम्मुख देखकर भी सन्तुष्ट क्यों नहीं होता? वह लज्जा का शिकार बन जाता है। पवित्रता पारस्परिक प्रेम की अनिवार्य शर्त है।

४ अप्रैल—एक बड़ी बुराई, जो उम्र के साथ-साथ प्रत्येक सम्भव रूप में मनुष्य में बढ़ती जाती है, भूत पर विश्वास करना है। भौतिक और ऐतिहासिक परिवर्तन अनिवार्य हैं। १८५६ ई० के ग्रेशियन स्तूपों का काल्पनिक चित्रण एक निराधार विडम्बना-मात्र है।

१५ अप्रैल—अभी-अभी सोकर उठा हूँ। एक बजे का

समय है। "ईसा मसीह जागरित हो गये हैं!" आप सब मुझे प्रेम करते हैं और मैं सब को प्रेम-दृष्टि से देखता हूँ। मेरी शारीरिक और मानसिक अवस्था ठीक है, कल 'पिता और पुत्र' समाप्त कर सका हूँ।

१९ अप्रैल—'पिता और पुत्र' का संशोधन भी समाप्त कर चुका। नेक्रासोव के परामर्श से मैंने इसका नाम 'दो हुसार'❀ रख दिया है। यह अच्छा नाम है। अपने काग़ज़ात दुरुस्त किये और अब कोई गम्भीर चीज़ तैयार करना चाहता हूँ—'सैनिकों की सज़ा' लिखना ठीक होगा। गत दो दिनों से पाकस्थली में दर्द है—कल ख़ास तौर से यह दर्द बढ़ गया था। पेलागिया इलिनिशा को पत्र लिखूँगा।

२० अप्रैल—ब्लुडोव× और तुर्गनेव से मिलने गया। ख़ूब गपशप उड़ी।

२१ अप्रैल—नेक्रासोव के भोजनागार में खाने के बाद तबियत घबरा उठी। नेवस्की के क़रीब मटरगश्त करता रहा······आधा गिलास वोदका, एक गिलास तेज़ शराब और एक बड़े गिलास-भर हल्की शराब से अधिक न पीने का नियम बनाया।

२२ अप्रैल—कुछ लिख नहीं रहा हूँ। मैं अपने गुलामों

❀ The Two Hussars.

× काउण्ट डी० एन० ब्लुडोव, विज्ञान समिति के सभापति और गुलामों के उद्धारक थे।

के प्रति जो व्यवहार करने लगा हूँ, उससे मेरी बेचैनी और बढ़ गई है। मैं बराबर कुछ-न-कुछ सीखने और पढ़ने की इच्छा रखता हूँ।

२३ अप्रैल—प्रातःकाल मेडेम के घर था। ब्लुडोव के साथ खाना खाया। शाम को कोवेलिन + के घर गया। बड़ा हँसमुख और सरल स्वभाव का व्यक्ति है। गुलामों का प्रश्न स्पष्टतर होता जा रहा है। उस (कोवेलिन) के पास से मैं प्रसन्न, आशापूर्ण और आनन्दयुक्त मुख-मुद्रा के साथ लौटा। एक तुरन्त तैयार किये हुए कार्य-क्रम के अनुसार घर जाऊँगा।

२४ अप्रैल—कार्य-क्रम की एक संक्षिप्त सूची लिख डाली है। कोवेलिन के आकर्षक प्रस्ताव मैंने सुन लिये हैं। कटलर के यहाँ जाकर वहाँ एक सुन्दरी बालिका देखी। वह रिश्ते में कटलर की साली लगती है।

२५ अप्रैल—तड़के ही गॉर्बुनोव॰ आया। उसकी उन्नति देखकर मेरे आत्म-प्रेम को सान्त्वना मिलती है। बाद में हम

+ के० डी० कोवेलिन एक इतिहासवेत्ता था, जो गुलामों की मुक्ति के प्रयत्न में लगा था।

॰ गार्बुनोव एक प्रतिभाशाली ऐक्टर (अभिनेता) था। वह ग्राम्य-जीवन का सुन्दर चित्रण करता था। उसकी कहानियाँ तथा 'ग्राम्य-जीवन के दृश्य'-नामक पुस्तक प्रकाशित हुई थी।

लोग मिलुतिन × के यहाँ गये। उस (मिलुतिन) ने मुझे 'गुलामी के अधिकारों' की व्याख्या सुनाई और तत्सम्बन्धी साहित्य दिखलाया। मैंने भोजन करते समय वह साहित्य पढ़ा। मैंने अपने लिये कार्य-क्रम और रिपोर्टों का मस्विदा तैयार किया। तुर्गनेव से मिलने गया। बड़ी प्रसन्नता हुई। कल उन्हें भोजन के लिये निमन्त्रण अवश्य दूँगा।

२६ अप्रैल—अर्कांडी स्टॉलीपिन प्रातःकाल आया। वह बोझ से दबा हुआ मालूम पड़ता है। प्रूफ़-संशोधन किया। जिमनास्टिक में काफ़ी दिलचस्पी ली। अर्कांडी स्टॉलीपिन के साथ दुस्यू के घर भोजन किया। बड़ा ही शानदार और दिलचस्प आदमी है। मित्री स्टॉलीपिन के हृदय पर एक अनोखा प्रभाव पड़ा, जब मैंने उसके प्रधान को गाली देने के बाद उससे क्षमा माँगी। शाम को प्रूफ़-संशोधन किया।

५ मई—तुर्गनेव को दावत दी। इस मौक़े पर नेक्रासोव के एक पद पर मुझे क्रोध आगया। मैंने ऐसी बातें कह दीं, जो सब को अप्रिय लगीं। तुर्गनेव गये। मुझे दुःख है:—विशेषतः इसलिये कि मैं कुछ लिख नहीं रहा हूँ।

८ मई—कल मालूम हुआ कि मेरा इस्तीफ़ा अभी अर्से तक स्वीकार नहीं होगा। ब्लुडोव के यहाँ भोजन किया।

× एन० ए० मिलुतिन एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ था, जिसने रूस से गुलाम-प्रथा उठाने में बेहद परिश्रम किया था।

सुस्ती छाई हुई है। शेविच के साथ द्वीप* को गया। बड़ा सुहावना दृश्य था। अक्साकोव,÷ किरीव्स्की× और अन्य स्लैवोफ़िलों के साथ सायंकाल ऑबोलेंस्की में गुज़ारा। यह बात स्पष्ट है कि वे लोग एक ऐसे शत्रु की तलाश में हैं, जिसका कि संसार में अस्तित्व ही नहीं है। उनका दृष्टि-बिन्दु बहुत ही संकीर्ण है, और वे किसी प्रकार के प्रतिरोध का सामना करने से बहुत दूर हैं। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। उनका उद्देश्य, लोगों की मानसिक क्रियाशीलताओं के समवाय की भाँति, वाद-विवाद के बाद काफ़ी परिवर्तित और विस्तृत हो गया है, और उसकी जड़ में पारिवारिक जीवन, घनिष्ट संलाप और कट्टरवाद—आदि गम्भीर सत्यों ने उसके आधार का काम किया है। परन्तु वे अपने विचार ऐसी कटुता के साथ प्रकट करते हैं कि मानों वे झगड़ा ही मोल लेना चाहते हैं। अधिकाधिक शान्त-चित्तता और आत्म-प्रतिष्ठा विशेष लाभदायक सिद्ध होगी,—ख़ासकर कट्टरता के विषय में यह बात विशेष रूप में है—जिसका कारण प्रथम तो यह है कि उनकी सम्मति का औचित्य स्वीकार करना

---

* यहाँ अभिप्राय नेवा-द्वीप से है, जो पीटर्सबर्गवालों के सैर की ख़ास जगह थी।

÷ आई० एस० अक्साकोव एक सार्वजनिक कार्यकर्ता था, जिसने 'बचपन के कुछ वर्ष'-आदि पुस्तकें लिखी थीं।

× आई० बी० किरीव्स्की एक लेखक था।

सभी श्रेणी के लोगों के लिये महत्त्व की चीज़ नहीं हो सकता—कोई उच्च दृष्टि-कोण से यह अस्वीकार नहीं कर सकता कि इसकी अभिव्यक्ति एक राक्षसी कृत्य है, और इतिहास-विरोधी तो है ही। दूसरी बात यह है कि गुण-दोष-विवेचन से विरोधियों के मुँह बन्द हो जाते हैं।

परसों मैं निकोला मिलुतिन से मिलने गया। उसने वादा किया कि वह मुझे अपने साथ लेवशिन+ के यहाँ ले जावेगा।

१० मई—एक बजे रात के बाद से लिख रहा हूँ। इस ख़राब रात के बाद जो सोया, तो दो-पहर के लगभग उठा, और कुछ काम करना चाहता था। माइकेल इस्लाविन (जो अपनी लज्जालुता के कारण एक पहेली बन गयी है), युवक कोवालेव्स्की और पेकर आकर मुझे शनिवार के दिन कॉकोरेव के घर दावत में सम्मिलित होने के लिये कह गये। इसके बाद वोल्कोंस्की भी आया। मैंने उनका अस्वागत न करके उनके साथ गपशप की, और अपने कार्य-क्रम के सम्बन्ध में उन्हें बतलाया। इसके बाद मैं उद्देश्य-हीन होकर नेवस्की के नीचे टहलता रहा। मेशाचेर्स्की, स्कार्याटिन और माकारोव के साथ भोजन किया। मेशाचेर्स्की को मैं

+एए० आई० लेवशिन एक लेखक तथा सरकारी अन्तर्प्रबन्ध-विभाग का सहकारी सचिव था। वह गुलामों की मुक्ति के पक्ष में था, किन्तु उन्हें ज़मीन देने के विरुद्ध था।

चाहता हूँ। उसके साथ बोर्स गया और अंग्रेज़ों की स्वतन्त्रता की प्रशंसा की। दुस्यू के यहाँ बड़े चाव से बिलियर्ड का खेल खेला। शाम को टॉल्सटॉया* के यहाँ गया, और शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ गपशप की। वह बड़ी भली है।

एक शिक्षा-विशेषज्ञ के लिये यह आवश्यक है, कि वह 'जीवन' का पूर्ण ज्ञान रक्खे, और रक्खे औरों को उस (जीवन) के लिये तैयार करने की क्षमता। जब भलाई के विकास में लगो, तो यह याद रक्खो कि आनन्द और और भावनाओं की प्राप्ति परिश्रम और धैर्य के द्वारा होनी चाहिए। उदाहरण के लिए मेरी किसानों के प्रति कुछ भलाई करने की इच्छा का ज़िक्र दिया जा सकता है! मालूम नहीं, क्यों मैं दुस्यू के घर गया! सुस्ती और भौतिक सुखेच्छा का शिकार बन गया हूँ। क्या सदैव सच्चरित्रतामय जीवन निभ सकता है?

११ मई—कल प्रातः तातियाना अलेग्ज़ैण्ड्रोवना को एक पत्र और एक रिपोर्ट लिख भेजी है। दो बजे आन्तरिक विभाग के सचिव के दफ़्र में गया। लेवशिन मुझसे रुखाई के साथ पेश आया। रूस में आजकल चाहे जो कार्य किया जाय, उसमें परिवर्तन अवश्य हो गया है; किन्तु परिवर्तनों

---

* टॉल्सटॉय की चाची काउण्टेस अलेग्ज़ैण्ड्रा ए० टॉल्सटॉया, जो दरबार की एक पदाधिकारिणी और शिक्षा-विभाग की सर्वेसर्वा थीं।

की पूर्ति के लिये बहुधा बुड्ढे मनुष्य मिलते हैं, जो काम के लिये उपयुक्त नहीं होते। शेविच के साथ भोजन किया, नेक्रासोव के घर कार्य-क्रम तैयार किया और उसे भेज दिया। शॉस्टाक के यहाँ एक भ्रष्ट-सा गाना सुना, और दुस्यू के घर भोजन किया।

१२ मई—प्रातःकाल माइकेल इस्लाविन आया, इसके बाद सोकिवनिन और टिम आये। टिम ने अपने पत्र❋ के लिये लेख माँगा। मैं अब बहुत प्रसन्न हूँ। भोजन नेक्रासोव के साथ किया। फ़ेट बड़ा प्यारा और मेधावी है। मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। शाम टॉल्सटॉया के साथ बितायी और 'दो हुसार' पढ़ा। वहाँ एक दयालु, पर विलक्षण-सी स्त्री है, जिसकी उम्र ३५ वर्ष की होगी। उसकी मुख-मुद्रा स्वाभाविक और सहृदयतापूर्ण है, चेहरे पर बुड्ढी औरतों-की सी झुर्रियाँ हैं, और बाल घुँघराले हैं। घर आने पर वास्का और अपोलोश्का का एक एक पत्र मिला, जिसे पढ़कर ऐसी प्रसन्नता हुई, जैसी किसी प्रणयी को हुआ करती है! सब ओर प्रसन्नता टपक रही है। वास्तव में जीवन में सच्चा आनन्द प्राप्त करने के लिये किसी नियम-आदि की आवश्यकता नहीं है। इसके लिये तो अपने-आप-में से प्रत्येक दिशा में मकड़ी के जाले की भाँति प्रेम-तन्तु फैला

❋'Russian Artistic Sheets.'

देने की आवश्यकता है, और साथ ही उन्हें पकड़ लेने की भी, जो उसमें बँधने के लिये उसकी सीमा के अन्दर आजायँ—फिर चाहे वह बुड्ढी स्त्री हो, बच्चा हो, लड़की हो, या हो कोई पुलिस का यमदूत।

१३ मई—९ बजे सोकर उठा। जिमनास्टिक के लिये गया। बिना मित्रों के मज़ा नहीं आरहा है। 'नैवेल मिसलेनी' नामक पत्रिका पढ़ी। मैं पगोडिन ÷ के मुँह पर थप्पड़ जमाकर बड़ा प्रसन्न होता। घृणित चापलूसी भर रक्खी है। यह एक नयी चालबाज़ी है। मॉस्को की यह रँगरलियाँ और उत्सव-समारोह !× ये सब कार्यवाहियाँ रूसी सभ्यता के विरुद्ध हैं। लेविच कहता है कि उसने प्रधान मन्त्री को इसकी रिपोर्ट भेज ही है; पर उसका उत्तर भी कुटिलतापूर्ण मिला है। मैं अपना कार्य-क्रम लिखूँगा। कॉकोरेव❀ के यहाँ भोजन किया। गोभी का शोरबा तथा अन्य राष्ट्रीय भोज्य

÷एम० पी० पगोडिन एक विख्यात इतिहासकार और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता था।

×अलेग्ज़ैण्डर द्वितीय के दरबार की तैयारी से मतलब है।

❀ वी० ए० कॉकोरोव शिक्षित नहीं था, पर अपने परिश्राम और दृढ़ता से लखपती बनकर उसने बैंक स्थापित किया, उराल-रेल्वे का उद्घाटन किया, और लेखक तथा व्याख्याता होने के कारण प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्त्ता बन गया था।

पदार्थों के साथ शैम्पेन+और रूसी ढंग पर बना हुआ सोने का नमकदान। बेहूदगी, रुचि का अभाव, और स्वच्छता की कमी। कॉकोरेव का लेख है तो चतुरता-पूर्ण; पर उसमें सौन्दर्य नहीं है। वह सभी आर्थिक त्रुटियों की आलोचना व्यर्थ ही करता है। एम० पी० के यहाँ गया। कुछ नहीं कर रहा हूँ ········नितान्त निस्तब्धता········! तुर्गनेव बाहर गया था। सायंकाल चाची के यहाँ बिताया। बुड्ढी माल्त-सेवा फिर वहाँ आगयी है।

१० मई—१० बजे के लगभग सोकर उठा। वासेनका पर्फ़ीलेव× को पत्र लिखा। डेविडो आया। उसके साथ वार्तालाप किया। टिम ने उससे किसी बात का वादा किया है, पर मुझे सन्देह है कि मैं वह बात पूरी कर सकूँगा। एक बजे कटलर और बच्चे—कुल सात प्राणी आये। हम लोग नाव में इकाटेरिनहॉफ़ गये। सफ़र बड़ा ही आनन्ददायक रहा; पर मैं थक गया। एम० एस० और एम० को डोनैन के रास्ते में खाना खाते देखा। हम लोग पावलोव्स्क गये। तबियत परेशान हो उठी। लड़कियाँ, वाहियात गाने, बना-वटी बुलबुलें, गर्मी, सिगरेट का धुवाँ, अंगूरी शराब, पनीर, लड़कियों की चिल्लाहट—आदि से जान आफ़त में है!

+ एक प्रकार की मदिरा।

×वासेनका पर्फ़ीलेव, टॉल्सटॉय का एक ज़मींदार मित्र था।

प्रत्येक व्यक्ति यही ढोंग रचता है कि वह प्रसन्न है, और लड़कियाँ उसका मनोविनोद कर रही हैं, किन्तु (उन्हें) इस बात में सफलता नहीं होती।

रेलगाड़ी में मैंने शराबी और ऊधमी जर्मन सिविलियन देखे, जो अफ़सरों की तरह मतवालापन दिखाने की चेष्टा कर रहे थे।

१५ मई—विलम्ब से उठा, अस्त-व्यस्त काग़ज़ों को ठीक-ठाक किया। तुर्गनेव को पत्र लिखा। ऐना निकोलावना आई। फ़ेट से मिलने गया, उसे साथ लेकर बोर्स के यहाँ गया। वहाँ से चलकर मैकारोव, मेशचर्स्की, गॉर्बुनोव और डॉलगॉरुकोव को साथ लेते हुए दुस्यू के घर खाने गया। वहाँ से थियेटर गये। मेरी बग़ल में ही एक सुन्दरी रमणी बैठी है। 'कैरियर'-नामक पुस्तक का लेखक कोरोलोव एक मध्यम बुद्धि का व्यक्ति मालूम होता है। वहाँ से हम लोग चले, तो दुस्यू के यहाँ बॉल में सम्मिलित होने को पहुँचे। डॉलगॉरुकोव, मेशचर्स्की और गॉर्बुनोव मेरे साथ थे। लड़कियों में तीन ऐसी थीं, जिन्हें सुन्दरी कह सकते हैं। कुछ मज़ा नहीं आया। ऑगरेव * मुझसे झगड़ने-सा लग गया। प्रातःकाल मैरिना के जंगल में बीता। अभागा लैंसकॉय! पचास रूबल के क़रीब ख़र्च किये।

---

* एन० पी० ऑगरेव एक कवि था, जो 'कन्टेम्पोरेरी'-पत्रिका में कविता लिखा करता था।

आनन्दोपभोग के अवसर पर उसका उपयोग करने से चूकना नहीं चाहिये; न उसकी खोज में ही फिरना चाहिये। मैं सदा के लिये प्रतिज्ञा करता हूँ कि कभी शराबख़ाने में नहीं घुसूँगा, न क…………में ही।

आज तीन बजे उठा। कॉरोलेव आया, गॉर्बुनोव और डॉलगॉरुकोव भी। इनमें से पहला मूर्ख नहीं है; अच्छा आदमी है। उसे लेकर मैं नेक्रासोव के यहाँ खाना खाने गया। वह कोई अच्छा आदमी तो है नहीं, पर अब मैं उसे चाहने लगा हूँ। वहाँ से मैं स्टाफ़ की ओर गया। कल यहाँ से छुट्टी ले लूँगा। व्लुडोव के घर मुझे ल…… ने स्नेहाभि-व्यक्ति के द्वारा घबरा दिया। मुझे भय है कि इससे मैं उसकी बुराइयाँ नहीं देख सकूँगा। हमने परस्पर विलग होकर बिदाई ली। सन्ध्या चाची के यहाँ मज़े में कटी, इसके बाद दुस्यू के यहाँ पहुँचा और स……तथा औरों के साथ कलेऊ किया, एक लड़की भी थी। मैं किसी नाच-घर या थियेटर के अतिरिक्त और किसी सार्वजनिक जगह में न जाऊँगा। कल यदि मुझे छुट्टी न मिली, तो सुबह के बाद क्राव्स्की और टिम को पत्र लिखूँगा, तदनन्तर 'पैवलोव्स्क' या 'कॉसेक्स' लिखूँगा, फिर नेक्रासोव के साथ भोजन करूँगा, सन्ध्या घर पर ही बिताऊँगा।

१६ मई—देरी से उठा। फ़ेट और ट्रूसन आये। ट्रूसन ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की कि 'दो हुसार' की कहानी में

दूसरे हुसारों का चित्रण बिना किसी नायिका के किया गया है। कॉस्टेण्टिनोव गया और नेक्रासोव के यहाँ भोजन किया। उन लोगों ने मेरी बड़ी चापलूसी की। ताश खेले, चलने की तैयारी की। दुस्यू के यहाँ गया। वहाँ स्ट्रॉगॉनोव के साथ व्यवहार में कोई कठिनाई नहीं दिखाई दी। अच्छे स्वभाव का है, ईमानदार है, और अपने ढङ्ग का एक विलक्षण आदमी है। कल तड़के उठकर निवास-स्थान के सम्बन्ध में निश्चय करना होगा। (वहाँ से) छुट्टी लेकर (घर) आया।

१७ मई—गॉर्बुनोव, डॉलगॉरुकोव, प्राज़ और छोटा कोलबासिन—ये लोग प्रातःकाल आये। अन्ततः मैंने 'शैशवावस्था' और 'बाल्यावस्था' का प्रकाशनाधिकार १० प्रति-शत पर दे दिया। दोपहर में विदा हुआ।※ रास्ते में बहुत सुस्त रहा। पहले लान्सकॉय के साथ चला—फिर एक ऑस्ट्रियन राजदूत को साथ ले गया। तुर्गनेव-कृत 'एक व्यर्थ आदमी' (A Superfluous Man) पढ़ा। बड़ा प्रभाव पड़ा। बड़ा ही चतुर और खिलाड़ी लेखक है।

१८ मई—१० बजे पहुँचा और सीधे पर्फ़ीलिव्स के घर गया। दो बड़े ढेर देखे। वासेनका में काफ़ी सौन्दर्य है। बुड्ढे पर्फ़ीलिव के साथ खाना खाने गया। वासेनका वहाँ

※ यह विदाई पीटर्सबर्ग से मॉस्को के लिये थी।

नहीं था, फिर भी उदासी नहीं रही। एक ताश खेलनेवाला, पाण्डु-रोगी अर्मेनियन था। उसके गले में व्लादीमीर का तमग़ा था, और उसके साथ उसकी सुन्दरी स्त्री नी-काउण्टेस पैनिन भी थी। पुस्तकों में वर्णित इस प्रकार की स्त्री मैंने पहले-पहल ही देखी। भोजन के बाद कुण्टसेवो के पास गया। घर मिल गया, जो बहुत ही आकर्षक था। पुस्तकें, सिगार, और गिलासों में भरी हुई बरफ़ घुल रही थी। ड्रज़िनिन ❀ से पहले-पहल बाग़ में मुलाक़ात हुई, इसके बाद बॉटकिन × से मिला। शाम को ग्रिगॉरीव + के पास आया, और आधी रात तक मज़े में बातें करता रहा। कुछ लोग कहते हैं कि 'हुसार' में कोई विशेष बात नहीं है, कुछ लोगों—विशेषतः साहित्यिकों—की राय में उसकी काफ़ी प्रशंसा हो रही है।

१९ मई—८ बजे बॉटकिन मुझे अपने दफ़्तर तक ले गया, और फिर ट्रॉइटसा के लिये रवाना हुआ। रास्ते में एक बुड्ढा काना मिला। एक दुबला-पतला युवक तथा एक हँसमुख, भूरे बालोंवाला अफ़सर भी मिला। बड़ी थकावट है। मेरे सिर में दर्द हो गया जिससे मैं चाची से प्रसन्नतापूर्वक

❀ ए० वी० ड्रज़निन, एक कहानी-लेखक, समालोचक और शेक्सपियर के दुखान्तपूर्ण नाटकों का रूसी भाषा में अनुवादक।

× वी०पी० बॉटकिन, एक चाय-विक्रेता और भला आदमी।

+ ए० ए० ग्रिगॉरीव, एक समालोचक।

नहीं मिल सका। उसका स्वभाव सदा एक-सा ही रहता है। वह गौरवपूर्ण, छोटे क़द की, सुन्दरी, सचेतन और दयालु स्त्री है। गिरजाघर में गये। माल्टसेवा, गोर्शाका, मैडम सैलोसिन से मिला। फ़ौजी सिपाही साधारण लोगों को इधर-उधर रास्ते पर नहीं चलने देना चाहते थे। शाम को चाची के साथ गपशप की। आधी रात को गोर्शाका के पास जा बैठा। तबियत प्रसन्न थी।

२० मई—देरी से उठा। कुछ सन्तों के जीवन-चरित्र पढ़े, दो-एक बातें लिखीं और गिरजे को चला गया। वही दिलबस्तगी तबियत में फिर आ गयी। गिरजे के परिधान-गृह में गया। इन लोगों ने इसे प्रदर्शन-भवन-सा सजा रक्खा है। जब वे प्रतिमा को चूमते हैं, तो एक बुड्ढी आनन्द से चिल्ला उठती है। इवमेनी मुझे अपने साथ घसीट ले चला, और मैंने उससे कह दिया कि वह याश्नाया से मुझे लिखे। चाची से तुरन्त रुख़सत ली, उसे देहात ले जाने का वादा करके वहाँ से चलता बना। मेरे साथ कुछ महिलाएँ भी सफ़र कर रही थीं। उनमें से एक सुन्दरी शिक्षिका यात्रा और धूप से परेशान हो गई थी। शाम कोस्तिका के साथ पर्फ़ीलिव्स के यहाँ काटी। युरी आवोलेंस्की आया। उसके साथ अक्साकोव ❀ के यहाँ दावत उड़ाने जाऊँगा।

❀ एस० टी० अक्साकोव 'बचपन के दिन' का लेखक था।

२१ मई—प्रातःकाल कैलोशिन और ग़ागोस्किन आये। भोजन अक्साकोव के यहाँ किया। कॉमयाकोव से परिचय प्राप्त किया। बड़ा तेज़ आदमी है। ग्राम-पाठ के सम्बन्ध में अक्साकोव से बहस हुई। वह इसे असम्भव मानता है। शाम को गोर्शाका के यहाँ सर्जी मित्रीविच से बिल्कुल विरोधी विषय पर विवाद उठ खड़ा हुआ। मित्रीविच को निश्चय था कि कृषक बड़े ही भ्रष्ट हैं। निस्सन्देह, एक पाश्चात्यवादी से मैं अब कट्टर स्लैवोफ़िल बन गया हूँ।

२३ मई—विलम्ब करके उठा। कोस्तिंका के साथ गप-शप की। कुछ अपराधात्मक दृश्यों का वर्णन् पढ़ा, जो बहुत जँचे, ख़ासकर सुखोटिम का पढ़ना और भी अच्छा है। ऑबोलेंस्की के साथ यूरी सैमेरिन× के यहाँ गया। उसका दिमाग़ ठंडा, परिवर्तनशील और सुसंस्कृत है। उसे भी भोजन का निमन्त्रण दिया गया। मैं ग्यारह बजे लौटने का वादा करके वहाँ से चला गया। वेरोशका के यहाँ गया…… कुन्तसेवो में बॉटकिन के यहाँ और रास्ते में, प्रकृति का सौंदर्य देखकर मेरे नेत्रों में जल भर आया। वहाँ से मैं पर्फ़ीलिव्स के यहाँ गया। वारेनका वहीं थी। उसकी आँखें कैसी मनोहर हैं, किन्तु मुख पर हास्य की रेखा नहीं देखने में आई। नाक तो बिल्कुल विलक्षण-सी है। अच्छा रूप है; पर भद्दी जँचती

×यू० एफ० सैमेरिन एक ज़बर्दस्त सुधारक और सार्वजनिक कार्य-कर्ता था।

है, सम्भवतः बुद्धि और दयालुता की मात्रा काफ़ी है। मैं उसे अच्छी तरह जानना चाहता हूँ।

२४ मई—प्रातःकाल डायरी और नोटबुक लिखकर समाप्त कीं, और अ······से मिलने की सम्भावना न देखकर तबियत बहुत भारी हो उठी। रुकने के लिये कोई युक्ति-युक्त कारण नहीं है; फिर भी जाने की इच्छा ज़रा भी नहीं होती। चार भावनाओं ने असाधारण रूप से मेरे-अन्दर घर कर लिया है:—प्रेम, पश्चात्ताप-जनित (यद्यपि आनन्द-मिश्रित) दुःख, विवाहेच्छा (उक्त दुःखों से छुटकारा पाने के लिये) और प्रकृति।

खाने में विलम्ब होगया और खोनिन का मकान खोजने पर भी नहीं मिला। घर लौटकर वहीं भोजन किया। किसी ने हर्मिटेज* चलने का प्रस्ताव कर दिया, मैंने स्वीकार करने की बेवक़ूफ़ी की। वहाँ लाँगीनोव से मुलाक़ात हुई और उसके पीछे-पीछे चलकर उसकी ओर टकटकी बाँधकर देखने की बेवक़ूफ़ी की। कुल आधे घण्टे पश्चात् वहाँ से असह्य घबराहट की भावना लेकर आया। घर पर यह ख़बर सुनी कि ऑवोलेंसकिस सुखोटिंन के यहाँ मिलेगा। वहाँ गया। स······चोपिन और अ······को छेड़ रहा था। अ······ आयी और चली गयी, और हमने विशेष बात-चीत नहीं की। एक-दो बार जब मैंने बात-चीत की, तो वह बहुत

*मॉस्को का प्रसिद्ध रेस्टोरेंट (विश्रान्ति-ग्रह)

सावधान-सी हो गयी। यदि मैं यह कहूँ कि मैं जितनी स्त्रियों को जानता हूँ, उनमें यह सुन्दर-तम है, तो यह ग़लत बात नहीं होगी। बड़ी-ही सुसंस्कृत, सुन्दर और साथ-ही सच्चरित्र। ऑबोलेंस्की और सुखोटिन के साथ ब्यालू के लिये अपने घर आया। ऑबोलेंस्की बड़ा-ही सुन्दर और चतुर युवक है। उसके भिंचे हुए होठों से ही मालूम होता है कि वह दयालुता-पूर्ण है। साथ ही मैं उसकी इतनी प्रतिष्ठा करता हूँ कि उस (स्त्री) के प्रति, उसके सम्बन्ध को समझते हुए भी, मेरे मन में मैल नहीं है। उनका सम्बन्ध वैसा ही है, जैसा होना चाहिये। क्या परवाह है! सुखोटिन मेरे मज़ाक़ से झेंप गया और उसने अपनी मनोव्यथा मुझ पर प्रकट भी कर दी। वह अच्छे स्वभाव का है, और इन्द्रिय-सुख में विश्वास रखता है।

२५ मई—लेटने की बजाय कोस्तिका के साथ स्पैरो-हिल्स* गया। नहाने के बाद दूध पिया और वहीं बाग़ में सो गया। महन्त लोग लड़कियों के साथ पीने में मस्त थे—दूध पी-पीकर नृत्य करते थे। कोस्तिका कभी सफल नहीं हो सकेगा। उसका इस बात में विश्वास नहीं है कि बिना काम किये सफलता पास नहीं फटकती। पाँच बजे हम लोग

*मॉस्को की निकटवर्ती पहाड़ी, जो मोस्कावा नदी के दक्षिण तरफ़ है। वहाँ से मॉस्को नगर का दृश्य बड़ा ही शोभायमान मालूम होता है।

वापस आये, डियोक्रोव के यहाँ दावत में जाने के लिये मैं बहुत पिछड़ गया। मेरे सामने ही अ......की लड़की बीमार है। उसने सर्जी सुखोटिन से मेरे सामने ही कहा है कि सगाई के समय उसका कोई प्रेमी नहीं था। उसका पति भी वहाँ मौजूद नहीं था। क्या इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि वह मुझसे यह कहना चाहती हो कि वह अपने पति को अब भी प्रेम नहीं करती ? पीछे जब विदा होने का समय आया तो उसने सहसा मेरी ओर हाथ बढ़ा दिया और उसके नेत्र सजल हो गये, क्योंकि वह अपनी लड़की की बीमारी से बेचैन थी; परन्तु मुझे फिर भी बेहद खुशी हुई। इसके बाद, आशा के प्रतिकूल, वह दरवाज़े तक मुझे पहुँचाने आयी। वास्तव में सोनेशका के बाद मैंने किसी स्त्री में ऐसी विशुद्ध, प्रबल और उत्तम भावनाओं का अनुभव नहीं किया। मैं 'उत्तम' इसलिये कहता हूँ कि यद्यपि अवस्था निराशाजनक है, पर फिर भी उसके सोचने से मेरे अन्दर आनन्द का उदय हो आता है। मैं 'युवावस्था' में डटकर लग जाना चाहता हूँ, क्योंकि इसमें वे स्मृतियाँ पुनर्जीवित हो उठती हैं।

आठ बजे वापस आया, पर्फ़ीलिव्स के साथ दस बजे तक बैठा रहा। बिछौने पर पड़ गया। दो बजे नींद खुली। कुछ खाने के बाद वासेनका के साथ गपशप की और फिर लेट रहा।

२६ मई—८ से १० बजे तक डायरी और नोटबुक

लिखी, फिर प······और वासेनका के साथ व्यर्थ समय गँवाया। कैलोशिन के यहाँ गया। वे लोग घर नहीं मिले। केवल उसकी माँ वहाँ थी, जिसे देखकर मैं आखिर घबरा गया। अभागा स······! सशकोव के यहाँ गया। उसने 'हुसार' के सम्बन्ध में असन्तोष प्रकट किया। इसके बाद खोवरिन के यहाँ गया, जो बड़ा ही सुन्दर है, और जिससे मिलकर मैंने सुख की अनुभूति की। मैडम बखमेतीव के यहाँ खाने को समय नहीं रह गया था, मुझे इससे प्रसन्नता ही हुई, क्योंकि मैंने कोस्तिका के साथ पॉकरोव्स्क❀ जाकर ल्युबोश्का बेहर के यहाँ भोजन किया। बच्चों ने हमारी सेवा की। कैसी सुन्दर और छोटी लड़कियाँ हैं। ÷ इसके बाद हम लोग टहले और 'मेंढक कूदने' का खेल खेला। लोग बख़मेतीव से मिले; पर मैं उससे नज़र बचाकर निकल गया। ग्यारह बजे मॉस्को लौटकर मैडमोइज़िल वर्गानी के घर पहुँचा। ओल्गा बड़ी आकर्षक लड़की है। वर्गानी के साथ कल जा रहा हूँ। सुखोटिन और ऑबोलेंस्की ने मुझे डियोकोव के यहाँ चलने को कहा। मैं गया और अ·········के साथ तीन घण्टे तक बात-चीत की। कुछ देर उसके साथ और

❀ यह स्थान मॉस्को के पश्चिम कुछ ही मील की दूरी पर है, जहाँ गर्मियों में रहने के लिये कुछ सुख-निवास बने थे।

÷ इन्हीं लड़कियों में एक, जिसका नाम सोफ़िया ऐण्ड्वना था, छः वर्ष बाद टॉल्सटॉय के साथ ब्याही गयी।

कुछ देर उसके पति के। मुझे निश्चय है कि वह मेरी भावनाओं को समझती है और वह प्रसन्न भी है। मैं बहुत सुखी हुआ, और कोस्तिका के साथ चार बजे प्रभात तक बैठा रहा।

२७ मई—कल कामेंसकाया को एक पत्र लिखा, जिसमें मैंने अपनी सेवाएँ पुनः अर्पित करदी हैं। एक बजे उठा। वासेनका के साथ बख़्मेतीव के यहाँ गया, पर वह घर पर मौजूद नहीं था। फिर हमने घर पर आकर खाना खाया। खाने के बाद मैं वर्गानी के साथ, जो मेरे पास आया था, बाहर गया। ऑबोलेंस्की आया और मैं आज की शाम भी अ······के साथ बिताता। कौन जानता है कि इससे कितना बड़ा अनर्थ हो जाता।

२८ मई—सफ़र में वर्गानी बड़ा ही कठोर सिद्ध हुआ—ऐसे दुर्धर्ष मुसाफ़िर तो विदेशी ही हुआ करते हैं। सुदाकोवो के चारों तरफ़ टहला; यहाँ का जीवन कैसा शानदार है! याश्नाया में सुख और दुख दोनों ही हैं; मेरे लिये अनुकूल नहीं है। याश्नाया की पुरानी स्मृतियाँ जिस समय दिमाग़ में में आती हैं, तो यह सोचता हूँ कि मेरे विचार कितने बदल गये, तातियाना अलेग्ज़ैण्ड्रोवना भी मुझे नापसन्द लगने लगीं। गुलामी-प्रथा का अनौचित्य उसके दिमाग़ में सैकड़ों बरस बीत जाने पर भी नहीं धँस सकता। रास्ते में मैंने कुछ पद्य-रचना की है, किन्तु वह है शैथिल्यपूर्ण। आज मैं एक

सभा का आयोजन करूँगा, और उसमें जो कुछ ईश्वर की मर्ज़ी होगी, करूँगा। सभा में गया। कार्यवाही अच्छी तरह हुई। किसान बातें प्रसन्नतापूर्वक समझ लेते हैं और मुझे एक दार्शनिक समझकर मेरी बातों पर विश्वास कर लेते हैं। सौभाग्यवश मैं अधिक विस्तार न करके स्पष्ट रूप से बोला था। चाची के साथ भोजन किया और तदुपरान्त उसी से गपशप करता रहा। 'ज़मींदार की डायरी' के पाँच पेज लिखे। दो बजने आरहे हैं। सोने जारहा हूँ।

२९ मई—छः बजे उठने पर थकावट मालूम हुई तो फिर सो गया और बारह बजे तक सोता रहा। डेढ़ बजे तक चाची के पास बैठा रहा, तब मैदान पार करके गिरजाघर गया। बड़ा सुहावना समय है। वहाँ से ग्रुमाएट गया, पौदे चुने, स्नान किया और तदनन्तर दुग्ध-पान किया। घर पर वापस आकर खाना खाया और चाची और नटाल्या से गप-शप की। तीन पत्र लिखे—जिनमें से दो भाइयों को और एक वासेनका को। इसके बाद सभा में गया। पहले तबियत ऊब-सी रही थी, पर अब ठीक है। आधी रात बीत चुकी। मैंने भोजन कर लिया और अब माशा के पास जा रहा हूँ।

३० मई—पोकरोव्स्क* दस बजे पहुँचा। वैलेरियन के

---

* टॉल्सटॉय की बहन माशा की जागीर। इसका नाम बाद तक यही था; किन्तु उस जगह 'बेहरों' का ग्रीष्म-कालीन सुख-निवास बन गया था।

साथ बड़ी बेचैनी महसूस की। मैं अब तक उसे समझ नहीं पाया। माशा के बच्चे बड़े ही प्यारे मालूम होते हैं। उस (माशा) की साँस से गन्ध निकलती है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है। स्नानागार को गया। कलेवा किया। तुर्गनेव को एक पत्र लिखा। छः बजे सोकर उठा, स्नान किया, बच्चों के साथ खेला, वैलेरियन के साथ कुछ बातें कीं, भोजन किया और अब सोने जारहा हूँ। यहाँ भी चैन नहीं आता। मैं समझता हूँ, इसमें मेरा अपराध भी नहीं है।

३१ मई—प्रातः ५ बजे घोड़े पर सवार हो, तुर्गनेव के गाँव को रवाना हुआ।÷ वह घर पर नहीं थे। पर्फ़ीलिव से गपशप की और नोटबुक में कुछ लिखा। उन (तुर्गनेव) के घर से मैंने उनके आने का रास्ता देखा। इससे मुझे कुछ शान्ति मिली। आखिर तुर्गनेव आये। मैंने भोजन किया, टहला और उनके साथ मधुर वर्तालाप किया। इसके बाद सो गया। भोजन के समय जगाया गया। उन (तुर्गनेव) के चचा का परिवार दुःखदायी है। नैतिक दृष्टि से भद्दी जर्मन स्त्री, ज़मींदारी के रोब को मुश्किल से क़ायम रख सकती हैं। क़िस्सा मालूम हुआ कि कैसे एक कारिन्दे ने पीटते-पीटते एक किसान की जान लेली। भोजन के समय वे डाक्टर-महाशय भी उपस्थित थे, जिन्होंने

÷तुर्गनेव की जागीर पोक्रोव्स्क से २४ मील की दूरी पर थी।

यह सर्टीफ़िकेट दी थी कि किसान चोट से नहीं मरा। हम लोग गाड़ी पर घर आये। रास्ते में मज़ेदार बातें कीं, और घर पहुँचकर भी वैसा ही आनन्द रहा; क्योंकि वहाँ कुछ सुन्दरी स्त्रियाँ पहले से ही मौजूद थीं। एक घोड़े की कहानी* लिखना चाहता हूँ।

१ जून—दस बजे उठा। कुछ इधर-उधर चेहलक़दमी की। कभी लड़कों में मिल जाता था, कभी वैलेरियन और तुर्गनेव के साथ टहलने लगता था। इसके बाद तुर्गनेव के साथ स्नान किया और तदुपरान्त माशा के साथ। हम लोग लकड़ी के लट्ठों पर तैरते रहे। कुछ गाना भी हुआ। तुर्गनेव के प्रति माशा का सद्व्यवपार देखकर प्रसन्न हुआ। उन (तुर्गनेव) के साथ मेरी बड़ी मित्रता है; पर मुझे मालूम नही उनमें या मुझमें कुछ परिवर्तन आगया है। सभी तरह के लोग मिलने आये। कुमारी ज़ुरावलेव, एक बिल्कुल ही नयी-नवेली और स्वस्थ षोड़श-वर्षीया लड़की है……हम लोगों ने साथ भोजन किया, फिर टहलते रहे। लड़के मुझसे बहुत हिल-मिल गये हैं। चाय भी पी। बिना कोई कार्य किये ही अब सोने जा रहा हूँ।

२ जून—दस बजे बाद सोकर उठा। माशा और बच्चों

---

*'घोड़े की कहानी' बाद में 'खोलस्टोमीर' के नाम से प्रकाशित हुई

के पास गया। तुर्गनेव के साथ ख़ूब गपशप की। डन-जॉन❀ का खेल दिखाया। भोजन के बाद किश्ती पर बैठकर नदी की सैर को चले। फिर भोजन के बाद गाड़ी पर सवार हो, बाहर चले। माशा और वैलेरियन भी मेरे साथ थे। मॉरोनोव से मुलाक़ात हुई, जो पीटर्सबर्ग के सफ़र के बाद मेरी अधिक प्रतिष्ठा करने लगा है।

३ जून—आज ट्रिनिटी का रविवार है। पाँच बजे के क़रीब वापस घर पहुँचा, तो देखता हूँ, तमाम मकान में एक प्रकार की गन्ध भर गयी है। खिड़की खोलकर बाग़ीचे की तरफ़ देखा, तो बड़ा आनन्द आया। पुश्किन का 'डन-जॉन' पढ़ा। अद्भुत चीज़ है। पुश्किन में मैंने 'सत्य' और 'शक्ति' के ऐसे सामंजस्य की आशा नहीं की थी। सोया तो एक बजे उठा। वर्गानी बच्चों और फूफी के साथ आयी। माशा में जो ओछापन है, उसके प्रति मेरे मन में क्रोध नहीं उपजता; पर तातियाना अलेग्ज़ैण्ड्रोवना मेरे मन में क्रोध उत्पन्न कर देती हैं। पॉलिना का एक पत्र आया। आर्सेनेव और लड़कों के साथ टहलने गया, और भोजन के बाद गाड़ी पर सवार हो, ग्रुमाण्ट गया और वहीं स्नान किया। मेरी आत्मा में अनेक दुःखपूर्ण स्मृतियाँ मधुरिमा-मय क्रीड़ा कर रही हैं। शाम को कोई सभा नहीं हुई, पर मुझे वैसिली से मालूम

❀ 'डन-जान' मोज़ारत का एक प्रहसन है। टॉल्सटॉय इसके बड़े प्रेमी थे।

हुआ कि किसानों को षड्यंत्र का अन्देशा है। वे समझते हैं कि दरबार के समय सब को स्वतन्त्रता मिल जायगी, तथा मैं उन्हें एक ठेके के द्वारा बाँध लेना चाहता हूँ। उस (वैसिली) ने बताया कि मेरी पोज़ीशन एक 'दलाल' की-सी हो रही है।

४ जून—पाँच बजे उठा। बड़ी-ही उग्र प्रेम-भावनाओं से टहलने गया। पुश्किन की पहली कविता पढ़ी। फिर पुरानी नोटबुकों को सुव्यवस्थित किया। एक समझ में न आ सकनेवाली और मीठी बेवकूफ़ी है! 'एक ज़मींदार की डायरी,' 'कॉसेक्स' और एक सुखान्त रचना लिखने का निश्चय किया। पहले 'कॉसेक्स' ही लिखूँगा। भोजन करके सो रहा। उठकर कुछ जल-पान किया, और टहलने के बाद वोरोनका ❀ में स्नान किया। पुश्किन की कृतियाँ पढ़ीं और फिर किसानों के पास गया। वे आज़ादी नहीं चाहते।

५ जून—छः बजे उठा, ऑसिप के साथ स्नान करने करने गया, और वहाँ से मैदान की ओर। वापस आया। 'कॉसेक्स' पढ़ा और उसमें कुछ संशोधन किये। इसके बाद बाग़ में चेहल-क़दमी करता रहा……। कोई कार्य नहीं किया, दुबारा लिखने की इच्छा नहीं होती। कल नये सिरे से लिखना शुरू करूँगा। जो कुछ लिख चुका हूँ, उसके मसाले का उपयोग ज़रूर करूँगा। शाम को गिम्बट के घर गया। एक

❀ याश्नाया पोलयाना के निकट एक छोटी नदी।

अद्‌भुत रूसी लड़की—बेगीशेवा। उसकी स्त्री नाटे क़द की औरत है, पगली तो नहीं कह सकते; पर उसके दिमाग़ में कोई क़ितूर ज़रूर है; खिन्नता के भाव भी उसके मन में हैं।

६ जून—सात बजे उठा, स्नान करने गया और फिर गया ग्रुमाण्ट के पास। भयानक कामेच्छा उत्पन्न होने के कारण शारीरिक अवस्था से तंग हूँ। दस बजे लौटा, दिन-भर कुछ नहीं किया—केवल एक छोटे-से कार्य-क्रम का मस्विदा तैयार करके रह गया। केवल एक घटना हुई। मैं ज़मीन के प्रबन्ध में, लोगों के प्रभाव में इस क़दर आ जाता हूँ कि कभी-कभी भद्दी ग़लतियाँ कर बैठता हूँ। मैंने कुसटिन के साथ आलूबुख़ारा बेंचने का सौदा किया और उससे पेशगी भी जमा करा लिया। इसके बाद पुश आया और उसने ज़्यादे दाम लगाया, मैंने कुसटिन की रक़म लगभग लौटा दी। मुझे इस काम में बड़ी शर्म आयी। शाम को स्नान करने के लिये फिर ग्रुमाण्ट गया.......... फिर बेकार ही रहा। सुस्ती और आराम के बहाने पड़ा रहा।

७ जून—ग्यारह बजे तक सोता रहा और अब उठने पर तबियत साफ़ मालूम हुई। फिर बाग़ में शाक की क्यारियों के पास टहलता रहा। इसके पश्चात् ग्रुमाण्ट चला गया। ....पुश्किन का दूसरा और तीसरा खण्ड पढ़ा। 'जिप्सीज़' बड़ी ही मनोहर कविता है, उसे पढ़कर पूर्ववत् आनन्द मिला। शेष कविताओं में केवल 'ऑगेनिन' कुछ है,

बाकी सब कूड़ा हैं। शाम को कुछ किसानों से बातें कीं, उनकी ज़िद के कारण मुझे बड़ा क्रोध आ गया, जिसको मैं बड़ी कठिनाई से दबा सका।

८ जून—नौ बजे के बाद उठा, बाग़ में टहलता रहा। एक बड़ी सुन्दरी किसान स्त्री दिखलायी पड़ी, जिसका सौंदर्य कमाल का है! मैं अपनी कमज़ोरियों से असह्य रूप में घबरा गया हूँ, साथ ही अपनी अधमतापूर्ण इच्छाओं से भी। जिमनास्टिक का अभ्यास किया, जंगल में टहला, 'ज़मींदार का प्रभात' में आवश्यक परिवर्तन किये। मुझे विश्वास है, कि मैं इसका कार्य सफलतापूर्वक कर डालूँगा। घोड़े पर सवार होकर स्नान करने ग्रुमॉण्ट गया, और अब नैतिक दृष्टि से बीमार-सा होकर बिछौने पर लेट रहा हूँ। अपनी कमज़ोरियों से मुझे घोर असंतोष है। एक जगह कूदने के कारण पीठ में दर्द भी है। दुरोवा से मुलाक़ात हुई, जो अकेली घोड़े पर सवार होकर जा रही थी। मैं उससे बोला तक नहीं।

९ जून—नौ बजे उठा। पीठ में बहुत दर्द है। पुश्किन की जीवनी बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ रहा हूँ। हमेशा 'ज़मींदार का प्रभात' की ही बात सोचता रहता हूँ। चेहरे पर प्रसन्नता का अभाव है। फूफी बहुत खिजाती है। आज उसने एम०.........के उत्तराधिकार और षड्यंत्रों की बातें बतायीं, और यह भी कहा कि निकोलेंका ऐसा विलक्षण

लड़का है कि सिवा 'चुप्पी साधने' के कुछ नहीं बोला। बड़ी ही बेचैनी है! ब्लुडोव को गुलामों के सम्बन्ध में एक पत्र लिखने की बात सोची, और उसका मस्विदा भी तैयार कर लिया। घोड़े पर सवार हो, गिम्बट के यहाँ गया; पर वह घर पर नहीं मिला। जंगल के रक्षकों से अपने मामले में बातचीत की। स्नानागार में अलेश्का से बातचीत की। शाम को काम करने के दिनों की गणना की। कैसा वाहियात अनुपात है। आधे दिनों की ठीक संख्या (किसानों की छुट्टियाँ निकालकर) १०,५०० है। खेत में काम करने के दिन संख्या में अधिक से अधिक ५०००होंगे—फिर भी हमेशा संख्या पूरी हो जाती है। गर्मियों में—मई से अक्तूबर तक वास्तविक संख्या काग़ज़ में लिखी हुई संख्या से ठीक-ठीक मिलती है; पर जाड़े में किसानों के करने के लिये क्या काम है, फिर भी वे चले नहीं जा सकते। यह ऐसा ही है, जैसे दो मज़बूत आदमी एक ज़ंजीर में बँधे हों। दोनों ही के लिये वह (बंधन) दुःखद है, और यदि एक आदमी हिलता-डुलता है, तो वह अज्ञानतापूर्वक दूसरे को कष्ट पहुँचाता है; दोनों में से एक भी कोई काम नहीं कर सकता।❀

१० जून—नौ बजे उठा। पीठ का दर्द बढ़ता ही जा रहा

❀ इस उदाहरण का अभिप्राय गुलामों को बाध्य करके उनसे काम लिये जाने से है, जो ज़मींदारों और जागीरदारों को लक्ष्य करके लिखा गया है।

है। पुश्किन का जीवन-चरित्र पढ़कर समाप्त कर दिया। ज़ैकाज़ × के आस-पास टहला, और एक दो बातें सोची— एक यह कि 'युवावस्था' को विशेष मनोयोगपूर्वक लिखना चाहिये; किन्तु 'ज़मीदार का प्रभात', 'कॉसेक्स' और सुखान्त को भी छोड़ नहीं देना चाहिये। अन्तिम चीज़ के लिये मुख्य मसाला गाँव के भ्रष्टता-पूर्ण वातावरण से लिया जाना चाहिये। मालिकिन नौकर के साथ, भाई बहन के साथ, बेटा अपनी माँ के साथ, आदि ! मकान-वाला आया, पर मैं घर पर नहीं था; पीछे बहुत देरी हो गई। डी०...को एक पत्र लिख रहा था; पर वह बहुत-ही प्रेम पूर्ण ढंग पर लिखा गया। शाम को एक सभा थी। उन (गुलाम) लोगों ने दस्तख़त करने से साफ़ इन्कार कर दिया। चुकता टैक्स (कर) की बात पतझड़ की ऋतु में होगी, उस समय मैं देहात में रहूँगा। इस समय मैं स्वतन्त्र हूँ।

११ जून—नौ बजे उठा। 'युवावस्था' पूरी पढ़ गया। बड़ी ही शिथिलता है। इधर-उधर टहला, ताश खेला, और पुश्किन की कृति का अध्ययन किया। खाने के बाद ज़ासेका गया, पर 'कीपर' नहीं आया। गुम्बैटोव्स मेरे घर पर आई थी। उसके साथ बड़े मज़े में बातें कीं। उसका घर

× यास्नाया पोलयाना के पास तत्कालीन सरकारी जंगल।

देखने गया। वह सुन्दरी है। मेरी पीठ का दर्द घटने की बजाय बढ़ रहा है।

१२ जून—नौ बजे उठा। पहले की तरह टहलता रहा, और दोहर को तुला गया। होटल में तबियत बहुत ख़राब हो गई, और दर्द की जगह जोंक लगवायी। अब तबियत कुछ सुधरी है। बिस्तरे पर बहुत विलम्ब करके गया। यह कैसी अवांछनीय बात है कि चाची का मेरे प्रति पूर्ण प्रेम होते हुए भी मैं उससे घृणा करने लगा हूँ। तुच्छ बातों को माफ़ कर देना चाहिए। इसके विना न तो प्रेम ही हो सकता है, न आनन्द मिल सकता है। नेक्रासोव को पत्र लिखा, और निकोलेंका के लिखे हुए संस्मरण प्राप्त हुए। उन्हें पढ़ा। अच्छे हैं।

१३ जून—पाँच बजे उठा। मछली मारने गया, फिर इधर-उधर टहलता रहा……। एन……की लिखी हुई एक आकर्षक कहानी पढ़ी। कमाल की वर्णन्-शक्ति है। कल ज़ासेका में एक सैनिक लटकाया हुआ मिला। घोड़े पर चढ़कर उसे देखने गया। एन…से मिला, अनिन्द्य सुन्दरी है। मैंने अनिच्छापूर्वक उसके ओछेपन को माफ़ कर दिया। सैनिक खड़ा हुआ मालूम देता था। उसका पाजामा बूट में गुँथा हुआ था। एक गन्दी-सी कमीज़ थी। टोपी उल्टी थी। ओवरकोट दूर पड़ा था, और पैर बेतरह टेढ़े हो रहे थे। घर गया। न… से फिर मिला। वह बड़ी मनोरम मालूम पड़ती थी। मेरे सिर

में भयानक दर्द होने लगा और मैंने बहुत देरी तक बेचैनी के साथ इस स्थिति को सहन किया—सो गया, और दस बजे—उस (एन०) की रवानगी के पहले उठ खड़ा हुआ। वह बड़ी ही सुन्दरी है। फूफी से मिलकर आनन्द हुआ। वैले-रियन आ गया है। कल मैं उनसे मिलूँगा। आज ए० एम० से बातें कीं। उसने मुझे बतलाया कि एक अन्धा किसान अपनी उस (अन्धेपन की) अवस्था में भी मशीन चलाने का काम करता है। कल से मैं सब किसानों को देखने जाया करूँगा, उनकी आवश्यकताओं को समझूँगा, और उन्हें पृथक् रूप में समझाऊँगा कि वे अपनी भलाई के लिये ठेका (कंट्राक्ट) स्वीकार कर लें।

१४ जून—९ बजे उठा। कुछ इधर-उधर टहला। नाताल्या पेट्रोवना के साथ गिम्बट और आर्सेनेव की तरफ़ गया। गिम्बट के यहाँ भोजन करते समय जाँच-कमीशन आया। हमें पता चला कि आर्सेनेव्स तुला गये हैं, हमने ठहरने का निश्चय किया। एन० एन० ने मेरे साथ जंगल में भ्रमण करने की इच्छा प्रकट की, पर गिम्बट ने कहा कि यह 'असुविधाजनक' होगा। एन० एन० ने यह बात सुनी-अनसुनी कर दी। उसने एम० ए० को मेरे पास भेजा, और ख़ुद भी बेवक़ूफ़ों की तरह बुरी तरह से दौड़ता हुआ आया और उस (पेट्रोवना) को उपस्थिति में ही कहा कि उससे मेल न करो। मैं उसके साथ आया और जाँच पर गया। षोडशवर्षीय लड़के

की लाश के कपड़े-लत्ते पीले ऊन से ढके थे। जब मैं लौटा, तो देखता हूँ कि पेट्रोवना चली गई है। एन० एन० को महान् आश्चर्य हुआ। गिम्बट को सहसा पेट्रोवना के प्रति क्रोध हो आया, और उसने उसे कुटनी कहकर वहाँ से भगा दिया। घर पहुँचकर मैं मछली मारने के लिये गया। एक सैनिक आया। मैं चेपाइज़ की ओर दौड़ा। वह बड़ी ही घृणित और दुष्टा स्त्री है। दस बजे के लगभग दिआकोव आया। तीन बजे तक उससे बातें की। वह वास्तव में मेरा घनिष्ट मित्र है। निकोलेंका की कहानी पढ़ी। फिर आँखों में आँसू आ गये, और कॉसेक्स-गान के सम्बन्ध में चर्चा चली, तो फिर मेरा वही हाल हुआ। पौराणिक कहानियों का ढंग मैं पसन्द करने लगा हूँ। कॉसेक्स-गानों को कविता के रूप में लिपि-बद्ध करने की चेष्टा करूँगा।

१५ जून—१० बजे उठा। दिआकोव के साथ इधर-उधर टहलता रहा। उसने मुझे एक पृथक् दल स्थापित करने की सलाह दी, और साथ-ही वैलेरिया के साथ शादी कर लेने का प्रस्ताव भी किया। उसकी बातें सुनकर मुझे भी ऐसा जँचा कि ऐसा करना मेरे लिये सर्वोत्तम होगा। क्या रुपये के कारण मैं पीछे हटता हूँ? नहीं, यह तो मौक़े की बात है। फिर उसने सुदाकोवो की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया। वैलेरिया के चेहरे पर कुछ कठोरता के भाव दृष्टिगोचर हुए। शायद इसका कारण था—वह पत्र। मैं अच्छी मनोदशा में था

और उसे शान्त करने में भी सक्षम हुआ। कैसी बेबस है! उसकी चाची भयान्वित हो गई थी। वास्तव में उसकी नज़रों में तो सब से अच्छा वर्गानी है; पर कैसी बुराई है इसमें। उसकी दशा दयनीय है! बेचारी आधारहीन है; परन्तु वह है दयालु, और उसकी हँसी में आज्ञाकारिता का भाव है। घर वापस आया……कल प्रातः ब्लुडोव को पत्र लिखकर 'कॉसेक्स' को आगे बढ़ाना होगा।

१६ जून—नौ बजे उठा। कुछ टहला। 'वसन्त-घर' में गया और असावधानी के साथ प्यानो बजाया। आर्सेनेव्स आयी। वैलेरिया सुन्दरी है। भोजनोपरान्त गाड़ी पर ग्रुमाण्ट गया।

१७ जून—आठ बजे उठा, और जिमनास्टिक में लग गया। इसके बाद 'न्यूकम्स' पढ़ा। भोजन किया, लाज़रेविच से मिलने गया और वहाँ से आर्सेनेव्स के साथ उनके घर गया। वह मेरे साथ खेलती रही। बड़ी ही आकर्षक है।

१८ जून—दिआकोव आया, और मैंने उसे आर्सेनेव्स के यहाँ चलने को तैयार किया। वैलेरिया कपड़ों-लत्तों और दरबार के सम्बन्ध में गप-शप करती रही। वह बड़ी ओछी मालूम होती है। उसके प्रति मेरा अनुराग क्षणिक नहीं, स्थायी मालूम पड़ता है। दिआकोव के साथ मेरा आना अच्छा नहीं हुआ, इससे किसी वादे की सूचना मिलती है।

१९ जून—सारे दिन घर पर ही रहा……दिआकोव की

इच्छा आर्सेनेव्स के घर जाने की नहीं थी, इसीलिये मैं भी नहीं गया। इसके अतिरिक्त मेरी मानसिक स्थिति ढीली हो रही थी।

२१ जून—फ्रीड और स्वॉयमोनो ने आकर मुझे जगाया। फ्रीड से मिलकर भी मुझे प्रसन्नता नहीं हुई, जो आदर्श भावनाओं का युवक है। शाम को आर्सेनेव्स आयी। मैंने उसके साथ विशेष बात नहीं की। और वह मेरा ध्यान आकर्षित करने में ही लगी रही। पेलागिया इलिनिश्ना खाना खाने के लिये आयीं। एन० एन० ने कल मुझे परेशान किया। इससे मुझे कार्याकिना-आदि के मामले का स्मरण हो आया।

२२ जून—दिन-भर अकेला सुस्त पड़ा रहा, केवल मेरी चाची पास थी। तबियत उचाट और बेचैन होने पर खेलने और 'न्यूकम्स' पढ़ने में दिल बहलाता रहा। शाम को बहुत देर तक नहीं सो सका। बहुत देर तक सोच-विचार में पड़ा रहा और मन-ही-मन में 'युवावस्था' का कथानक तैयार किया। १० तारीख़ से मैंने नोट नहीं लिखे और आज का दिन यों-ही गँवा दिया। दिल की धड़कन बहुत तेज़ हो रही है।

२३ जून—बहुत बीमार हो गया, हृदय की धड़कन के कारण मेरा टहलना बन्द हो गया, और इस रोग के आगे दाँत का दर्द भी न-जाने-कहाँ लुप्त हो गया। प्रातःकाल

डायरी और नोट लिखे। सारे दिन घर ही रहा, मछली मारी। 'न्यूकम्स' पढ़ा………।

२४ जून—अपनी चाची के साथ आर्सेनेव्स के यहाँ गया। वैलेरिया बहुत उत्तेजित थी, मैंने उसे शान्त किया।

२५ जून— यह खबर सुनकर दिल में सनसनी हुई कि एक किसान को बीच तालाब में डुबो दिया गया। दो घण्टे व्यतीत हो गये और मैंने इस सम्बन्ध में कुछ भी कार्यवाही नहीं की। 'न्यूकम्स' पढ़ा। नोट लिखे।

२६ जून—आठ बजे के बाद उठा, 'न्यूकम्स' पढ़ा, और अपने लिखे हुये नोटों की नक़ल की। 'युवावस्था' को फिर दोहरा गया, लिखना चाहता था; पर ऐसा नहीं कर सका। किसान को पानी में से निकाला गया है। जिमनास्टिक किया। और हल्का-सा भोजन करके पेट्रोवना के साथ गाड़ी पर आर्सेनेव्स के यहाँ गया। रास्ते में एक सन्देश-वाहक मिला। उन (आर्सेनेव्स) के घर पर टारासोव भी मौजूद था। वैलेरिया ने सफ़ेद वस्त्र पहन रक्खे थे। बड़ी ही आकर्षक है। आज जीवन का एक अत्यन्त आनन्दमय दिवस था। क्या मैं उसे वास्तव में प्रेम करता हूँ? क्या वह स्थायी रूप से प्रेम कर सकती है? यही दो प्रश्न हैं, जिन्हें मैं हल करना चाहता हूँ; पर कर नहीं पाता। वापसी में पेट्रोवना ने खूब गप्पें हाँकीं। मेरे मन में विरोधी भावनाएँ उत्पन्न हुईं। कल

कोलबासिन, नेक्रासोव, पर्फ़ीलिव और तुर्गनेव को पत्र लिखे। कुछ लिखूँगा अवश्य।

२७ जून— दोपहर को उठा, 'युवावस्था' को दुहराया, कुछ संशोधन किये, फिर कुछ पढ़ने के बाद भोजन किया। मार्शोशनिकोव के पास जाना चाहता था, जिसने मुझे आमन्त्रित कर रखा था। आर्सेनेव्स के यहाँ भी जाना था; पर कहीं नहीं जा सका। मछली मारी, पढ़ा, और फिर स्नान किया। दाँत में फिर दर्द हो गया।

२८ जून—दस बजे उठा। 'युवावस्था' का पहला परिच्छेद बड़े आनन्द के साथ समाप्त किया। दाँत का दर्द बेचैन कर रहा है। खाने के बाद आर्सेनेव्स के यहाँ गया। वैलेरिया की शिक्षा-दीक्षा कुछ भी नहीं हुई है, और यदि मूर्खा नहीं, तो वह ज्ञानहीना तो अवश्य ही है। उसके 'प्रास्टीचुअर' शब्द का उच्चारण मुझे बड़ा दुःखद मालूम हुआ। इससे मेरे दाँत का दर्द और बढ़ गया। मैं अचेत-सा हो गया।

२९ जून—दोपहर तक प्रगाढ़ निद्रा में सोता रहा। दाँत का दर्द दिन-रात जारी रहा। 'न्यूकम्स' पढ़ा। सुस्त और शान्त होकर पड़ा हूँ।

३० जून—दस बजे उठा। 'न्यूकम्स' समाप्त कर दिया। 'युवावस्था' का एक पृष्ठ लिखा, और 'पाँचवें सिम्फ़ॉनी' का खेल खेला। आर्सेनेव्स आयी। वैलेरिया है तो शानदार लड़की, पर वह मुझे प्रसन्न नहीं कर सकती। तो भी यदि

हमारा मिलना-जुलना इसी प्रकार होता रहा, तो मैं कभी अकस्मात् उसके साथ विवाह कर लूँगा। यह कोई दुर्भाग्य की बात नहीं होगी; पर यह है व्यर्थ, और मेरी इच्छा भी इसके अनुकूल नहीं है। मैंने अपने-आपको निश्चय दिला दिया है, कि जो बात अनावश्यक और अवांछनीय होती है, वह हानिकारक होती है। वैलेरियन और माशा के पास से एक पत्र आया। क़र्ज़ा अभी अदा नहीं हुआ है—इससे मैं बड़ा बेचैन हो गया हूँ। बाद में मुझे प्रसन्नता हुई और हृदय हल्का हो गया। इसी अवस्था में मैंने माशा को एक पत्र लिखा।

१ जुलाई—बारह बजे के लगभग उठा, और ख़ूब खेला। 'युवावस्था' के दो पृष्ठ लिखे, शेलिन और फ़ेडुपकिन की याद की, जिससे तबियत दुखी हो उठी। किसी कार्य में मनोयोगपूर्वक लग जाने पर चित्त नहीं दौड़ता। फूफी अलेग्ज़ैण्ड्रोवना एक आश्चर्यजनक स्त्री है। उसके प्रेम के कारण ही सब कुछ सह्य है। इस सम्बन्ध में उसकी वह बात स्मरणीय है, जो मेरे दाँत के दर्द के समय उसके प्रति मेरी भावना के फल-स्वरूप उत्पन्न हुई थी। सारा दिन वैलेरियन के साथ बिताया। उसने श्वेत वस्त्र धारण किये हुए थे; पर उसकी खुली बाहें मुझे ख़ूबसूरत नहीं जँची। मैं अकुला गया और नैतिक दृष्टि से मैंने उसके प्रति ऐसे कठोर शब्दों का व्यवहार किया कि उसका मुस्कराना बन्द

हो गया। उसके हास्य में आँसू झलकते थे। इसके बाद वह ताश खेलने लगी। मुझे अब शान्ति मिली; परन्तु वह घबरायी हुई ही रही। मैं इन सब बातों को समझता हूँ।

२ जुलाई—नेक्रासोव, रोज़ेन और कार्साकोव को 'कंटेम्पोरेरी' के कुपित होने की बात लिखी। आर्सेनेव के यहाँ जाकर खाना खाया। वैलेरिया अँधेरे कमरे में बैठी लिख रही थी, और प्रातःकालीन भड़कीला गाउन पहने हुए थी। वह शांत और सुस्थिर मालूम पड़ती थी। उसने मुझे अपनी बहन को लिखा हुआ एक पत्र दिखलाया, जिसमें उसने लिखा है कि मैं घमण्डी हूँ,—आदि। फिर वर्गानी के आजाने पर दोषारोपण आरम्भ हुआ। पहले तो दिल्लगी के रूप में, फिर गम्भीरतापूर्वक। इससे मुझे दुःख और घबराहट हुई। कल मैंने वैलेरिया की काफ़ी तौर पर खबर ली थी; पर वह निर्भीक होकर बोलती रही, और कुछ देर तक अफ़सोस करने के बाद मेरी तबियत साफ़ हो गयी। उसने कई बार कहा कि इन झगड़ों से क्या मतलब। बड़ी भली लड़की है।

३ जुलाई—खेला, कुछ देर तक 'युवावस्था' लिखता रहा, और भोजन के बाद दो बजे बाहर निकला। चाची पॉलिना ने, जिसे मैंने कुछ रुपये दिये थे, बड़े भोलेपन के साथ कहा कि उसके पास रुपये नहीं हैं। गाड़ी में बाहर

गया। अच्छी बहार थी। मैंने कई बातें सोचीं। आधी रात को पहुँचा और कुछ गपशप करने के बाद सोगया।

४ जुलाई—खूब बारिश हो रही है। सेंस्क जाना स्थगित कर दिया। तुर्गनेव को बुला भेजा। दिन बच्चों के साथ खेलने और कुछ देर गाने-बजाने में व्यतीत किया।

५ जुलाई—तड़के उठकर स्नान किया। वहाँ एक लड़की आयी, पर मेरी तबियत अच्छी दशा में थी, इसलिये उसे यों-ही विदा कर दिया। बच्चों के साथ खेला, भोजन किया और कुछ गान-वाद्य किये। तुर्गनेव आया। निश्चय ही वह सोसाइटी के लिये बेमेल, उदासीन और कठिन आदमी है। मैं उसकी हालत पर रहम करता हूँ। मेरी उसके साथ कभी पट नही सकती। दो बजे तक भोगेच्छा की अस्पष्ट अवस्था में रहा।

६ जुलाई—दोपहर को उठा और सेरेज़ा के पत्र के अनुसार उससे मिलने के लिये सेंस्क जाने को तैयार हुआ। मैंने उसे कुछ अफ़सरों के साथ वोलकोव के घर पाया। हम दोनों तुर्गनेव के घर को रवाना हुए। रास्ते-भर खूब गपशप की। वह नौकरी से छुट्टी लेकर शिकार के लिये जाना चाहता है। अच्छा आदमी है। इसके बाद वोलकोव घर गया। उसने नहीं खेला। रात को वोयनी गया।

७ जुलाई— वहाँ से हम लोग आगे बढ़े। यह टुकड़ी भी अन्य टुकड़ियों की भाँति है। अर्बुसोव एक ईमानदार

आदमी है। लॉरिज़ एक विद्वान्, सुस्त और धनिक जर्मन है। हमने उसके साथ भोजन किया, अपनी-अपनी ताक़त आज़माई और फिर स्नान किया। ज़ेवस्कीज़ आगया है। वह वास्तव में एक अध्यापक है। (वह) भद्दा-सा मालूम पड़ता है। तुर्गनेव के घर गया, और अब वहीं हूँ। रास्ते में धार्मिक भावना उदय हुई—आँखों में आँसू आगये।

८ जुलाई—देर से उठा। सेरेज़ा आया। माशा और वैलेरियन ने बुरे व्यवहार किये। सेरेज़ा यहाँ मज़े में है, और मैं और भी अच्छी तरह हूँ। तुर्गनेव ने अपना जीवन-क्रम बेवक़ूफ़ी के साथ बनाया है—इस प्रकार असाधारण रूप में कार्य-क्रम नहीं बनाना चाहिये। उसका सारा जीवन सादगी के ढोंग में व्यतीत होता है। मेरे साथ उसका मेल नहीं खा सकता। शाम को हम लोगों की बातें हुईं। सेरेज़ा के साथ ख़ूब गपशप हुई। वह विदेश जाना चाहता है। हमने एक शानदार आयोजन तैयार किया है। मुझे भय है कि यह आयोजन केवल आयोजन के ही रूप में रह जायगा।

९ जुलाई—विलम्ब से उठा। भोजन के समय तक ठहरा रहा। कोर्पोव, शेनशिन और बियर यहाँ थे। ज़ेव-स्काया को एक पत्र लिखा है, जिसमें एक लज्जाजनक झूठ का समावेश कर दिया है! सेरेज़ा के साथ शेर्न गया, और हम दोनों आपस में लड़ते-झगड़ते रह गये। फिर भी यह अच्छा ही है; हमारे सम्बन्ध इस (झगड़े) से दृढ़तर हो

गये। हम फिर नहीं लड़ेंगे। सारी रात हम लोग सफ़र में रहे।

१० जुलाई—शयन किया, बारह बजे उठा। खेला, भोजन किया और फिर आर्सेनेव के यहाँ गया। वहाँ और कई आदमी आये हुए थे। वैलेरिया बड़ी ही सुशीला है, और हमारे सम्बन्ध सरल और सुन्दर होते जारहे हैं; किन्तु यदि यह व्यवहार सदा यों-ही क़ायम रह सके!

११ जुलाई—ओलगा लाज़रेविच की ओर जाना चाहता था; पर मुझे ज़ुकाम हो गया है, साथ ही गाँठों में सूजन और गले में ख़राश भी हो गयी है। दिन-भर घर पर ही ताश खेलता और तरह-तरह की भावनाओं के स्वप्न देखकर प्रसन्न होता रहा। चाची अलेग्ज़ैण्ड्रोवना कैसी भली है; कैसा सुन्दर प्रेम है उसका!

१२ जुलाई—विलम्ब से उठा। गले का दर्द और भी बढ़ गया है। कोई कार्य नहीं किया। सुदाकोवो* से आर्सेनेव्स-परिवार आगया है। वैलेरिया का सौन्दर्य आज अपूर्व हो रहा है, पर उसका ओछापन और छिछोरापन बड़ा ही चिन्ताजनक है। मुझे भय है कि उसका स्वभाव ऐसा है कि वह शिशुओं को भी प्रेम नहीं कर सकती। तो भी मेरा दिन अच्छी तरह व्यतीत हुआ।

१३ जुलाई—तड़के उठा। गला तो अच्छा है; पर पीठ

---

* आर्सेनेव की ज़मींदारी।

में अब भी दर्द है। बैबूरिन से मियासोईडोवा तक घोड़े पर सवार हो, जइ के खेतों में से होकर गया। वहाँ की जायदाद का पट्टा समाप्त हो गया, और किसान आज़ाद कर दिये गये। घरेलू गुलाम उसी ज़मीन में बस गये हैं। एक (गुलाम) से मैंने बड़ी देर तक बातचीत की। वे बहुधा शराब की भट्टियों पर जाते हैं, और उन्होंने बाग़ उजाड़ डाले हैं। कुछ तो बड़े ही ख़स्ता-हाल हैं; पर सब यही कहते हैं कि वे आज़ाद होकर अधिक सुखी हैं, और जब तक चाहें घास पर पड़कर सो सकते हैं। मैं आर्सेनेव के घर जाकर वर्गानी से बातचीत करना चाहता हूँ।

वर्गानी से बातचीत नहीं की। वहाँ ज़ैवालेव्स्की से मुलाक़ात हो गयी। बाद में स्पेशित्स्की भी मिला। अच्छा आदमी मालूम पड़ता है। दरबार के सम्बन्ध में इन दोनों ने वैलेरिया को इतना चिढ़ाया कि उसकी आँखों में आँसू आगये। उसका कोई क़सूर नहीं था, पर मुझे वहाँ अच्छा नहीं लगा, और अब बहुत दिनों तक उधर नहीं जाऊँगा। इसका कारण शायद यही है कि उसने मेरे साथ अत्यधिक प्रेम प्रदर्शित किया है। मैं शादी से बहुत डरता हूँ, पर साथ-ही कुकर्म (अर्थात् उसके साथ मज़ा उड़ाने) से भी। परन्तु शादी के लिये अभी बहुत-से परिवर्त्तन करने होंगे; और अभी मुझे अपने लिये भी बहुत-कुछ करना है। बहुत विलम्ब से वापस आया।

१४ जुलाई—घर पर बैठा रहा। कोई काम नहीं किया।

१५ जुलाई—कुछ याद नहीं आता।

१६ जुलाई—बारिश हो रही है। ब्रांट के यहाँ गया था। एक ऊट-पटाँग क़िस्सा गढ़ा।

१७ जुलाई—चासर अफ़सर आये। मैंने उन्हें शैम्पेन ❁ पिलाने की मूर्खता की।

१८ जुलाई—गढ़न्त के क़िस्से को लिखना शूरू किया। दिन-भर घर पर ही रहा।

१९ जुलाई—क़िस्से को आगे बढ़ाया। अब एक बज गया है, आर्सेनेव के यहाँ जा रहा हूँ। माशा आगई है।

२० जुलाई—आर्सेनेव और सेरेज़ा यहाँ आये। कोई कार्य नहीं किया।

२१ जुलाई—आर्सेनेव के घर पर था। लाज़रेविच और और के० भी वहीं थे। मैं बहुत ख़ुश था।

२२ जुलाई—वे लोग गिम्बट के यहाँ थे। मैं भी वहीं था। तबियत भारी रही। कुछ कर नहीं सका।

२३ जुलाई—माशा के नामकरण की वर्षगाँठ। सेरेज़ा भी यहीं था। बैलेरिया के सम्बन्ध में बहुत-सी बातें हुईं। सेरेज़ा ने मुझे बहुत ठंडा कर दिया है।

२४ जुलाई—सेरेज़ा चला गया। घर पर रहा। कोई काम नहीं किया। थोड़ा गायन-वाद्य किया।

❁ उत्कृष्ट प्रकार की मदिरा।

२५ जुलाई—बारह बजे उठा। 'मृतात्मा' × बड़े आनन्द के साथ पढ़ा। इसमें बहुत-से विचार मेरे हैं। कुछ लिखा नहीं। मौसिम अच्छा है। भोजन के समय विवाद-द्वारा मैं माशा को छेड़ना चाहता था, और इस प्रकार उससे कुछ प्यारी बातें करना चाहता था। भोजन के बाद नाटाल्या पेट्रोव के साथ वैलेरिया से मिलने गया। आज पहला ही अवसर था, जब मैंने उसे सेरेज़ा के कथनानुसार बिना गाउन के देखा। वह इस प्रकार दस-गुनी सुन्दरी और अधिक स्वाभाविक दीखती थी। उसने अपने केश, यह जानते हुए, कान के पीछे कर लिये थे, कि यह फ़ैशन मुझे अधिक पसन्द है। वह मुझसे क्रुद्ध थी। मालूम होता है, उसके अन्दर प्रेम कूट-कूटकर भरा है। सायंकाल मज़े में गुज़ारा।

२६ जुलाई—बारह बजे फिर उठा। भूसे और दाने को अलग करने की मशीन लगवाने का निश्चय किया। गॉगोल की कृति पढ़ी। खेला। भोजन के समय माशा के साथ 'नीचता' पर विवाद किया। इसके बाद घोड़े पर सवार होकर बाहर गया। मॉलियर की प्रसिद्ध हास्यरस-पूर्ण कृति 'ले फ़ेम सावन्त्स' पढ़ी, और गत पाँच दिनों से जो नहीं लिखा था, उसकी कसर पूरी की।

२७ जुलाई—विलम्ब से उठा। कुछ देर प्यानो पर समय काटता रहा। 'युवावस्था' का कुछ भाग बड़ी दिलचस्पी और

× गॉगोल का प्रसिद्ध उपन्यास।

आनन्द के साथ लिखा। अपनी पुनर्विचार करने की आदत के कारण मुझे लिखने का काम तुरन्त जारी कर देना चाहिए। भोजन के समय मैंने माशा के साथ उत्तेजित भाव से वार्तालाप किया। मेरी चाची ने उसका पक्ष लिया। वह कहती है कि तुर्गनेव ने यह शब्द कहे हैं कि टॉल्सटॉय से कोई बहस नहीं कर सकता। क्या मेरे स्वभाव में सचमुच ख़राबी है ? मुझे अपने ऊपर क़ाबू रखना चाहिए, और इन सब का कारण है गर्व—वैलेरिया ने ठीक ही कहा था। भोजन के बाद घोड़े पर सवार हो, स्नान-घर की ओर चला। कोई कार्य नहीं किया।

२८ जुलाई—प्रातःकाल सब से पहले कोलबासिन को पत्र लिखा, फिर कॉन्सटेण्टिनोव और मिख़ल्स्की को रिपोर्ट लिखी। इसके बाद आर्सेनेव के निमंत्रण में सम्मिलित होने को गया। यह एक विलक्षण बात है कि मैं वैलेरिया को स्त्री के रूप में चाहने लगा हूँ। आरम्भ में वह मेरे पसन्द की स्त्री नहीं थी। पर यह बात हमेशा नहीं रहती; विशेषतः तब तो और भी नहीं, जब मैं उसकी अनुकूल होता हूँ। कल पहले-पहल मैंने उसकी खुली बाँहें देखीं, जिससे मैं सकुच उठा।

२९ जुलाई—दिन-भर घर पर ही रहा। बारिश होती रही। प्रातःकाल 'युवावस्था' लिखता रहा, फिर 'कन्फ़ेशन' (अङ्गीकार) का अध्याय समाप्त किया। वर्गानी और एन० ए० आये। मैं ख़ुश था। काम शायद अधिक किया होगा.

निकोला को मशीन के लिये भेजा। ब्यालू शुरू होने पर माशा के साथ 'साहित्य' के विषय पर वार्तालाप हुआ; बड़े मज़े की बातें हुईं।

३० जुलाई—विलम्ब से उठा। 'परीक्षा'-नामक पुस्तक का एक अध्याय लिखा। कोई दो पृष्ठ लिख पाया होऊँगा। भोजन किया। आर्सेनेव के घर जाने का विचार त्याग दिया; किन्तु ब्राएट आया। उसने अपनी गपशप से मुझे भगा ही दिया। वैलेरिया और वर्गानी को आँसू आगये। ओल्गा के पास से पत्र आया है, जो लिखती है कि वह अब विवाह करने जा रही है। वैलेरिया बिल्कुल लापर्वाह है। मैं ने उससे बड़ी घृणा की, साथ ही मुझे 'डैविड कॉपरफ़ील्ड' के सम्बन्ध में ऐसी बातें करनी पड़ गयीं थीं, जिन्हें मूर्खता-पूर्ण विचार कहा जा सकता है। चाची पॉलिना और मैं—दोनों एक दूसरे से नाराज़ हैं। हमने 'स्त्रियों की कमज़ोरियों' पर बहस की। कोई भी कह सकता है कि वह एक वाहियात औरत है; किन्तु मैं उससे क्षमा माँगूँगा।

३१ जुलाई—बिलम्ब से उठा, चाची अलेग्ज़ैण्ड्रोवना आयी। वह अच्छाई की प्रतिमा है। 'परीक्षा' का एक अध्याय लिखा। आर्सेनेव ने सन्देशा भेजा है कि ओलगा आयी है। भोजन करने में मुझे विलम्ब हो गया। ओल्गा को मॉस्को के शेरवैतो फ़ैशन में देखा। उसका विवाह हो रहा है, और अब वह कीरीव से रुपये माँगने ही वाली है। मैं जल्दी घर से

निकला। वैलेरिया मूर्खा-सी दीखती है। घर पर रहकर घरेलू गपशप की।

१ अगस्त—विलम्ब से उठा। पाचन-शक्ति भयानक रूप से विकृत हो चली है। जल्दी जागकर अपने चरित्र के सम्बन्ध में सोचने की कोशिश की। कल्पना-शक्ति बड़ी ही सजीव हो उठी है। पिता को अच्छी तरह स्मरण करने की चेष्टा की। 'परीक्षा' समाप्त करदी। आर्सेनेव आया। वैलेरिया घबराहट की दशा में थी, जिससे उसकी मूर्खता प्रकट होती थी। शाम को लिखना चाहता हूँ। लिखा।

२ अगस्त—नौ बजे उठा। माशा को विदा किया। थोड़ी देर ताश खेलने के अतिरिक्त दिन-भर लिखता रहा। घोड़े पर सवार हो, ग्रुमाण्ट गया। दो घंटे तक उस छोटे घर में विश्राम किया।

३ अगस्त—बहुत लिखा।

५ अगस्त—बाहर नहीं गया। खुशी के साथ लिखा।

६ अगस्त—आर्सेनेव के घर रहा।

७-९ अगस्त—याद नहीं। केवल इतना ही याद है कि मैंने दोनों दिन दो-दो घंटे लिखा और आर्सेनेव के यहाँ गया। वैलेरिया मेरे अन्दर वही भावना उत्पन्न करती रही—उत्सुकता और कृतज्ञता। मुझे याद है कि ८ तारीख़ को वे लोग यहीं थे। मैंने वैलेरिया को खिजाया और वह खूब चिढ़ी। मैं

आठ और नौ तारीख़ को घर पर ही रहा; क्योंकि पेट्रोवना ने गड़बड़ मचा रक्खी थी।

१० अगस्त—प्रातःकाल लिखा और शाम को उन सब के पास गया। वे लोग नहाने जाने की तैयारी कर रहे थे। वैलेरिया और मैंने शादी के सम्बन्ध बातचीत की। वह मूर्खा नहीं है। और बड़ी सुशीला भी है।

११ अगस्त—एफ्रोसीमोव्स के साथ शिकार के लिये ज़ासेस्का गया। वह है तो दयालु, पर वार्तालाप में सुस्त है। वापस शीघ्र आगया। एक तूफ़ान का-सा झोंका आया, जिसके कारण मैं आर्सेनेव के यहाँ इच्छा रखने पर भी नहीं जा सका। दूसरी नक़ल के आधार पर बैठे-बैठे छठा परिच्छेद लिख डाला। (लिखना) समाप्त किया।

१२ अगस्त—१० बजे आर्सेनेव-परिवार से विदा लेने गया। वह सदा की भाँति भोली और सुन्दरी जँचती थी। मैं जानना चाहता हूँ कि मैं उसे प्रेम करता हूँ, या नहीं ? घर आया और थोड़ा लिखा।

१३ अगस्त—दो बजे तक लिखा। ज़ासेका से मिलने वाले आते रहे, जिन्होंने मुझे आठ बजे तक परेशान किया। 'शैशवावस्था' और 'बाल्यावस्था' के साथ कोलबसिन को एक पत्र भी लिख डाला।

१४ अगस्त—तड़के उठा। सिर में दर्द है। घोड़े पर सवार हो, बाहर निकल गया। सातवाँ परिच्छेद शुरू कर

रहा हूँ। दो पृष्ठ के लगभग लिखा; पर ऐसे दिन के लिये जबकि मुझे और कोई काम नहीं है, दो पृष्ठ बहुत ही कम हैं। दो बजे ए० ए० यह खबर लेकर आया कि एन० बी० चैपीज़ा में मेरे लिये प्रतीक्षा कर रही है। मैंने कहा कि कह दो, मैं घर नहीं हूँ; पर वह दो घंटे तक इन्तज़ार करती रही। मैं गिम्बट से जवाब तलब करूँगा। लगभग बीस किसान इस बात पर राज़ी होगये हैं कि वे छुटकारे की रक़म चुकाकर छुट्टी ले लेंगे। फूफी के साथ धार्मिक विषय पर कुछ वार्तालाप किया। व्यर्थ है। अपनी भावी पत्नी के सम्पर्क में मुझे यह बात याद रखनी होगी। सेरेज़ा का पत्र आया है।

१५ अगस्त—दिन-भर घर पर ही रहा। बहुत अधिक लिखा। शाम को घोड़े पर सवार हो, बाहर निकला। एक सुन्दरी किसान-स्त्री को देखकर विचलित होगया, और चित्त अकुला उठा। वैलेरियन ने कुत्ते और अवांछनीय पत्र भेजे हैं।

१६ अगस्त—तड़के ही कुत्तों के साथ बाहर गया। एक भी खरगोश नहीं दिखलाई पड़ा। चार बजे वापस आया। सिर में दर्द था। बैकोलबैसिन और निकोलेंनका के पास से पत्र आया। कुछ लिखा नहीं।

इन दिनों वैलेरिया के सम्बन्ध में ही सोचता रहा।

१७ अगस्त—प्रातःकाल घर पर ही रहा। कुछ लिखा।

पितृ-विवाह❀ पर भी क़लम चला ही दी। भोजन के बाद घोड़े पर सवार हो, कुत्तों को साथ ले, बाहर निकला। फिर कुछ नहीं मिला। शाम को लिखा और खेला। वैले-रिया के लिये कुछ लिखा है, जो उसके पास भेजूँगा। सेरे-ज़ाको भी एक पत्र लिख लिया है।

१८ अगस्त—अब भी वृष्टि हो रही है। प्रातःकाल कुछ घसीट-घसाटकर लिखा। शाम को स्नान करने गया। और कोई काम नहीं किया,—यद्यपि मैंने निश्चय किया था कि आज से प्रतिदिन छः घण्टे का समय साहित्य के लिये दूँगा। यूजिन-सू का एक वाहियात-सा उपन्यास पढ़ा।

१९ अगस्त—थोड़ा लिखा। घोड़े पर सवार हो, कुत्तों को साथ ले, बाहर गया।

२० अगस्त—कल की भाँति।

२१ अगस्त—कल की भाँति।

२२ अगस्त—'युवावस्था' के पूर्वार्द्ध का मस्विदा तैयार कर लिया। और 'दूर का क्षेत्र'-नामक उपन्यास का कथा-नक सोचा। उसका विचार मुझे बहुत आकर्षित कर रहा है। वैलेरिया की चुप्पी से मुझे बड़ा दुःख है। आज एक ख़रगोश केवल ठोकर लगाकर मार लिया है।

२३ अगस्त—आज प्रातः गिम्बट आया। मैंने उससे कई बातों के जवाब माँगे। मेलेनिनोव आने तक तीन बज गये।

❀ 'युवावस्था' के कथानक का एक प्रसंग।

लिखा हुआ दोहराना चाहता था, पर शुरू नहीं कर सका। 'दूर का क्षेत्र' ❀ शुरू कर दिया।

२४ अगस्त—प्रातःकाल पहले दौड़ लगाई। मेलेनिनोव के पास पहुँचने के पहले तीन बज गये। एक किसान से मिला।

२५ अगस्त—सुस्ती, काहिली और आत्मिक आविश्वास। गिम्बट-परिवार·······। मैंने जो कुछ किया, वह यही कि मैं अपने नोट साफ़ करके 'लिटिल डॉरिट'-नामक पुस्तक पढ़ने बैठ गया।

२६ अगस्त—शुरू से कुछ नहीं किया डुरोवा यहाँ बैठा है—करुण अवस्था है। शाम को घोड़े पर चढ़कर बाहर गया। कुत्तों को भी साथ ले लिया था। कुछ नहीं मिला। नक़ल-नवीस आया।

२७ अगस्त—सुबह नक़ल-नवीस को कुछ लिखाया; पर यह काम सुस्ती से हुआ। दिन-भर में पाँच परिच्छेदों की नक़ल कर सका। भोजन गिम्बट के यहाँ किया। वह प्रसन्न है। शाम को लिखा।

२८ अगस्त—आज मेरा जन्म-दिवस है। तबियत प्रसन्न होने की बजाय उदास है। शाम को सब कुत्तों को साथ ले, घोड़े पर सवार हो, बाहर गया। चार अध्याय लिखे, जिनमें से आधे को फिर लिखा।

❀ यह कहानी टॉल्सटॉय पूरी नहीं कर सके थे।

२९ अगस्त—प्रातःकाल 'समझ'-नामक परिच्छेद समाप्त किया। शिकार को गया। दो (खरगोश) मार लिये। शाम को कुछ नहीं किया। वर्ग की पुस्तक पढ़ता रहा। 'कम-इल-फ़ॉट' एक निकृष्ट रचना है। ऐसी रचनाओं को पढ़कर मैं घबरा जाता हूँ।

३० अगस्त—एक परिच्छेद की साफ़ नक़ल तैयार की। कुछ देर तक नक़ल-नवीस को लिखाया। शिकार के लिये गया। तबियत भारी हो रही है। सुस्ती छायी हुई है। २८ तारीख़ से ऐसा मालूम होता है, मानों मुझे वृद्धावस्था ने घेर लिया है।

३१ अगस्त—एक परिच्छेद की साफ़ नक़ल तैयार की। कुछ नया मज़मून लिखाया। कल की तरह।

१ सितम्बर—मौसिम ख़राब है—बरफ़ पड़ रही है। 'युवावस्था' लिखी और लिखाई। बहुत ही प्रसन्न हूँ। दिन-भर घर पर ही रहा।

२ सितम्बर—सुबह से ही बोलकर लिखाना शुरू किया; पर दिन-भर तबियत ढीली रही। घोड़े पर चढ़कर बाहर गया। कल एन० आई० के पास जाना चाहता हूँ। कोई कार्य नहीं किया।

३ सितम्बर—प्रातःकाल एक ख़राब स्वप्न देखा। 'युवावस्था' के सम्बन्ध में सोचता रहा। शिकार को गया। चार मार लिये, एक खो गया। घर जाकर सो रहा। उठने के बाद एक परिच्छेद लिखवाया।

४ सितम्बर—तीन परिच्छेद लिखाये, जिनमें से अन्तिम बहुत ही सुन्दर रहा। शिकार के लिये गया; पर कुछ मिला नहीं। स्वास्थ्य ख़राब है; तमाम शरीर में दर्द है। ख़राब स्वप्न देखे। वैलेरिया के बारे में बड़े ही आनन्ददायक विचारों का प्रादुर्भाव हुआ।

५ सितम्बर—रात को अपनी अयोग्यता का सूचक एक स्वप्न देखा। तीन परिच्छेद लिखाये और उतने ही परिच्छेदों का संशोधन भी कर डाला। फूफी के साथ बड़ी मज़ेदार गपशप हुई। स्वास्थ्य अब भी ख़राब है।

६ सितम्बर—सोकर उठा तो बग़ल में दर्द था, फिर भी शिकार और सुदाकोवो को गया। कुछ नहीं मिला। सुदाकोवो में वैलेरिया की बातें सोचकर बड़ा आनन्द आया। घर लौटा, तो दर्द बढ़ गया था। डॉक्टर बुलवाया। दर्द की जगह जोंकें लगवायीं। एफ़्रॉसीमोव ने अपने आने का समाचार भेजा था, मैंने उसे न आने के लिये कहला भेजा। ऐसी (बीमारी की) अवस्था में भी मैंने एक परिच्छेद अच्छी तरह बोलकर लिखवाया।

७ सितम्बर—ग्यारह बजे सोकर उठा। कुछ अच्छा हूँ। वेरेवकिन ने आकर दिन-भर मेरे काम में बाधा डाली। भोजन के बाद चौथे परिच्छेद का एक पृष्ठ लिखा। एफ़्रॉसीमोव ने एक और सन्देश भेजा। मैंने फिर उसे न आने के लिये कह दिया।

८-९-१० सितम्बर—बहुत बीमार हूँ। बाँह में दस जोंकें लगवायीं। डॉक्टर से परामर्श लिया। दिन-भर कुछ काम न कर सकने के कारण बिछौने पर पड़ा-पड़ा कराहता रहा।

११-१२ सितम्बर—कुछ-कुछ अच्छा हो रहा हूँ। कल कुछ लिखाया। एफ़्रॉसीमोब आज आया और मैंने पूरा लिखा कर समाप्त कर दिया; परन्तु अभी इसमें बहुत से परिवर्त्तन करने हैं। एफ़्रॉसीमोव एक बड़ा मिलनसार और बुड्ढा आदमी है।

१३ सितम्बर—'युवावस्था' का संशोधन किया। फिर तबियत ख़राब है। मालूम होता है, मैं मर जाऊँगा।

१४-१५ सितम्बर—कुछ-कुछ अच्छा हूँ। कल मैंने समस्त 'युवावस्था' में हल्का संशोधन कर डाला। आज वह अपने अन्तिम रूप को प्राप्त होगया है।

१६-२० सितम्बर—दो-तीन दिन एफ़्रॉसीमोव के घर बिताये। स्वास्थ्य बहुत ख़राब है; चारित्रिक दृष्टि से मैं बहुत कमज़ोर बन गया हूँ। आज अनिच्छापूर्वक कार्य किया। मुझे क्षय-रोग मालूम पड़ता है।

२१-२२ सितम्बर—स्वास्थ्य अब भी ख़राब है। मैं समझता हूँ, मैंने काफ़ी संशोधन कर डाला है। ड्रूजिनिन के पास से एक पत्र आया है। उसे 'युवावस्था' भेजने के सम्बन्ध में उत्तर दिया है।

२३ सितम्बर—स्वास्थ्य कुछ अच्छा है। ट्रॉट्स्की

आया। 'युवावस्था' में (मैंने) संशोधन किया। उत्तरार्द्ध बहुत ख़राब है।

२४ सितम्बर—स्वास्थ्य कुछ-कुछ सुधर रहा है। वर्गानी आया। उसने जो बातें मुझसे वैलेरिया के सम्बन्ध में कहीं, उससे मैं (वैलेरिया के प्रति) विरक्त हो गया। 'युवावस्था' को बुरी तरह समाप्त कर दिया। भेज भी दिया।

२५ सितम्बर—प्रातःकाल अपनी जायदाद के बारे में सोचा। कोई कार्य नहीं किया। आर्सेनेव से मिलने गया। वैलेरिया सुन्दरी तो है, पर शोक है, कि उसमें मूर्खता भरी हुई है। यही उसकी त्रुटि है।

२६ सितम्बर—वैलेरिया आई। सुन्दरी है; पर बहुत ही सीमित और व्यर्थतापूर्ण भी है।

२७ सितम्बर—प्रातःकाल शिकार को गया। चारों ओर कीचड़ जमी हुई थी। एक ख़रग़ोश मार लाया। पानी में भीग जाने के कारण ज़ुकाम हो गया। घर आया। फूफी यह देखकर कि मैं बीमार होकर लौटा हूँ, क्रोध करके चली गई।

२८ सितम्बर—कुछ अच्छा हूँ। कुछ किया नहीं। वैलेरिया के पास से दो पत्र आये हैं। ट्रॉट्स्की आया और हम दोनों आर्सेनेव के घर गये। शाम को वैलेरिया ने मुझे प्रसन्न कर लिया। रात यहीं काटी। गले में दर्द है।

२९ सितम्बर—नौ बजे सोकर उठा। आवेश की अवस्था में था। वैलेरिया क्रियात्मक और आध्यात्मिक जीवन में अयोग्य है। मुझे जो कुछ कहना था, उसका केवल गर्हित अंश ही मैं उससे कह पाया, और इसीलिये उसका प्रभाव उसके ऊपर नहीं पड़ा। मुझे क्रोध आगया। उन लोगों ने मॉर्टियर* की भी चर्चा करदी, जिसका अर्थ यह था कि वह (वैलेरिया) उसके प्रेम-पाश में फँस चुकी है। आश्चर्य है, कि इससे मुझे क्रोध आगया। मुझे अपने ऊपर लज्जा आयी और उसके ऊपर भी; किन्तु यह पहला अवसर है, जब उसके प्रति मेरे मन में करुणा-युक्त भाव उदय हुए! 'वर्दी'× पढ़ी। अद्भुत चीज़ है। चाची ने मुझे बुलाया नहीं, और मैं एक रात और यहीं ठहर गया।

३० सितम्बर—तड़के उठा। तबियत अच्छी है। वैलेरिया के ऊपर हँसी आयी, और यहाँ से विदा हुआ। घर पर तबियत और ऊब उठी। एन० आई० यहीं था; पर काम कुछ नहीं हो सका। वैलेरिया के सम्बन्ध में बहुत सोचा। मैं यह लिखना या कहना चाहता हूँ कि उसे मॉस्को

---

* मॉर्टियर मॉस्को का एक विख्यात संगीत-कलाविद् था, जिसने वैलेरिया को बहुत आकार्षित कर लिया था। २७ अक्तूबर की डायरी में उसका ज़िक्र विशेष रूप में किया गया है।

× गेटे की प्रसिद्ध कहानी।

चली जाना चाहिए। दिन में ही सो गया; पर नींद गहरी नहीं आयी।

१ अक्तूबर—सोकर उठा। अब भी तबियत साफ़ नहीं हुई है। आधी रात के बाद बिना किसी प्रकट कारण के मेरी बग़ल में फिर दर्द शुरू हो गया। कोई कार्य नहीं किया; परन्तु ईश्वर की कृपा से वैलेरिया के सम्बन्ध में कम विचार किया। मैं उसके प्रेम में नहीं फँसा हूँ; परन्तु यह बन्धन मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंश होगा। किन्तु यदि मैं अभी तक प्रेम को समझ नहीं पाया हूँ, तो इस समय के छोटे आरम्भ से आगे बढ़कर ईश्वरेच्छा से वैलेरिया के लिये प्रगाढ़ प्रेम का परिचय देना पड़ेगा। वह बड़ी ही उच्छृङ्खल, सिद्धान्तहीन, बरफ़ की भांति ठंडी है, जिसके कारण (वह) हमेशा हल्की और अदृढ़ बनी रहती है। कोवालेव्स्की को लिखा और कल अपना इस्तीफ़ा भेज दिया।

२ अक्तूबर—स्वास्थ्य अब कुछ अच्छा है, किन्तु अब भी संदिग्ध अवस्था में हूँ। प्रातःकाल ही वर्गानी के पास से एक बुरी ख़बर आयी। उसका उत्तर दिया। साथ ही यह भी लिख दिया कि वैलेरिया को मॉस्को चली जाना चाहिए। कोई कार्य नहीं किया।

३ अक्तूबर—शिकार के लिये गया, और तीन ख़रग़ोश मार लिये। कोई कार्य नहीं किया।

४ अक्तूबर—शिकार को गया, और तीन ख़रग़ोश

मारे। घर आने पर ओल्गा आर्सेनेवा का पत्र मिला। उनके यहाँ गया। क्रोध और चिड़चिड़ेपन की अवस्था में था।

५ अक्तूबर—शिकार को गया और तीन मार लिये। कोई कार्य नहीं किया।

६ अक्तूबर—शिकार करने और एफ्रॉसीमोव से मिलने के लिये गया; किन्तु वह मिला नहीं। सैलोवा से वापिस आते समय चार ख़रगोश मारे। नेक्रासोव और पानेव को उत्तर दिया। वैलेरियन का आगमन हुआ।

७ अक्तूबर—घर पर रहा। सुस्ती और घबराहट।

८ अक्तूबर—आर्सेनेव के घर गया। मैं वैलेरियन को झिड़क देने से अपने-आपको नहीं रोक सका; किन्तु मैंने ऐसा किसी दुर्भावना के कारण नहीं, आदत के कारण किया। वह मेरे लिये एक दुःखद स्मृति के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। एक सुखान्त लिखने की कल्पना मेरे मन में उठी है; शायद मैं शुरू भी कर दूँगा।

९ अक्तूबर—घोड़े पर सवार हो, बाहर गया। सात ख़रगोश मार डाले।

१० अक्तूबर—अब भी आर्सेनेव के साथ हूँ। आज यहाँ से जा रहा हूँ। आज प्रातःकाल मेरा क्रोध दूर हो गया था, और अब अस्वस्थ होकर घर आने पर सो गया। मैं इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ कि दोष मेरा है; मुझे आज ही उस (वैलेरियन) से सब-कुछ कह देना चाहिए।

११ अक्तूबर—नौ बजे के क़रीब उठा। शिकार करते हुए माशा के घर पहुँचा। एक ख़रगोशमार कर शाम को पाँच बजे लुपात्कोवी पहुँचा। 'बर्जियस जैण्टिल होम' ❀ पढ़कर ओल्गा के जीवन को लेकर एक सुखान्त नाटक लिखने का विचार किया। अङ्क दो हों। मैं समझता हूँ, यह अच्छी चीज़ हो सकती है। डायरी का सारा हिस्सा पढ़ डाला। बहुत अच्छी रही।

१२ अक्तूबर—एक ख़रगोश देखा। नौ से छः बजे तक घोड़े पर सवार हो, ख़रगोश की तलाश में दौड़ते-दौड़ते परेशान हो गया; पर एक भी शिकार हाथ नहीं लगा। दाहनी ओर मुड़कर क्रासनो पहुँचा। एक दुःखद और प्रगाढ़ स्मृति ने मुझे विह्वल कर दिया। सुखाया लोकना की एक झोंपड़ी में घुसा, तो गन्दगी के मारे तबियत भन्ना गयी; गर्मी और तिलचट्टों की अधिकता से तबियत वैसे परेशान हो रही थी। इसके बाद फिर घोड़े पर सवार हो, क्रासनो के घरों के पास पहुँचा। जब मैं रूस में था, तभी से मुझमें विलासिता बढ़ गयी थी। घर में बुड्ढे ने मुझसे दुःखपूर्ण शब्दों में कहा कि मकान-मालिक तैयारी में लगा है, और "अपने रहने के लिये एक बढ़िया मकान बनवाना चाहता है, जैसे भगवान् उसे सदियों जीवित रक्खेगा। ऊँचा महल बनवाने से क्या लाभ!" नींद अच्छी आई............।

❀ मॉलियर की हास्यरसपूर्ण सुन्दर रचना।

१३ अक्तूबर—ग्यारह बजे क्रासनो के घरों से चल दिया। ख़ूब ठंड पड़ रही है। एक ख़रगोश को मारते-मारते छोड़ दिया, दूसरे को पोकरोव्स्क के निकट मार ही डाला। रूनिच मुझसे मिलने आया। उसने मेरी किताब ख़रीदी थीं, जो अब तुला में मिल सकेंगी। माशा की तबियत ठीक नहीं है। उसके साथ प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप हुआ। स्नानागार गया। के० के सम्बन्ध में बिल्कुल निश्चिन्त हो गया है।

१४ अक्तूबर—तड़के उठा। पॉरफिरी ने निकोले-निकोलेविच तुर्गनेव को और मुझे बड़े सन्तोष के साथ दो घण्टे तक गालियाँ दीं। दोष पूर्णतः तुर्गनेव का ही है। किसी भी प्रकार की कलापूर्ण मनोवृत्ति समाज के जीवन में भाग लेने से रोक नहीं सकती। एक घायल आदमी के पास से होकर गुजरने पर वहाँ से चुपचाप चले जाना अच्छा है, या कैसी भी स्थिति में उसको मदद देना आवश्यक है! दिन-भर कुछ नहीं किया। आइवन तुर्गनेव के पास से एक पत्र आया, जो मुझे पसन्द नहीं आया। शाम को वैलेरियन आया। मैं मॉस्को नहीं जाना चाहता। 'पिकनिक क्लब' और 'एन-रूट-मॉलियर' पढ़ा।

१५ अक्तूबर—आठ बजे उठा। थोड़ा लिखा। सुखांत नाटक का आरम्भिक भाग और तुर्गनेव को पत्रोत्तर लिखा। ड्रूजिनिन का एक पत्र आया। वह 'युवावस्था' की प्रशंसा करता है, पर अधिक नहीं। माशा के साथ बड़ा आनन्द

टॉलसटॉय की डायरी—
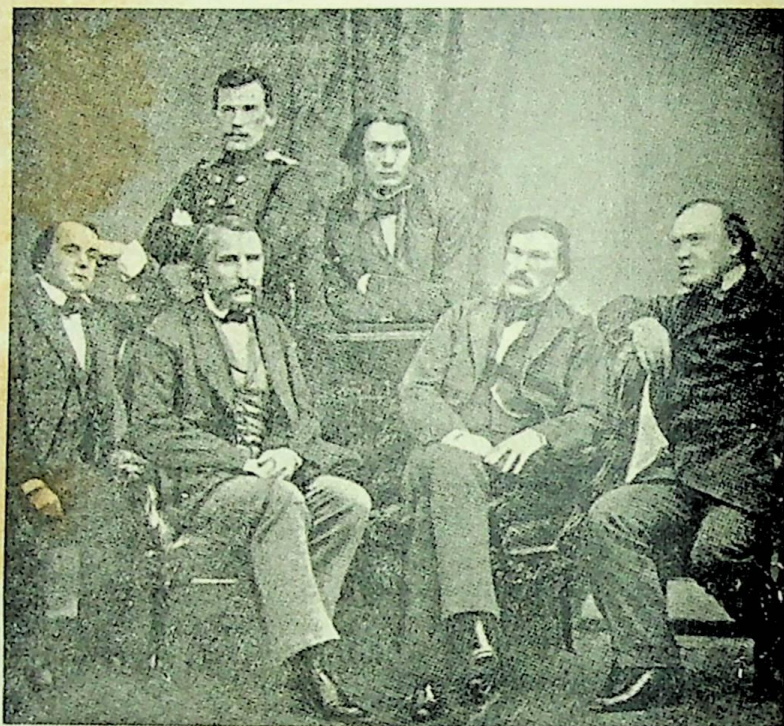
रूस के तत्कालीन प्रसिद्ध कलाकार (१८५६)
ल्यू टॉलसटॉय, डी० ग्रिगॉरॉविच
आई० गोन्शारा, आई० तुर्गनेव, ए० ड्रूज़िनिन, ए० ऑस्ट्रॉवस्की

आता है। अपने कार्य-क्रम के सम्बन्ध में बहुत-कुछ बातचीत की। मैं समझता हूँ, कल बरफ़ पड़ेगी।

१६ अक्तूबर—बरफ़ गिर रही है। शिकार को गया। बर्फ़ीला तूफ़ान आया, कुछ दिखायी नहीं दिया। दिन-भर कुछ काम नहीं किया।

१७ अक्तूबर—कोई काम नहीं किया। दो बजे घर के लिये चल पड़ा। पहले घोड़े पर सवार होकर चला। एक ख़रगोश को मारना चाहता था; पर निशाना चूक गया। रात को सेलेज़नेव-कोलोडेट्स में रहा। प्रधान साहब शराब के नशे में चूर थे। वह अपने उत्तराधिकारी के अतिरिक्त और किसी के प्रश्न का उत्तर नहीं देते थे। उन्होंने नशे में मुझे ही अपना उत्तराधिकारी समझ लिया था।

१८ अक्तूबर—तड़के रवाना हुआ। कुहरा छाया हुआ है। ज़मीन पर बरफ़ जमी हुई है। शिकार नहीं किया। तीन बजे यास्नाया पोल्याना पहुँचा। प्रसन्न हूँ। मेरा इस्तीफ़ा वापस आगया है। कोई कार्य नहीं किया। सोचना-विचारना भी बन्द कर दिया है।

१९ अक्तूबर—तुला को गया। थोड़ी देर के लिये आर्सेनेव के यहाँ गया। सेरेज़ा और पानेव के पास से पत्र आये और मेजरों के पास से रसीदें। ज़ेलेनी के यहाँ गया। एक सुस्त, पर ईमानदार आदमी है। अरागान के पास गया, जो अप-टू-डेट फैशन ग्रहण करने का बड़ा इच्छुक जान पड़ता है।

वह ज़ावालेव्स्की के अपने मकानात में रङ्गीन शीशे लगवाना चाहता है। ज़ेलेनी के घर जाकर बड़े असमञ्जस में पड़ गया। शाम को आर्सेनेव के घर पहुँचा, रात-भर वहीं रहा। वैलेरिया को अधिक शान्त समझता हूँ—वह अधिक दृढ़ हो गयी है। मैं उसके प्रति और कुछ नहीं सोचता। उसे बतलाया कि हमें फ़ैसला कर लेना चाहिए। वह प्रसन्न थी, पर उसका मन कहीं और ही था। ओल्गा बड़ी बुद्धिमती हैं। रात वहीं गुज़ारी।

२० अक्तूबर—उनके साथ बरफ़ पर फिसलनेवाली गाड़ी में बैठकर याश्नाया वापस गया। वातावरण बुरा नहीं था। पर मैं दृढ़तापूर्वक सब बात साफ़-साफ़ उससे न कह सका—इसके लिये मेरे मन में खेद है। फूफी से झगड़ बैठा। बोला—अगर वैलेरियन माशा के साथ गया, तो मैं नहीं जाऊँगा। उसने कहा—"बड़े बुरे लड़के हो!" मैंने पूछा—"क्यों?" "पहले तो जाना चाहते थे, अभी भला क्या पख लग गई?" उसने कहा। मैंने जवाब दिया—"अब मेरे जाने की ज़रूरत नहीं है।" वह बोली—"तुमने पहले तो ऐसा नहीं कहा था?" मैंने बे-हिचक जवाब दिया—"ख़ैर, तो अब कहता हूँ।" सदा जैसा होता है, वही अब भी हुआ। वह चुप होगयी। अब मैं यह नहीं लिखूँगा, कि मुझपर इस घटना का कैसा मार्मिक प्रभाव हुआ।

२१ अक्तूबर—पाँच बजे के बाद बरफ़ गिरने की प्रतीक्षा

करते-करते, न सो पाया। तब घोड़े पर सवार होकर बाहर निकल गया। छः शिकार मारे। बिबिकोव के साथ घोड़े पर चढ़कर सैर करने निकल गया। छाती तक पानी में घुसकर स्नान किया। कुशिनिको के कारखाने में जाकर सूखे कपड़े पहने। गिम्बट्स को भी वहीं पाया। फूफी का मुँह फूला हुआ है। कोई ख़ास कारण नहीं है, पर प्रकट करना चाहती है, कि मेरे सामने वह झुकेगी नहीं। असह्य !

२२ अक्तूबर—सुबह का वक़्त घर पर पढ़ने में ही बीता। फूफी अब भी नाराज़ है। मुझसे यह बर्दाश्त न हुआ, और मैं आर्सेनेव की तरफ़ निकल गया।

२३ अक्तूबर—खाने के वक़्त ख़ूब खुशी-खुशी बात-चीत होती रही। मैंने पढ़ने के कमरे में ख़ापॉविट्स्की* की कहानी वर्गानी से कही। उसने वैलेरिया को सुनाई। हाय ! मैंने स्वयं क्यों नहीं कही ! शान्त भाव से निद्रा-देवी का आलिङ्गन किया, पर प्यार की भावनाओं से दूर—ख़ासकर उनके अपने घर पर।

२४ अक्तूबर—वैलेरिया, कुछ लज्जित-सी, परन्तु सन्तुष्ट भाव से प्रकट हुई। वह स्थान छोड़ दिया। घर आकर

* विवाह और गृहस्थ-जीवन के विषय में अपने विचार प्रकट करने के लिये टॉल्सटॉय ने ख़ापॉविट्स्की की एक काल्पनिक कहानी गढ़ ली थी।

फूफी से सुलह कर ली ❀………एक नाच में गया। वैले-रिया, अनिन्द्य सुन्दरी है। मैं तो उसकी मुहब्बत में गिरफ़ार होता जारहा हूँ।

२५ अक्तूबर—उनके घर गया था, उससे बात-चीत की। बहुत ख़ूब ! मेरी आँखों में तो एक बार आँसू आने को हो गये।

२६ अक्तूबर—शिकार खेलने गया। दो मारे, देखे बहुत-से। सो गया। सिर में दर्द है।

२७ अक्तूबर—सुबह के वक्त तबियत ख़राब रही। चहलक़दमी करता रहा। कुछ नहीं लिख सकता। वैलेरिया आई। मुझे ज़्यादे आनन्द तो नहीं हुआ, लेकिन वह बड़ी प्यारी युवती है। दिल उसका साफ़ है, और स्वभाव नेक। मैंने अपनी यह डायरी उसे दिखाई। २७ अक्तूबर की तिथि "मैं उसे प्यार करता हूँ"—वाक्य के साथ समाप्त हुई थी। उसने वह पृष्ठ फाड़ डाला।

२८ अक्तूबर—घोड़े पर सवार होकर गिम्बट के घर गया, और वहीं भोजन ग्रहण किया। सुबह कुछ पत्र लिखे, और फिर वैलेरिया से मिलने चला। उसने ग़ज़ब के फ़ैशन से बाल बाँध रक्खे थे—शायद मुझे दिखाने के लिये। एक बैंजनी रङ्ग का वस्त्र पहन रक्खा था। मैंने दुःख और लज्जा

❀ इसके आगे डायरी का एक पन्ना फटा हुआ है। २७ अक्तूबर की घटना पढ़िये।

का अनुभव किया, और दिन-भर उदास रहा। बात-चीत चल न सकी। मैंने अनुभव किया कि मेरी स्थिति बड़ी हास्यास्पद बन गई है। बड़ा क्षोभ हुआ। सेरेज़ा से भेंट की। तुर्गनेव के घर पर ही उसका 'फ़ॉस्ट' पढ़ा। क्या ख़ूब लिखा है!

२९ अक्तूबर—सुबह बहुत देर तक सेरेज़ा से बातचीत होती रही। उसके साथ आर्सेनेव के पास गया। वह बड़ी अच्छी और सादी है। एक कोने में हमारी बातें हुईं।

३० अक्तूबर—शिकार को गया। वहीं वर्गानी मिल गई, और उसके साथ मैं उनके घर गया। उससे बात करना बेकार है। उसके संकुचित स्वभाव से मुझे भय लगता है। शिकार के वक़्त ख़ूब सोच-विचार करता रहा। जीवन अधिक स्वतन्त्र रीति से बिताना चाहिये। अगर बुराई से बचा जाय, तो अच्छा ही है, अन्यथा, कोई मनुष्य पूर्ण कभी नहीं हो सकता।

३१ अक्तूबर—रात उन्हीं के घर पर गुज़री। वह अनिन्द्य सुन्दरी नहीं है। मेरी हास्यास्पद स्थिति मुझे उत्तेजित कर रही है। नाच में गया, वहाँ वह सौन्दर्य की प्रतिमा जान पड़ती थी। तब उनके साथ एक होटल में गया। उन्होंने मुझे बिदा दी। मैं प्रेम में फँस गया हूँ।

१ नवम्बर—रास्ते में केवल वैलेरिया का ही विचार करता रहा। तबियत साफ़ नहीं है। मॉस्को रात होने पर पहुँचा। शिवेलियर होटल में ठहरा।

२ नवम्बर—वैलेरिया को चिट्ठी लिखी। माशा के घर गया। वह बड़ी सुन्दरी है, आज-कल ख़ूब प्रसन्न रहती है। उससे वैलेरिया का ज़िक्र किया। उसने उसी का पक्ष लिया। सन्ध्या-काल आनन्दपूर्वक बॉट्किन के घर पर बीता। फिर ऑस्ट्रॉवस्की के घर गया। बड़ा ही गन्दा आदमी है। हृदय यद्यपि उसका अच्छा है, पर विचार बड़े दक़ियानूसी हैं।

३ नवम्बर—सुवह फूफी के पास से एक चिट्ठी आई। माशा के मकान पर बच्चों के साथ नृत्य किया। बॉट्किन के घर खाना खाया। ग्रिगरिव और ऑस्ट्रॉवस्की भी वहीं थे। मैंने उनकी धारणाओं पर कठिन चोट लगाने का प्रयत्न किया। क्यों? मालूम नहीं। माशा और वॉल्कोन्स्की के मकान पर बिताया हुआ सन्ध्या-काल बहुत ही सुखद रहा।

४ नवम्बर—डिकेन्स-कृत 'दि पिकविक पेपर्ज़' पढ़कर समाप्त किया है। बहुत सुन्दर! डायरी लिखी। टिश्केविच ने आकर मुझे बाधा दी। उसके साथ बाहर गया। कॉस्टिङ्का ने वैलेरिया के विषय में मुझे चिन्तित कर दिया। उसके विषय में चाहे मुझे कम चिन्ता है, पर जहाँ कहीं भी मैं होता हूँ, एक अनिर्वचनीय अभाव का अनुभव किया करता हूँ।

५ नवम्बर—थोड़ा लिखा। माशा के घर खाना खाया। थियेटर गया।

६ नवम्बर—वॉल्कोन्स्की और टिश्केविच के साथ सैर

को गया रास्ते में 'लिटिल डॉरिट' पढ़ता रहा। खूब सोया।

७ नवम्बर—पहुँच गया। कॉन्सटेण्टिनोव को साथ लिया। अच्छा आदमी है। ग्रॉण्ड ड्यूक गीतों ❀ की बात जानते हैं। एकिमाख के आगे कैफियत देने चला। घर पर अकेले भोजन किया। शाम को ड्रुज़िनिन और अनेनकोव ×। पहले सज्जन के साथ तबियत मिलान नहीं खाती दीखती।

८ नवम्बर—सुबह वैलेरिया को एक आवेश-पूर्ण पत्र लिखा। पर उसे न भेजकर दूसरा ही भेजा। ड्रुज़िनिन और पानेव से भेंट करने गया। 'कण्टेम्पोरेरी' का सम्पादकीय विभाग बड़ा घृणास्पद है। गोन्शारा + और ड्रुज़िनिन के साथ क्ले-होटल में खाना खाया। तब वे दोनों शाम को मेरे घर आगये। क्रेस्की से मिलने गया, जिससे मुझे बड़ी ख़ुशी हुई।

९ नवम्बर—सुबह के वक़्त टिश्केविच और माकारोव ने आकर मुझे बाधा दी। क्लब में खाना खाया। वे मुझे भीतर नहीं घुसने देना चाहते थे। हमेशा बेवक़ूफ़ी! घर पर 'अप-

---

❀ टॉल्सटॉय सेवस्टॉपॉल-सम्बन्धी गीतों के एक-मात्र रचयिता थे। फ़ौज के अनेक नायकों ने इन गीतों को रट-सा लिया था, और युद्ध के समय सिपाही लोग बड़े चाव से उन्हें गाया करते थे।

× पी० वी० अनेनकोव—पुश्किन की रचनाओं का सम्पादक और एक प्रसिद्ध समालोचक।

+ आई० ए० गोन्शारा—रूस का एक लेखक।

मानित अफ़सर' ÷ का बहुत-सा अंश लिख डाला। पुस्तकें बहुत बुरी तरह बिक रही हैं........। सुबह शैपुलिन्स्की ने आकर मुझे धीरज दिलाया। कल अपनी तनख्वाह के बारे में कॉन्सटेण्टिनोव से भेंट करूँगा। सेरेज़ा, माशा और गुमाश्ते को चिट्ठियाँ लिखीं।

१० नवम्बर—दस बजे के बाद उठा। कुछ लिखने का मौक़ा भी न मिला था, कि बालीज़ेक आ पहुँचा। कॉल्बेसिन × में मकान देखने गया, और तब अखाड़े में पहुँचा। सेरेज़ा, माशा और कॉन्सटेण्टिनोव को पत्र लिखने का समय भी निकाल लिया। किताब ख़रीदी। घर पर खाना खाया। तुर्गनेव की सारी कहानियाँ पढ़ डालीं।—भद्दी! थोड़ा-सा लिखवाया। ड्रज़िनिन के साथ ओल्गा तुर्गनेवा से भेंट करने गया। ड्रज़िनिन मुझसे शर्मा गया। वास्तव में ओल्गा तुर्गनेवा, अपने सौन्दर्य के अतिरिक्त, वैलेरिया से ज़्यादे बुरी है। उसके विषय में बहुत सोचता रहा। एक मकान मिल गया है। कल जा रहूँगा, और तब लॉ-कौंसिल में

÷ यह बाद में 'मॉस्को के एक परिचित से मुलाक़ात' के नाम से 'दि कॉसेक्स' के साथ टॉल्सटॉय की रचनाओं के विश्व-संस्करण में प्रकाशित हुआ। 'कॉन्सटेबिल' ने इसे 'सेवस्टॉपॉल' के साथ प्रकाशित किया है।

× ई० या० कॉलबॉसिन—एक लेखक और समालोचक।

जाऊँगा। स्वप्न में एक विचित्र घटना देखी, जिससे वैलेरिया का सम्बन्ध था।

११ नवम्बर—सुबह सब से पहले डेरा बदला। यों-ही वाही-तबाही पढ़ता रहा। नौकरी करना चाहता था, पर रह गया। डेविडो के पास गया। 'युवावस्था' की एक आलोचना पढ़ी। बुद्धिमत्तापूर्ण और उपयोगी है। नये डेरे पर गया। क्रोध में आ गया। वैलेरिया को संक्षिप्त-सा पत्र लिखा। उसके विषय में बहुत सोच रहा हूँ। गार्देव के घर गया, और ट्रसन के साथ वापिस लौटा। वह मुझे शादी न करने की सलाह दे रहा है। अच्छा आदमी है। कल कॉन्स्टेण्टिनोव, गोन्शारा और लॉ कौन्सिल से काम है। 'जमींदार की कहानी' नक़ल के लिये ठीक-ठाक की।

१२ नवम्बर—न कॉन्स्टेण्टिनोव के पास जा सका, न लॉ कौन्सिल में। एक महीने से पहले छुट्टी नहीं मिल सकती। खाना घर खाया। प्रहसन का एक दृश्य लिखा, और वैलेरिया को डेढ़ पृष्ठ का एक पत्र।

१३ नवम्बर—दस बजे के बाद उठा। प्रहसन के दो दृश्य लिखे। अनेनकोव और डूज़िनिन-इत्यादि सभी मुझे घृणा करते हैं—ख़ासकर इसलिये, कि मैं उनसे शुभ और मित्रता का भाव रखना चाहता हूँ, जिसके कि वे अयोग्य हैं। होटल में खाना खाकर अना निकोलेवना के घर पहुँचा। शाम का वक़्त डी० कॉलबासिन के घर पर बिताया। वह एक ईमानदार, पर मुश्किल-से अच्छा आदमी है।

१४ नवम्बर—तड़के उठा। 'अपमानित अफ़सर' का कुछ अंश लिखा। पानेव के पास गया। किसी की निन्दा या कुछ प्रशंसा करने में मैं बहुत ही भावुक हूँ। घर पर खाना खाया, और किसी ख़ास मतलब से उस्तोम्स्की के पास गया। 'अपमानित अफ़सर' की रफ़-कापी तैयार कर ली। कल नेक्रासोव को चिट्ठी लिखूँगा। 'युवावस्था' का मूल्य स्थिर करूँगा, और उसे डेविड़ो को दूँगा।

१५ नवम्बर—जो निश्चय किया था, कुछ नहीं किया। सुबह उठकर 'अपमानित अफ़सर' का संशोधन करने लगा। 'हेनरी चतुर्थ' पढ़ा, और 'कएटेम्पोरेरी' पर बिगड़ बैठा। 'कएटेम्पोरेरी'-ऑफ़िस में जाकर 'अपमानित अफ़सर' की पाण्डु-लिपि पढ़कर सुनाई। उसका स्वागत न हुआ। तब ड्रूज़िनिन के साथ अनेनकोव के घर गया। हमने उसे बाजा बजाते पाया। बेज़ोब्रेज़ोव* के पास गया। साहित्यिकों और वैज्ञानिकों का समूह बड़ा ही घृणास्पद है; क्योंकि स्त्रियों का अस्तित्व यहाँ अनिवार्य होता है। अनेनकोव के साथ व्यालू किया, और बहुत-सी बातें हुईं। बड़ा मेधावी और भला आदमी है।

१६ नवम्बर—देर से उठा। दिन-भर कुछ नहीं किया। 'हेनरी चतुर्थ' समाप्त कर डाला। खाया, सोया, खेल में हारा,

* वी० पी० ब्रेज़ोब्रेज़ौव—एक अर्थ-शास्त्री। बाद में महान् कलाविद् और न्याय-सभा का सदस्य।

क्रेव्स्की से एक वादा किया। प्रेम, केवल प्रेम ही निश्चय रूप से प्रसन्नता प्रदान कर सकता है।

१७ नवम्बर—पहला काम—'ज़मींदार की कहानी' दोहराई। बहुत ही भद्दी है। घर पर खाना खाया। नौ बजे तक काम करता रहा। शाम अच्छी तरह गुज़री। मन कोमल भावनाओं से पूर्ण और शान्त था। बॉटकिन से इस बात पर झगड़ा हो गया कि कवि पाठक के हृदय की कल्पना स्वयं करता है, या नहीं। वह अस्पष्ट उत्तर देकर छूटना चाहता है। ड्रूज़िनिन ने भलमनसी का परिचय दिया। कॉल्बासिन से १०० रूबल प्राप्त हुए।

१८ नवम्बर—'अपमानित अफ़सर' को दोहराया। बॉटकिन के घर खाने गया। वक्त मज़े में कटा। कूल्हे के दर्द का इलाज कराने डॉक्टर के पास गया। ड्रूज़िनिन का लेख पढ़ा। ट्रूसन आया। पहले तो मैं खिन्न-सा रहा, फिर उत्साह आ गया और दो बजे तक बातें होती रहीं।

१९ नवम्बर—सुबह सुस्ती के मारे कुछ शुरू न कर सका। 'ज़मींदार की कहानी' का कुछ अंश लिखा। वैलेरिया का एक पत्र मिला। पत्र बुरा नहीं है, पर आश्चर्य—काम की अधिकता के कारण मैं उसकी तरफ़ से उदासीन होगया हूँ। घर खाना खाया। शराब ने मुझे निद्रित कर दिया। वैलेरिया को शिष्टतापूर्ण पत्र लिखा, और नौ से दो बजे तक काम किया। आधे से ज़्यादे हो चुका है।

२० नवम्बर—दस बजे उठा। थोड़ा-सा लिखा। ड्रज़िनिन के घर खाना खाया। पिसेम्स्की* भी वहीं था, जो साफ़ तौर से मुझे पसंद नहीं करता। इससे मुझे दुःख होता है। ड्रज़िनिन ने मेरी बात सुनी-अनसुनी कर दी, जिससे मुझे क्रोध आगया। घर पर वैलेरिया का एक पत्र आया पड़ा था। उसके पत्रों में कोई नवीनता नहीं है। अविकासित प्रेम की अवस्था है। उसको उत्तर लिखा। तीन बजे सोया।

२१ नवम्बर—एक बजे उठा। मेकोव+ आया। स्टॉलीपिन के घर पर भोजन किया। उसकी पत्नी के प्रति विनम्र व्यवहार नहीं किया। शाम का सारा वक़्त बॉटकिन के घर बीता। 'ज़मींदार की कहानी' पढ़ी। बहुत ही भद्दी है, मगर मैं उसे प्रकाशित कराऊँगा। अना निकोलेवना के घर गया, इसलिये मन ग्लानि से भरा हुआ है।

२२ नवम्बर—ग्यारह बजे उठा। लिखना चाहता था, लेकिन न लिख सका। पानेव के घर भोजन किया। फिर शाम तक क्रेव्स्की के यहाँ ठहरा। साहित्यिक वातावरण से

---

* ए० एफ० पिसेम्स्की—अनेक सफल उपन्यासों का प्रसिद्ध प्रणेता। टॉल्सटॉय के 'सेवस्टॉपॉल' के प्रथम संस्करण को देखकर उसने उनके विषय में कहा था—"यह युवक-अफ़सर हम सब से आगे बढ़ जायगा, हमें अपनी क़लम फेंक देनी चाहिये।"

+ ए० एन० मेकोव—एक कवि।

मुझे इतनी घृणा होती जा रही है, कि किसी चीज़ से नहीं हुई थी। वैलेरिया को पत्र लिखा। उसके विषय में बहुत-कुछ सोचता रहा। शायद इसलिये, कि पिछले कुछ दिनों से किसी स्त्री से भेंट नहीं हुई।

२३ नवम्बर—एक बजे उठा। टिश्केविच ने आकर बाधा डाली। थोड़ा-सा संशोधन किया। घर पर ही खाना खाया। फिर संशोधन में लगा। वैलेरिया का एक सुन्दर पत्र प्राप्त हुआ। उत्तर दिया। अना निकोलेवना के विषय में विचार करता रहा;—साथ-ही-साथ वैलेरिया का ख़याल तो बहुत-बहुत किया। क्या ही अच्छा होता, कि कला के विषय में मेरे जो विचार अब हैं, उन्हीं के अनुसार मैं अब तक पत्रों में लिखता रहता। कितना ऊँचा और पवित्र !

२४ नवम्बर—दस बजे उठा। काफ़ी संशोधन कर डाला। अखाड़े में जल्दी चला गया। लोविच के यहाँ गया, कॉर्से-कोव से मिला, और उसके साथ अक्खड़पन से पेश आया—जिसके लिये मुझे ख़ुशी है। घर पर खाना खाया, शाम का सारा वक़्त अकेले बिताया। वैलेरिया को एक छोटी-सी चिट्ठी लिखी।

२५ नवम्बर—नींद अच्छी तरह नहीं आई। नौ बजे उठा। मित्र-मण्डली में गया। यूनिवर्सिटी में बाजा बड़ा वाहियात बज रहा था। बादशाह ने 'शैशवावस्था' पढ़ ली है। आज पिंजरापोल भी गया था। वहाँ एक स्त्री को देखा।

उसकी आँखें भावुकतापूर्ण थीं। सुबह और भोजन के पहले काम करता रहा। घर पर खाना खाया। प्रिय अनेनकोव और मनहूस बेकुनिन आये। कल खेलने जायेंगे। उस भावुकता-पूर्ण नेत्रोंवाली रमणी के साथ-साथ वैलेरिया की याद आगई, और मैं भयभीत हो उठा।

२६ नवम्बर—दस बजे उठा। लिखा। दैनिक व्यायाम किया। घर पर खाना खाया। 'ज़मींदार का प्रभात' लिखवाया। अच्छा है। पहले वैलिज़ेक आया, फिर ड्रूज़िनन। प्रसन्न और आनन्दित हूँ। वैलेरिया के पास से लड़कपन से भरी हुई एक चिट्ठी मिली। ओल्गा तुर्गनेव को देखने गया। वहाँ मन कुछ विषादमय होगया। पानेव के डेरे पर पहुँचा। उसने मुझे निरुत्साहित किया।

२७ नवम्बर—दस बजे उठा। वैलेरिया को एक वाहियात चिट्ठी मिली। पोलत्सोव ने बॉबरिन्स्की के विषय में मुझसे ज़िक्र किया ! पशु ! 'ज़मींदार का प्रभात' समाप्त कर डाला। व्यायाम। गाना, कालोशिन। अनेनकोव,...शराब पी।...... वाल्का को एक उपेक्षा-पूर्ण पत्र लिखा।

२८ नवम्बर—देर से उठा। व्यायाम। टाँगों में दर्द है। छुट्टी मिल गई। भोजन किया। अनेनकोव, बॉटकिन और मेकोव के पास गया। उसका कण्ठ-स्वर बड़ा मधुर है। ड्रूज़िनिन के घर हम चारों ने आनन्दपूर्वक सन्ध्या-काल बिताया। कॉल्बासिन से १०० रूबल और लिये।

२९ नवम्बर—आज का दिन यों-ही गया। याद नहीं, क्या-क्या किया। कुछ प्रूफ़-संशोधन किया। हाँ, 'ज़मींदार का प्रभात' समाप्त कर डाला, और स्वयं उसे क्रेव्स्की के पास लेगया। वहाँ खूब उत्साहित रहा ! एक अनुदार दल-वाले से लड़ बैठा। कामेन्स्की, ड्युडिश्किन और गोन्शारा ने 'ज़मींदार का प्रभात' की कुछ प्रशंसा की। वैलेरिया के बिषय में अब सोचना बन्द कर दिया है।

३० नवम्बर—सुबह एक गाड़ी किराये की, और कॉन्स्टेण्टिनोव के यहाँ गया; पता नहीं क्यों ? अब भी फ़ौजी वर्दी पहनी नहीं जाती। बाज़ार में घूमा, पुस्तकें ख़रीदीं, और कपड़ों के लिये ऑर्डर दिया। व्यायाम किया। टाँग अभी तक दुख रही है। घर पर ही खाना खाया। प्रूफ़ ठीक किये। 'छूटा हुआ अफ़सर' बहुत भद्दा मालूम होता है। अना निकोलेवना के घर पहुँचा, और वहाँ याकोवेल्व से भेंट हुई। एक बीमा और वैलेरिया का एक सुन्दर पत्र प्राप्त हुआ। बादशाह ने 'शैशवावस्था' पढ़ी, तो रो पड़ा।

१ दिसम्बर—ग्यारह बजे उठा। दिन-भर का कार्य-क्रम नोट किया, और कसरत के समय तक खेलता रहा। बाँह में सख़्त चोट आगई। घर पर खाना खाया। 'कारमेन' (प्रॉस्पर मेरिनी की कहानी) पढ़कर समाप्त कर दी है। भाषा शिथिल है। तुर्गनेव का एक पत्र मिला। उत्तर भी लिख दिया। सो गया। पोलोन्स्की (एक कवि और गद्य-

लेखक) आया। बॉटकिन बड़ा भद्दा आदमी है। उसके साथ ऑपेरा (नाच-रङ्ग की जगह) गया। बहुत बुरी जगह है। वैलेरिया को एक अच्छा पत्र लिखा; न विरक्ति-सूचक न प्रेम-पूर्ण। एक पत्र कतकोव ❀ को लिखा। कल फूफी को भी पत्र भेजूँगा। निकोलेंका और सेरेज़ा को भी लिखना है। शेविच, ऑब्लॉन्स्की और स्टॉलिपिन के पास गया।

२ दिसम्बर—'छूटा हुआ अफ़सर' सेन्सर से पास न हो सका। युनिवर्सिटी में गया। फिर स्टॉलीपिन के घर। वह बड़ा कूढ़-मग्ज़ है। बॉटकिन के यहाँ पहुँचा। दुस्यू के घर खाना खाया। ड्ज़िनिन और अनेनकोव के साथ अनन्दपूर्वक सन्ध्या-काल बीता। बहुत रुपया ख़र्च होगया। शेचिव को चिट्ठी लिखी।

३ दिसम्बर—कुछ नहीं लिख रहा हूँ। मेरिनी की रचनायें पढ़ीं—ख़ूब! प्रहसन के विषय में विचार कर रहा हूँ। व्यायाम किया। ठीक; कोई तकलीफ़ नहीं। घर पर खाना खाया। पढ़कर सो रहा। शेविच के घर गया। उदास हूँ। खेला। बॉटकिन के यहाँ पहुँचा। पानेव

❀एम० एन० कतकोव, 'रशियन मैसेञ्जर'-नामक एक मासिक-पत्र का सम्पादक, जिसमें बाद में टॉल्सटॉय ने 'अना केरेनिना' और 'युद्ध और शान्ति'-नामक अपनी प्रसिद्ध रचनायें प्रकाशित कराईं।

'युवावस्था' की बहुत तारीफ़ करता है। तबियत प्रसन्न है। 'छूटा हुआ अफ़सर' के प्रूफ़ पास किये। डेविडो के पास गया—बिल। पानेव के पास गया—शर्तें। पत्र लिखने—सेरेज़ा और तातियाना अलेग्ज़ैण्ड्रोवना को।

४ दिसम्बर—कुछ नहीं लिखा। बॉटकिन के घर खाना खाया। गाना सुनने गया—छीः! मेश्चेन्स्की के बाज़ार में घूमता फिरा—छीः! घर पर एक सुन्दर कहानी 'सामान्य कहानी' पढ़ी। मन अच्छा नहीं है।

५ दिसम्बर—सुबह 'साधारण कहानी' पढ़ी, और उसे वैलेरिया के पास भेज दिया। सेरेज़ा और फूफी को पत्र लिखे। 'अपमानित अफ़सर' का संशोधन किया। व्यायाम किया। शेविच की एक भद्दी कहानी सुनी। ड्रूज़िनिन के यहाँ गया—ख़ासा रहा। पानेव के साथ तय किया। निकोलेंका और माशा को पत्र लिखे।

६ दिसम्बर—पोलोवन्सोव के साथ दुस्यू के घर खाना खाया। वहाँ से चला। अना निकोलेवना के घर आया। परमात्मा का धन्यवाद—सब ठीक-ठाक था। वैलेरिया के पास से दो नम्रता-पूर्ण, परन्तु दुःखद, पत्र आये। मैडम शेविच आईं। व्रास के साथ स्टॉलीपिन के घर खाना खाया।

७ सिसम्बर—देर में उठा। वैलेरिया को चिट्ठी लिखी। व्यायाम किया। घर पर ही खाना खाया। 'बेचारी प्रेमिका' (ऑस्ट्रॉवस्की का एक नाटक) पढ़ा। चीज़ कमज़ोर है।

नायिका का चित्रण अच्छा हुआ है। सर्कस गया। पता नहीं क्यों, दुस्यू के घर खाना खाया। ड्रुज़िनिन का दूसरा लेख पढ़ा।

८ दिसम्बर—ग्यारह बजे उठा। कुछ ख़रीदने बाज़ार में निकल गया। व्यायाम किया। घर पर ही खाना खाया। मित्र लोग मिलने आये। कान्सिटेण्टिनोव के पास जाना है।

९ दिसम्बर—देर से उठा—सदा अनिद्रा। मनहूस टिश्केविच आ पहुँचा। कॉन्स्टेण्टिनोव के यहाँ गया। निकेव से भेंट हुई। तब दोपहर तक मटरगश्ती करने के बाद दुस्यू के घर खाना खाया। सो रहा। तब अरबैच (एक जर्मन-औपन्यासिक, टॉल्सटॉय जिसके प्रशंसक थे) की रचना का थोड़ा अंश पढ़ा।

१० दिसम्बर—सुबह दो से आठ बजे तक अरबैच की मधुर कृति 'बिफ़ेल' पढ़ता रहा। ओलख़िन ने आकर जगाया —गधा कहीं का! 'युवावस्था' को फिर दोहराया। व्यायाम। वालेत्का नाराज़ होगई। डॉनन के घर खाना खाया। वैलेरिया का एक दुःख-पूर्ण पत्र मिला। शर्म की बात है, कि उसे पढ़कर मुझे आनन्द हुआ।

११ दिसम्बर—'लियर' पढ़ा। मैं विचलित हुआ, पर थोड़ा-सा। व्यायाम। खाना पर पर। बॉटकिन के यहाँ गया। उदास रहा।

१२ दिसम्बर—'युवावस्था' की एक छपी हुई पुस्तिका ठीक की। वैलेरिया को एक अन्तिम पत्र लिखा। दुस्यू के घर खाना खाया। दोस्तों से मिला। तबियत बहुत उदास है। स्वप्न में मैंने किसी का वध होते देखा, और किसी भूरी औरत को अपनी छाती पर चढ़े हुए देखा। वह नग्न खड़ी हुई झुक रही थी, और मेरे कान में कुछ कहना चाहती थी।

१३ दिसम्बर—देर से उठा। 'युवावस्था' के लिये समय न मिला। स्टॉलीपिन के यहाँ खाना खाया। न तुर्गनेव घर मिला, न बॉटकिन। शाम वैज़ोब्रैज़ोवा के पास बीती। स्त्री है न—इसलिये उसके साथ समय बिताने में आनन्द मिला।

१४ दिसम्बर—छः बजे तक नींद न आई। ज़ुबकोव आया। एक किताब का संशोधन किया।। व्यायाम किसा। बॉटकिन के घर भोजन। मेकोव के मकान पर सन्ध्या बीती।

१५ दिसम्बर—……व्यायाम में देर हो गई। 'युवावस्था' के तीसरे भाग का संशोधन आरम्भ किया है। सिर-दर्द। टिश्केविच के साथ दुस्यू के घर खाना खाया। मित्र-मण्डली आ जुटी।

१६ दिसम्बर—ढाई बजे उठा। तबियत साफ़ की, कोवालेव्स्की के पास गया। ऐतिहासिक मसाला एकत्रित किया। मैडम बी० का मामला ठीक-ठाक किया। साढ़े तीन बजे बॉटकिन के घर पर। प्रूफ़ ठीक किया, और बातें होती

रहीं। वहाँ से ए० टॉल्सटाया ॐ के पास गया। उसकी माँ बड़ी दयाशील, और उदारमना रमणी है।

१७ दिसम्बर—ग्यारह बजे उठा। तीसरे खण्ड का दोहराना आरम्भ किया। प्रूफ़ आये, मिले-जुले और सेन्सर-द्वारा कटे-छँटे। तबियत आज अच्छी रही। बॉटकिन के घर खाना खाया। उसके लेख की तारीफ़ नहीं की। वह नाराज़ हो गया। फिर ओल्गा तुर्गनेवा के पास। ओल्गा से मिलकर सदा अप्रसन्न होता हूँ। यह स्वयं तुर्गनेव का क़सूर है। कल जोहन के पास जाना और निकोलेंका, फूफी और वैलेरियन को चिट्ठियाँ लिखनी।

१८ दिसम्बर—११ बजे बुलाहट हुई। घोड़े पर सवार होकर पिता जोहन की सेवा में गया। ······पानेव के पास गया। चर्नीशेवस्की × भी वहीं था। थोड़ी देर बाद सारी मित्र-मण्डली वहीं आ इकट्ठी हुई। उन्हीं के साथ दावत उड़ी। बहुत रुपया ख़र्च रहा हूँ। व्याज़ेम्स्की के पास जाना है।

१९ दिसम्बर—देर से उठा, संशोधन का समय न

ॐ बहुत दिन तक टॉल्सटॉय राजकुमारी अलेग्ज़ैण्ड्रा टॉल्सटॉया के प्रति आकृष्ट रहे।

× एन० जी० चर्नीशेव्स्की—एक प्रसिद्ध प्रकाशक और आलोचक। अपने समय में उसके एक उपन्यास—'क्या करें ?' ने काफ़ी हल-चल मचाई थी।

मिला। व्यायाम। स्टॉलोपिन के घर खाना खाया। शाम ड्ज़िनिन और स्टैरवोविच के साथ।

२० दिसम्बर—अनिद्रा। तबियत गड़बड़। तुर्गनेव का एक सौहार्द्र-पूर्ण पत्र मिला। व्याज़ेम्स्की के यहाँ गया। सब ठीक था। व्यायाम। बॉटकिन के साथ खाना। शाम को बैज़ोव्रैजोव के साथ। एक प्रहसन में हँसो का फ़व्वारा। व्यालू अनेनकोव और ड्ज़िनिन के साथ किया।

२१ दिसम्बर—साढ़े सात बजे उठा। प्रूफ़-संशोधन और गाने-बजाने में दो बज गये। व्यायाम। बॉटकिन के घर खाना खाया। वही मित्र-मण्डली। अनेनकोव बेहद अच्छा आदमी है। तुर्गनेव को पत्र लिखा, और कुछ शब्द निकोलेंका, फूफी और माशा को भी। मैडम स्टैरवोविच से जाकर मिला और ग्यारह बजे लौटकर बिस्तर में पड़ रहा।

२२ बिसम्बर—दस बजे उठा। प्रूफ़-संशोधन करता रहा। व्यायाम। एक परिचित के यहाँ दावत उड़ाई। 'युवावस्था' का संशोधन। ग्यारह बजे लौटकर सो रहा।

२३ दिसम्बर—युनीवर्सिटी में कोवलिव्स्की के पास गया। फिर प्रेसवालों के यहाँ। बॉटकिन के घर खाना।

२४ दिसम्बर—बकुनिन, अनेनकोव और कॉल्बासिन के पास गया। व्यायाम। बॉटकिन के घर पर भोजन। व्यासेम्स्की से सेन्सर के मामले पर बात करने गया। तब स्टॉलीपिन के घर पर गाना-बजाना हुआ।

२५ दिसम्बर—देर से उठा। सुबह कोई बुद्धिमानी का कार्य नहीं किया। घूमता-घामता बाहर निकल गया। बॉटकिन के घर खाना खाया। फिर ओल्गा ए० के यहाँ गया। वह बहुत ही अच्छी है। मित्र-मण्डली के साथ दुस्यू के घर ब्यालू किया।

२६ दिसम्बर—सैर की। स्टॉलीपिन के घर खाना खाया। शाम तुर्गनेव के घर बीती।

२७ दिसम्बर—व्यायाम। सुबह मित्र लोग आ पहुँचे। बॉटकिन के घर भोजन। फ्रेञ्च थियेटर गये। शाम बेज़ो-ब्रैज़ोव के घर बीती।

२८ तिसम्बर—देर से उठा। प्रहसन के विषय में विचार करता रहा। वाहियात। व्यायाम। सर्टीफ़िकेट मिल गया है। शेविंच के साथ खाना खाया। व्यासेम्स्की ने अन्तिम परिच्छेद निषिद्ध ठहराया है। नेक्रासोव का एक पत्र मिला। अप्रत्या-शित भाव से ड्रज़िनिन के पास पहुँच गया। प्रूफ़ ख़तम नहीं हुए। नये साल की खुशी में कुछ मित्र लोग आ पहुँचे।

२९ दिसम्बर—देर से उठा। वैलेरिया का एक लम्बा पत्र मिला। बहुत दुःखद! व्यायाम। घर पर नाराज़ हो गया। बॉटकिन के घर खाना खाया। सेन्सर की मूर्खता और अज्ञान भयानक हैं। मित्र-मण्डली के साथ घर पर राग-रंग होता रहा। अच्छा रहा। मेरी नसें अब तक बेक़ाबू हैं।

३० दिसम्बर—युनीवर्सिटी का बाजा ख़ूब रहा। गतें लाजवाब। कोवलिव्स्की के यहाँ गया। वह बड़ा चलता-पुर्ज़ा है। बॉटकिन के घर खाना खाया। उसके साथ शाम यहीं बिताई। तब गार्दीव से गप-शप हुई। शराब से थक गया हूँ।

३१ दिसम्बर—बकुनिन। व्यायाम। भोजन। स्टॉलिपिन के घर। गाना-बजाना। बस काफ़ी।

[१८५७]

१ जनवरी—रात में नींद अच्छी तरह नहीं आई। पिछले चार दिन में संगीत बेहद सुना है। क़रीब ११ बजे उठा, और तुर्गनेव का एक शुष्क, परन्तु सुन्दर, पत्र मुझे मिला। एक दृढ़ता-द्योतक पत्र वैलेरिया को और एक नेक्रासोव को लिखा, जिसको भेजने की मुझे सलाह न दी गई। एण्डरसन की एक बच्चों की कहानी का अनुवाद किया।* खाने के वक्त बॉटकिन के घर उसे पढ़कर सुनाया, मगर वह पसन्द नहीं की गई। नेक्रासोव ने बॉटकिन का एक पत्र मुझे दिया, जिसमें मेरी बड़ी प्रशंसा की गई है। वार्तालाप ख़ूब मज़े से हुआ। ओल्गा तुर्गनेवा से मिलने गया, और साढ़े ग्यारह बजे तक वहीं रहा। वह मुझे इतनी पसन्द आई, जितनी पहले कभी नहीं आई थी। मैस्करेड (ऐसी संस्था, जहाँ स्त्री-पुरुष

---

* उल्लिखित कहानी का नाम 'बादशाह की नई पोशाक' था, जिसे टॉल्सटॉय बहुत पसन्द करते थे। वे उसे राज-नीतिक महत्व दिया करते थे। अपनी मन्तव्य की पुष्टि में वे कहते थे, कि इस कहानी से यह स्पष्ट हो जाता है, कि राज-कर्मचारियों के छल-पूर्ण प्रभाव को सच्ची और निर्भीक बात कितना शीघ्र नष्ट कर देती है।

नक़ाब पहनकर मनमानी किया करते हैं) में जाने से अपने को रोक न सका।

२ जनवरी—देर से उठा। व्यायाम किया, फिर बॉटकिन के घर खाना खाने गया। वहाँ से अनेनकोव और ड्रूज़िनिन के पास पहुँचा। वहाँ फ़ण्ड × के लिये एक प्रोग्राम तैयार किया। सुबह बेलिन्स्की की रचना पढ़ी, जो मुझे पसन्द आई। सख़्त सिर-दर्द।

३ जनवरी—बहुत देर से उठा। पुश्किन के विषय में एक बहुत बढ़िया लेख + पढ़ा, और ब्लुडोव और शेविच से मिलने गया। ब्लुडोव नहीं मिला। शेविच ने हमारे कार्य-क्रम में कोई हिस्सा लेने से इन्कार कर दिया। व्यायाम किया। बॉटकिन के घर खाना खाया। उसकी आदत बड़ी मधुर, बच्चों की-सी है; कुछ हद तक कवित्व-पूर्ण भी। वहाँ से नौ बजे के बाद क्रेव्स्की के घर और आधी रात के निकट मैस्करडे। पहले तो तबियत नहीं लगी, पर जब स्टॉलीपिन और स्टैकोविच के साथ खाना खा रहा था, तो एक 'मधुर मूर्त्ति' से भिड़न्त

× यह प्रोग्राम 'साहित्यिक फ़ण्ड' के लिये था, जिसे सरकारी तौर से—'विद्वानों और ग़रीब लेखकों को सहायक देनेवाली संस्था' कहा जाता था। इस संस्था का काम १८५९ में शुरू हो गया था, और तब तक अपना कार्य सुचारु रूप से करती रही, जबकि बोल्शेविकों ने इसे नष्ट कर दिया।

+ प्रसिद्ध आलोचक बेलिन्स्की का एक लेख।

हो गई। बहुत देर तक उसे पटाता रहा। वह मेरे साथ घर आगई, और नक़ाब हटाने से बहुत देर तक इन्कार करती रही। खोलने पर मालूम हुआ, कि एक अच्छी खासी बुढ़िया-खूसट थी!

४ जनवरी—एक बजे के बाद उठा। पुश्किन के सम्बन्ध का लेख अद्भुत है। अब कहीं मैं पुश्किन को समझ पाया हूँ। व्यायाम किया। बॉटकिन के घर सिर्फ़ पानेव के साथ भोजन किया। उसने पुश्किन की कुछ चीज़ें पढ़कर मुझे सुनाईं। मैंने बॉटकिन के कमरे में जाकर तुर्गनेव को एक पत्र लिखा। तब सोफ़े पर बैठकर अनेक कवित्वपूर्ण मन्तव्य प्रकट किये। इन दिनों में मैं बहुत प्रसन्न रहा हूँ! नैतिक आन्दोलन की गति-विधि देखकर मैं उत्साह से पागल हुआ जा रहा हूँ।※ शाम को ड्रूज़िनिन और पिसेम्स्की के पास गया, और अपनी आशाओं के प्रतिकूल, समय आनन्द से कट गया। उसकी पत्नी बहुत ही अच्छी स्त्री है।

५ जनवरी—बारह बजे के बाद उठा। एफ़० टॉल्सटॉय ×

※ अलेग्ज़ैण्डर द्वितीय का प्रारम्भिक शासन-काल, जब-कि गुलामी की प्रथा तोड़ने की तैयारी हो रही थी, और मुक़दमों का फ़ैसला ज्यूरी-प्रथा के द्वारा शुरू किया जाने-वाला था, तथा प्रेस पर लगाई हुई सेन्सर-पद्धति दूर की जानेवाली थी। यह समय बड़ी-बड़ी आशाओं से पूर्ण था।

× काउण्ट फ़ेढर पेट्रीविच टॉल्सटॉय, एक प्रसिद्ध मूर्त्तिकार, जो बाद में कला-परिषद् का प्रधान हुआ।

के पास गया, जहाँ युलीविशेव से भेंट हुई, और मूर्खता-पूर्वक बॉसिओ+ से मिलना अस्वीकार कर दिया। टॉल्स-टॉय के घर पर ही भोजन किया। उन लोगों के साथ मुझे बड़ा आनन्द मिलता है। घर में ढेर के ढेर आदमी हैं! पिसेम्स्की की रचना 'महिला' ने मुझ पर कोई प्रभाव नहीं डाला, और न सङ्गीत ने ही..........
स्टॉलीपिन बड़ा अच्छा आदमी है। मन पर किसी अज्ञात दुःख की छाया है। एक बेला बजानेवाले❀ से भेंट हुई।

६ जनवरी—१२ बजे के क़रीब सिर-दर्द लेकर उठा। बकुनिन पहले से मौजूद था। गुलामों की मुक्ति के विषय में समाचार मिला। बकुनिन और कॉल्बासिन के साथ खेला। तुर्गनेव के घर गया। ओल्गा से भेंट नहीं हुई। बुड्ढे ने मुझे क्रोधित कर दिया। बॉटकिन के घर खाना खाया। हम घुड़सवारी के विषय में वार्त्तालाप करते हुए चले। मैं उसे

+ एञ्जेलिना बॉसिओ—इटली देश की एक तत्कालीन प्रसिद्ध गायिका।

❀ इस बेला बजानेवाले का नाम किज़वेटर था, यह अपने समय का अच्छा सङ्गीतज्ञ था। परिचय हो जाने पर टॉल्सटॉय उसे अपने घर याश्नाया पोलयाना ले गये, और उसकी सहायता से सङ्गीत का अध्ययन किया। टॉल्सटॉय ने अपनी 'एल्बर्ट'-नामक कहानी में इसका चित्रण किया है।

अधिकाधिक पसन्द करता जाता हूँ। घर गया। नौ बजे क़रीब ए० पी० आया। बहुत ख़ूब! शेरबतोव के घर तबियत नहीं लगी। उस मूर्ख व्यासम्स्काया से मैंने बेलिन्स्की का ज़िक्र किया था। सुखोम्लिन का स्वभाव बहुत अच्छा है। ड्रुज़िनिन और अनेनकोव के साथ आनन्दपूर्वक ब्यालू किया।

७ जनवरी—सात बजे उठा, पता नहीं क्यों,—और दो बजे तक कुछ न लिख सका। सिर्फ़ खेलने और पढ़ने में ही वक़्त बिता दिया। विद्रोह की बात बे-सिर-पैर की है। पर यह सच है, कि लोगों में कुछ हल-चल है।× घर पर अच्छी तरह खाना खाया। सोया। स्टॉलिपिन के घर पर सङ्गीत सुनने की मेरी इच्छा नहीं हुई, मेरी नाड़ियाँ सुषुप्त थीं। किज़वेटर की कहानी ने मुझे आकर्षित किया।

८ जनवरी—मेरे ये शब्द याद किये जायेंगे—कि दो वर्ष के भीतर किसानों का उत्थान होगा, अगर उससे पहले-ही बुद्धिमत्तापूर्वक उनको स्वतन्त्र न कर दिया गया। उठा। मौसम बहुत अच्छा था। पहला आदमी, जिससे मैं मिला किज़वेटर था। व्यायाम के बाद मैं बेला ख़रीदने बाज़ार

×दास-प्रथा के अन्त के पूर्व अनेक बे-जड़ की अफ़वाहें उड़ने लगी थीं। जैसे, किसान दास-प्रथा का लोप नहीं चाहते। नौकरी से छूटने पर उन्हें क्या मिलेगा?—इत्यादि।

गया । ड्रूज़िनिन से भोजनशाला में भेंट हुई । और कोई नहीं आया । कैसी अद्भुत बात है, कि जब मैं अकेला होता हूँ, तो तबियत परेशान होजाती है । किज़वेटर आया । वह अत्यन्त मेधावी, सुसंस्कृत और गम्भीर व्यक्ति है । सिधाई और प्रतिभा उसका विशेष गुण है । बाजा बहुत अच्छा बजाया । ए० पी० भी आ पहुँची । उसे सब ने बेहद पसन्द किया । कॉल्बासिन भी वहीं था । बड़ा अच्छा आदमी है ।

९ जनवरी—सुबह व्यायाम किया । उससे पहले मैंने आनन्दपूर्वक लिखना आरम्भ किया । एफ़० टॉल्सटॉय आया । बॉटकिन के घर खाना खाया । सन्ध्या पिसेम्स्की के यहाँ गुज़री । फ़िलिपोव बड़ा ही शरीफ़-बदमाश है ।

घर पर ए० पी० आई । सन्ध्या बड़े मज़े से बीती; बड़ी ही बुद्धिमती और सुन्दर स्त्री है ।

१० जनवरी—व्यायाम किया । पास-पोर्ट मिल गया, और मैंने जाने का निश्चय कर लिया है । पानेव से मैंने रुपया लिया । ब्रिमर, ट्रूसन और स्टॉलीपिन के साथ मैंने भोजन किया । किज़वेटर ख़ूब शराब में मस्त होकर आया । बहुत बुरा व्यवहार किया । किज़वेटर की औरत अच्छी ख़ासी ज़िन्दी लाश है । स्टॉलीपिन, गोर्शाका और ब्रिमर आये । किज़वेटर से गोर्शाका की दोस्ती होगई है । किज़वेटर ने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया ।

११ जनवरी—ट्रेन छूट गई, और कॉल्बासिन को जगाया। चर्नीशेव्स्की आया। बुद्धिमान व्यक्ति है। व्यायाम किया। घर पर ही खाना खाया। कोवेलिन ने आकर जगाया। उससे ८०० रूबल उधार लिये। वह नहीं आई, और इससे मेरा चित्त दुःखित हुआ।

१२ जनवरी—नौ बजे मैं रवाना हो गया। मार्ग में बहुत-से अस्त-व्यस्त विचार मन में आये। एक नवयुवती यात्रा में हमारे साथ थी। ग्रिगॉरॉविच की कहानियाँ वाहियात हैं।

१३ जनवरी—दो बजे तक सोया। माशा से मिलने गया। वह दुःखित और अकेली है। पॉलिना (फूफी) ६० बरस की खूसट बुढ़िया है। क्लब-घर गया, ग्रैनोवस्की ❀ के मामले में चरकास्की से लड़ बैठा। बड़ा ही रूखा आदमी है।

१४ जनवरी—कॉस्तिका अधिक स्वस्थ दिखाई देती है। पर्फ़िलिव घर पर नहीं मिला। अक्साका-परिवार के लोग मुझे देखकर बड़े प्रसन्न हुए। शाम को माशा के घर पर पुश्किन की एक रचना पढ़ी।

१५-१८ जनवरी—याद नहीं, इन दिनों में क्या-क्या

❀ मॉस्को युनीवर्सिटी में इतिहास का प्रोफ़ेसर, जिसकी मृत्यु १८५५ में हो चुकी थी। १८५६ में उसकी रचनाओं का एक संग्रह प्रकाशित हुआ।

हुआ। आलस्य, अकेलेपन और स्त्रियों के अभाव के कारण व्यथित हूँ। सेरेज़ा आया। हमने बहुत बातें कीं, और बहुत ख़ुशी-ख़ुशी। बी० की बहन बड़ी ख़ूबसूरत है, पर मैं उससे रब्त-ज़ब्त न बढ़ाऊँगा। सुखोटिन के घर में मेरे एक-मात्र सच्चे प्रेम की स्मृति विद्यमान है। वैलेरियन बड़ा भयङ्कर आदमी है।

१९ जनवरी—दस बजे उठा, और कॉस्तिका, सेरेज़ा और केल से गप-शप की। संगीत का अभी तक ठीक-ठाक नहीं हुआ है। बल्गाकोव के यहाँ गया। उसका पिता बड़ा ही घृणित और क्रूर आदमी है, सुखोटिन और अन्य लोगों के साथ शिवैलियर होटल में खाना खाया। माशा के घर गया। ऑब्लेन्स्की नाच-घर में देर से पहुँचा। मैं नहीं नाचा। बहुत-सी सुन्दरी स्त्रियाँ थीं।

२०-२५ जनवरी—'शैशवास्था' पढ़ता रहा। बड़ा आनन्द आया। वॉयेस्कोव के यहाँ नाच में शरीक हुआ। सुशकोव के घर रात बिताई।

३० जनवरी ÷—खिली हुई धूप में हर-कोई उसी मामले की बात-चीत कर रहा है। वह (किज़वेंटर) अपनी कहानी कह रहा था, और थियेटर की वह घटना सुना रहा था, जिससे उसकी तर्क-बुद्धि नष्ट हो गई। वह हर-किसी से डरता है, सब

÷ टॉल्सटॉय तिथियों में गड़बड़ी कर देते थे। यह एक नमूना है।

के सामने लज्जित है, और अपने-आपको अपराधी मानता है। उसने अपना जीवन ऐसा बना लिया है, कि उसे भय है, कहीं वह पागल न होजाय। उसकी रक्षा का एक-मात्र उपाय है—पिछली बातों को भूल जाना। जब कभी वह ऐसा प्रयत्न करता है, तभी अपनी कहानी कहने लगता है। कल रात को—एक कलाकार ने उसे कवित्वपूर्ण दृष्टि-कोण से देखा। दूसरे ने उस पर सन्देह किया। मैंने उससे प्रार्थना की, वह पिछली बातें भूल जाये। मगर उसके मुँह से निकला—"नहीं, वह अनिन्द्य सुन्दरी...... ।"

२६ जनवरी—ग्रिगॉरोविच आ पहुँचा है। ऑब्लेन्स्की के घर एक अद्भुत सन्ध्या व्यतीत हुई। मेंगदन की हरकतों के कारण मैं उससे परेशान होगया।

चरकॉस्की के घर खाना खाया। आदमी बहुत अच्छा और उपयोगी है। मेंगदन के घर सन्ध्या-काल बड़े आनन्द से बीता।

२८ जनवरी—व्यायाम। माशा के घर भोजन किया। वैलेरियन बहुत नाराज़ है। मैं नहीं गया। सुखोटिन के यहाँ ऊँघ आ गई।

२९ जनवरी—सुबह घर पर ही बीती। अक्साकोव्स और फूफी से मिलने गया। शिवैलियर होटल में खाना खाया। यात्रा* पर रवाना हुआ। पीछे की सीट मिली।

---

* टॉल्सटॉय घोड़ा-गाड़ी में पीटर्सबर्ग से रवाना हुए, और वारसा होकर पेरिस पहुँचे थे।

साथी-यात्रियों में से एक पोल था, बाक़ी फ़ान्सीसी। 'खोया हुआ' के विषय में काफ़ी विचार किया है।

३०-३१ जनवरी—यात्रा में।

१-२ फ़रवरी—यात्रा में।

३ फ़रवरी—बदहज़मी, ज़ुकाम, सुस्ती और मानसिक थकान। मेरा ख़याल है, 'खोया हुआ' बिल्कुल तैयार हो गया है। चिचेरिन से मैंने अपनी एक नीचता का ज़िक्र कर दिया, जिससे वह मुझसे घृणा करने लगा। मेंगदन को एक चिट्ठी लिखना चाहता हूँ। वह अत्यन्त सुन्दरी है। मुझे अपनी बहन से मिलकर वैसा आनन्द क्यों नहीं प्राप्त होता, जैसा उसे देखकर होता है? शायद प्रणय की अभिलाषा में सारा आनन्द छिपा हुआ है।

४ फ़रवरी—आ पहुँचा हूँ। सूरज अभी निकला है; और दीवारें धूप के रंग में रँग गई हैं। उठा, और नित्य-कर्म से निश्चिन्त हुआ।

५-१३ फ़रवरी—(२१ नया तरीक़ा)—पिछले दिनों में बराबर सफ़र करता रहा। दिमाग़ परेशान था, इसलिये डायरी-इत्यादि कुछ न लिख सका। आज पेरिस पहुँचा हूँ। बिल्कुल अकेला हूँ। कोई नौकर तक नहीं है। नया शहर, नया जीवन, मित्रों का अभाव और वसन्त का सूर्य। शायद अब कुछ काम हो सके। कम-से-कम चार घण्टे प्रति-दिन आसानी से काम कर सकता हूँ। तुर्गनेव या नेक्रासोव से

घनिष्टता न हो सकी। रुपया बहुत बहाया, और करा-धरा कुछ नहीं। दस्त लग गये हैं। कल पहली बात होगी—केवल काम। ऑपेरा (थियेटर) में गया। पागलपन! वाहियात ! एक फ्रेंच एक्टर दाँत पीसकर चिल्लाता था—एक शब्द में यही सारे खेल का निचोड़ था। तुर्गनेव सन्दिग्ध और अत्यन्त निर्बल, नेक्रासोव उदास।

२२ फ़रवरी—देर से उठा। कानों में अब तक साँय-साँय हो रही है। कमरे सर्द हो गये हैं। तीन छोटे-छोटे पत्र लिखे। फिर मटरगश्ती करने निकल गया। तुर्गनेव और नेक्रासोव, पता नहीं क्यों, निशानेबाज़ी करने गये हैं। इससे मेरा मन दुःखित हो उठा। मैंने नया डेरा तलाश कर लिया। खाना दोनों के साथ खाया, पर तबियत अब भी अच्छी नहीं है। नेक्रासोव आया। तुर्गनेव बिल्कुल बच्चा ही है। फिर ऑर्लीव मुझे थियेटर ले गया। वाहियात! भूखा और थका हुआ डेरे पर वापस आया।

२३ फ़रवरी—देर से उठा। बैंक में जाकर ८०० फ़ाङ्क निकाले। कुछ ख़रीदारी की। ल्वोव के घर गया। वह बड़ी अच्छी है, शुद्ध रूसी रमणी है। अतिशय घृणायुक्त भाव से नैपोलियन की स्पीच पढ़ी। घर पर 'यात्रा' लिखनी शुरू की। एक युवती को देखकर मैं सब-कुछ भूल गया। थियेटर गया—खूब!

२४ फ़रवरी—आठ बजे उठा, एक पृष्ठ लिखा। खाना

खाया। पड़ौसियों से कुछ रब्त-ज़ब्त बढ़ा। किसी कारणवश ऑर्लोव मेरे डेरे पर आया। तुर्गनेव आया, और तुरन्त चल दिया। सैर करने गया। लाल कुर्त्ती पहने और ढोल बजाते हुए नैपोलियन की सूरत देखी। खाना खाया। फ़िट्ज़ जेम्स बुरा आदमी नहीं है। गायिका बुरी थी।

२५ फ़रवरी—जल्दी उठा। मेरे सिखानेवाले ने सुबह का सारा वक़्त ख़राब कर दिया। मैं परिश्रमी व्यक्ति नहीं हूँ। तीन बजे तुर्गनेव के पास गया, उसी के साथ खाना खाया, और तब वोल्कोव से मिलने गया। तुर्गनेव तो मरा जा रहा है। ख़ुदा जाने, वोल्कोव में क्या लाल लगे हैं।

२६ फ़रवरी—नौ बजे उठा, और अब भी थकान का अनुभव कर रहा हूँ। अँग्रेज़ी का सबक़ पढ़ ही रहा था, कि कि मेरे शिक्षक-महोदय आगये। वह बिल्कुल बेकार आदमी है। 'खोया हुआ' का बहुत थोड़ा अंश लिखा, और बुरी तरह। तुर्गनेव आया। मैंने उसके साथ खाना खाया। आज झेंपना पड़ा। प्लेटनेव* आया, और बहुत प्रसन्न दीखता था। ख़ुद एल० ए० भी पेरिस में ही रह रही है। वह तो पूरा गधा है, पर वह एक अच्छी लड़की है; यद्यपि मेरे मन

---

* पी० ए० प्लेटनेव (१७९२-१८६५) एक लेखक, जो पुश्किन का दोस्त था, और ज़ार अलैग्ज़ैण्डर द्वितीय और उसकी बहनों का शिक्षक रह चुका था।

पर चढ़ने-लायक़ नहीं है। फिर तुर्गनेव के पास गया, और .खूब मज़े से बातें हुईं।

२७ फ़रवरी—दस बजे उठा। दो बजे तक इटैलियन-पाठ। एक पृष्ठ लिखा। तुर्गनेव और प्लेटनेव के यहाँ गया। ल्वोव्स के घर पर सन्ध्या बीती। वह बड़ी सुन्दरी है।

२८ फ़रवरी—दस बजे उठा। नींद अच्छी आ रही है। अँग्रेज़ी का शिक्षक ठीक समय पर आ पहुँचा। उससे ठीक तौर पर नहीं चल रहा। उसे छुट्टी देनी होगी। चेहलक़दमी की, खाना खाया। फ़िट्ज़ा जेम्स-इत्यादि से मिला, परन्तु स्पेन की उस काउण्टेस ने मुझे आकर्षित किया। अपने भाइयों और पोलिश महिलाओं के साथ कोलोंग्स आया। मैंने नृत्य किया। उन लोगों ने श्रीमती ब्रोहन से मेरा परिचय करा देने का वादा किया।

१ मार्च—देर से उठा। कलेवा नहीं किया, और श्रीमती ब्रोहन के घर चल दिया। उसके बेटे और एक दासी ने उससे सब-कुछ छीन लिया है। वहाँ से कई जगह घूमता हुआ तुर्गनेव के घर पहुँचा, और आराम का अनुभव किया; बहुत ही व्यर्थ और हल्का आदमी है। रुपये-पैसे का मामला बड़ी ही बुरी चीज़ है।

२ मार्च—देर से उठा। इटैलियन मास्टर साहब आये। घर पर ही लंच खाया। कई मित्रों से मिला। ऑपेनहम के साथ तुर्गनेव के घर खाना खाया। ल्वोव्स के घर पर शाम

बिताई। उसकी भतीजी बड़ी .खूबसूरत है, और वहाँ बड़ा सुख मिलता है। फिर तुर्गनेव के घर गया, जहाँ ऑर्लोव से भेंट हुई। तुर्गनेव आजकल दुर्भाग्य की लहरों में डगमगा रहा है।

३ मार्च—दो बजे के क़रीब घर आया। वैलेरिया को एक चिट्ठी मिली। डिस्कारटे के शिष्य दार्शनिक गर्मियर से भेंट करने गया। पाँच बजे तक मटरगश्ती में फिरता रहा। घर पर खाना खाया। एक घृणित अँग्रेज़! तुर्गनेव के साथ एक कंसर्ट में गया। वियर्डा* बड़ी अच्छी गायिका है। तुर्गनेव के घर मन कुछ उदास होगया।

४ मार्च—मुश्किल-से सबक़ तैयार किया था, कि इटैलियन मास्टर साहब आ पहुँचे।……तुर्गनेव के साथ सैर करने निकल गया। उसके साथ से तबियत ऊब जाती है। मित्रों के साथ खाना खाया। तब उल्बच+ आगया। तीन घंटे तक बात-चीत होती रही, फिर वह चला गया। तुर्गनेव के घर पर चिचेरिन का एक सुन्दर पत्र पढ़ा, और तुर्गनेव के साथ तीन घण्टे आनन्दपूर्वक बीते।

---

* गायिका वियर्डा तुर्गनेव की प्रेमिका थी, और वर्षों दोनों साथ रहे थे।

+ लुई उल्बच (१८२२-१८८९)—'टेम्प्स' का नाटकीय समालोचक। उसने १८५८ तक 'रिव्यू-डि-पैरिस' का सम्पादन किया, जिसके बाद वह पत्रिका बन्द होगई।

५ मार्च—देर से उठा। बहुत क्रुद्ध था। ऑर्लोव आया, और उसके साथ मैं बाज़ार गया। एक जगह उसका भाषण था। वहाँ प्लेटनेव और स्टैसुलेविच* से मुलाक़ात हुई। उसके साथ सैर करने गया। ल्वोव्स के घर पहुँचा। राजकुमारी ऐसी हँसमुख और सुन्दरी है, कि पिछले चौबीस घण्टे से मैं बराबर अपने जीवन को किसी अज्ञात सुख से भरने की चेष्टा कर रहा हूँ। जॉर्ज ल्वोव के साथ सैर करने गया। घर पर खाना खाया। अपनी भविष्य-वाणियों के द्वारा सारी मित्र-मण्डली का मनोरञ्जन किया। फिर आग के आगे बैठे हुए, शराब की बोतल पास रक्खे हुए, तुर्गनेव के साथ आनन्दपूर्वक सन्ध्या व्यतीत की।

६ मार्च—देर से उठा। एक कॉलेज का निरीक्षण करने गया। सादा और ठीक है। प्लेटनेव के साथ घर लौटा। ऊपर की मंज़िल में के० ओ० और टी० के साथ बड़ा ही मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया। नीचे सब बातें ठीक-ठाक थीं। .... ÷या तो जल्दबाज़ी अथवा शर्मिन्दगी।।

७ मार्च—इटैलियन शिक्षक। होटल-डि-क्लनी बड़ा ही मनोरञ्जक स्थान है। मार-धाड़ में मेरा विश्वास होने लगा है। ड्यूरन्द होटल में तुर्गनेव के साथ खाना खाया।

---

* एम० एम० स्टैसुलेविच—तत्कालीन प्रसिद्ध रूसी पत्र 'यूरोप का दूत' का सम्पादक।

÷ डायरी में यहाँ कुछ शब्द अस्पष्ट थे।

मटर-गश्ती करता रहा। शाम का सारा वक्त बर्बाद कर दिया। नैतिक दृष्टि से मेरा पतन हो गया, और मैं बहुत व्यग्र रहा।

८ मार्च—सुबह-सुबह तुर्गनेव आ पहुँचा, और घोड़े पर सवार होकर उसके साथ मैं बाहर निकल गया। बहुत ही नेक, परन्तु निर्बल व्यक्ति है। जंगल। शाम को बहुत दृढ़तापूर्वक लिखा। जब उस (तुर्गनेव) के साथ होता हूँ, तो अपनी उत्तमता पर दृष्टि जाती है। दूसरों के चरित्र का अध्ययन करना उपयोगी होने पर भी कुछ हानिप्रद है। स्वयं अपने भीतर झाँककर देखना अधिक आवश्यक है।

९ मार्च—नींद बुरी तरह आई। हम आठ बजे रवाना हुए, और रास्ता हँसते-खेलते कट गया। तुर्गनेव किसी बात में विश्वास नहीं करता—यह उसका दुर्भाग्य है। वह (किसी को) प्यार नहीं करता, पर प्यार करना चाहता है। हम्माम में गया। वाहियात! इन आरामों के होते हुए भी हम रूसी लोगों को यहाँ बड़ी असुविधा होती है। एक होटल में खाना खाया। अच्छी-बुरी तरह लिखा। बहुत ही दृढ़ और लापर्वाह हूँ।

१० मार्च—खूब सोया। सुबह दसवाँ परिच्छेद लिखा। तुर्गनेव के साथ गिर्जे देखने गया। भोजन किया। होटल में शतरञ्ज उड़ाई। तुर्गनेव का अहंकार, एक मेधावी पुरुष होने की हैसियत से, अच्छा है। भोजन के समय मैंने उससे

कहा कि मैं उसे अपने से अच्छा समझता हूँ। यह बात उसकी आशा के प्रतिकूल थी।.........शाम को एक परिच्छेद अच्छी तरह लिख डाला।

११ मार्च—नींद अच्छी तरह आई। सुबह बुरी तरह लिखा। तुर्गनेव ने अपनी एक रचना की हस्त-लिपि पढ़कर सुनाई। मसाला अच्छा है! शाम को अच्छी तरह लिखा। तुर्गनेव अच्छा आदमी है, पर थक-सा गया है, और किसी वस्तु पर उसे विश्वास नहीं है।

१२ मार्च—देर से उठा। तबियत उत्साह-हीन और सुस्त थी। तुर्गनेव के विषय में मुझे ग़लतफ़हमी हुई। जितना मैंने उसे समझा था, उतना ज़रूर है—पर आदमी बुरा नहीं है। 'खोया हुआ' की पहली कापी समाप्त करली। इसका क्या बनेगा—कह नहीं सकता। मुझे यह पसन्द नहीं आया। चेहलक़दमी की। तबियत ठीक नहीं है। 'ज़ार'-नामक एक वाहियात किताब पढ़ी। सदा की तरह उसे पढ़कर भी मन में अनेक विचार उत्पन्न हुए।

१३ मार्च—देर से उठा। तुर्गनेव बड़ा आलकसी जीव है। मैं पेरिस* जाना चाहता हूँ, पर उसे अकेला कैसे छोड़ूँ? हाय! उसने कभी किसी को प्यार नहीं किया! 'खोया हुआ'

---

* टॉल्सटॉय तुर्गनेव के साथ दूसरी जगह चले आये थे।

उसे पढ़कर सुनाया। सुनकर वह चुप रह गया। सैर के वक़्त हम झगड़ पड़े। दिन-भर कुछ नहीं किया।

१४ मार्च—पेरिस आगया। वाह रे रेलवे की मुसीबतें! खाना खाया। तुर्गनेव चुप-चोर है! एक बड़ा ही घृणित नाच।

१५ मार्च—एक बजे उठा। खाना घर पर खाया। और अकेले मैं बैठकर शराब उड़ाई।

१६ मार्च—देर से उठा। 'भिखारियों की सराय' में गया। भयानक! सिपाही—हर-किसी को काट खानेवाले पशु। उन्हें भूखे मर जाना चाहिये। इससे दिजन की सरायें अच्छी थीं। भयानक रूप से व्यथित हूँ। बहुत-सा रुपया खर्च कर डाला। राजकुमारी अब मेरी पसन्द नहीं। ह्यूम × असफल रहा, अब मैं खुद कोशिश करूँगा। तुर्गनेव के घर गया। बड़ा ख़राब आदमी है। यद्यपि कला की दृष्टि से वह बड़ा समझदार है, और किसी को तकलीफ़ नहीं देता। सेरेज़ा का एक तार मिला, जिसका जवाब भी दे दिया। बहुत ही उदास हूँ। केवल कर्मशीलता ही इसकी दवा है।

१९ मार्च—रात को अचानक अनेक भाव मेरे मन में उठ खड़े हुए। उनसे मुझे मार्मिक कष्ट हुआ। इस समय

× टॉल्सटॉय को कुछ दिन प्रेत-विद्या का शौक़ हुआ था। ह्यूम से अभिप्राय शायद प्रसिद्ध प्रेत-विद्या-विशारद डी० डी० होम होगा।

यद्यपि वे मुझे कष्ट नहीं दे रहे हैं, तो भी वे अभी तक मेरे अन्दर विद्यमान हैं। "मैं क्यों संसार में हूँ ? और मैं कौन हूँ ?" मुझे कई बार ऐसा जान पड़ा, कि मैं इन प्रश्नों को हल कर रहा हूँ। पर नहीं, मैंने अपने जीवन में इन्हें स्थित नहीं किया है। जल्दी उठा, और इटैलियन-भाषा के पाठ पर परिश्रम किया। सैर करने गया। पाँच बजे तुर्गनेव अपराधियों की-सी सूरत बनाये हुए आया। मैं क्या करूँ ! मैं उसकी क़द्र और इज्ज़त करता हूँ, और शायद उसे प्यार भी करने लगा हूँ, पर उसके साथ सहानुभूति नहीं रखता। और यह बात दोनों ही तरफ़ से है। मिसेज़ फ़िट्ज़ जेम्स बड़ी भयानक छिनाल है। नाच के लिये मित्रों का बुलावा है, पर मैं तो सोने जा रहा हूँ।

२० मार्च—देर से उठा। थोड़ा-सा लिखा। ऑर्लोव आया। उसके साथ सैर करने थोड़ी दूर गया। घर पर खाना खाया। रेडकिन किसी काम का नहीं।

२१ मार्च—काफ़ी सवेरे उठा। इटैलियन पाठ। एक लड़की का शान्त और विनम्र चेहरा देखा। सार्वजनिक पुस्तकालय में बड़ी भीड़ थी। खाना खाया। बढ़िया औरत के साथ अँग्रेज़। गधा कहीं का ! हाय ! कहाँ गये वे रूसी अफ़सर……… ?

२२ मार्च—मेरा भाई (सेरेज़ा) और ऑबोलेन्स्की आ

पहुँचे हैं। थिफ़िपे के यहाँ खाना खाया। थियेटर अच्छा था।

२३ मार्च—मित्र लोग। थियेटर। ऑबोलेन्स्की सो गया। तुर्गनेव।

२३* मार्च—देर से उठा, और रोज़ के मित्रों के यहाँ गया। ल्वोवा के साथ खाना खाया, और लड़ पड़ा। वहाँ से होटल और फिर घर।

२४ मार्च—सेरेज़ा के साथ घोड़े पर सवार होकर गया। होटल में खाना खाया। यह मेरा तो रोज़ का काम था, पर उसे बहुत अखरा। तुर्गनेव के यहाँ गया, और फिर नाच में। मार्गरेट के साथ घर आया।

२५ मार्च—फैलाक्स के स्वागत की तैयारी। तुर्गनेव से साथ खाना खाया। घर।

२६ मार्च—एक दिन यों-ही निकाल दिया है।

२७ मार्च—देर से उठा। वर्सेई गया। अपनी अज्ञानता का अनुभव करता हूँ। घर पर खाना खाया। उन लोगों के अनायास आत्मीयता का अनुभव होता है।······आज बादशाह को उसकी सेना-सहित देखा। तुर्गनेव के यहाँ गया। र्‌यूमिन के साथ मटर-गश्त की। एक डायन-जैसी औरत देखी, एक जङ्गली का गाना सुना।

---

* यों तो तारीखों की ग़लती है, या एक ही तारीख को दूसरी बार लिखा है।

२८ मार्च—अस्तव्यस्त जीवन। काम करने की चेष्टा की; पर असम्भव होगया। मिस पेङ्कॉक के घर पर मर्गियर, तुर्गनेव और मैंने कुछ विद्वानों से वार्त्तालाप किया। पैल्ट्री बड़ा नीच और मूर्ख है! सर्कस देखने गया।

२९ मार्च—वर्सेई के लिये रवाना हुए। देर हो गई। बाज़ार में खाना खाया। ······एक प्रसिद्ध समाचार-पत्र। कवि शिलर। एक प्रजातन्त्रवादी। एक लड़की को गाड़ी पर चढ़ाकर घर लाया।

३० मार्च—सुबह पहले तो र्‌यूमिन आया, और फिर त्रिकन। वह कुछ कविताऐं लाया था। तुर्गनेव ने मुझे खोज ही निकाला। हार्टमैन बड़ा अच्छा आदमी है। ऑपेनहम बड़ा घृणित व्यक्ति है। मैं कुछ देर एक होटल में बैठा रहा, पर खाने के समय अकस्मात् भाग आया।

३१ मार्च—सेरेज़ा मार्गरेट के घर ठहर गया। लेबोले❀ के अन्तिम भाषण में गया। सुन्दर, प्रभावशाली। अल्सूफ़ेवा अनिन्द्य सुन्दरी है, उसकी शक्ल उसकी बहन से मिलती है। होटल में खाना खाया। सेरेज़ा के विचार मुझसे बहुत भिन्न हैं। यही बात हम दोनों को परस्पर पृथक् रखती है। कल यह स्थान परित्याग करने का निश्चय किया है।

❀ एडवर्ड लेबोले—फ़्रान्स के एक कॉलेज का प्रोफ़ेसर। उसकी एक प्रसिद्ध कहानी का नाम 'लि प्रिन्स कनिक' है।

१ अप्रैल—ऑबोलेन्स्की ने अकेले ही जाने का निश्चय कर लिया है। मार्गरेट, सेरेज़ा के पास आई, और दोनों डिमेसन के घर गये। मैं सैर करने गया। एक छोटा-सा मकान मिला है। सेरेज़ा के साथ भोजन किया, और उसे विदा किया। असम्भव व्यर्थता और अशक्तता! हमारा विकास इतना भिन्न है, कि हम एक साथ नहीं रह सकते, यद्यपि मैं इसके लिये इच्छुक बहुत हूँ। एक कन्सर्ट में गया। अल्सूफ़िव-दम्पति शायद उस विचार को समझ गये हैं, जो उनके प्रति मेरे मन में है। प्रसन्न और शान्त भाव से घर लौटा। एक स्त्री को देखकर मैं व्यग्र हो उठा। मैं उसके डेरे पर गया, पर अविचलित रहा। दुराचार बड़ी भयानक वस्तु है।

२ अप्रैल—मेरी काँख में दर्द हो रहा है। सुबह से बराबर कोई-न-कोई आ रहा है। डी० कॉलोशिन आया। मैं उसके साथ सैर को निकल गया, फिर कुछ देर अकेला टहलता रहा। वापस आया, स्नान किया, खाना खाया। मिसेज़ फ़िट्ज़ जेम्स आईं। जेम्स डिमेसन बड़ा परेशान हुआ। एक पृष्ठ लिखा। काँख का दर्द कुछ कम है। सोने जा रहा हूँ।

३ अप्रैल—काँख के दर्द में आराम है। नज़ला हो गया है। तुर्गनेव ने मुझे जगा दिया।......कॉलोशिन एक विशेषज्ञ के साथ लौटा, जिसने मुझे दोपहर तक परेशान

किया। थोड़ा-सा काम किया। तुर्गनेव के साथ ऊपर की मंज़िल में काम किया। कंसर्ट में गया। तुर्गनेव के साथ एक होटल में जा बैठा। मैं बहुत-सी चीज़ों में एक साथ हाथ लगाने की सोच रहा हूँ।

४ अप्रैल—बारह बजे उठा। कुछ सुस्ती के साथ लिखना शुरू किया। बाल्ज़क की रचना पढ़ी। ब्राइकन आया। उससे छुटकारा पाने के लिये मैं बाहर निकल पड़ा, और पाँच बजे लौटा। इटैलिपन पढ़ी। ऊपर की मञ्ज़िल में खाना खाया। रिस्टोरी* से मिलने गया। उसका एक भाव पाँचों अङ्कों की असत्यता को सजीव बना देता है। रेसिन के नाटक-जैसी वस्तुएँ यूरोप-भर के कवित्व-पूर्ण घाव हैं। परमात्मा का धन्यवाद है, कि हमारे यहाँ ऐसी वस्तुएँ न हैं, न होंगी। घर पर एक पृष्ठ लिखा। दो बजे रात के क़रीब सोने जा रहा हूँ।

५ अप्रैल—दस बजे उठा। कुछ लिखा। बॉटकिन को एक पत्र भेजा। तुर्गनेव आया। डिमेसन के साथ घुड़दौड़ देखने गया। उदासीनता। होटल में खाना खाया। बहुत-से रूसी मिलने आये। मैं अब उठा। साहित्य-चर्चा कुछ नहीं। खाना मूर्खतापूर्वक खाया। एक बजे के बाद लौटा, तीन बजे के क़रीब सोया और आज……।

---

* एडेले रिस्टोरी—इटली की एक प्रसिद्ध दुःखान्त-अभिनेत्री, जिसने सारे योरप में ख्याति प्राप्त की थी।

६ अप्रैल—सात बजे उठा। तबियत ख़राब थी। एक फाँसी का दृश्य देखने गया। एक मज़बूत गर्दन और सीना। उसने बाइबिल का चुम्बन किया, और तब—मृत्यु। कैसा लोमहर्षक! इस दृश्य ने जो असर किया, बड़ा तेज़ था, और आसानी से दूर नहीं होगा। मैं राजनीतिक आदमी नहीं हूँ। मैं कला और नैतिकता को जानता हूँ, पसन्द करता हूँ, और उनके अनुसार आचरण भी कर सकता हूँ। तबियत ख़राब और अशान्त है। होटल में खाना खाने जा रहा हूँ। बॉटकिन को एक मूर्खतापूर्ण पत्र लिखा। लेटे-लेटे पढ़ता रहा, और सो गया। उस अपराधी ने मुझे व्यग्र कर दिया है। हार्टमैन और तुर्गनेव भी वहीं थे। मैं वहाँ बहुत देर तक रहा। तुर्गनेव के घर गया। अब वह बात नहीं करता, बकवास करता है। वह न तर्क-बुद्धि में विश्वास रखता है, न मनुष्य में, न किसी और चीज़ में। लेकिन फिर तबियत ख़ुश रही। गिलोटिन के दृश्य ने बहुत देर तक नींद न आने दी, और मैं बार-बार उसे स्मरण करता रहा।❀

❀ टॉल्सटॉय ने कितने संक्षेप में उन घटनाओं का वर्णन किया है, जिन्होंने उन पर गहरा असर किया। जिस घटना का उल्लेख यहाँ हुआ है, उसका वर्णन टॉल्सटॉय ने अपने 'कन्फ़ेशन' में बीस बरस बाद अत्यन्त विस्तारपूर्वक किया है।

७ अप्रैल—देर से उठा। तबियत ख़राब है। पढ़ा, और सहसा एक साधारण, पर बुद्धिमत्तापूर्ण विचार मेरे दिमाग में आगया—पेरिस को छोड़ देने का। तुर्गनेव और ऑर्लोव आये। मैं उनके साथ तुर्गनेव के घर गया। मटर-गश्त की, सामान बाँधा और तुर्गनेव और क्रडनर के साथ—जो ज़बरदस्ती हमारे बीचमें आकूदा था—भोजन किया। वहाँ से क्षण-भर के लिये फिर तुर्गनेव के घर गया। फिर वह ब्यार्डा के पास चला गया, और मैं ल्वोव के पास। युवती राजकुमारी भी वहीं थी। वह मुझे बहुत पसन्द आई, और मैं सोचने लगा कि, उसके साथ विवाह की चेष्टा न करके मैं मूर्खता कर रहा हूँ। अगर उसका विवाह किसी अच्छे आदमी से होगया, और वे सुखपूर्वक जीवन-यापन करने लगे, तो मेरे लिये यह अत्यन्त दुःख की बात होगी। इसके बाद एक सच्चे, सीधे और सहृदय विद्यार्थी के साथ बातें कीं, और पहले दिन की अपेक्षा अधिक शान्त मन से शयन किया।

८ अप्रैल—आठ बजे उठा, और तुर्गनेव के पास पहुँचा। दो दफ़ा उससे विदा हुआ हूँ, और दोनों ही दफ़ा मैं रो पड़ा हूँ। पता नहीं ऐसा क्यों हुआ? मैं उसे बहुत ही चाहता हूँ। उसने मुझे एक भिन्न मनुष्य बना दिया है। ग्यारह बजे रवाना हुआ। रेल में मन बहुत उदास रहा। जब रेल की बदली हुई, तो आस्मान में पूरा चाँद खिल रहा था, और प्रत्येक वस्तु से प्रेम और आनन्द टपक रहा था। बहुत दिनों

में आज मैंने दुनियाँ में जीवित रखने के लिये परमात्मा को धन्यवाद दिया।

९ अप्रैल—रास्ता आनन्द से कटा। थक गया हूँ। जिनेवा आ पहुँचा हूँ। कल से मैं फिर तीनों चीज़ों में हाथ लगा दूँगा।

१० अप्रैल—जल्दी उठा। मौसम अच्छा नहीं है, पर मन स्वस्थ और साफ़ है। गिर्जाघर गया, पर प्रार्थना समाप्त हो चुकी थी, और मैं शरीक न हो सका। कुछ चीज़-वस्तुएँ ख़रीदीं, और टॉल्सटॉय (चित्रकार) के यहाँ गया। एलेग्ज़ैण्ड्रा टॉल्सटॉया* धार्मिकता के भाव में आगई है। मेरा ख़याल है, कि उन सभी में यह भाव मौजूद है। बॉकेज अच्छा आदमी है। दिन में पढ़ता रहा, पर जीवन में नियमित रहा। काफ़ी लिखा भी। अट्ठाईस बरस का होगया, लेकिन अब भी गधा ही बना हुआ हूँ।

११ अप्रैल—कल भी लिखा-पढ़ा था। जीवन नियमित रहा। चार पत्र लिखे। और कुछ नहीं किया। किसी देहाती मकान की खोज में निकला, मगर कोई नहीं मिला। शाम को स्ट्रॉगॉनोव आया और अपने रिश्तेदारों के विषय में बराबर बातें करता रहा।

१२ अप्रैल—बाइबिल पढ़ा। स्नान-घर गया, ज़ुकाम

---

* टॉल्सटॉय की चचेरी बहन, जिसका ज़िक्र इस पुस्तक की भूमिका में किया गया है।

हो गया। टॉल्सटॉय-परिवार के लोग मुझे अपने घर ले गये। मैंने टॉटलेबन को फटकार दिया—बुरा हुआ। बाल्ज़क की रचना पढ़ी। अलेग्ज़ेण्ड्रिन* की मुस्कान विचित्र है!

१३ अप्रैल—स्नान किया। कमज़ोरी महसूस कर रहा हूँ। दोपहर तक पढ़ता रहा। फिर दिन-भर काम करता रहा। केवल दो घण्टे ल्वोव के आजाने के कारण विघ्न पड़ा।

१४ अप्रैल—बाइबिल पढ़ना, और अपनी प्रार्थनाओं का रूप निर्माण करना जारी रक्खा। स्नान। स्वास्थ्य काफ़ी अच्छा। मौसम भयङ्कर है। दिन-भर लिखता और सोचता रहा। बड़ा अच्छा हो, अगर सब चीज़ों को उलट-पलट दूँ। मनुष्य के भिन्न स्वभावों में बहुत ही कम अन्तर होता है।

१५ अप्रैल—देर से उठा। स्नान किया। एमिल जिरेडिन-कृत 'कॉमेडी ह्यूमेन' की भूमिका पढ़ी। स्वार्थ और आत्म-सन्तुष्टि। 'क्रान्ति का इतिहास' और 'स्वतन्त्रता' का कुछ भाग पढ़ा। चीजें परिणाम-हीन होने पर भी ईमान-दारी से लिखी गई हैं। लिखा कुछ नहीं, पर तबियत में ताज़गी है। पहिले वही लिखूँगा—और अत्यन्त संक्षेप में

---

* एलेग्ज़ैण्ड्रा टॉल्सटॉया। देखिये, नोट पृष्ठ ३८५ पर।

लिखूँगा—जो सब स ज़्याद ज़रूरी है। मन भयानक रूप से अनैतिकता की ओर दौड़ रहा है।

१६ अप्रैल—तुर्गनेव के अत्यन्त सुन्दर पत्र का उत्तर लिखा। दो बार गिर्जे में गया। जिरेडिन-कृत 'स्वतन्त्रता' का अध्ययन किया। अच्छी चीज़ है, पर नतीजा कुछ नहीं निकलता। लिखा थोड़ा, पर सोचा बहुत-कुछ। तीन काम करने चाहियें। (१) अपने-आप को शिक्षित बनाना, (२) कविता में परिश्रम करना, (३) भलाई करना, और इन तीनों बातों का परीक्षण प्रति दिन करना।

१७ अप्रैल—मैं समझता हूँ कि 'आवारा' (दी फ़्यूजिटिव) का कथानक मैंने भली भाँति सोच लिया है। डॉक्टर के यहाँ गया, और कुछ चीज़ों का ऑर्डर दिया। स्नान...... पवित्र कफ़न......। 'मार......की' बनावट अच्छी है। 'स्वतन्त्रता' पढ़ी, और 'कन्फ़ेशन' लिखने में हाथ लगाया। प्रत्येक अवस्था में यह तो अच्छा ही है। फूफी का एक पत्र आया।

१८ अप्रैल—९ बजे सोकर उठा। मिलनेवालों से भेंट की। घर पर 'स्वतंत्रता' पढ़ी। स्नानागार में बाल्ज़क की रचनाएँ और अख़बार पढ़े। टहलने के बाद भोजन किया। वाहियात लोगों की सङ्गति में पड़ जाने पर मुँह-तोड़ कार्यवाही करनी पड़ती है। 'स्विट्ज़रलैण्ड का इतिहास और शासन-विधान' पढ़ा। एक नाव पर बैठकर जलीय दृश्यों की सैर के

लिये गया। मैं समझता हूँ कि मैं ने 'आवारा' को लगभग समाप्त कर लिया है। कल से इसका लिखना भी शुरू कर दूँगा। यदि मैं सो गया, तो गिरजाघर नहीं जाऊँगा।

१९ अप्रैल—सोया तो सही, पर नींद अच्छी तरह नहीं आयी; डर रहा था कि पड़े-पड़े मुझे और जगह जाने में विलम्ब न हो जाय। ९ बजे स्नानागार को गया। घर पर 'फ्रांस का इतिहास' पढ़ा। मार्टिन का उपदेश सुनने के लिये गया। है तो चतुर मनुष्य, पर शिथिल बहुत है। उसके उपदेशों का संक्षिप्त सार लिख लिया। शीघ्र भोजन किया, और पुश्चिन के साथ टॉल्सटॉय के घर गया। मार······ से दो बार मिला। वह कुरूपा तो नहीं है, पर नम्र है। पुश्चिन का परिवार बड़ा अच्छा है। मेचर्स्की मेरे लिये कुछ उपयोगी हो सकता है; मैं उससे मिलने जाऊँगा। मैं बड़ा ही जन-तन्त्र-वादी मूर्ख कहाता रहा हूँ। एक अँग्रेज़ स्त्री के साथ खूब बातचीत की।

२० अप्रैल—तड़के उठा। स्नान किया! 'ला डेम ऑक्स पर्ल्स'-नामक पुस्तक पढ़ी। लेखक में प्रतिभा तो अच्छी है, पर जिस आधार पर उसने पुस्तक की रचना की है, वह निकृष्ट है। इस लेखक को फल समझा जाय, तो बाल्ज़क को फूल स्वीकार करना होगा। गिरजाघर गया। प्रसन्न हूँ। 'आवारा' लिखने में लग गया। लिख तो अच्छी तरह रहा था, पर सुस्ती ने फिर आ दबाया।

भोजन घर पर ही किया। नाव पर सैर को निकला। पढ़ना जारी रक्खा, जिससे और कोई कार्य न कर सका। सत्कार्य के तीन अवसर खो चुका हूँ। कुडनर, सोमीलियर और लेविना............।

२१ अप्रैल—पाँच बजे उठकर स्नान किया। तैयारी करके स्टीम-बोट पर जा पहुँचा। मौसम ख़राब है। टॉल्सटॉया के साथ कैसे समय व्यतीत हो गया, इस बात पर ध्यान भी नहीं दिया। तबियत गड़बड़ है। खाना पुश्किन के साथ खाया। करमज़ीना की अच्छाई में सन्देह नहीं है। अनुदार दल से सम्बन्ध रखते हुये भी काफ़ी युक्ति-संगत है। ....थक गया। मालूम होता है, कुछ ज़ुकाम-सा हो गया है। दस बजे सोने जा रहा हूँ। कोई काम नहीं किया।

२२ अप्रैल—८ बजे उठा। 'कॉसेक्स' का थोड़ा अंश लिखा। बड़ी चहल-पहल थी। हरेक व्यक्ति रोगी के लिये तैयार हो रहा था। बहुत ही आनन्द-दायक समय था। सब प्रसन्न नज़र आते थे। आठ बजे वापिस आकर मेशाचर्स्कीज़ के यहाँ गया। वे लोग बड़े भले आदमी हैं। कोई कार्य नहीं किया, पर समय बड़ा आनन्द-दायक प्रतीत होता था। चारों ओर दयालुता का समुद्र उमड़ा पड़ता था। एल० करमज़ीना का आकर्षण बड़ा प्रभावशाली है।

२३ अप्रैल—दस बजे उठा, बुख़ारिन से मिलने के

लिये वेवी गया। वे लोग बड़े सज्जन हैं। हमने भोजन किया। तदुपरान्त कुछ गाना-बजाना हुआ। पुश्चिना का खाने पर टूट पड़ना भी खूब रहा। चिलियन गया। चाय पी। 'गॉड सेव दि ज़ार'❀ का गीत सुना। बाहर नहीं गया। जल्दी सो जाने का विचार है।

२४ अप्रैल—ऐसा ख़राब मौसम होते हुये भी टॉल्सटॉया ने चले जाने का निश्चय किया, और चली गयी। यद्यपि मैंने इस बात पर लज्जा का अनुभव किया; किन्तु उसे पहुँचाने के लिये भी नहीं गया। वेवी में भोजन अच्छी तरह नहीं किया। एल० करमज़ीन का स्वभाव अच्छा होने पर भी व्यक्तित्त्व कठोर मालूम होता है। पुश्चिन के यहाँ पुरोहित के साथ भोजन किया। शाम को करमज़ीना के यहाँ रहा। मेश्चर्स्कीज़ बड़े ही सुस्त और ज़हरीले अनुदार-दलवादी हैं; वे मुझ पर अपनी ही भलमनसी की छाप लगाने की चेष्टा करते रहे।

२५ अप्रैल—दस बजे उठा। कोई कार्य्य नहीं किया। स्नानागार को गया। तबियत प्रसन्न नहीं है—मेरे सारे शरीर में दाने-से निकल आये हैं। सो गया। शाम को करमज़ीना के यहाँ गया। एक पृष्ठ लिखा। सोने जा रहा हूँ।

२६ अप्रैल—तबियत ठीक नहीं है। 'कॉसेक्स' का थोड़ा-सा अंश लिखा। नेक्रासोव, तुर्गनेव और ए० टॉल्सटॉया के

❀ ईश्वर ज़ार की रक्षा करे।

पास से पत्र आये। 'क्रान्ति का इतिहास' पढ़ा। मन में गर्व का अनुभव किया। 'आरम्भ में (केवल) संसार था।' शाम को पुश्चिन ने मेरे पास बैठे-बैठे अपनी तारीफ़ में ख़ूब गप्पें हाँकीं।

२७ अप्रैल—सात बजे मैं गाड़ी पर चढ़ स्टीमर पर आ सवार हुआ। मुँहासे बहुत निकल आये हैं। तबियत अब भी अच्छी नहीं है। कुछ चीज़ें ख़रीदीं, टॉल्सटॉया के घर गया। सिर में दर्द है। क़ै होगयी। कॉमयाकोव की गर्वपूर्ण कृति और कुछ चतुरतापूर्ण ट्रैक्टों का अध्ययन किया। विलम्ब से वापिस आया।

२८ अप्रैल—तड़के गाड़ी पर सवार होकर निकला। मेड लोनियर से परिचय हुआ। सोगया। मेशचर्स्कीज़ के साथ भोजन किया—तबियत साफ़ नहीं है। अन्यमनस्क-सा हूँ। पुश्चिन के साथ बैठा। कोई कार्य्य नहीं किया।

२९ अप्रैल—तड़के उठा। 'कॉसेक्स' का थोड़ा-सा अंश लिखा। टहलने के लिये बाहर निकला, और तुबली तक पहुँच गया। पुश्चिन के साथ खाना खाया, और उन्हीं के साथ नाव में विलेनेव गया। तबियत ठंडी है, और आँखों में दर्द हो रहा है। शाम को भी करमज़ीना के यहाँ गया। वहाँ मेरी मुलाक़ात एक स्वस्थ और भावुक महिला से हुई, जिसका नाम गैलाखोवा है। उसके साथ उस की बहन

भी थी, जिसका स्वभाव बड़ा उग्र और ख़राब मालूम पड़ता था। घर पर एक सुन्दरी अँग्रेज़ स्त्री भी आई थी, जिसका रङ्ग कुछ गहरा और बाल भूरे थे।

३० अप्रैल—तड़के उठा। कुछ दूर टहलने के बाद चीन के प्रति अँग्रेज़ों के घृणित व्यवहार का समाचार पढ़ा। इसके सम्बन्ध में एक बुड्ढे अँग्रेज़ से बहस की। ❀ कॉसेक्स का थोड़ा-सा पद्यात्मक अंश लिखा, जो मुझे अच्छा प्रतीत हुआ। मुझे यह नहीं सूझ रहा है कि इन (पद्यों) में से कौन-सा चुनूँ। दिन-भर 'रूसी क्रान्ति का इतिहास' पढ़ता रहा।

१ मई—आठ बजे उठा। मेरी आँखों में बड़ी तकलीफ़ हो गई है। डॉक्टर आया। टॉकविल-कृत 'क्रान्ति का इतिहास' दिन-भर पढ़ता रहा। पुचिश्न ने अस्ताफ़िव के बदन में पिनें चुभो-चुभोकर उसे दिक़ करने का इरादा किया। शाम को पुश्चिना मेरे साथ थी। बहुत-कुछ लिखने की आशा रखता हूँ।

❀ ३ मार्च १८५७ ई० को लॉर्ड पामर्सटन की सरकार हाउस ऑफ़ कॉमन्स में इस बात पर हार गई थी कि काग़ज़ात से यह बात सिद्ध नहीं होती कि कैंटन में जो हिंसात्मक कार्य किये गये हैं, उसके लिये कोई पर्याप्त आधार था।

२ मई—आँखों में अब भी दर्द है। लारट×-कृत इतिहास और 'आइडिड नपोलियनीज़' दिन-भर पढ़ता रहा। क़लम का स्पर्श भी नहीं किया। रेब० दो बार आया। उसे कुछ तकलीफ़ है।

३ मई—दिन बड़ा सुन्दर है। आँख की तकलीफ़ होते हुए भी प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ। पुश्चिन के साथ टहलने गया। मैं समझता हूँ, अँग्रेज़ स्त्री मुझे अपने प्रेम-जाल में फँसाने की चेष्टा करते-करते थक गई। खाना घर पर ही खाया। फिर पुश्चिन के साथ टहलने गया। न कुछ लिख सका, न पढ़। आठ बजे मेश्चस्कींज़ के लड़के के साथ करमज़ीना दिखाई पड़ी। उन्हें खुशी-खुशी घर पहुँचा दिया।

४ मई—नौ बजे उठा, अनेनकोव को एक छोटा-सा पत्र लिखा, कुछ देर टहलता रहा। पढ़ने का भी उपक्रम नहीं किया। अँग्रेज़ स्त्री डोरा............"नहीं, नहीं, चुप !" गला, बाँहें, हँसी ! माएट्रेस्क गया, और बी............अ से मुलाक़ात की; "कुछ नहीं !" वसन्त। मेरी आँख अच्छी हो रही है। शाम मेश्चस्कींज़ के यहाँ काटी, बड़ा आनन्द रहा। एल० एन० बाहर आकर मेरे साथ हो लिया।

× यह नाम ग़लती से या अस्पष्टतापूर्वक लिखा मालूम पड़ता है; क्योंकि इस नाम का कोई भी प्रसिद्ध इतिहासकार नहीं हुआ, और टॉल्सटॉय सदा उच्च कोटि के इतिहासकारों की कृतियाँ ही पढ़ा करते थे।

५ मई—विलम्ब से उठा। दिन-भर वास्तव में कुछ नहीं किया। प्रातःकाल मॉण्ट्रेस्क और स्नानागार को गया। एक बड़ी ही सुन्दरी नीली आँखोंवाली स्विस लड़की देखी। तुर्गनेव के एक पत्र का जवाब दिया। अँग्रेज़ चारित्रिक दृष्टि से बड़े ही भ्रष्ट होते हैं, और उन्हें इधर-उधर मारे-मारे फिरने में ज़रा भी शर्म नहीं मालूम होती। खाने के बाद आर० और पी० से मिला और क़ब्रगाह को गया। सन्ध्या बड़ी शान के साथ काटी। यहाँ के दृश्यों से मैं अत्यन्त शान्त बन गया हूँ। शाम को 'एम० मा' के साथ कुछ गाने गाये। गो-धूलि के समय एक गँवार लड़की को आकाश की ओर ताकते देखा। रात्रि बड़ी ही ठंडी और चाँदनी से खिली हुई है। एक कॉर्सिका-निवासी क्षय-रोगी को देखा।

६ मई—देर से सोकर उठा। 'किज़्वेटर'-नामक कहानी पढ़ी। अच्छी है। स्नान करने जाने के लिये समय मुश्किल से मिला। भोजन पुश्चिन के यहाँ किया। और उनके साथ 'सेवाय' में गया। बड़ी ही आकर्षक जगह है। मीलरी, चुङ्गी के अधिकारी भोंदू हैं। जंगलीपन, दरिद्रता और कवित्व-मय वातावरण। ग्यारह बजे पहुँचा। थकावट बहुत होने पर भी तबियत .खुश थी।

७ मई—'अस्तव्यस्त'*-नामक कहानी को फिर

---

*यह 'अस्तव्यस्त' उपरोक्त 'किज़्वेटर' का ही दूसरा नाम था। अन्त में यह रचना 'एल्बर्ट' के नाम से प्रकाशित हुई थी।

आरम्भ से लिखना शुरू किया। स्नान करते समय गाला-खोव-लड़कियों ने मुझे तंग कर डाला। यहाँ की गन्दगी में साबुन भी अपना काम नहीं करता। जनरल ने मुझे 'मैटङ्क' पीने को दी। हम लोग बोट पर बासेट गये, जहाँ हम लोग एक बजे तक घूमते-घामते और बैठकर सुस्ताते रहे।

८ मई—आठ बजे उठा। तबियत ठीक नहीं है। 'पागल' का कुछ अंश लिखा। स्नान किया। भोजन के वाद 'फ़ान्स का इतिहास' पढ़ा। बॉटकिन और ड्रुज़िनिन के पास से पत्र आया। चापलूसी से भरा हुआ और प्रसन्नता प्रदान करनेवाला है। पुश्चिना मुझे बहुत चाहने लगी है। बासेट में इधर-उधर घूमता रहा।

९ मई—आठ बजे सोकर उठा। तबियत साफ़ मालूम पड़ती है। तीन पत्र लिखे—एक माशा का, दूसरा कॉल्बासिन को और तीसरा वासेनका को। स्नानागार को गया। बहुत थोड़ा लिखा। जर्मन स्त्री और पुश्चिना ने आकर बाधा डाली।

१० मई—तड़के स्नानागार को गया। तैयारी में हूँ। बॉम-गार्टन से परिचय प्राप्त किया। बड़ा ही होशियार और कड़वे मिज़ाज का जर्मन है। र्‍याबोव और जेनेवा गया। बड़ी सुस्ती छाई हुई है, और सिर में दर्द है। ए० टॉल्सटॉया एक गायन-पार्टी में जारही थी और उसने मुझे भी साथ ले लिया। एम०

हेनरी को मैं बिल्कुल पसन्द नहीं करता। कोई अच्छा कला-विद् नहीं है। बड़े लम्बे बाल हैं उसके। सिर में दर्द रहा।

११ मई—डॉक्टर के यहाँ गया। तुच्छ रैज़नर! टॉल्सटॉया के घर गया। ख़ुश हुआ। उन्हें साथ ले, सालेव गया। बड़ा ही सुहावना समय है। मेरे अन्दर किसी को प्यार करने की भावना ऐसी प्रस्तुत हो रही है। कि उसकी कल्पना ही भयानक है। यदि अलैग्ज़ैण्ड्रोवना की आयु दस वर्ष कम होती! बड़ा अच्छा स्वभाव है उसका। इसके बाद पेट्रोव के पास गया बड़ा ही साधु पुरुष है; मेधावी, दृढ़ और चैतन्य। बात-चीत बहुत अच्छी तरह करता है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे भी ऐसा ही विश्वास प्राप्त हो।

१२ मई—आठ बजे उठा। एक सम्मोहिनी विद्या-वाले के पास गया। वह एक डॉक्टर है, जो इसमें विश्वास करता है। इसके पश्चात् कालम्-नामक एक स्विस पेंटर के पास गया—आदमी सुस्त है; पर है बड़ा बुद्धिमान। वापसी में बॉकेज आते हुए र्याबो और पुश्चिन से मुलाक़ात हुई। उनके साथ वापस आया। र्याबो को बिदा किया। पुश्चिन बड़ा हँसमुख है। सदा यही मालूम होता है, कि उसके हृदय में कुछ ऐसी भावनाएँ हैं, जो अत्यन्त सुन्दरता की सृष्टि करती रहती हैं, और पूर्णतः प्रकाशित नहीं हो पातीं। उसकी यह अवस्था तब और भी स्पष्ट देखने में आती

है, जब वह शराब पीता है। अगर वह बुद्धिमान होता, तो देखता कि यह सुन्दरतामयी भावनाएँ बर्बादी की जड़ हैं। थॉनन के पास गया। एक अमेरिकन पादरी से बात-चीत की। हम लोग ऐस्क्रियन तक पैदल गये। सरो के वृक्ष काले बादलों से आच्छादित-से होकर अन्धकार फैला रहे हैं, जिनके पीछे से चन्द्रमा की आभा झलक रही है। सहसा किसी के पैरों की आहट सुनायी पड़ी, और न्यूफ़ाउण्डलैण्ड के तीन सफ़ेद कुत्ते आ पहुँचे। एक बड़ा शानदार मकान दिखाई दे रहा है। शराब पी। बहुत-सा रुपया ख़र्च कर डाला।

१३ मई—६ बजे पैदल रवाना होकर नौ बजे मीलेरी पहुँच गया। बारह बजे तक नाव में रहा। कॉबेर्स्की-नामक एक उकरेनियन के साथ भोजन किया। वह पहाड़ और रूमाल का अन्तर नहीं समझ सकता। बड़ा ही भोंदू है, पर वैसे है, पक्का बदमाश। गालाख़ोव की युवतियाँ रास्ते से गुज़र रही हैं। मुझे लज्जा आती है। कोस्त्या और पी० के साथ मेश्चर्स्कीज़ के यहाँ गया। अब तक तो मेरे उस-जैसे लड़के हो जाते। गालाख़ोव्स के साथ मामला तै किया। दिन-भर बेवक़ूफ़ी में पड़ा रहा। बॉटकिन को एक पत्र लिखा; टॉल्सटॉया को भी लिखा, पर उसे भेजा नहीं।

१४ मई—साढ़े पाँच बजे उठा, और साढ़े आठ बजे तक टहलता रहा। 'अस्तव्यस्त' के तीन पृष्ठ लिखे। कोस्त्या

बड़ी ही मनोहर है। शाम को करमज़ीना अपनी भतीजी के साथ आयी। सुन्दर लड़की है; सुशीला और सादी भी है।

१५ मई—साढ़े सात बजे उठा और कलेवा करने के समय तक टहलता रहा। बहुत थोड़ा लिखा। कोस्त्या को वापस लाया। खाने के बाद एबॉटक लिखा। एक निकम्मा-सा उपन्यास पढ़ा। हम लोग माइकेल आइवनोविच से मिलने गये। बत्ती जलायी। ग्यारह बजे थककर वापस आया। सुस्ती छागयी।

१६ मई—तीन बजे उठा और टहलते हुए बॉनेट के पास गया। थोड़ा लिखा। भोजन के बाद 'लास केसेस' पढ़ा। टॉल्सटॉय-परिवारवाले आगये हैं। मैं उनके पास गया, और वहाँ 'लाँगिनोव की कहानी' सुनाने की बेवक़ूफ़ी की। ख़ुशी-ख़ुशी वापस आया। मेश्चर्सकाया एक अच्छी स्त्री है;—बड़ी ही मधुर-भाषिणी। "इन्हें मैं अपनी सन्तान का भावी घातक समझता हूँ।"

१७ मई—नमक का तहख़ाना खुलवाया। विलम्ब से उठा। सिर में दर्द है; बेहद उदासी छा गई। तोभी मैं ने कुछ लिखा। भोजन के बाद तबियत और भारी हो गई। सात बजे तक सोता रहा। मेश्चर्स्कीज़ के यहाँ गया, वहाँ से टॉल्सटॉय-घराने की ओर। उन्होंने हमें रोक लिया। शाम वहीं गुज़ारी। मैंने उन्हें 'सेवॉस्टॉपॉल' और 'कॉसेक्स' के सम्बन्ध में बहुत-कुछ बतलाया।

१८ मई—रात बड़ी ख़राब रही।............कलेऊ के बाद माइकेल आइवनोविच को साथ ले, टॉल्सटॉय-घराने की तरफ़ रवाना हुआ। सब ने मिलकर चाय पी। वे लोग बड़े प्रसन्न हैं—वे दयालु कैसे न हों? प्रिंस के साथ प्रेबाट को गया। बहुत-सी चीज़ें ख़रीदीं, बहुत थोड़ा रुपया बाक़ी रह गया। शाम को एम० या के साथ सेंट गिनगाल्फ़ गया। और वहाँ गालाख़ोव्स से मुलाक़ात हुई। लाल प्रजातंत्रवादी घूम रहे हैं; बहुत-सी सुन्दरी लड़कियाँ भी। के० एम० ख़तरनाक आदमी है। मुझे भय है, पहले मुझ पर ही यह दोषारोषण है, और उस भावना ने सुन्दरी रमणियों के संसर्ग-जनित आनन्द की कामना के साथ मुझे बहुत देर तक जागता रक्खा।

१९ मई—देरी से उठा। तबियत भारी है। काफ़ी दूर टहल आया। डायरी लिखी। अकेले भोजन किया। फिर सो गया। जागकर फूफी को पत्र लिखा। ❀ फिर

❀ इस पत्र में टॉल्सटॉय ने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये थे:—"............मैं यही कहूँगा कि किसी के लिये भी वास्तव में यह असम्भव है कि वह इस झील और इसके तट का निवास छोड़ दे। मैं अपना अधिकांश समय पर्यवेक्षण और आनन्दानुभूति में ख़र्च करता हूँ। कभी अपने कमरे की खिड़की पर खड़ा हुआ दृश्य देखता हूँ, तो कभी टहलते हुये। मैं इस बात से प्रसन्न होता हूँ कि वसन्त में पेरिस छोड़कर यहीं आकर रहूँ, यद्यपि इस परिवर्तित

वॉमगार्टन के यहाँ गया—थकावट से चूर हो गया। मेश्चर्स्कीज़ के यहाँ जाकर मन को कुछ शान्ति मिली।

२० मई—तड़के उठा। दस बजे तक टहलता रहा। जुलाब ली। ताश खेले, और फिर दिन-भर 'लॉरट' पढ़ता रहा। पॉलिवानोवा अपने बच्चों के साथ आयी। उसे देखकर मुझे दुःख हुआ। एमसटर्डम में अमीर लोग........में टहलते हैं।

२१ मई—तड़के उठा। हॉटविले गया; बड़ा आनन्द रहा। घर आकर पढ़ना शुरू किया; काम नहीं कर पाता। मेले में गया। छः बजे तक वहीं रहा। सुन्दर वस्त्र, और नाच-कूद की भर-मार। गैलाखोव्स और मेश्चर्स्कीज़ आये। मैंने शाम बड़े-हीं मज़े में बितायी। मेश्चर्स्कीज़ ने मुझे नाचने को आमन्त्रित किया। नेक्रासोव का पत्र आया। उत्तर में एक धार्मिकतापूर्ण जवाब लिखा। एक पत्र पानेव को रुपयों की बाबत भी लिखा।

२२ मई—बग्घी........। आठ बजे उठा। थोड़ी देर

विचार के कारण तुम मुझसे अप्रसन्न हो जाओगी। मैं वास्तव में यहाँ प्रसन्न हूँ। यहाँ रूसियों के साथ अच्छा मेल-जोल हो गया है:—पुश्चिन्स, करमज़िन्स, मेशाचर्स्कीज़,—आदि। ईश्वर जाने क्यों ये लोग मुझे बहुत चाहने लगे हैं, और महीने-भर इस प्रकार का आनन्द रहा है, कि इस स्थान को छोड़ने का विचार करते ही मन में दुःख उत्पन्न होता है।

टहला। 'लॉरेट' पढ़ा। दो पत्रों के अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखा। शाम मेश्चर्स्कीज़ के साथ काटी। उन्हें चिचेरिन का पत्र भी सुनाया। वे बड़े ही बेवकूफ़ हैं; पर ईश्वर को धन्यवाद है कि मैं घबराया बिल्कुल नहीं। बारह बजे तक (वहीं) ठहरा। सिर बहुत भारी हो गया, तब शयन किया।

२३ मई—दस बजे उठा। ऊपर की मंज़िल पर बैठकर लिखा। जनरल के० एम० के पास से एक पत्र आया। प्रसन्नता हुई। भोजन के बाद ग्रॉइट्रेस के साथ खेला, कुछ देर टहला। गालाखोव्स का आगमन भी मैट्रिक के लिये हुआ। फिर मेश्चर्स्कीज़ के यहाँ गया। यह दिक्क़त बढ़ती जा रही है—आफ़त न आ जाय। इन आगन्तुकों में मेरे लिये कोई भी ख़ास प्रिय नहीं है; पर अपनी आदत को क्या कहूँ!

२४ मई—आठ बजे उठा। दिन-भर 'लॉरेट' पढ़ता रहा। बड़े-ही सुन्दर और सुखद विचार उत्पन्न हुये।

शाम को एक मुर्दनी में गया। प्रार्थना का असर मुझ पर अच्छा पड़ा। प्रेम से मेरा गला रुँध रहा है—भौतिक और आदर्श दोनों तरह के प्रेम मुझे विह्वल कर रहे हैं। एम० या० बड़ी ही आकर्षक है।

मैं अपने-आपमें बड़ी दिलचस्पी ले रहा हूँ। इसलिये भी अपने को चाहता हूँ कि मुझसे बहुत-से लोग प्रेम करते हैं।

२५ मई—जनरल की टॉरन्टो और क़ाहिरा को रवानगी। एल० एन० की बेहद प्रसन्नता। शाम को मेश्चर्स्कीज़ के यहाँ गायन-वाद्य का आयोजन हुआ। बड़ी ही प्रसन्नता रही।

२६ मई—मुँह का स्वाद कडुवा हो रहा है। गैलाखोव्स! शीघ्र! मेश्चर्स्कीज़ के यहाँ गायन-वाद्य! आनन्द और चापलूसी का दौर-दौरा।

२७ मई—आठ बजे उठा। तैयारी। गैलाखोव अपनी माँ के साथ आया। करमज़ीना और के०। पुश्चिन्स को विदा किया। मैं उन्हें मन से प्रेम करता हूँ। एम० या० सत्कार्य के लिये सदा उद्यत है। गैलाखोव्स के साथ खाना खाने गया। तबियत जकड़ी हुई और सुस्त रही। साशा को साथ लेकर 'ले अवान्त्स' तक गया। बड़ी सुन्दर जगह है। 'पागल' का एक पृष्ठ लिखा।

२८ मई—चार बजे उठा। कॉल-डी-जामन होकर टहलने गया। बड़ी सुन्दर सैर रही; पर साशा के मारे परेशान हो गया। हम 'एलियरे' पहुँचे। सुन्दर जगह है। एक झोंपड़ी पर आये, फिर मॉएट व्यूवेन्त पहुँचे। जेनेवेत्सका* ने और हैरान कर दिया। रोमन कैथोलिक कविता! पुस्तकें क़ायदे से सजाईं; किन्तु लिखा कुछ नहीं। सीने में दर्द है। 'चेट्ल्यू-डी-अक्स' की ओर गया। एक झरना मिला, जहाँ बड़े-बड़े पत्थर के ढोंके थे—कोई बता नहीं

* साशा की दासी।

सकता, कि पत्थर क्या हैं, और पानी क्या है। गाड़ी पर चढ़कर जेसने गया। एक क्रोधी काला आदमी मिला। बड़ा-ही उजड्ड मालूम पड़ता था।

२९ मई—बिस्तरे पर चैन नहीं आया। अफ़सर लोग बड़े ही उजड्ड और ऊधमी हैं। नायक कुछ शान्त हुआ। एक चार-डी-कोट में सफ़र किया। वेसबर्ग को पैदल गये। जलीय दृश्य एकान्त और सुन्दर है। साशा की राय में भूमि के दृश्य में सजावट की कमी है, और चेट्यू में सौन्दर्य नहीं है। नेनिस से स्पींज़ तक पैदल टहलते रहे—एक ग़रीब मछुवा मिला। साशा पर कार्ल का अच्छा प्रभाव पड़ा। एक नाव में सवार हो, यूहॉस पहुँचे। यहाँ बड़े ही सुन्दर प्रपात, गुफाएँ और गढ़ियाँ देखीं। फिर पैदल ही इण्टरलेकन गये। राई, दूध और मिठाइयों का आहार किया। स्वास्थ्य अच्छा है। आज-कल मैं शराब नहीं पी रहा हूँ।

३० मई—तबियत ठीक नहीं है। सात बजे उठा। पैदल बॉनीजन गया। यहाँ के लोगों—विशेषतः स्त्रियों में काफ़ी सौन्दर्य है। वे भीख माँगते हैं। पानी बरस रहा है। 'कॉसेक्स' का थोड़ा-सा अंश लिखा। सेवास्टॉपॉल के युद्ध का विवरण पढ़ा। दासी मुझे दिक़ कर रही है। मेरी लज्जालुता और झेंप ने मुझे बचा लिया। साशा के मारे तबियत परेशान है। बाल काटे। शाम को 'पागल' का

थोड़ा-सा हिस्सा लिखा। डॉक्टर के पास गया। कल फूफो को एक पत्र लिखा।

१ जून—स्वास्थ्य कुछ-कुछ अच्छा है। मौसम बड़ा ख़राब है। साशा थर्म के साथ कुछ 'फ्रूसटक' और मीठा लाया, और अब एक नाव बैठकर खे रहा है। ट्रिनिटी। रविवार व्यतीत करने का यह नया ढंग है। 'कॉसेक्स' लिखा। आँगन के बाहर टहलने के लिये आने का निश्चय किया। मकान-मालिक ने बतलाया कि ग्रिंडेनवाल्ड तीन घण्टे का रास्ता है। हम लोग वहाँ गये। साशा पीछे रह गया। बारिश हो रही है। एक छोटा-सा जानवर दिखलाई पड़ा। "भाई" कहकर पुकारनेवाले भिखमंगों की भीड़। धार्मिक बनने के सम्बन्ध में वाद-विवाद। एक सराय में पहुँचे, और वहीं सब-कुछ ख़र्च कर दिया। होटल में बड़ी ही सुन्दरी लड़कियाँ परिचारिका का काम करती थीं। यहाँ का वेटर नेपिल्स की लड़ाई में भाग ले चुका। हिमश्रोत का यह क़ायदा है, कि वह सात वर्ष तक तो घटता है, और सात वर्ष तक बढ़ता है।

२ जून—बॉरेन के साथ ग्लेशियर (हिमश्रोत) को गया। अपनी चीज़ें मँगवाईं, यात्रा-विवरण लिखा, दूसरे ग्लेशियर की ओर गया। लुपरर-नामक एक लड़का मिला। एक दूसरा लड़का अपने को 'बुड्ढ़े मियाँ' का पचीसवाँ पुत्र बतलाता था। एक अँग्रेजी तोप दिखलाई

दा। एक भयानक दराँती देखी। अँग्रेज़ लोग आगये। ....आधी रात तक नींद नहीं आई—कमरे से दहलीज़ तक चेहलक़दमी करता रहा। झरोखे के आस-पास टहलता रहा। चन्द्र-किरण के कारण हिमश्रोत और पर्वत-शृङ्ग काले-से दीख रहे थे। नीचे की मंज़िलवाली नौकरानी को मैंने छेड़ा—ऊपरवाली को भी। वह दौड़-दौड़कर मेरे कमरे में आती थी। मैंने समझा—वह मेरी सेवा के लिये आई है..........इस बात से सब लोग दौड़कर मेरे कमरे में आ गये, और मुझे देखकर नाराज़ होने लगे। नीचे की मंज़िल में इस बात की चर्चा है कि मैंने ऐसा करके सारे मकान को जता दिया है।.........वे लोग आधे घण्टे तक बड़बड़ाते रहे।

३ जून—चार बजे उठकर शीडन गया। साशा को पहले ही वहाँ भेज दिया था। पैदल गैम्बर्ग गया—भयानक यात्रा है! सूर्यास्त का सुन्दर दृश्य देखा; किन्तु थका होने के कारण उसका आनन्द नहीं ले सका। मुझे लू लग गई, जिसके कारण मेरी आँखें बेकाम-सी हो गईं। चार बजे वापस आया, और सो रहा। जिस समय जगा, तो तबियत उदास और क्रुद्ध-सी थी। अरुचिपूर्वक भोजन किया। रुपये का विचार हर एक चीज़ को नष्ट कर देता है, और अब मेरे पास बहुत थोड़ा रुपया शेष रहा है।

४ जून—पाँच बजे रोज़ेनलॉ से रवाना हुआ। सब

जगह लूट है। पहाड़ी से नीचे उतरा। मीरिनजेन में सवाधान हो गया। एक युवक स्विस मिला, जो रूस के सम्बन्ध में बातें जानने के लिये बहुत-ही उत्कण्ठित था। जल-प्रपातों का मनोरम दृश्य। रूसी स्त्रियाँ ! ब्रीन्ज़। एक भलामानुस सिपाही। हमें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। गाँव के पास पनीर खाने के लिये गया। स्टीम बोट नहीं पकड़ सका, इसलिये पैदल-यात्रा की। शिल्ड बहुत क्रुद्ध था। टॉल्सटॉय-घराने से रुपया उधार लिया। 'थन' के झील पर होकर लीसिनजेन गया। एक आदरणीय भटियारा मिला। चारों ओर सुन्दरी स्त्रियाँ चोलियाँ पहने टहल रही हैं। मेरे पैरों में बड़ा दर्द है।

५ जून—सात बजे रवाना हुआ। एक पत्थर ढोनेवाला गाड़ीवान हम लोगों को गाड़ी पर बिठाकर ऊपर ले गया। एक बर्तन की दुकान में गया—बहुत अधिक दाम माँगता है। और भी सुन्दर लड़कियाँ दिखलायी पड़ीं। स्पीज़ से थन तक पैदल गया। मेरे साथ एक कुत्ता और कई बच्चे हैं—बड़े ही सुखद और हँसमुख। एक साँवला-सा मोची मिला। उसका सारा परिवार रोगी मालूम पड़ता था। 'थन' में अठारह पादरियों के साथ भोजन किया। पिंटन विर्टशैफ़-नामक एक खूबसूरत नौकर मिला। बेरने पहुँचा। एल० करमज़ीना को पत्र लिखने का विचार किया। साथ ही यह भी

विचार उत्पन्न हुआ, कि मुझे अपनी शादी करके अपने घर में रहने का प्रबन्ध अवश्य कर लेना चाहिए।

६ जून—आठ बजे बेरने से रवाना हुआ। फ्री बॉर्ग तक चौरस ज़मीन, जङ्गल और राई के खेतों से ढकी हुई है। एक तीस-वर्षीय अमेरिकन युवक मिला, जो रूस हो आया था। उटा में मॉर्मन-लोग मिले। उनके दल के मुखिया जोसेफ़ स्मिथ को बिना विचार के ही प्राण-दण्ड दे दिया गया था। सभी सरायों में एक-सा दाम लिया जाता है। भैंसों और गुलामों का शिकार हो रहा है। मैं अपनी यात्रा जारी रखनी चाहता हूँ। गुलामी के संहारक और बीचर स्टो ❀। वेवी में आपहुँचा। उसको आने के लिये कहा, किन्तु वह

❀ बीचर स्टो 'टाम काका की कुटिया' की लेखिका थीं, जिन्होंने उस समय अमेरिका में गुलामी की प्रथा पर उक्त पुस्तक लिखकर घोर कुठाराघात किया था। टॉल्सटॉय रूस से भी इस घृणित प्रथा की जड़ काट देना चाहते थे, इसलिये श्रीमती बीचर स्टो के साथ उनकी गहरी सहानुभूति थी। चालीस वर्ष बाद जब उन्होंने 'कल क्या है ?'-नामक पुस्तक लिखी, तो उसमें उक्त श्रीमती की रचना को कलापूर्ण बतलाया। साथ ही यह भी लिखा कि 'विषय के लिहाज़ से इसकी गणना सुन्दर कला में हो सकती है,……किन्तु मैं अपने चुनाव को अधिक महत्त्व नहीं देता, क्योंकि…… मैं ग़लती भी कर सकता हूँ, इसका कारण यह है, कि इस पुस्तक ने मेरी तरुणावस्था में मुझ पर प्रभाव डाला था।"

नहीं आया। यात्रा पैदल समाप्त की। उदास हूँ; पास कौड़ी नहीं रही! लिखना शुरू किया, पर समाप्त नहीं किया। एल० करमज़ीन को पत्र लिखा।

७ जून—आठ बजे उठा। होठों में दर्द है। प्रातःकाल अपनी यात्रा का विवरण लिखा। भोजन के बाद 'कॉसेक्स' का थोड़ा-सा अंश। स्नान किया, बैसेट के आकर्षक दृश्यों का आनन्द लेने के लिये टहलता हुआ गया। उसके बाद 'पागल' का थोड़ा-सा अंश लिखा। बहुत सुन्दर रहा।

८ जून—आठ बजे उठा। तबियत अच्छी नहीं है। 'पागल' का एक पृष्ठ लिखा। नेक्रासोव और करमज़ीना को पत्र लिखे। अब मैं दिन में दो बार नहाने लगा हूँ, और साथ ही डाँड़ चलाने का अभ्यास भी कर रहा हूँ। तुर्गनेव, नेक्रासोव, बॉटकिन और ड्रूज़िनिन के पत्र आये। एक सजी-धजी पर मुझे पसन्द न आनेवाली अँग्रेज़ स्त्री आयी है।

९ जून—बड़ी गहरी नींद ली, पर तबियत हल्की नहीं हुई। सात बजे उठा, स्नान किया और चिट्ठियाँ डाक में डालने के लिये गया। 'खुला हुआ क्षेत्र' नामक पुस्तक का थोड़ा ही अंश लिखा, पर मालूम होता है, कि पुस्तक अच्छी चलेग। मेरी क्रियाशीलता शिथिल होती जा रही है। आगन्तुक अँग्रेज़ स्त्री समझती है, कि फ्रेंच-भाषा बोल लेना

ही मुख्य चीज़ है, पर यह बात मैं बिल्कुल ही गौण समझता हूँ। शाम को साशा आया और मैं उसके साथ नाव में बैठ-कर वर्नेट तक गया। फिर एक बड़े काले मल्लाह और उस-के लड़के की मदद से हमने एक नाव में पत्थर फेंके, परन्तु बादल पहाड़ों से नीचे झुके हुए थे, और हम बारिश से डर गये।

९ जून—मेरे तारीख़ ग़लती लिखने के कारण एक दिन का फ़र्क पड़ गया है। ऐसा मालूम पड़ता है, फिर कुहरा पड़ रहा है। इसका कारण यह है कि दिन-भर बारिश होती रही है। 'युवावस्था' का पहला परिच्छेद लिखा है। और भी लिख सकता था; परन्तु मैं शीघ्र-से-शीघ्र सारा मज़मून दोहरा जाना चाहता हूँ। भोजन के बाद अपना यात्रा-विवरण लिखा। कई—लगभग नौ—पृष्ठ लिख डाले। किन्तु ससाप्त नहीं कर सका शाम को साशा ने काम में बाधा डालकर परेशान किया। अँग्रेज़ स्त्री के साथ अमेरिका और राजनीति पर कुछ गपशप की। पुश्चिन का एक पत्र आया, मैंने उसका उत्तर भी दे डाला। मॉस्को से मुझे २००० रूबल प्राप्त हुए हैं।

१० जून—छः बजे उठा। बड़ा ही सुहावना समय है। एक्सचेंज बिल के बारे में वेवी जाना पड़ा। कुछ नहीं कर सका। ज़ाइबिन्स गया। मैडम स्टीयर········। बड़ा ही आनन्द आ रहा है। पॉलिवानोवा के साथ लौटा। यह

मूर्खा नहीं, एक सुशीला और सीधी-सादी स्त्री मालूम पड़ती है। खाने के समय अँग्रेज़ स्त्री, माँ बेटी दोनों ही, आपहुँचीं। इनके जीवन का सारा उद्देश्य हैं—रेस्टोरेंट। पानी बरस रहा है। कुछ दूर टहला। ब्रिमर* की लिखी हुई 'पड़ौसी'-नामक पुस्तक पढ़ी। बड़ी-ही तेजस्विनी और आकर्षक बुद्धि है उसकी; यद्यपि स्त्रियों के लिये वह बहुत-ही विनम्र है। चार पृष्ठ के लगभग यात्रा-विवरण लिख डाला। 'आवारा कॉसेक' का कथानक भली-भाँति सोचा, और जो-कुछ लिखा था, उसे दोहराया।

११ जून—आईना तोड़ डाला। सिर्फ़ इसी शकुन की कमी थी! कोश देखकर भाग्य-फल निकालने की ताब मुझ-में नहीं है। जिन शब्दों पर मैंने उँगलियाँ रक्खी हैं, वे ये हैं:—पुनर्पाद, जल, श्लेष्मा, गम्भीरता। प्रातःकाल 'पड़ौसी' पढ़ता रहा। सौन्दर्य की दृष्टि से अच्छा न होने पर भी इस-में मधुर आकर्षण और काव्यानुमोदित गुण पाये जाते हैं। दिन-भर बाहर नहीं गया। चाय पीने के बाद 'आवारा कासेक' के पाँच पृष्ठ लिखे।

१२ जून—प्रातःकाल ब्लॉनेट गया। सुन्दर जगह है। फ़व्वारा बिल्कुल आधुनिक ढंग का बना है, और इमारतें तथा वृक्ष पुराने हैं। जिनेवा गया। 'ज़ाइबिन' हम लोगों को

---

* फ़ेडरिक ब्रिमर स्वीडन के एक प्रसिद्ध लेखक थे, जिन्होंने स्त्रियों के अधिकार का ज़बर्दस्त समर्थन किया था।

गाड़ी में लेगया—वह है तो बेवक़ूफ़, पर ठोस काम के लिये उपयोगी है। पेटज़ोल्ड और चर्नीशोव से मुलाक़ात की। स्टीम-बोट पर बहुत थोड़ा-सा लिखा। जेनेवा पहुँचकर वॉकेज के पास गया। नॉइर का देहान्त हो चुका है। अलेग्जैण्ड्रा टॉल्सटॉया के साथ मैं बहुत लज्जा और घबराहट का अनुभव करता हूँ।

१३ जून—प्रातःकाल रूसी पुरोहित के साथ टॉल्सटॉय के यहाँ गया। गेर के साथ भोजन किया; वे बड़े अच्छे चित्रकार हैं। छः बजे सैवोयार्ड नामक एक चालाक, सुन्दर और बलवान फ्रांसीसी के साथ चैम्बरी के लिये रवाना हुआ। उसके पास एक कुत्ता भी था।

१४ जून—बारह बजे तक सोता रहा। गाड़ी में और लैंसलीबर्ग के आगे शराबी पीडमॉण्टीज़ और एक लाल केशवाले कंडक्टर से परिचय हुआ, जिसकी आँखें बड़ी-बड़ी, और हँसी ऐसी थी, जिसे देखकर मालूम होता था कि वह मुँह बनाकर दूसरों को चिढ़ा रहा है। अनिश्चय के कारण के० एस० के साथ सफलता नहीं मिली।

१५ जून—पाँच बजे तक सोया। मॉण्ट सेनिस पार किया। झील का जल बिल्कुल पारदर्शी है। नौ बजे गाड़ी पर बैठा। एक मिलनसार तूरीनियन से परिचय हुआ। बारह बजे पहुँचा। एक बजे बॉटकिन मिला। वह बीमार है; वृद्धावस्था अलग सता रही है। उसके साथ रहना मेरे

लिये दुस्तर है, पर किसी तरह इसका प्रबन्ध करूँगा। ड्रूज़िनिन और बॉटकिन आगये हैं। बड़ा ही आनन्द रहा। दो थियेटरों में हो आने के बाद एक कफ़े में गये। सड़क पर गानेवाला मिला। अपोलो में एक आदमी क़लाबाज़ियाँ खाता हुआ मिला।

१६ जून—सो गया, इसलिये जेनोआ नहीं देख सका। दो अजायबघरों की सैर की—हथियारों और मूर्तियों का निरीक्षण किया—वहाँ से 'डिपुटीज़ चेम्बर' को गया। हम सब ने एक साथ ही भोजन किया। फिर टहलने को निकले। …………एक नृत्य-गायन पार्टी में फर्नी-भगिनियों का गायन सुनने गये। ये सर्डीनियाँ की सर्वोत्तम गायिकायें समझी जाती हैं। ड्रूज़िनिन के साथ विलम्ब तक गपशप होती रही, जिससे सोना विलम्ब से हुआ। बॉटकिन, ड्रूज़िनिन के प्रति गुप्त घृणा रखता है।

१७ जून—तड़के उठा। स्नान किया। अथेनियम के पास दौड़ा गया। इस दृढ़ और स्वतंत्र-जीवन युवक को देखकर मेरे मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई। एक कफ़े में गया। कोई व्यक्ति यदि चाहे, तो सर्वदा आनन्दपूर्वक रह सकता है। वाल्दीमीर बॉटकिन के साथ चिवासो गया। व्राफ़िअन की बहस की नक़ल। ऐंजेलेट और उसके मित्र के साथ गाड़ी में बैठे। एक सुन्दर बालोंवाला इटैलियन भी था, जो पूरा बदमाश मालूम पड़ता था। यह एक रिटायर्ड अफ़सर

था और बी·········की बड़ी इज्ज़त करता था। एक रमणी थी, जिसकी उपस्थिति की चर्चा·········। लोराई में भोजन किया। मित्रों ने कॉफ़ी पिला दी। थकावट का विचार न करते हुये सेंट मार्टिन तक पैदल गया। अंगूर के खेत और जुगनुओं की बहुतायत।

१८ जून—मैं विलम्ब तक सोता रहा, जिसके कारण उन मित्र-महोदय से मुलाक़ात न हो सकी, जो मुझे जगाने आये थे। जागकर एक जुलूस देखने के लिये निकला। वाल्टेयर सफ़ेद पहनावा पहने, छत्र लगाये, शान के साथ गुज़रा। आगे बढ़ा। खच्चर पर सवार हुआ, ग्राज़्नी की तरफ़ चला, जहाँ बड़ी ही सुन्दरी स्त्रियाँ सुनने में आती हैं। पहाड़ियों को पार करता हुआ पर्लो पहुँचा। औरों को पकड़ तो लिया, पर थक बेहद गया। इस के बाद हम एक हँस-मुख जर्मन गाइड के साथ ग्राज़्नी की ओर बढ़े। पानी बरस रहा था। एक असाधारण स्त्री ने हम लोगों की सेवा की।··········

१९ जून—आधी रात तक नहीं सोया। मस्तिष्क आन्दोलित अवस्था में था। बारिश के कारण हम लोग रवाना नहीं हो सके·········दो पृष्ठ 'कॉसेक्स' के लिखे। गेटे की मनोहर कृति—'अवकाश और सम्मिलन' पढ़ी। ट्रिनिटी गये। यह एक ऐसी घाटी है, जो ग्रिडनवाल्ड से

मिलती-जुलती है। सुन्दर जगह है। बॉटकिन बड़ा ही प्यारा मालूम होता है।

२० जून—छः बजे रवाना हो गया। गिरजाघर गया। सुन्दर गवैयों से मिला। आवोस्ता घाटी और पहाड़ियों का दृश्य। उमंग दवती जा रही है। एक 'ईश्वरीय पिता' और 'ईश्वरीय माता' से मिला। राई, देवदार और घास की सुगन्ध......। ब्रूसन। दूसरी चढ़ाई। यहाँ के भिक्षुक 'आधा फ्रांक' माँगते हैं। यहाँ सनोवर का एक बड़ा जङ्गल है। एक नाले के किनारे एकान्त-सेवन। आवोस्ता घाटी का दूसरा दृश्य देखा। अखरोट और मेवे। एक घाटी में अंगूर की क्यारियाँ देखीं। सेण्ट विन्सेण्ट। एक सुन्दर तम्बाकू-वाला। कैज़िनो का पानी। भले आदमियों की-सी घुड़सवारी। शैम्बेव को पैदल गया। ध्वंसावशेष।

२१ जून—गाड़ी भरी थी। रविवार का दिन था। बाज़ार और गिर्जे गया। धर्म-दीक्षा। एक गाड़ी में आवोस्ता गये। स्नान किया। गर्म मुल्क है। रोमन प्राचीन चिह्न देखे। कोचवान रेस्टोरेण्ट में। बड़ा बदमाश आदमी है। सेण्ट रेमी को सड़क। डिप्टी लोगों के निर्वाचन की कहानी। एक दहक़ानी बेवक़ूफ़ नैपोलियन-फ़ैशन की टोपी पहने मिला। सेण्ट रेमी। अस्तबल में बॉल-नृत्य—'त्रा ला ला' की ध्वनि। सेण्ट बर्नार्ड के कुत्ते। गाइड ने संजाफ़दार कपड़े पहन रक्खे हैं, मेरी टोपी में भी पतला संजाफ़ (किनारा)

लगा है। कुहरा पड़ रहा है। ठंड भी बहुत है—जिस तरह जाड़े के दिनों में रूस में शाम को जाड़ा पड़ता है। अद्भुत बात है। कुहरे में धर्मशालाओं को इमारतें कैसी विशाल दिखायी देती हैं। मठ की आव-भगत भी खूब होती है। कमरे में अलाव लगी है। मुसाफ़िर-स्त्रियाँ और मठ की महन्तिनें! बड़ा शानदार ब्यालू किया। दो अँग्रेज़, दो फ्रांसीसी और दो रूसी। सभी महन्त काफ़ी वाचाल हैं।

२२ जून—छः बजे उठा और कमरे में गया। अँग्रेज़ पहले ही चला गया था; सिर्फ़ स्त्रियाँ रह गयी थीं। एक बातूनी महन्त कुत्ते दिखा रहा था। हमने कलेवा किया, गिरजाघर देखा। कुछ घटिया चित्रों की प्रतियाँ देखीं, जिनमें मृतकों का एक खाका-मात्र खिचा मालूम पड़ता था।

दो घण्टे तक कुहरे में होता हुआ बर्फ़ पर चला। जहाँ कुहरा मिट चुका था, वहाँ अँधेरेपन के साथ ठण्डक छायी हुई थी। एक घण्टे तक तो एक गाड़ी में सफ़र किया, फिर तीन घण्टे तक पैदल ऑसियर की तरफ़ गया। बड़ा ही ख़राब दिन है, मौसिम बहुत ही निकृष्ट हो रहा है। बॉटकिन रास्ता भूल गया, इसलिये हमारा-उसका साथ छूट गया। किसी नये आदमी से परिचय नहीं हुआ। ऑसियर में। वहाँ से आगे मॉर्टिनी के लिये गाड़ी में बैठकर गया। आश्चर्य-जनक स्थान है। पैदल इविओनैज़ गया। घाटी बकायन के वृक्षों से ढकी हुई है। पिज़ेवाश—राई की फ़सल मारी

गयी है। इस जगह की तुलना इण्टर्लेकन से की जा सकती है। एक गन्दी-सी दूकान खाद्य-सामग्री की थी, पर मच्छरों से भरी हुई। मुसाफ़िरों के सोने के लिये भी कमरे हैं। एक शराबी रेलवे-कर्मचारी मिला। ख़सी भीड़ और प्रसन्नवदना दासियाँ।

२३ जून—सात बजे उठा। काले रङ्ग की कॉफ़ी आई। मैंने कॉफ़ी ख़राब होने की शिकायत की, तो होटल की दासी रोने लगी। एक तपेदिक़ के उपदेशक मरीज़ और एक ठिंगने फ़ौजी जमादार के साथ, जो नेपिल्स के लिये रँगरूट सिपाही भर्ती करता था। गाड़ी में बैठकर विलेनेव तक गया। नेपिल्स में स्विस लोगों के रहने की आवश्यकता पर कुछ बातें की। बहुत देर तक नाव में रहा, और उतरने पर बड़ी ही थकान का अनुभव किया। जल-मार्ग से हम लोग चिलन पहुँचे। विलेनेव में चाय पी। बिना स्त्रियों के, आनन्द होते हुए भी अपूर्वता का अनुभव होता हैं। विलम्ब से लौटा, और आराम से सो रहा।

२४ जून—छः बजे उठा। स्नान किया। बॉटकिन की 'पागल'-नामक रचना पढ़ सुनाई। वास्तव में यह है तो कुछ नहीं। उसे 'कॉसेकस' पसन्द आयी। गप-शप करने के बाद वेवी गया, और वहीं टहलता रहा। घर पर गप-शप की। 'कॉसेक्स' के सम्बन्ध में सफलता मिलने के अतिरिक्त और कोई विशेष बात नहीं हुई।

२५ जून—बॉटकिन आज पहले ही चल पड़ा था। स्नान करने के बाद जुकाम हो गया, नींद लग गयी, कुछ टहल-घूमकर तबियत बहलाने का विचार किया। सिर में दर्द है। ग्लियोन गया। ड्रूज़िनिन बड़ा ही सख्त आदमी है। 'रेंडेज़्वस' लिखा—अच्छी चीज़ है।

२६ जून—विलम्ब से उठा। ज़ोर का सिर-दर्द है। टहलने के लिये चैलेलार्ड गया। गर्मी मालूम होती है। फिर सो गया। वेवी और ब्लॉनेट को गया। अब कुछ अच्छा हूँ। किया कुछ नहीं। अनेनकोव ने एक क्रियात्मिकतापूर्ण पत्र भेजा है।

२७ जून—नौ बजे उठा। अब भी तबीयत ठीक नहीं है। बवासीर की शिकायत हो गयी है। शराब नहीं पीना चाहिये, और अब अधिकांश समय ठण्डी जगहों में ही बिताना चाहिए। सिगरेट बनाये। ड्रूज़िनिन के साथ मज़ेदार बातें कीं। 'खोया हुआ' का कुछ अंश लिखा। भोजन के बाद सो गया। उठने के बाद विलेनेव और 'होटल बॉयरन' गया।

एक सुन्दरी देखी। मुझे अब एक सुन्दर स्त्री की सख्त ज़रूरत है।

२८ जून—सिर में अब भी दर्द है। 'कल्ट लाइबर' गया। पास्टर एक कवि है। 'फाँसी देखने जारहा हूँ'-नामक पुस्तक पढ़ी। अच्छी चीज़ है। इसे मैंने क्यों नहीं

लिखा ? मुझमें वास्तविक तथ्य वर्णन करने का साहस नहीं है—यह गुण परिश्रम से प्राप्त होता है। बॉटकिन के साथ लुसान गया। कैज़िना। एक बॉल………,सैनिक। एक बड़े पैमाने का बॉल। जङ्गल, दृश्य। सिग्नल। फिर कैज़िनो। तीन लड़कियाँ देखीं, उनकी नज़र बचाकर निकल गया। एक मेथोडिस्ट स्त्री ! कमाल की आँखें हैं उसकी।

२९ जून—देर से उठा। शहर के आस-पास घूमकर एक बजे वापस आया। भोजन के बाद कुछ लिखा। डूज़िनिन के साथ मॉट्रिक्स गया, खूब मज़े से गपशप की। वह क़द में छोटा तो बहुत है; पर मोटा और गठीला काफ़ी है।

३० जून—जिनेवा के लिये रवाना हुआ। सिर में दर्द बढ़ता ही जा रहा है। स्टीमर पर दो फ्रांसीसी थे, एक व्यापारी था, और दूसरा था—उसका साला, जो समाजवादी विचार का था। शेंशिन-नामक एक रूसी ज़मींदार ने मेरे कान में फुसफुसाकर कहा—कैसी करुण अवस्था है; कैविगनैक ने अपने को पतित बना लिया है। उसकी स्त्री बड़ी ही दयालु, और मोटी चौड़े मुँहवाली है। सिर में दर्द होते हुए भीं मैं टहलने के लिये निकल गया।

३१ जून* —सात बजे उठा, कुछ देर टहला और बाज़ार से कुछ चीजें ख़रीद लाया। टॉल्सटॉय के यहाँ

---

* यह तारीख़ भी ग़लत है। क्योंकि जून का महीना हमेशा तीस दिन का होता है।

गया। दिल घबरा-सा गया—आत्मा पर चोट-सी लगी। भोजन किया। एक फ्रांसीसी, सेंट थामस और मैं—सब ड्ज़िनिन के साथ टहलने गये। ओल्गा बिल्कुल अक्षत और निष्कलङ्क है। मुझे क्या करना चाहिए? 'सर्किल-डिइस्ट्रेंजर्स' का नृत्य। एक अमीर हज्जाम। वी० में मैंने अँग्रेज़ों के हाथ ऊपर उठवाये।

१ जुलाई—जिनेवा में बहुत ख़र्च कर दिया। शहर के फ़ैशन में रहना अच्छा नहीं लगता। उस मानसिक संघर्ष में पड़े हुए, किसी वस्तु की आशा में, अपने ऊपर ज़रा भी विचार किये बिना, आदमी ग़लतियाँ करते हैं, और फिर दुःखित होते हैं, अपने ही आप से। यह बड़ी भयानक स्थिति है। दो बार टॉल्सटॉय-परिवार से वादा-ख़िलाफ़ी कर चुका हूँ, उनसे मिल नहीं सका। गिर्जे में भी जाना नहीं हुआ। बहुत रुपया ख़र्च कर डाला है। करा-धरा कुछ नहीं। स्थिति ऐसी बढ़ गई कि सब प्रकार की आपत्ति के लिये तैयार होगया। आज ड्ज़िनिन को विदा करने गया। जिनेवा के फ़्री-मैसन लोगों (संसार-व्यापी गुप्त सभा के सदस्यों) की बात चली। बर्डन स्विट्ज़रलैंएड के उन शहरों में से है, जिनसे मैं ऊब चुका हूँ। कर्टर और पुश्चिना को पत्र लिखूँगा।

४ जुलाई—नौ बजे उठा। तेज़ी से जहाज़ की तरफ़ चला। ऐसी भीड़ मैंने पहले कभी नहीं देखी। एक घुँघराले बालोंवाला स्विस-छोकरा शुद्ध फ्रेञ्च बोलता है; भूठ, बेई-

मानी—सब-कुछ करता है, पर बड़ी सफ़ाई से। रूसो❀ .फ्री-मैसन था। मनुष्यों के भिन्न-भिन्न रूप:—(१) चौकोर जर्मन, जिनके जबड़े चौड़े होते हैं, और क़मीज़ों की दाहिनी तरफ़ सोने पर ब्रूच लगाते हैं, (२) पेरिस के दुबले-पतले फ्रांसीसी, (३) दृढ़ और साहसी स्विस। रेल—चीख़, चिल्लाहट, फूल-मालायें, आशीर्वाद-इत्यादि—यात्रियों से सम्बन्ध रखनेवाली गड़बड़। लड़के-लड़कियों का एक चलता-फिरता स्कूल देखा—जिनका शिक्षक भारी जबड़ेवाला, पसीने से लथ-पथ, लाल मुँहवाला एक व्यक्ति था। दूसरे डब्बे में फ्रांसीसी थे। रात चाँदनी से भरी हुई, बड़ी ही सुहावनी थी। शराबी लोगों की चीख़-चिल्लाहट से इस सुन्दर रात की मनोरमता नष्ट नहीं होती। धुँधले कोहरे में अनाज के पेड़ों की सायँ-सायँ मुझे अपनी तरफ़ खींच रही है। परन्तु अगर मैं उस तरफ़ जाऊँ, तो आकर्षण बढ़ जायगा। प्रकृति की सुन्दरता से मेरी आत्मा को सुख नहीं मिलता, वरन् एक प्रकार का कष्ट होता है। गाड़ी में बाक़ी सब मुसाफ़िर नींद में अण्टा-ग़ाफ़िल थे। मैंने खिड़की के बाहर की तरफ़ देखा, और इतना आनन्दित हो उठा, जितना कभी नहीं हुआ था। कॉराँ में एक मकान मिल गया। बाजे के साथ एक सेना की टुकड़ी को शहर में प्रवेश करते देखकर मेरा हृदय विषाद से भर उठा।

❀ युवावस्था में टॉल्सटॉय रूसो के बड़े भक्त थे।

५ जुलाई—आठ बजे उठा। नींद अच्छी तरह नहीं आई। क्षय❀ का स्वप्न दिखलाई दिया। एक होटल में गया। स्विस-लोग अपने साहस की बड़ी डींग हाँकते हैं। यहाँ भी वही फ़ौजी वातावरण है। कवित्व लोप होगया है। एक आदमी का कोट फट गया, और उसने एक फ्राङ्क हर्जाना माँगा। लोगों ने उसे बढ़ावा दिया। मैं बड़ी निर्बलता का अनुभव कर रहा हूँ। सड़ी हुई घास की तेज़ बू आ रही है। खाना अच्छा था। मैं किसी के साथ आसानी से नहीं मिल पाता, और किसी को एक-दम प्रसन्न भी नहीं कर सकता। झण्डे फहराती हुई गाड़िया उड़ी जा रही हैं। लोग गाना गारहे हैं। गोलियों की आवाज़ें बराबर सुन पड़ती हैं। पर्वत बहुत सुन्दर हैं। एक मेज़ पर कुछ सिपाही, नौकर और शहरी लोग इकट्ठे हैं, और गला फाड़कर गा रहे हैं। एक बुड्ढा ताल दे-देकर गाने में योग देता है, और यद्यपि उसका सुर ग़लत है, तौभी उसे कोई रोकता नहीं। एक अफ़सर, जिसने जुए में रुपया जीत लिया है, शराब पी रहा है। मेज़ों पर खड़े हुए लोग खुशी के साथ उसकी तरफ़ निहार रहे हैं। भावुकता-हीन आदमी! सब तरफ़ आनन्द ही आनन्द! एक लम्बा स्विस खड़ा होकर कमर-बन्द ठीक कर रहा है। एक सरकस। जर्मन लोग बहुत

❀ टॉल्सटॉय के दो भाई क्षय रोग में मर चुके थे।

शोर मचाते हुए कूदते हैं। एक अजीब थियेटर। रात। भयावनी छाया-मूर्तियाँ ! बहुत दुर्बल होगया हूँ।

६ जुलाई—नौ बजे उठा। फिर क्षय का स्वप्न। सामान बाँधकर लूसर्न चल दिया। साथी-यात्री—एक युवक अमरीकन जो अब स्विस है, अपनी आकर्षक पत्नी के साथ। लूसर्न पहुँचा। बड़ा सुन्दर दृश्य है। स्नान किया, और तबियत अच्छी मालूम होती है। साधारण भोजन किया। एक सुन्दरी स्विस-रमणी, एक फ़ीतेवाला अँग्रेज़, काउण्ट एस०……का साला। सैर करने गया। टाँगें भारी हो रही हैं। नब्ज़ ठीक नहीं है। लिखने की बेहद इच्छा है। अगर तुरन्त सो नहीं गया, तो अवश्य लिखूँगा।

७ जुलाई—नौ बजे उठा। सिंह-ध्वज की तरफ़ गया। घर पर आकर नोटबुक खोली, पर लिख कुछ न सका। खाने के वक्त तबियत बेहद सुस्त रही ! चकलों में गया। उस बादलोंवाली रात में वहाँ से लौटती दफ़ा मुझे कुछ मधुर स्वर सुनाई पड़े। एक चौड़ी गली में कहीं से दो घंटियों के बजने, तथा किसी महीन गले के गाने की आवाज़ आई। एक ठिंगना आदमी गा रहा था। मैंने उसे कुछ दिया, और सीज़र-हफ़-होटल के सामने जाकर गाने को कहा। वहाँ से उसे कुछ नहीं मिला, और जब बेचारा शर्मिन्दा होकर लौटा, तो भीड़ हँस पड़ी। उससे पहले आस-पास के मकानों और होटलों के छज्जों पर खड़े होकर लोग उसका गाना सुन रहे

थे। मैंने उसे साथ लिया, और होटल में चलकर अपने साथ खाने का प्रस्ताव किया। गानेवाला गँवार होने पर भी बड़ा मार्मिक गाना गाता है। हमने शराब पी। वेटर हँसने लगा, और कमरा साफ़ करनेवाला पास हो बैठ गया। इससे मुझे गुस्सा आगया, और मैं बेतरह उत्तेजित हो उठा।* रात बड़ी ही मनोहर थी। मेरी इच्छा क्या है, मेरे मन में कौन-सी अज्ञात अभिलाषाएँ छिपी हैं, यह मैं नहीं जानता। हाँ, यह जानता हूँ, कि इस दुनियाँ की वाह-वाही की लालसा मुझे नहीं है। भला मनुष्य आत्मा की अमरता पर क्यों न विश्वास करे, जबकि वह स्वयं अपनी ही आत्मा में अतुल महानता का अनुभव करता है? खिड़की के बाहर झाँका। अन्धकार। छितराये हुए बादल। कहीं-कहीं प्रकाश। इस समय तो मृत्यु के लिये भी प्रस्तुत हूँ।

भगवान्! भगवान्! मैं क्या हूँ? किधर जारहा हूँ। और कहाँ हूँ?+

८ जुलाई—स्वास्थ्य ख़राब है। टाँग में दर्द है। थोड़ी-सी चेहल-क़दमी की। फूफी को पत्र लिखा। 'खुला हुआ

---

* इसी घटना के फल स्वरूप टॉल्सटॉय ने 'लूसर्न'-नामक कहानी लिखी, जो इसी वर्ष के सितम्बर-मास में प्रकाशित हुई।

+ इन्हीं विचारों के कारण टॉल्सटॉय ने बीस बरस बाद 'अङ्गीकार' (Confession) लिखा था।

क्षेत्र' दूसरी तरह से लिखना शुरू किया है। लिखा नहीं जाता। खाने के वक्त असह्य सुस्ती। मैडम डैमर के घर गया। दो छोटे-साफ़ कमरे; एक सुन्दरी, प्रसन्न-मुख कन्या; एक बहरी बुड्ढी औरत, जो घर में झाड़ू देती है, और कूल्हों पर हाथ टेके हुए दिल खोलकर हँसती है। झील पर पर गाना-बजाना हो रहा था। आस्मान में बादल छाये हुए हैं। अँधेरे में पुराने खण्डहर चुपचाप खड़े हैं। मकान अच्छे बने हैं। अगर यहाँ मैं नियमपूर्वक लिख सकूँ, तो बहुत दिन ठहरा रहूँ। हॉल में फ़व्वारा छूट रहा है।

९ जुलाई—तड़के उठा, और तबियत अच्छी है। स्नान किया। अपने छोटे-से कमरे में मस्त हूँ। 'लूसर्न'-कहानी लिखी, और बॉटकिन को एक पत्र भेजा। फिर भोजन के के बाद कुछ पढ़ा। नाव की सैर की, और तब आश्रम में गया। बोर्डिङ्ग-हाउस में जाकर अत्यन्त व्यग्र हो उठा—अनेक सुन्दरी युवतियाँ। एक चतुर जर्मन व्यापारी के पास बैठा हूँ, जिसने बेटे को सिखा-पढ़ाकर अपना भी उस्ताद बना लिया है। एक बुड्ढे बहरे आदमी ने अपनी कन्या की करुण कहानी सुनाई, जो उसे धोखा देकर भाग गई थी।

१० जुलाई—अच्छा हूँ। आठ बजे स्नान किया। 'लूसर्न' लिखता रहा। ख़ासी अच्छी तरह लिखा। फ़्रेटेग की 'आत्मा और स्वर्ग' पढ़कर समाप्त की। साधारण। मेरा लीपज़िग का पड़ौसी बड़ा गन्दा, धूर्त और दक़ियानूसी आदमी है।

पादरी की छोकरियाँ बड़ी शोख़ हैं। घोड़े पर सवार होकर सैर की। सूखी घास की गन्ध, पेड़ों पर चढ़ी हुई देहाती स्त्रियाँ, और मनुष्य फल चुन-चुनकर गाते हुए। आकाश इस वक़्त साफ़ है, पर न-जाने कब बादल उठ आवें। झील का पानी गहरा नीला है। घर पर मकान-मालिकिन की कन्या की प्रशंसा की, और जब मैं अपने कमरे में आया, तब भी उसकी एक हल्की-सी स्मृति शेष थी। उसका चेहरा आकर्षक है, और मुस्कान मधुर।

११ जुलाई—सात बजे उठा, और स्नान किया। खाने से पहले 'लूसर्न' लिखकर समाप्त करदी। ख़ूब! या तो आदमी को बिल्कुल बेधड़क बन जाना चाहिये, या फिर ऐसी ही बातें मुँह से निकालनी चाहियें, जो सौजन्यपूर्ण हों। खाने के वक़्त चित्रकार के पास बैठा और जिनेवा-वासियों को बहुत-सी गालियाँ दीं। बाद में मालूम हुआ—वह जिनेवा का ही रहनेवाला है। कोई पर्वाह नहीं! मैंने तो सच्ची बात कह दी थी। आदमी वैसे अच्छा मालूम होता है। परन्तु हमारी बात-चीत कुछ हद तक आपत्तिजनक थी। दो दिन की यात्रा के लिये गया। अग्निबोट में दो अँग्रेज़ों से भेंट हुई। एक शिक्षक था, दूसरा उसका भाई, जो मेरे ख़याल में चित्रकार था। कुल ग्यारह स्त्री-पुरुष ऐसे थे, जिनके लिये मैंने मध्यस्थ का काम किया। एक क्रोधी स्कॉच को देखा। सर्निया में उतरे। स्थान बड़ा ही गन्दा था, पर मैंने अँग्रेज़ों के साथ

मिलकर प्यानो बजाया, और आपस में कुछ देर गप-शप करते रहे। नींद बुरी तरह आई। यहाँ फिर खुले सिरवाली स्वच्छन्द रमणियाँ दिखाई देती हैं। इस जगह के आदमी बहुत सीधे-सादे हैं।

१२ जुलाई—नौ बजे उठा। बर्न से कुछ जर्मन लोग आये। 'वाटरलैण्ड' में शिकार खेलने के विषय में वार्तालाप हुआ। स्नान किया। जर्मनों का स्वभाव कुछ रूखा होने पर भी अच्छा होता है। पैदल सैर को निकल गया। यहाँ के लोग बड़े ही नम्र और भोले-भाले हैं। जवान लड़कियाँ देखीं। दो लड़कियों ने कनखियों से मेरी तरफ़ ताका। एक की आँखें बड़ी सुन्दर थीं। मेरे मन में बुरे भाव जागरित हुए, और तुरन्त मेरे मन ने व्यग्र होकर मुझे दण्ड दे दिया। एक सुन्दर गिर्जा देखा, जिसमें बाज बज रहा था, और बहुत-सी सुन्दरी स्त्रियाँ बैठी हुई थीं। एक बहुत सुन्दर भोजन-गृह देखा—जिसमें बड़े सस्ते रेट थे। पेण्टर डेलेवेण्डन के घर गया। बड़ा लम्बा-चौड़ा आदमी है, पर ताक़त नाम को नहीं, और शकल गँवारों की-सी है। नारियल के पेड़ों की एक क़तार के सहारे-सहारे चलता हुआ बेकनरीड पहुँचा। एक पुराने मकान के पास, चौराहे पर, दो सुन्दरी युवतियों के साथ एक जर्मन खड़ा हुआ मिला। सुन्दर नीलाकाश, और रक्ताभ क्षितिज। बेकनरीड और जिनेवा का एक परिवार। बाजा बजाया। बहुत रात गये सोया।

१३ जुलाई—आठ बजे का अग्नि-बोट छूट गया। झील के किनारे-किनारे टहलता हुआ रीड तक गया, और स्नान किया। कल एक सफ़ेद बालोंवाली बुढ़िया ने मुझसे पूछा, "क्या तुमने मेरे-जैसी स्त्री कहीं देखी है?"—कहकर वह ख़ुशी से नाचने-कूदने लगी। अग्निबोट में बैठकर एक सुन्दर जिनेवा-निवासी दम्पति के साथ ब्रुनेन लौट आया हूँ। ब्रुनेन से एक फ़्रान्सीसी सेना-नायक के साथ स्वाज़ आया, जो निरंकुश साम्राज्यवाद में विश्वास रखता था। वहाँ से सीवेन आया। फिर नाव में गॉल्दॉ आया। स्टीनिन। परसों एक ड्राइवर कुछ सुन्दरी युवतियों के विषय में वार्तालाप कर रहा था। स्वानौद्वीप। आल्प्स पर्वत। मुझे क्रोध आ गया। दो परिचिता जर्मन महिलाओं से भेंट करूँगा। और भी दर्जनों हैं। ताज़ा दूध, कुत्ते। कीव में जैसा वातावरण था, वैसा-ही यहाँ है। यहाँ सब लोग बेतहाशा हँसते हैं। दो अँग्रेज़ स्त्रियाँ, एक पोल।

१४ जुलाई—तीन बजे उठा। बिछौना अस्त-व्यस्त और मैला है। प्रकृति और मनुष्य के विषय में वही मूर्खता-पूर्ण दृष्टि-कोण। अँग्रेज़ लोग कम्बलों में लिपटे हुए पड़े थे। जब सूर्योदय हुआ, तो 'आह!' की आवाज़ सुनाई दी। कल एक कवित्व-पूर्ण अवसर उपस्थित हुआ था, जब सूर्य पूरी तेज़ी से चमकने लगा था। मैं अँग्रेज़ों के साथ सैर को गया। मेरा ख़याल है, मैंने ध्रुव पर विजय प्राप्त कर ली। नीचे

बहुत सुन्दर दृश्य दिखाई दे रहे हैं। नाव के द्वारा वापस लौटा। मकान-मालिकिन की लड़की बड़ा परिश्रम करती है। वह बड़ी रोबदार है। मैं बहुत ही उनींदा हूँ। स्नान किया। खाने के वक़्त तक ऊँघता रहा। खाने के वक़्त फ़्रान्सीसी पर बिगड़ बैठा। वास्तव में कुछ फ़्रान्सीसी बहुत बुरे होते हैं। सो गया, उठकर स्नान किया, और नाव में बैठकर लूसर्न गया। अँग्रेज़-स्त्री बन-सँवरकर सामने आई। बहुत सुन्दर। तब मैं छोटी से जाकर मिला, पर उसे छोड़कर भाग आया। होटलवाले के परिवार के साथ खाना खाया। अच्छा आदमी है।

१५ जुलाई—६ बजे उठा। बड़ी सुन्दर चेहलक़दमी हुई। कुछ कमज़ोरी का अनुभव कर रहा हूँ। सुबह कुछ लिखा। लिखना बड़ा दुरूह कार्य हैं। आज आलस्य तो नहीं था, पर तौभी दिन-भर में केवल पाँच पृष्ठ दोहरा पाया, जिनका संशोधन फिर करना पड़ेगा। फ़्रान्सीसी के साथ समझौता कर लिया है। मैंने उसकी बेहद तारीफ़ की। वह बड़ा ही छिछोरा और शेख़ीबाज़ आदमी है। मकान-मालिकिन मुझे ठहरे रहने पर मजबूर करती है। एक सोलह वर्ष का बदतमीज़ अँग्रेज लड़का शरारत कर रहा है—कभी पानी में हाथ देता है, कभी कुल्हाड़ी को छेड़ता है, कभी कुछ करता है, कभी कुछ। मकान-मालिकिन, 'फ़्रान्सीसी, और उसकी औरत के साथ गिर्जाघर के एक कंसर्ट में गया।

सिंह-ध्वज* तक पैदल गया। बच्चे बड़े मधुर और प्रिय हैं। शर्म की बात है, कि चिमनी की गन्ध मुझे अच्छी लगती है। सूअर! मैं इधर-उधर घूमता रहा, और अब भूख से मरा जा रहा हूँ। स्नान किया। बहुत की कमज़ोर हूँ।

१६ जुलाई—सात बजे उठा। एक कुत्ते ने जगा दिया। मैंने उसे बाहर निकाल दिया। थोड़ा-सा लिखा, और साशा के पास गया। हमें क्या करना चाहिये? तबियत बहुत सुस्त है। गर्मी बहुत सख़्त है। खाने के बाद गर्मी के अधिकता होने पर जितना हो सका, लिखा—और पढ़ा भी। परसों तुर्गनेव का नम्र और सुन्दर पत्र मिला था। बॉटकिन का भी एक पत्र आया था, जिससे उसका असन्तोष प्रकट होता था। जवाब तो आज लिख लिया है, लेकिन उन्हें भेजूँगा नहीं। शाम को इधर-उधर मटरगश्ती की। एक गँवार स्त्री मिली। रात को लौटती दफ़ा बोर्डिंग-हाउस की खिड़कियों की तरफ़ ध्यान आकृष्ट हुआ। क्या यह सम्भव है, कि लालसा के जो आँसू × मुझे नित्य बहाने पड़ते हैं, वे समय बीतने पर बन्द होजायँगे? मैं अपने भीतर यह बात देखकर

---

* सिंह-ध्वज टॉर्वाल्डसन ने बनाया था, और उन स्विस-गारदों की स्मृति में बनाया गया था, जो १७९२ ई० की फ़्रान्सीसी राज्यक्रान्ति में मारे गये थे।

× टॉल्सटॉय हरेक बात को इतना अधिक अनुभव करते थे, कि ज़रा-सी बात पर ही रो पड़ते थे।

बहुत भयभीत होता हूँ। मुझे अधिक दृढ़-चरित्र बनने और अधिक सुन्दर जीवन व्यतीत करने के लिये प्रयत्नशील होना चाहिये।

१७ जुलाई—वर्षा हो रही है। ख़ूब सोया। स्नान किया और दिन-भर लिखता रहा। लूसर्न के तीन-चौथाई भाग का संशोधन कर डाला। सात बजे शाम को टॉल्सटॉय के घर गया, और उसके सारे परिवार के साथ चाय पी। जब लौटा, तो रात होगई थी, और आकाश में बादल छा रहे थे। आज मन स्तब्ध है। मेंढ़कों की आवाज सुनाई दे रही थी।

१८ जुलाई—सात से साढ़े दस बजे तक लिखता रहा। फिर उनके पास दौड़ा। उन लोगों के साथ सैर को निकल गया। मौसम खुशगवार है। जिस समय मैं यह निश्चय न कर सका था, कि भोजन उनके साथ करूँ, या नहीं, तो वह क्षण कुछ दुःखदायी-सा होगया। रेबिण्डर की एक कृति पढ़ी, वह है तो बिल्कुल लट्ठ—गधा, मगर दिल में सचाई की कुछ-कुछ भावना रखता है। शाम के वक्त झील पर गाने-बजाने का ख़ासा रङ्ग जमा। उपस्थित मण्डली में 'लूसर्न' पढ़कर सुनाई।

१९ जुलाई—साढ़े दस बजे उठा। स्नान करते ही, टॉल्स-टॉय के घर की तरफ़ दौड़ा। वे लोग जाने को तैयार ही थे। मैंने विना सोचे-विचारे अकेले ही जाने का निश्चय कर लिया। झील की राह 'जग' आया। 'काम' का दृश्य समस्त स्विट्ज़र-

लैण्ड में सर्वोत्तम है। प्रत्येक पदार्थ का निरीक्षण करने को मन चाहता था। स्नान किया। सोने जल्दी जा रहा हूँ। २६०० फ़्राङ्क मेरे पास हैं।

२० जुलाई—साढ़े तीन बजे उठा। सैर को गया। बादलों के बीच में सूर्य रह-रहकर दर्शन दे रहा था। ज़्यूरिच का झील शान्त है। कुछ पढ़ा। तबियत दुखित है; क्योंकि स्वास्थ्य अच्छा नहीं।......सारे समय में यात्रियों और जहाज़ के नौकरों से झगड़ता आया। परन्तु अब मुझे अपने ऊपर क़ाबू है।

२१ जुलाई—छः बजे उठा। आराम कर चुकने पर भी छाती में दर्द मालूम होता था। इसीलिये दिन-भर तबियत उदास रही। इसके अतिरिक्त, जिस होटल में ठहरा हूँ, वह आरामदेह भी नहीं है। 'दि कॉसेक्स' के क़रीब दो पृष्ठ लिखे। मैं वास्तव में बड़ा अनिश्चित व्यक्ति हूँ, और इस-लिये कोई चीज़ प्राप्त न कर सकूँगा। अन्धे-बहरों के आश्रम में गया। कोई मार्मिक अथवा हृदय-स्पर्शी दृश्य नहीं है, बल्कि झूठ और फ़रेब ही ज़्यादा है। अकस्मात् रवाना होना पड़ा। रास्ते में एक फ़्रांसीसी प्रेमी-युगल के दर्शन हुए। साहित्य-परिषद् में गया। रास्ते में दृश्य बड़ा सुन्दर रहा। शाम को रेल के डब्बे में। एक सुअर बड़ा शोर मचा रहा था। राइन नदी का झरना बड़ा ही मनोहर है। शहर बड़ा उदासीनतापूर्ण...... ।

२२ जुलाई—शाफ़सन आ पहुँचा हूँ। छः बजे उठा, और स्नान किया। 'कॉसेक' का थोड़ा-सा अंश लिखा, और झरने की तरफ़ गया। स्वाभाविक दृश्य नहीं था, इसलिये मुझे नहीं भाया। एक जर्मन सुन्दरी देखी। कूच की तैयारी की। बोट के कप्तान से लड़ बैठा। कुछ युवक अँग्रेज़ों से भेंट हुई, जो ख़ुद अपने साहित्य का ज्ञान नहीं रखते, और मेरी कठोर-हृदयता की दिल्लगी उड़ाते हैं। एक विदेशी अफ़सर, जिसने समस्त यूरोप का पर्यटन किया है। मुझे विवाह करना ही होगा। अतीत की स्मृतियाँ कभी-कभी मुझे बेचैन कर देती हैं। इस एकान्तता में कुछ अच्छाई ज़रूर छिपी है। एक सुन्दर विश्रान्ति-गृह।

२३ जुलाई—सात बजे उठा। स्नान किया। स्टटगर्ट के लिये रवाना हुआ। एक बूढ़े ने बर्टेम्बर्ग के विषय में मुझसे ज़िक्र किया। एक लाल बालोंवाले अँग्रेज़ से मुलाक़ात हुई। अच्छा आदमी था। ब्राएटी की एक रचना पढ़ी। दिन-भर कुछ नहीं लिखा। स्टटगर्ट पहुँच गया। सब से पहले शहर के छँटे हुए आशिक़-मिज़ाज लोगों से भेंट हुई। भवन, गिर्जाघर, और हम्माम में गया। कहीं कोई विशेष बात दिखाई न दी, सोने जा रहा हूँ। तकलीफ़ में हूँ। पढ़ते-पढ़ते बड़े अजीब विचार मन में आते हैं। बिल्कुल उल्टे-पुल्टे—'कॉसेक्स' को बाइबिल के समान समझ बैठता हूँ, और 'खुला हुआ क्षेत्र' को बिल्कुल वाहियात।

दाहिनी तरफ़ चाँद देखकर शुभ शकुन समझा। एक मौलिक और महत्वपूर्ण विचार दिमाग़ में आया। अपने गाँव में ज़िले-भर के बच्चों के लिये एक स्कूल* खोलूँगा, जिसमें नई तरह से शिक्षा दी जाय।

२४ जुलाई—चार बजे उठा, और रेल की तरफ़ रवाना हुआ। मेरे साथी-यात्रियों में से, पहला तो एक अँग्रेज था, जो किसी होटल का वेटर या एजेण्ट था; दूसरा, एक फ़्रान्सीसी था, जो पेरिस से लौटकर आ रहा था, और बादेन तक उसका साथ रहा। कोर्साकोवा का लड़का गोर्शाका और सेमरिन तथा अन्य आवारागर्द लड़कों का झुण्ड।……स्मरनोवा× के यहाँ दावत उड़ाई।……फ़्रान्सीसी भला आदमी है। रूस के विषय में उसने कुछ लिखा भी है। वह बैङ्कर था, और किसी ऊँचे पद का इच्छुक है।

२५ जुलाई—सुबह से शाम तक जुआ खेला। पहले तो हारा, पर पीछे जीता। स्मरनोवा और अल्सुफ़िव (वासिली

* टॉल्सटॉय ने सन् १८५९ से '६२ तक ऐसे स्कूल की स्थापना का बहुत प्रयत्न किया था। उन्होंने 'याश्नाया पोलयाना'-नामक एक शिक्षा-सम्बन्धी पत्र भी निकाला था, और शिक्षा की विभिन्न पद्धतियों पर एक लेख-माला भी लिखी थी।

× अलेग्ज़ैण्ड्रा योसीपॉवना स्मरनोवा—सेण्ट पीटर्सबर्ग के गवर्नर की पत्नी—जिसने कुछ प्रसिद्ध संस्मरण लिखे हैं। साहित्यिक रुचि होने के कारण उसके यहाँ बहुधा तत्कालीन रूसी लेखकों का आवागमन रहता था।

डी मित्रीविच) के यहाँ गया। वह बहुत बोलती है। उसके जैसी गन्दी आदतें मैंने कहीं नहीं देखीं। घर पर अपनी...... के साथ फ़्रान्सीसी......।

२६ जुलाई—सुबह से तबियत ठीक नहीं है। छः बजे तक जुआ खेला। सब-कुछ हार गया। घर पर खाना खाया। तबियत अच्छी नहीं। शाम को अपनी रद्दी हालत पर शान्ति-पूर्वक विचार किया। पर तबियत अभी तक ख़राब है। सफ़ेद नेकटाई लगानेवाले युवक मुझसे आँखें चुराते हैं। घर गया, और फ़्रान्सीसी ने तीन बजे तक मुझे सोने न दिया। अपने राजनीतिक आयोजन, कविता और अपने प्रणय की गाथा गाता रहा। भयानक! मैं तो नैतिक दृष्टि से इतना पतित होने की जगह अगर जङ्गली होता, तो ज्यादे अच्छा होता।

२७ जुलाई—फ़्रान्सीसी से दो-सौ रूबल उधार लिये, और हार गया। चिट्ठियाँ लिखी। अब कभी जुआ नहीं खेलूँगा। मन कुछ शान्त है। फ़्रान्सीसी चला गया। पॉलोन्स्की ❀ के पास रुपया नहीं है। स्थिति बड़ी चिन्ताजनक है। पॉलोन्स्की मुझे अच्छा लगता है, पर बड़ा ही कुन्द-ज़ेहन है।

२८ जुलाई—सुबह उठा। तबियत में ताज़गी थी। कुस्क कुछ रुपया लाया। हम्माम में गया, और सब-कुछ खो आया। सूअर!

लज्जित और ग्लानियुक्त भाव से इधर-उधर घूमता रहा।

❀ याकाव पी० पॉलोन्स्की—एक कवि।

डॉक्टर के पास गया। एक हफ़्ते तक इलाज कराने का निश्चय किया, पर यह व्यर्थ मालूम होता है। स्मरनोवा के घर पर सन्ध्या बिताई। बेहद उदासीनता।

२९ जुलाई—देर से उठा। स्मरनोवा के यहाँ भोजन किया। मन में कोई याद बाक़ी न रही। जेब में पैसा नहीं था, इसलिये आज नहीं खेला। बुरा, भयानक !

३० जुलाई—इलाज वाहियात मालूम होता है। सन्ध्या का समय सुन्दरी युवतियों के साथ बीता। बहुत-से व्यर्थ आदमी मिलते हैं। और सब से ज्यादे व्यर्थ तो ख़ुद मैं ही हूँ।

३१ जुलाई—तुर्गनेव आगया है। उसके साथ बड़ा आनन्द रहेगा। शाम को स्मरनोवा के यहाँ रहा। देर से सोया। तबियत ख़राब है।

१ अगस्त—स्वास्थ्य ख़राब है। 'लूसर्न' पढ़कर उन लोगों को सुनाई। उसका असर हुआ। कोर्ज़ानोस्की के साथ पीटर्सबर्ग गया। स्टीमर पर गप-शप हुई। वह कहता है, कि जर्मन लोग सब से बुरी बला हैं। यह बात सच है, और लोग शीघ्र ही इसे समझेंगे। शाम को बुख़ार !…… मन शान्त है।

२ अगस्त—घर पर खाना खाया। पढ़ा। साल्टीकोव❁

❁ एक रूसी लेखक (१८२५—१८८९), जिसका उपनाम एन० शेड्रिन था। सामाजिक दोषों का पर्यवेक्षण करने में उसने बड़ी प्रतिभा का प्रमाण दिया था। उसकी कहानियों से साहित्यिक कौशल और सूक्ष्म-निरीक्षण की शक्ति प्रकट होती है।

गम्भीर और ज्ञानी पुरुष है। स्वास्थ्य अच्छा है।

३ अगस्त—तबियत वैसी ही है। ए० पी० आया।

४ अगस्त—नेक्रासोव आया। उन्हीं के साथ ठहरा। अपनी निर्बलता से मुझे बड़ा क्षोभ होता है।

५ अगस्त—यहाँ लौट आया। नेक्रासोव आया……।

६ अगस्त—कूच का निश्चय कर लिया। वी० के साथ अच्छी-बुरी तरह मामला तय कर लिया। नौ बजे रवाना हुआ। रूस भयानक है, मुझे वहाँ अच्छा नहीं लगता। स्वास्थ्य कुछ अच्छा है।

७ अगस्त—अब भी यात्रा में हूँ। सॉकॉल्नीकोवा तुला ❀ का-सा वातावरण अनुभव होने लगा है। वॉन विज़िन ने जब से मेरा परिचय पाया है, मेरे गिर्द मँड़राने लगा है। किसी काम का आदमी नहीं है, मॉस्को के मामले तय किये, और कल रवाना हो रहा हूँ।

८ अगस्त—४ बजे उठा। घोड़े पाँच बजे तक नहीं आये, रवाना हुआ। रास्ते में वासिली से भेंट हुई। ११ बजे याश्नाया पहुँचा। आनन्दमय स्थान ! मन हर्ष और विषाद से भरा हुआ है। पर रूस मुझे दुःख पहुँचा रहा है, और मैं देख रहा हूँ, यह रूखा और उदासीनतापूर्ण जीवन धीरे-धीरे मेरे अन्तर और वाह्य को ढाँकता जा रहा है। स्टेशन पर ज़ारिन

❀ टॉल्सटॉय की ज़मींदारी के पास का एक शहर।

पिट गया। मैं उसके लिये मुक़दमा चलाना चाहता था। वासिली ने समझाया—कि पहले डॉक्टर को रिश्वत खिलानी पड़ेगी। इसी तरह के और भी कई झमेले उसने मुझे बताये। उन्होंने उसे कोड़ों से मारा-पीटा। यात्रा में मैंने अपना जीवन-उद्देश्य स्थिर किया—सब से पहला साहित्यिक सफलता, तब गार्हस्थ्य उत्तर-दायित्व, और तब ज़मींदारी का प्रबन्ध—लेकिन गाँवों की देख-भाल का काम तो मुखिया पर छोड़ना पड़ेगा। हाँ, यह कोशिश ज़रूर करूँगा, कि वहाँ तरह-तरह के सुधार जारी करूँ, और किसानों को आराम पहुँचाऊँ। अपने निजी ख़र्च के लिये मैं सिर्फ २००० रूबल लूँगा। शेष सब किसानों की भलाई में ख़र्च कर दूँगा। मेरा सब से बड़ा दोष मेरा उदारता-पूर्ण अहङ्कार है। अगर मैं एक अच्छा काम रोज़ करूँ, तो अपना काफ़ी सुधार कर सकता हूँ।

९ अगस्त—नौ बजे उठा। स्वास्थ्य ख़राब है। मुखिया का भाव मेरे प्रति अत्यन्त घृणायुक्त है। उसके साथ निभना बड़ा कठिन है। साशा ने थोड़ा-सा मक्खन चुरा लिया, मैंने उसे बुलाया। वह कहने लगा—"जिस वक़्त मैं शराब पी लेता हूँ, तो पता नहीं, मुझे क्या होजाता है।" मैंने उसे क्षमा कर दिया। और कुछ देकर विदा किया। आदमी बड़ा बुरा है, पर मैं और क्या करता? देहातों में गया। किसानों की निर्धनता और पशुओं की यन्त्रणा महा-भयङ्कर हैं। खाँसी

बढ़ गई है, तबियत ठीक नहीं। अपने एक सम्बन्धी के घर पहुँचा। माशा अब अच्छी है। निकोलेंका बड़ा प्रसन्न है। सेरेज़ा दयानीय है, पर हमारे लिये कभी-कभी हानिप्रद सिद्ध होता है। सुबह चार बजे तक निकोलेंका से बात-चीत करता रहा।

१० अगस्त—दिन-भर बात-चीत में व्यतीत हुआ। मैंने जिस प्रसन्नता की आशा की थी, वह न मिलने पर बड़ी निराशा हुई। खाने के वक़्त माशा और सेरेज़ा में झगड़ा हो गया।

११ अगस्त—स्वास्थ्य कुछ अच्छा है। पादरी साहब, गवर्नर की पत्नी, और फूफी ने आकर हमारे यहाँ गड़बड़-सी कर दी। माशा ने तुर्गनेव के विषय में कुछ कहा। मैं उन दोनों से ही भयभीत हूँ। सेरेज़ा का भाव कभी-कभी अत्यन्त विनम्र होजाता है। घर लौटा। टेन्शीनेव ने, जिसका घर चार दिन पहले जल गया था, मेरी गाड़ी हाँकी। उम्र उसकी सत्तर वर्ष की है, बहुत ही नम्रता से पेश आता है, पर है—पक्का बदमाश। वह मेरे पास बैठा। मैं उसे २५ रूबल देना चाहना था, पर एक नीच भावना ने मुझे उस आनन्द की प्राप्ति से रोक दिया। पेगट-ऑगियर का एक पत्र मिला।

१२ अगस्त—नौ बजे उठा। गला कुछ अच्छा है। कुछ काम किया। पुस्तकों पर नज़र डाली। ब्रॉण्टे की रचना

पढ़ी । ऑगियर, कॉल्बासिन और नेक्रासोव को पत्र लिखे । प्यानो में बड़ा वक़्त खराब होगया । शाम को 'दि कॉसेक्स' का एक पृष्ठ आसानी से लिख डाला । हम्माम में गया । ठण्ड है । बारिश हो रही है । सुस्ती दूर करने के लिये ख़ास प्रयत्न करना पड़ेगा ।

१३ अगस्त—सुबह ठेकेदार के साथ बीती । एल्डर को विदा कर दिया है । बहुत सुस्त हूँ, उसी पुरानी आदत का शिकार बनता जारहा हूँ । कुत्तों को साथ लेकर बाहर गया । स्वास्थ्य अच्छा है । ब्रॉण्टे का कुछ पढ़ा । तुर्गनेव को एक पत्र लिखा । घर के नौकरों को आज्ञा देनी शुरू की, कि वे अपनी स्वतन्त्रता ख़रीद लें ।

१४ अगस्त—नौ बजे उठा । स्वास्थ्य कुछ अच्छा है । दिन-भर बारिश होती रही । नेक्रासोव के लिये तुला रुपया भेजा । बहुत थोड़ा लिखा । कुछ पढ़ा, और ब्रॉण्टे की रचना पढ़ी । बेहद सुखी ।

१५ अगस्त—दिन-भर कुछ नहीं किया । 'इलियड' पढ़ा । ख़ूब लिखा है ! क्या कहना है ! रॉबिनिन को चिट्ठी लिखी । कॉसेक की कहानी को बदलना पड़ेगा । नौकरों में से बहुत ही थोड़े लोग रुपया देकर स्वतन्त्र होना चाहते हैं । ज़ेल्दे का एक पत्र मिला ।

१६ अगस्त—सुबह वासिली डेविडकिन आया । उसे ३ रूबल दे दिये । 'इलियड' पढ़ा । ख़ूब ! पनचक्कियों के

चारों तरफ़ घूमने के लिये गया। जमींदारी का कुछ काम करने का विचार किया। प्रिन्स इङ्गेलीशेव—बड़ा धूर्त, मूर्ख और अशिक्षित, पर अच्छे स्वभाव का आदमी है। घोड़े पर सवार होकर बाहर गया, और एक खरगोश मारा। घर पर ज़मींदारी का काम-काज देखा। फूफी को एक संक्षिप्त पत्र भेजा। मुखिया का वेतन बढ़ाया। कामाग्नि पुनः मुझे कष्ट देने लगी। आलस्य और अप्रसन्नता। प्रत्येक पदार्थ व्यर्थ जान पड़ता है। आदर्श कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता। मैं पहले ही अपना सर्वनाश कर चुका हूँ। कार्य, प्रतिष्ठा, और रुपया। किसलिये ? जल्दी ही मृत्यु के अन्धकार में विलीन होना पड़ेगा। मुझे सदा ऐसा अनुभव होता है, कि मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा। ❀ इतना आलस्य है कि मनोभावना को विस्तारपूर्वक नहीं लिख सकता। सदा आग के अक्षरों में लिखने को मन करता है। प्यार। इस

❀ मृत्यु की निकटता का आभास टॉल्सटॉय अपने जीवन के ८२ वर्षों में सदा पाते रहे। जैसाकि कुछ लेखकों ने समझा है, वे मृत्यु से भयभीय नहीं थे, वरन् मृत्यु की कल्पना उनके मन में और लोगों की अपेक्षा अधिक स्पष्ट रूप से आती थी, और वे अपने जीवन से तब तक सन्तुष्ट न हो सके, जब तक कि वे उसके अस्तित्व के कारण और उपयोग का अविष्कार न कर सके। यह कारण और उपयोग उन्हें उस समय मालूम हुआ, जब उन्होंने अपने 'कन्फ़ेशन्स' लिखे थे।

प्रकार के एक उपन्यास का कथानक सोच रहा हूँ ।

१७ अगस्त—'इलियड' । ज़मींदारी का कार्य । शिकार को गया । एक बजे लौटा । 'इलियड' पढ़कर अपना 'आवारा' देखने को मन करता है ।

१८ अगस्त—देर से उठा । स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा । मगर सुबह के वक्त क्रोध आगया, और किसी को मूर्ख कह दिया । छिः ! सेरेज़ा आया, प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप होता रहा । 'खुला हुआ क्षेत्र' का कथानक लगभग सम्पूर्ण है, मगर कॉसेक-वाली कहानी से मैं बहुत असन्तुष्ट हूँ । मैं बिना किसी विशेष विचार के कुछ नहीं लिख सकता । लेकिन यह विचार, कि सभी जगह भलाई अच्छी है, और देहाती अवस्था में रहना अच्छा है, कुछ विशेषता नहीं रखता । अच्छा होता, अगर मैं पिछले विचार-खण्ड को ही मन में रखकर उसे आरम्भ करता ।

१९ अगस्त—मुखिया नौ बजे आया । उसने भी अपनी स्वतन्त्रता के लिये प्रार्थना की । मैंने वचन दे दिया । टॉल्स-टॉया को कोमल भावों से ओत-प्रोत एक पत्र लिखा । ग्यारह बजे कुत्तों को साथ लेकर बाहर निकल गया । एक ख़रगोश मारा । ओल्गा को देखा—लाल-लाल ओठ हैं, भौंहों के नीचे से स्वच्छ और नीली आँखें ताकती रहती हैं, और दासी होने पर भी उसका शरीर विकसित यौवन के कारण खिल उठा है ! खाने-पीने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया ।

२० अगस्त—सेरेज़ा से गप-शप होती रही। दिन-भर इधर-उधर घूमता रहा। मेरे सारे मन्सूबे मिट्टी में मिल गये हैं! अफ़सोस!

२१ अगस्त—फिर बीमार। सुबह माशा विदा हुई। 'इलियड' का कुछ अंश पढ़ा। और 'नोट्स फ्रॉम दि बॉटम' लिखना शुरू किया। बच्चों के साथ सैर को गया। सब मिला-कर यह दिन औरों की अपेक्षा अधिक अच्छा है।

२२ अगस्त—प्रूफ़ आये। किसी-न-किसी तरह उन्हें देखा। भेज दिये। भोजन किया। सैर को गया। सुबह का काम करने के बाद भी मन स्वच्छ और सन्तुष्ट है।

२३ अगस्त—आज जल्दी सोने जारहा हूँ। मन प्रसन्न है। कुछ नहीं कर रहा हूँ। दवाई लगाई गई। मैं कुत्ते नहीं ख़रीदूँगा। ल्यूक❀ आया और कहने लगा, हम सब लोग एक यन्त्र में-से गुज़र रहे हैं। स्वास्थ्य फिर अच्छा है।

२४ अगस्त—थोड़ा-सा लिखने की चेष्टा की, पर सफल न हुआ। होमर की रचना पढ़ी—आनन्ददायक! शिकार को गया, एक मारा। माशेङ्का को एक रूखा पत्र लिखा। स्वास्थ्य अच्छा है।

२५ अगस्त—देर से उठा। कल हद से ज़्यादा खा गया

❀ ल्यूक एक अजीब व्यक्ति था। वह टॉल्सटॉय के एक नौकर के साथ रहता था, और तीर्थों के घूमा करता था। आश्चर्यजनक बातें कहने की उसकी आदत थी।

था। स्वास्थ्य ख़राब। 'इलियड' और कुछ और पढ़ा। सेरेज़ा ने फूफी को नाराज़ कर दिया। खुशी की बात है, कि मैं घर में क्रमशः सुलह करानेवाला बनता जा रहा हूँ। परमात्मा मुझे संयम और कार्यशीलता की शक्ति दे। कुत्तों के साथ देहात गया। एक खरगोश मारा। रेजर (कुत्ता) ने अकेले ही उसे पकड़ लिया। तुर्गनेव को एक संक्षिप्त पत्र लिखा।

२६ अगस्त—स्वास्थ्य पूर्ववत्। सुबह से अपनी ज़मींदारी के कामों में लगना पड़ा। यह (काम) सब तरह से ख़राब है; पर शायद इसी रूप में मैं गुलामी के प्रश्न की ओर फिर आकृष्ट हो रहा हूँ। मैं कोई-न-कोई नया क़ायदा घुसेड़कर (गुलामों को) कष्ट नहीं देना चाहता। वैबुरिनों में ज़मीन ख़रीदने का निश्चय कर लिया है। खाने के बाद नाज और भूसे को अलग करने की क्रिया होती है। ज्याबरेव ने इन्कार कर दिया है। कॉल्टसोव की कृति* पढ़ी। सुन्दर और ज़ोर-दार चीज़ है। पाँच आदमियों को गुलामी से मुक्त होने काग़ज़ (मुक्ति-पत्र) दिये। ईश्वर जाने, परिणाम क्या होगा, पर लोगों की भलाई के लिये, बिना उनसे किसी प्रकार की कृतज्ञता या बदले की आशा के, जो काम किया जाता है, उससे आदमी की आत्मा पर सत्कार्य की एक मुहर लग जाती है। कल दिन निकलते ही यहाँ से चल दूँगा।

२७ अगस्त—दिन निकलते ही घोड़े पर सवार हो, रवाना

---

* 'रेगर का एक कुत्ता था—नामक पुस्तक।

हो गया। दो ख़रगोश मारे। मेरा स्वास्थ्य अब भी मुझे दुःख दे रहा है। आकाश में कोई चीज़ है। द्याकोव और निकोलेव के साथ पहुँचा; थककर चूर होगया। सेरेज़ा मजे में है। माशा बाहर गयी है। न-कुछ पढ़ ही सका, न लिखा ही। ईश्वर मुझे अधिक कार्यशील और निस्स्वार्थ जीवन व्यतीत करने में सहायता दे। निस्स्वार्थ का अर्थ यह नहीं है कि मेरा जो कुछ है, वह सब तुम ले लो; किन्तु इसका अर्थ है—अपनी सेवाएँ दूसरों को अर्पित करने के लिये पूर्ण प्रयत्न करना, और सदैव इसी का विचार करते हुए इसे क्रियात्मक रूप देने के लिये सचेष्ट रहना।

२८ अगस्त—२९ वर्ष का पूरा हुआ। सात बजे सोकर उठा। माशेंका स्पैस्को* को चली गयी है। इससे मुझे क्रोध आगया; क्योंकि वह अकेली गयी है। वह और मैं—दोनों इस बार शिथिलतापूर्वक मिले। फूफी का यह कहना ठीक है कि माशा को उस गुट में सम्मिलित होने के लिये दोष नहीं देना चाहिए। उसे ऐसे ही घृणित लोगों की संगति पसन्द है। सेरेज़ा गया। वह और मैं एक दूसरे के निकट होते जा रहे हैं। मुख्य चीज़ उस सूत्र का पता लगाना है, जिसके द्वारा मनुष्य तरंगित होता है। उसका पता लगाकर फिर उसका समुचित उपयोग करना चाहिए। स्पास्कीज़

---

* तुर्गनेव की ज़मींदारी।

आगये हैं। बड़े सुस्त हैं ये लोग! बच्चे बड़े सुन्दर हैं! फूफी प्रसन्न दीखती है। उसका प्रत्येक उपदेश, चाहे वह कैसा ही विलक्षण और तुच्छ क्यों न हो, परम सत्यतापूर्ण होता है; सिर्फ यह जानने की ज़रूरत है, कि उसे समझा किस प्रकार जाय। मॉरेलका बड़ी बुरी है। 'मृतात्मा'❀ का दूसरा भाग पढ़ा। बड़ी ही रद्दी चीज़ है। 'खुला हुआ क्षेत्र' के अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखूँगा—फूफी का चरित्र इसी में चित्रित करूँगा। कल गॉर्शाकोव्स के यहाँ जाऊँगा।

२९ अगस्त—छः बजे रवाना हुआ। प्रधानतः शिकार में ही लगा रहा। चौपायों के झुण्ड के पास गया। कोई गाड़ी न मिलने के कारण क्रोध उत्पन्न हुआ। 'इलियड' का हर्षपूर्ण अन्त पढ़कर समाप्त किया। लिखने के मेरे सभी विचार अस्त-व्यस्त हो गये हैं—'कॉसेक्स', 'खुला हुआ क्षेत्र', 'युवावस्था' और 'प्रेम'। अन्तिम चीज़ मुझे अधिक पसन्द है—वाहियात! इन चीज़ों के लिये मेरे पास काफ़ी मसाला है। नौ बजे सोने जा रहा हूँ। कल वर्खोपी और गॉर्शाकोव जाऊँगा। 'इलियड' के बाद 'सुसमाचार' पढ़ूँगा, क्योंकि बहुत दिनों से मैंने उन्हें नहीं पढ़ा है। होमर यह कैसे नहीं जान सकता था कि उत्तमता ही प्रेम है! यही ईश्वरीय आदेश का प्रकाश है! इससे अच्छी व्याख्या और कोई हो ही नहीं

❀ गॉगेल का प्रसिद्ध उपन्यास।

सकती। इस बात को सोच-सोचकर बहुत देर तक नींद नहीं आयी कि स्त्री गृह-स्वामिनी न होकर दासी समझी जाती है। निकोला मुझे व्यर्थ बातों में लगाकर परेशान करता है।

३० अगस्त—छः बजे रवाना हुआ। दिन-भर शिकार की खोज में दौड़ता फिरा; पर कुछ नहीं मिला। ओज़र्की में मालिक गुलामों को शराब पिलाने की दावतें देता है—छः बजे गॉर्शाकोव पहुँचा। दरिद्रता। वैसिली गॉर्शाकोव एक सुस्त, बेवक़ूफ़, पर स्वभाव का अच्छा आदमी है—यह एक अच्छा मास्टर बन जायगा। उसकी सब से छोटी बहन—वही बीसवर्षीया सुशिक्षिता महिला—ऐसी करुणापूर्ण है, कि देखनेवाले की आँखों में आँसू आजायँ। ग्यारह बजे सो गया; न-कुछ पढ़ ही सका, न लिखा।

३१ अगस्त—बी० गॉर्शाकोव के साथ पीरोगोवो जाना चाहता था, पर एक लावा की तलाश में शिकार को गया—दो लोमड़ियाँ और दो ख़रगोश मार लिये। पर घोड़े के गिर जाने के कारण एक लोमड़ी निकल भागी। भोजन किया। ग्यारह बजे पीरोगोवो पहुँचा। वे लोग भोजन कर रहे थे। तुर्गनेव अब भी यहीं हैं।

१ सितम्बर—नौ बजे उठा। शरीर टूट-सा गया है। गले में भी दर्द है। कॉज़लोव* की कृति पढ़ता रहा। विचार

* एक पत्र-सम्पादक और दार्शनिक।

अच्छे हैं। निर्भयता ज़बर्दस्ती ठूँसी गयी है। यही उसकी त्रुटि है। दिन-भर बच्चों के साथ टहलता रहा और कोई काम नहीं किया। माशा अपने जाति-भाई किसानों के एक नृत्य में गयी। मैं बच्चों को साथ ले, वहाँ पहुँचा। कैसी लज्जा-जनक और खेद-पूर्ण बात है।

२ सितम्बर—तड़के उठा, और लिखने की चेष्टा करने लगा। 'कॉसेक्स' का अगला अंश नहीं लिखा जाता। एक वाहियात-सा फ्रांसीसी उपन्यास पढ़ा। भोजन के बाद घोड़े पर सवार हो, बाहर गया। तबियत अब अच्छी है। माशेंका का स्वभाव संकीर्णता, विकृति, और अहंकार से पूर्ण है। अपने भाइयों को पत्र लिखे।

३ सितम्बर—वैलेरियन और जेनेवा को पत्र लिखे। ......घोड़े पर चढ़कर यास्नाया गया, किन्तु कुछ प्राप्त नहीं हुआ। जंगलों की बिक्री शुरू हो रही है। रुपये पास नहीं रहे हैं। मेरी युवावस्था बीत-सी गयी है। मैं इसे इस प्रकार व्यक्त करता हूँ, जैसे कोई किसी अच्छी बात की चर्चा कर रहा हो। मैं शान्त हूँ, और मुझे अब किसी चीज़ की अभिलाषा नहीं है। मैं लिखता भी पूर्ण शान्ति के साथ हूँ। अब आकर मैं यह बात समझ सका हूँ, कि मनुष्य को, अपना जीवन शुद्ध रूप में सुसज्जित करने की बजाय, आवश्यकता इस बात की है कि वह इतना लचीला हो जाय कि सभी जगह ठीक फ़िट हो जाय।

४ सितम्बर—सवेरे उठा। पाचन-शक्ति ठीक नहीं मालूम होती, पर तबियत में काफ़ी ताज़गी है। कचहरियों में यहाँ बड़ा अन्धेर है। पुलिस और जंगलात के महकमों में भी यही हाल है। जंगल में जाकर शिकार किया। साशा को गुलामी से मुक्त कर दिया, और उसके तथा फ़ेडर के साथ नई शर्तें की। आर्सेनेव्स ने मुझे आमंत्रित किया है। गिम्बट्स के यहाँ गया। बहन मुझे तृष्णान्वित कर रही है। आर्सेनेव्स के यहाँ सब काम पुराने ढङ्ग पर होता है—जैसे कोई नया जीवन शुरू करने जा रहा हो। वह है तो सुशील, पर उसमें है कुछ नहीं।

५ सितम्बर—सुबह से ही ज़मीदारी के धन्धे में लग गया। खलिहान में भी अच्छी बहार थी। इसी से मालूम होता है कि मुझमें धीरे-धीरे सख्ती कैसे प्रवेश कर रही है। ए० को देखा। थाने में गया। मेरे सिर के पिछले भाग में धड़कन-सी पैदा हो गई है……नींद ठीक नहीं आयी। वैबुरिनो गया। एक नृत्य था। मासोश्नीकोव बड़ा ही कमज़ोर, सम्भवतः कुछ दयालु। और बेहद नीच है। उसका साला उसे रास्ते पर लाता है। उसकी इच्छा तृष्णा से नाचती रहती है। उसकी स्त्री की बग़लें लाजवाब हैं! अमीराना भोजन के बाद मैंने 'अंधों का खेल' खेलने का प्रस्ताव किया। सब लोग हँसते-हँसते थक गये! विलम्ब से घर लौटा।

६ सितम्बर—फिर जमींदारी का धन्धा। इसकी वजह

से मुझे और काम के लिये ज़रा भी फुर्सत नहीं मिलती। कुत्तों को साथ ले, घोड़े पर सवार हो बाहर निकला, पर कोई शिकार हाथ नहीं लगा। फिर सुस्ती ने आ घेरा। भोजन अकेले किया। हैकलैण्डर की रचना पढ़ने की चेष्टा की। वाहियात! इसमें उसकी ज़रा भी प्रतिभा नहीं झलकती। अपनी रचनाओं के सम्बन्ध में भी मैं इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मेरा प्रधान दोष है भीरुता। लेखन में भी साहसिकता का सन्निवेश होना चाहिए। शाम को 'पागल' के दो पृष्ठ लिखे। बुरी तरह सोया।.........

७ सितम्बर—छः बजे उठा। खलियान गया। 'पागल' का कुछ अंश लिखा। भोजन के बाद कुत्तों को साथ ले, घोड़े पर सवार हो, बाहर निकला और एक ख़रगोश को मारते-मारते निकल जाने दिया। गर्टसोवका के सम्बन्ध में हुक्म जारी किये। शाम को ब्रैंड आया और मुझे उसने परेशान कर डाला।

८ सितम्बर (रविवार)—किसानों को इकट्ठे बुलाया। उफ़ान ❀ ने ५५.........ज़मीन जोत ली। ये लोग मुझे भय से देखते हैं, पर यह सब भले स्वभाव के हैं। मकारीशेव ने अपने भाई के चोट्टेपन और मिथ्या आचरण की बात सुनाई। मैंने अकेले भोजन किया। घोड़े पर सवार हो, बाहर

❀ एक गुलाम।

निकला। गिम्बट अपनी ठग-विद्या चला रहा है। थोड़ा लिखा और ऐसी इच्छा हुई कि लिखता ही जाऊँ। कॉल्बासिन को जवाब लिखा। गॉगेल के भेजे हुए पत्र पढ़े। फ़जूल आदमी है—बिल्कुल वाहियात !

९ सितम्बर—मुश्किल से कोई हुक्म जारी करने का समय मिला; क्योंकि मुझे तुला जाना था। गिम्बट के यहाँ गया।······नीचे की अदालतों में उतना अन्धेर तो नहीं दीखता, जितना मैंने सोचा था। आई० आई० मुझे एक निरा बेवकूफ़ ही समझता है। ट्रॉट्स्की के स्नानागार पर गया, और अब चिन्तित हूँ। सुदाकोवो ×। वे लोग मुझे नित्य आने के लिये कहते हैं; जैसे कोई विशेष बात ही न हुई हो। वह (वैलेरिया) अच्छी तरह है। पर उसका सम्बन्ध केवल यहीं तक समझिये—मैं वहाँ जाऊँगा नहीं। बहुत देर से घर वापस आया; सो भी सिर में दर्द लेकर। रात-भर सिर में दर्द रहा। खाना अधिक खा लिया था, और अब······

१० सितम्बर—काम अभी समाप्त नहीं हुआ। वही ज़मींदारी के धन्धे। 'पागल' बड़ी सरलतापूर्वक लिखा। विक्री

 गॉगेल के प्रति टॉल्सटॉय के यह विचार स्थायी नहीं रहे हैं।

× टॉल्सटॉय की ज़मींदारी। यहाँ रहनेवाली वैलेरिया के साथ आधी सगाई पक्की हो जाने पर जब उससे सम्बन्ध-विच्छेद हो गया, तो उन्होंने यहाँ आना-जाना छोड़ दिया था।

नहीं हो रही है। गिम्बट आया। अवस्था असह्य हो रही है।

११ सितम्बर—थोड़ा और लिखा। फिर ज़मींदारी का काम। नेक्रासोव, बॉटकिन और सेरेज़ा के बहुत दिनों पहले के डाले हुए पत्र अब मिले हैं। उनके साथ न होने का मुझे खेद है। घोड़े पर सवार हो, पीरोगोवो गया, निकोला पर क्रोध आ गया। यह दूसरा मौक़ा था, जब मुझे ऐसा क्रोध आया। मुझे अपने ऊपर क़ाबू रखना चाहिये। शाम का वक्त मज़े में कटा।

१२ सितम्बर—नौ बजे बच्चों को ज़बर्दस्ती साथ ले, टहलने गया। अपनी डायरी और सेरेज़ा को एक पत्र लिखा। माशेंका आयी और मेरी उसके साथ चार आँखें हो गयीं। पर यह मितेनका ❀ से भी अधिक दयालु मालूम पड़ती है। काश, अगर मैं इस पर प्रभाव डाल सकता! एक गाड़ी में शेल्कुनोवका गया, और वहाँ से आगे घोड़े पर। बर्फ़ पड़ रही है। इस पर भी दो बार मेरे मन में ऐसी आनन्दपूर्ण भावनाओं का उदय हुआ कि उसके लिये मैं परमात्मा को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। ज़मीदारी के प्रबन्ध में परिवर्तन करने का फल यह हुआ है, कि किसान मुक्ति-कर-प्रथा × के अनुसार काम कर रहे हैं। मेरी आमदनी के प्रधान

❀ टॉल्सटॉय के भाई मित्री का दूसरा नाम।

× इस प्रथा के अनुसार किसान एक ख़ास रक़म अदा करके जब-चाहे स्वतन्त्र हो सकता था।

श्रोत हैं—जंगल, और घोड़ों के चराने के लिये घास के चरागाह।

१३ सितम्बर—लॉपुखोवका में लोमड़ियाँ नहीं मिलीं, पर ख़रगोश तीन मार लिये। शाम को इफ़्रिमोव आया। एक कमरे के लिये दस रूबल किराये के देने पड़ते हैं। कोई काम नहीं किया।

१४ सितम्बर—बहुत-से फावड़े ख़रीदने थे, और एक दलाल की मदद से ख़रीद डाले। पॉलिकी और ज़ेड वापस आ गये। बिना फेरे हुए घोड़े ख़रीदे हैं।

१५ सितम्बर—मैंने दाम अधिक दे दिये हैं। तबियत अच्छी है; काफ़ी दिलचस्पी का सामान है। शाम को यहूदी लोग दीखे। लिखने के लिये ख़ूब जोश आया। और चार पृष्ठ गर्मा-गर्म मसाला लिख डाला। घर से निकला, और गाड़ियों के घोड़े ख़ुद हाँकता हुआ आगे बढ़ा। छोटे माफ़ीदार। घोड़े मुझे बहुत दिक़ कर रहे हैं।……

१६ सितम्बर—कुत्तों को साथ ले, घोड़े पर सवार हो, शिकार को गया। मेरा घोड़ा गिर पड़ा। बाक़ी घोड़ों को गाड़ी में जोतकर आधा रास्ता तय किया। नौ बजे पीरॉगोवो पहुँचा। माशेंका बड़ी भली है।

१७ सितम्बर—बच्चों के साथ ऊधम मचाया। नाज और भूसा अलग करने का काम शुरू हुआ। कुछ नहीं लिखा। ए० टॉल्सटॉया ने एक बड़ा ही सुन्दर पत्र भेजा है।

ज़मीन नहीं ख़रीदी गयी है। मैं घोड़े ख़रीदने के अफ़सोस से अपने को बरी नहीं कर सकता। लिखने की इच्छा होती है।

१८ सितम्बर—लिख तो बहुत डाला, पर कुछ अच्छा नहीं हुआ। बहुत जल्दी इससे पिण्ड छुड़ाना चाहता हूँ।

१९ सितम्बर—याश्नाया को वापस आया। काम ठीक तौर पर हो रहा है। कुछ लिखा नहीं।……

२० सितम्बर—अच्छी तरह काम किया। फिर कोई काम नहीं किया। एक कठिन प्रसंग आजाने पर रुकना पड़ा। भण्डार-घर ठीक-ठाक किया।

२१ सितम्बर—आशाएँ। कुछ नहीं किया। तड़के उठा, मैस्किम शोर-ग़ुल मचा रहा है।

२२ सितम्बर—लिखा काफ़ी, पर चीज़ अच्छी नहीं हुई।

२३ सितम्बर—सुदाकोवो में शिकार करने गया। यहाँ-(सुदाकोवो) वाले मुझे उद्दण्ड समझते हैं।

२४ सितम्बर—विलम्ब से उठा। चिड़चिड़ापन। याकोव को ख़ूब धमकाया। घृणित आदमी है! मौसम बड़ा ही सुन्दर हुआ है। थोड़ा लिखा। सभी बातों में मैंने अपने को भयंकर रूप से स्वतन्त्र बना रक्खा है। कितने ही प्रश्न ऐसे हैं, जिन्हें मैंने हल ही नहीं किया है। ज़मीन का लगान बढ़ाना चाहिये, या नहीं—आदि। घोड़े पर सवार हो, गिम्बट के यहाँ गया। एम० एन० के साथ अठखेलियाँ कीं।

खमेलीनित्सकी एक होशियार और प्रतिभाशाली गप्पबाज़ है। देश की चर्चा के साथ वोल्गा ❀ ज़िले में कृषि की अवस्था पर बातचीत की। मैंने कोल्टसोव की कविता पसन्द की।......

२५-२८ सितम्बर—खेतों का काम सावधानी के साथ नहीं देखा, थोड़ा-बहुत लिखा, वह भी रद्दी। पीरॉगोवो गया, मार्शेंका के साथ मेरा सम्बन्ध अब भी शिथिलतापूर्ण है। बच्चे आश्चर्यजनक रूप से सुन्दर हैं; पर निकोला ऐसा नहीं है। भयानक पेय! मेरे वहाँ रहते हुए गिम्बट आया। एम० एन० लालसा-वृद्धि कर रही है।

२९ सितम्बर—पिरॉगोवो में सुस्त पड़ा हूँ। वर्गानी आयी है। मैं उससे घृणा करने लगा हूँ, और वह भी मुझे त्याग-सी चुकी है।

३० सितम्बर—तड़के ही मेयर के यहाँ गया। घोड़े पर सर्ज़ीव्स्की तक गया। कुछ मिला-जुला नहीं। सुस्ती के साथ चर्न× की ओर चल पड़ा।

१ अक्तूबर—मॉरवोवो गया, और मेले से लौटे हुए लोगों से मुलाक़ात की। मेयर बड़ा ही घमण्डी और शान्त है। स्पष्ट और खरा आदमी नहीं है।

❀ सन् १८७१ ई० में टॉल्सटॉय ने वोल्गा की बजाय समारा में दो हज़ार एकड़ ज़मीन ख़रीदी, और उसे ख़ूब बढ़ाया था।

× यहाँ टॉल्सटॉय के भाई निकोला की ज़मींदारी थी।

२ अक्तूबर—मेयर क्रूर भी है; पर यह उसका अपराध नहीं है; उसे ऐसा कड़वा बना दिया गया है। वह एक कवि है, और डेविड के गाने पढ़ते समय उसकी आँखों में आँसू आगये थे। उसका मस्तिष्क विशाल है। वहाँ से रवाना हो गया, और रात वायन्स्की डोरी में व्यतीत की।

३ अक्तूबर—चार बजे सर्ज़ीव्स्की से रवाना होकर खेतों के रास्ते आगे बढ़ा। गोर्शाका-राजकुमारियों से पीरॉगोवो में मुलाक़ात हुई। हेलेन सुन्दरी लड़की है। बहुत ही थक गया हूँ।

४ अक्तूबर—दस बजे तक सोता रहा। वर्गानी में ज़हर भरा हुआ है। माशेंका बड़ी हठीली है—उसके साथ गुज़ारा मुश्किल है। याश्नाया गया। एक घोड़ा चोरी गया है। फ़ेडर और साशा ने शराब चढ़ा रक्खी थी। मैंने उन्हें घर से निकाल दिया।

५ अक्तूबर—ज़मींदारी का प्रबन्ध। मज़दूर नहीं रहे हैं। बेहद ख़र्च है। मैं निराश होता जा रहा हूँ। घोड़े पर सवार हो, बाहर गया। शाम को थोड़ा-सा लिखा।……

६ अक्तूबर—सुबह से ही पेड़ लगाने के काम में लग गया, और दिन-भर उसी में लगा रहा।❀ शाम को कुछ

❀ याश्नाया पोल्याना में कुछ ऐसी ज़मीन थी, जहाँ उपज कम होती थी। टॉल्सटॉय ने उस जगह अपने हाथ से फलों के पेड़ लगाये, जो उनके जीवन-काल में ही बढ़कर

संशोधन का काम किया। 'खोया हुआ' के लिये अन्तिम व्यवस्था सोच ली है।......

७ अक्तूबर—सुबह से रात तक पेड़ लगाने में ही लगा रहा। कुछ नहीं लिखा। थोड़ी देर टहला......आज शीघ्र ही सो जाने का उपक्रम कर रहा हूँ।

८-११ अक्तूबर—याश्नाया गया, और ज़मींदारी का काम पूरी सफलता के साथ किया। थोड़ा-बहुत लिखता भी रहा। ......तुला पहुँचा, कैपिलोव से १५०० रूबल उधार लिये। बिना-विचार किये ही अधिक सूद देने की स्वीकृति दे दी। कज़ारिन के यहाँ गया। एलागिन को गालियाँ दीं—भयानक! लिखता रहा। पी० वी० ने मुझे धमकाया।

१२ अक्तूबर—जंगल कटवाना शुरू किया। पीरॉगोवो गया; दो शिकार मार लिये। क्रुद्धावस्था में पहुँचा; पर माशेंका के साथ बनाये रखने तरीक़ा जान गया। वह अधिक कोमल मनोवृत्ति की लड़की है। मेरी तबियत ठीक नहीं है।

१३ अक्तूबर—दिन-भर घर पर ही रहा। गप-शप करता रहा। के० एल० आयीं। बड़ी अच्छी!

सुन्दर फलदार दरख़्त बन गये। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने हाथ से एक सेब का बाग़ भी लगाया था, जिसमें आगे चलकर ३००० रूबल प्रति वर्ष की आमदनी होने लगी थी।

१४ सितम्बर*—याश्नाया को लौटा। मज़दूर नहीं ठहरेंगे। पहले मैं घबरा गया।

१५ अक्तूबर—शिकार करते हुए आर्सेनेव के यहाँ पहुँचा। उन्होंने मुझे किसी काम से बुलाया था; पर वह काम नहीं हुआ। उनके साथ याश्नाया वापस आया। तबियत बहुत सुस्त है।

१६ अक्तूबर—विलम्ब से उठा। ज़मींदारी का काम किया—समय आने पर प्रबन्ध सुधर जायगा। चार बजे रवाना हुआ।

१७ अक्तूबर—हम लोग गाड़ी में चले। ख़ूब गप-शप की। मैं बड़ा प्रभावान्वित हुआ। आठ बजे पहुँचे।

१८ अक्तूबर—ऑपीपोव्स्कीज़ के यहाँ गया। वापसी में मेरे मन में बड़ी भावुकता भर गयी। रहने की जगह ढ़ूँढी। एक जर्मन स्त्री। याकोलेव्स के यहाँ भोजन किया। फूफी ने अपना सब हाल बताया और आँसू बहाये। शाम+ को ओगारेव आया और हम लोग फूफी के साथ रहने के

---

* टॉल्सटॉय यहाँ अक्तूबर की जगह सितम्बर ग़लती से लिख गये हैं।

\+ टॉल्सटॉय अपनी फूफी तातियाना अलेग्ज़ैण्ड्रोवना के साथ मॉस्को गये थे। यह स्त्री वास्तव में टॉल्सटॉय के के दूर के रिश्ते की थी, किन्तु टॉल्सटॉय की माँ के देहान्त के बाद इन्होंने ही उनका घर सँभाला था।

लिये मकान देखने गये। क्लब में मैं ही एक ऐसा बेवक़ूफ़ हूँ, जिसके कारण तूफ़ान बर्पा हुआ करते हैं।

१९ अक्तूबर—प्रातःकाल बहुत व्यस्त रहा। क्लब में ही भोजन किया—सुस्ती छा रही है, तबियत अच्छी नहीं है। शाम को अक्साकोव्स के यहाँ गया। यहाँ एक ऐसा साहित्यिक वातावरण है, जिससे मैं घबरा उठा।

२० अक्तूबर—फ़ेट आया—अच्छा स्वभाव है उसका। वह साहित्यिक होने का ढोंग रचता है। सुखोटिन, र्याबिनिन अक्साकोव, और मकारोव भी मौजूद हैं। खाना सिर्फ़ मकारोव के साथ खाया। प्रातःकाल पर्फ़ीलिव्स के यहाँ रहा। मैं वारेनका को नहीं चाहता। कल मैं सुशकोव और सुखोटिन के यहाँ रहा। ये वास्तविक स्तम्भ हैं। पर मुझे तो दो में से एक भी पसन्द नहीं आया। वैलेरियन से भी मिला। सिर्फ़ सुस्ती छायी हुई है।

२१ अक्तूबर—प्रातःकाल रहने के लिये स्थान का निश्चय किया। बाहर गया और फ़ेट के साथ भोजन किया। वह भी महत्त्वाकांक्षी, किन्तु ग़रीब है। उसके साथ अक्साकोव्स के यहाँ गया। फिर थियेटर को गया और वहाँ से आर्सेनेव्स के घर। कल बेहर्स * के यहाँ रहा था। ल्युबोचका भी क्या है—कमज़ोर!—बाल तक झड़ गये हैं! सभी तरफ़ से दुर्भाग्य ने आ-घेरा है। हे भगवान, मैं कैसा

---

* टॉल्सटॉय की स्त्री के घरवाले।

बूढ़ा-सा होगया हूँ। मैं हरेक बात पर तंग होता हूँ। मुझे कोई भी बात घबराने के लिये काफ़ी हो जाती है। मैं अपने को तो सँभाल भी लूँ, पर जिन से मेरा संसर्ग होता है, उनकी ओर से मुझमें बड़ी शिथिलता-सी भर गई है। मुझे किसी बात की इच्छा नहीं है, परन्तु मैं अस्तित्व की दोहरी रस्सियों से जकड़ा हुआ हूँ। मैं नहीं जानता, यह किसलिये है। आश्चर्य की बात तो यह है कि ईश्वर अपने पुत्र (मनुष्य) को अस्तित्व रूपी ऐसी दुःखद स्थिति में क्यों डालता है—और इससे भी लाखों-गुना आश्चर्य इस बात का है, कि हम विना यह जानते हुए कि हम किसलिये इस संसार में आये हैं, जीवित रहते हैं और यह कि हम अच्छी चीज़ों से प्रेम करते हैं, किन्तु यह बात कहीं नहीं लिखी है कि "अमुक चीज़ अच्छी है, और अमुक चीज़ बुरी।"

२२ अक्तूबर—पीटर्सबर्ग की गाड़ी पर चढ़ा—ट्रेन छूटते-छूटते स्टेशन पर पहुँचा। आर्सेनेव्स और टैलीज़िन वहीं (पीटर्सबर्ग में) है। मैं उसे बहुत नहीं चाहता। प्रातः काल मिनिस्टर के यहाँ गया। ज़लेन्वाय से मुलाक़ात की, और किसी कारण से तबियत घबरा-सी गयी। नेक्रासोव के लिये—'कठिन' और सनेनकोव को 'सुन्दर' शब्द फबता है। क्लब में कोवालेव्स्की के साथ भोजन किया। शाम को टॉल्सटॉय-परिवार के साथ भोजन किया। अलेग्ज़ैण्ड्रिन काफ़ी मनोरञ्जक है! आनन्द और परितुष्टि दोनों का

सम्मिश्रण। मैंने अभी तक एक भी स्त्री ऐसी नहीं देखी, जो उस के पैर के तलवे की भी बराबरी कर सके। शाम को ए० पी०........., बहुत विलम्ब हो गया। उसके मुँह में झुर्रियाँ पड़ी हुई हैं।

२३ अक्तूबर—फिर ज़ेलेन्वाय। बड़ी कठिनाई है। प्रातःकाल अलैग्ज़ैड्रिन के यहाँ गया। भोजन नेक्रासोव के यहाँ किया—बड़ी सुस्ती है। सायंकाल को आर्सेनेव्स और ड्रूजिनिन के यहाँ गया।

२४ अक्तूबर—मीनेव के यहाँ जाने के लिये बहुत विलम्ब हो गया। प्रातःकाल शेविच और नेक्रासोव के यहाँ व्यतीत किया। भोजन आर्सेनेव्स के यहाँ किया और उन्ही में साथ थियेटर गया। खेल अच्छा रहा। प्रातःकाल ए० पी० के यहाँ।

२५ अक्तूबर—प्रातःकाल ब्लुडोव के यहाँ। भोजन टॉल्सटॉय-परिवार के साथ। सायंकाल साल्टीकोव के यहाँ।

२६ अक्तूबर—मीनेव घर पर नहीं मिला। नेक्रासोव के यहाँ भोजन किया। बहुत काफ़ी है। शाम कोज़लोवा के साथ शेविच के यहाँ काटी। उनमें हँसी-मज़ाक़ का माद्दा कम है। रात को ए० पी० के यहाँ।

२७ अक्तूबर—भूल गया।

२८ अक्तूबर—भूल गया।

२९ अक्तूबर—मिनिस्टर से मिला। मामले पर अच्छी तरह बात-चीत नहीं कर सका। शोस्तक के साथ भोजन किया। पेरोव्स्की की कहानी। अलैग्ज़ैण्ड्रिन बड़ी ही मनोरञ्जक है। शाम उन्हीं के साथ काटी।

३० अक्तूबर—कॉल्बॉसिन के साथ बात-चीत की। फिर रवाना हुआ। 'पैज़ुखिन की मृत्यु' एक वाहियात चीज़ है। युशकोव बेवकूफ़ और रद्दी आदमी है। डॉलगोरुकोव काफ़ी मिलनसार आदमी है; और बेचारा मेश्चर्स्की पेरिस से कॉकेशस भागता हुआ जन्तु है! यह समाचार पाकर मेरे मन में बड़ा अफ़सोस और साथ ही ईर्ष्या हुई, कि आर्लोव की शादी ट्वेट्स्काया के साथ होरही है। मैं थका हुआ यहाँ पहुँचा हूँ। घोर ज़ुकाम होने और नाक से बराबर पानी बहने के कारण मैं तङ्ग आगया हूँ। माशेंका अपनी ही बातें करती रही, मेरे सम्बन्ध में उसने एक बात भी नहीं पूछी; पर वह है, बड़ी प्यारी। बहुत अच्छा। दिन को सो गया। एन० एस० टॉल्सटॉय की पुस्तक पढ़ी। अच्छी चीज़ है। इर्शोवका 'सेवस्टॉपॉल' भी सुन्दर है। घर पर बैठे रहकर केवल लिखना चाहता हूँ। पहले पीटर्सबर्ग आकर मुझे अफ़सोस हुआ, पर बाद में काफ़ी तौर पर दिल लग गया। मेरी ख्याति कम हो गयी है, मेरी रचनाओं की चर्चा बहुत कम रह गयी है, इससे मुझे बड़ा दुःख हुआ है; पर अब मैं शांत हूँ। मैं जानता हूँ कि मुझे कुछ कहना है, और मुझमें वह

बात जोर के साथ कहने की शक्ति भी है—फिर मुझे कहना ही चाहिये, जनता चाहे जो कहे। आवश्यकता इस बात की है कि पूर्ण सचेतनता के साथ अपनी पूरी शक्ति लगाकर काम किया जाय………फिर लोग चाहे उसकी बेक़द्री ही क्यों न करें।

१ नवम्बर—रात-भर लड़ाई का स्वप्न देखता रहा। लिखना शुरू किया। आगे बढ़ना कठिन होरहा है। टहलने गया, और 'ली नॉड' पढ़ा। घर पर अच्छी तरह भोजन किया। फिर 'कॉसेक्स' लिखने की कोशिश की, पर बहुत थोड़ा लिख पाया। क्लब को गया। कैसा बेवक़ूफ़ हूँ मैं! वहीं इङ्गलैण्ड की कला पर मेरिमी का एक निबन्ध पढ़ा। सुशकोव्स के यहाँ गया होता, तो अच्छा होता।

२ नवम्बर, प्रातः—सब ठीक। खाना घर पर ही खाया। शाम सुशकोव्स के यहाँ बड़े आनन्द से कटी। प्रिंस व्याज़ेम्स्की शेवाच! क्लब गया। मेरे आदमी आ गये हैं।

३ नवम्बर—प्रातःकाल सामान ख़रीदने गया। एस० मुझे छोड़ गया। भोजन रोज़ॉवा के साथ। शाम को पेनिन्स के यहाँ। मैं बुद्धिमानों के साथ लड़ने की आदत कब छोड़ूँगा?

४ नवम्बर—चीज़ें ख़रीदीं। क्लब गया।

५ नवम्बर—माशेंका के साथ शहर गया। सेरेज़ा आ

गया है। निकोला के पैर में मोच आगयी है। शाम क्लब में। चिन्ता।

६ नवम्बर—सुबह देर तक सोते रहकर ग्यारह बजे उठा। सेरेज़ा के साथ गपशप की। साढ़े बारह बजे टहलने गया। गोर्शाका के घर पहुँचा; पर वह वहाँ नहीं मिला। वहाँ से द्याकोवा के यहाँ गया, पर उसके साथ मैं खुलकर बातें नहीं कर सका। फिर सुखोटिन के पास पहुँचा। अलैग्ज़ैण्ड्रिन बड़ी ही आकर्षक है। वास्तव में यही एक स्त्री है, जिसने मुझे अपनी ओर सब से अधिक आकर्षित किया है। उससे शादी के विषय में बात-चीत की। मैंने उससे सारी बातें क्यों नहीं कह दीं? घर पर आनन्दपूर्वक रहा। शाम को साशेंका के साथ पर्फ़ीलिव्स के यहाँ गया। वे लोग बड़े दयालु और अपने ढंग के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। सेरेज़ा कंजड़िनों पर गिरना और ताश खेलना जानता है। उसको लोग 'सर्जियुस'❀ ठीक ही कहते हैं। आज जल्दी बिछौने पर पड़ गया—ऐसा मालूम होता है जैसे मुझे बुढ़ापे और खेद की भावनाओं ने घेर लिया है। नॉवीकोव से कल और आर्लोव से आज मिला। सब जगह लज्जाजनक स्मृतियाँ तङ्ग करती हैं। 'युवावस्था' लिखने का यही (उपयुक्त) समय है।

❀ तातियाना अलैग्ज़ैण्ड्रोवना चिढ़कर उसे इसी अर्द्ध-नाम से पुकारा करती थीं।

७ नवम्बर—सेरेज़ा के कारण कुछ लिख-पढ़ नहीं सका। कौंसिल गया। 'ली नॉर्ड' पढ़ा। आर्सेनेव्स के यहाँ गया—वे लोग घर पर नहीं मिले। घर पर चाची पॉलिना के साथ भोजन किया। शाम को 'डॉन क्विक्सोट' पढ़ा, और स्नानागार को गया।

८ नवम्बर—तड़के उठा, और वैलेरिया को एक पत्र लिखा। अपने-आप ही आनन्दित होकर बोला, कि मैंने जो कुछ किया, बहुत अच्छा किया। सेरेज़ा के साथ व्यायाम करने के लिये गया; वह यहीं ठहरेगा, हम दोनों ने अकेले ही भोजन किया, और मैंने थोड़ा पढ़ा। फूफी 'बाज़ारू दूल्हा'-नामक एक नाटक देखने थियेटर गयी। सैडोव्स्की यदि ज़रा-सा असावधान न होता, तो बड़ा शानदार आदमी था। सुखोटिन के घर गया। अलैग्ज़ैंड्रिन के अतिरिक्त और किसी से खुलकर बातें नहीं कीं। वह अद्भुत लड़की है। एक बजे के बाद घर लौटा।

९ नवम्बर—बहुत थोड़ा लिखा। टहलने गया, तो थियेटर की तरफ़ हो लिया। शिपोव्स। पनीर। आज भोजन सेरेज़ा के साथ नहीं किया। थियेटर गया। अलैग्ज़ैण्ड्रिन बड़ी ही शानदार बनी हुई है, पर मुझमें शिथिलता आ गयी है। शिपोव्स के यहाँ गया। ए० ई० बड़ी सुन्दरी है। घर पर सब खुश हैं। मेरे हाथ-पावों में दर्द है।

१० नवम्बर—फ़ेट गया। सैफ़ोनोवा ने वहीं भोजन

किया। उसी के कारण माशेंका को बदहज़्मी होने की बात छिड़ गयी। ईमानदारी के लिये भी अफ़सोस करना पड़ जाता है!

११ नवम्बर—कौंसिल गया। वहाँ से ऑस्ट्रॉव्स्की✽ के यहाँ पहुँचा। वह बहुत ही शिथिल है। व्यायाम। फ़ेट भोजन के लिये आया। उसने 'ऐण्टोनी ऐण्ड क्लियोपाट्रा'-नामक पुस्तक पढ़ी, और अपनी बातों से कला की ओर मेरी दिलचस्पी बढ़ा दी। 'कॉसैक्स' में अब आगे नाटक का कोई प्रसङ्ग अवश्य लिखूँगा। नींद नही आती।

१२ नवम्बर—विलम्ब से उठा। टहलने निकल गया, और एक ऊनी कोट की तलाश में बाज़ार निकल गया। सुस्ती रही। शियोव्स के यहाँ देर से पहुँचा। एम० मेण्ट वहीं थी। बड़ा मज़ा रहा। घर पर तबियत गड़बड़ रही। बच्चों को साथ ले थियेटर पहुँचा। वे सो गये। बॉबिन्सकीज़ के यहाँ बॉल-नृत्य में शामिल होने गया। बॉब्रिन्सकाया, त्युशेवा, अल्सुफ़ेवा और एर्मोलोवा के साथ नाचा। ठीक। घड़ी खो गयी।

१३ नवम्बर—प्रातःकाल थोड़ा-सा लिखा। व्यायाम। घर पर ही भोजन किया। शाम फ़ेट के यहाँ बड़े आनन्द से गुज़री।

१४ नवम्बर—यूरेना! 'कॉसैक्स' में—दोनों को ही मार

✽ रूस का प्रसिद्ध नाटककार।

डाला जाय। × ऊनी कोट के लिये गया—वहाँ से बॉब्रिन्स्की के यहाँ। भोजन घर पर किया। निकोलेंका के यहाँ बिछौने पर पड़ गया। उसने मुझे स्वादिष्ट चीज़ें खिलायीं। शाम को सुखोटिन, द्याकोव और मैंने मिलकर वाहियात बातें कीं।

१५ नवम्बर—प्रातःकाल व्यायाम। तबियत ख़राब। घर पर ही रहा। शाम को सुशकोव के यहाँ गया। तबियत ख़ुश नहीं हुई। रोज़ेन को गालिदाँ दीं। रॉस्टोयचीना और मेएट के साथ तबियत नहीं लगी।

१६ नवम्बर—थोड़ा लिखा। थियेटर। ए० डी० का इस वार मुझ पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। माशेंका ने मुझे आड़े-हाथों लिया।

१७ नवम्बर—सेरेज़ा के साथ गाड़ी में बाहर गया। खाना घर पर ही खाया। शाम को अक्साकोव्स के यहाँ पहुँचा—भयानक गर्व! मैंने गॉगोल की अनुचित आलोचना कर डाली।

१८ नवम्बर—लिखा। व्यायाम। सेरेज़ा चला गया—बड़ी ही दुःखद बात है! क्लब गया और १० रूबल खो आया।

× टॉल्सटॉय 'कॉसेक्स' के दोनो नायकों—ओलेनिन और लुकाशका--को मरवाकर कथानक समाप्त करना चाहते थे।

१९ नवम्बर—लिखा। शाम को द्याकोव के यहाँ गया। एल० बड़ी ही सुन्दरी है। (उसकी) आँखें! व्यायाम।

२० नवम्बर—लेखन और संशोधन का काम कर रहा हूँ। व्यायाम। सारा दिन घर पर ही रहा। ल्वोव्स से नहीं मिल सका।

२१ नवम्बर—आठ बजे रेलवे-स्टेशन पर पहुँचा। अलैग्ज़ैण्ड्रिन टॉल्सटॉया ने 'मुझे अधिक नहीं पिघलाया। उसके साथ क्राट्कोव्स के यहाँ गया। सिर में दर्द हो गया, उसकी राय में माशेंका काफ़ी सुन्दरी नहीं है। मेरे सिर में बड़ा दर्द हो गया है।

२२ नवम्बर—लिखा। व्यायाम। तबियत अच्छी नहीं है। खाना नही खाया। शाम को लिखा।

२३ नवम्बर—प्रातःकाल लिखा। घर पर फूफी के साथ आनन्दपूर्वक बातें हुईं। शाम को लिखने के बाद अक्सा-कोव्स के यहाँ गया। मैं समझता हूँ, बुड्ढे को यह बात (मेरा जाना) पसन्द है।

२४ अक्तूबर—'खोया हुआ' लिखा। त्युशेव के यहाँ गया। न-मालूम क्यों वहाँ कुछ मुँह से निकालना मुझे बेढङ्गा-सा जँचता था। मुख्य भोजन घर पर किया। 'स्वप्न' लिखना समाप्त कर दिया; चीज़ बुरी नहीं है। पैनिन के घर उखटोव्स्की ने एक बॉल-नृत्य का आयोजन किया। वहाँ थोड़े लोग इकट्ठे हुए। जितने भी उपस्थित थे,

सब खुश-दिल। सुस्ती आगयी। वी० एन० सुन्दरी नहीं है। लीवेन को बदसूरत नहीं कह सकते। किरीवा ने आनन्दपूर्वक यह बात कही कि वह ईसा पर विश्वास नहीं करती। उसकी अवस्था सत्रह वर्ष की है।

२५ नवम्बर—तड़के उठा। 'खोया हुआ' को दोहराया। व्यायाम में कुछ-कुछ उन्नति कर रहा हूँ। भोजन के बाद फिर उक्त पुस्तक को दोहराकर समाप्त कर दिया। उत्तरार्द्ध शिथिल है।

२६ नवम्बर—प्रातःकाल ही उक्त पुस्तक भेज दी। चाची पॉलिना के यहाँ होकर अक्साकोव्स के यहाँ गया, और उन्हीं के यहाँ भोजन किया। वे लोग बड़े अच्छे हैं। शाम को द्याकोव्स के यहाँ गया। ए० ऑबोलेंस्काया बड़ी ही प्रसन्न-वदना और आकर्षक है। जब मैं सोन्या के साथ खाने बैठा, तो उसने अपनी बहन को जिस मनोमुग्धकारी ढङ्ग से देखा, उसे मैंने ख़ास तौर पर नोट किया। किसी कारण से अलैग्ज़ैण्डर, सुखोटिन को भी अपने साथ घर लिवा लाया।

२७ नवम्बर—एम० ओ० पढ़ा। कुछ नहीं, कूड़ा है! फ़ेट आया। व्यायाम—प्रसन्नता। फ़ेट के साथ भोजन किया और माशेंका के साथ एक ऐसे विषय पर गर्मागर्म बहस हो गयी, जिस पर वाद-विवाद होना उचित नहीं था। फ़ेट और सुखोटिन के घर गया। मैं बड़ी ही शान्त और

शुद्ध मनोदशा में था। ए० ऑबोलेंस्काया ने प्रधान नर्त्तकी का काम किया—फिर सिर झुकाकर वहाँ से खिसक गयी। ....कैसा सौन्दर्य है ! आज फिर सुखोटिन को अपने साथ घर लिवा लाया—वह पहले से ही बेचैन-सा है। 'खोया हुआ'-रचना से अब मैं बड़ा असन्तुष्ट हूँ; तोभी मैं पीटर्सबर्ग न जाकर प्रूफ़ का इन्तज़ार करूँगा !

२८ नवम्बर—प्रातःकाल की कोई बात याद नहीं है। किरीवा के यहाँ गया। घर पर खाना खाया। शाम को सुशकोव के यहाँ अध्ययन में लगा रहा—बड़ा ही आनन्द रहा। रेव्स्की बड़ी ही दिलचस्प है। त्युशेव के पद्य* बहुत ही शिथिल हैं। सर्कुलर का समाचार कल आया है। क्लब में फ़िज़ूल बहस करने की बेवकूफ़ी की।

२९ नवम्बर—व्यायाम। माशा की तबियत ठीक हो रही है। शाम को सुखोटिन के यहाँ गया। बड़ा ही आनन्द रहा। मैं अधिक प्रौढ़ और वह अधिक लजीली बन गयी है। सुखोटिना सच्ची, सुन्दर और सीधी-सादी है। ए० तो आश्चर्य की पुतली है ! सुखोटिन के साथ घर पर ही भोजन किया।

३० नवम्बर—तार भेजा। एन० एस० टॉल्सटॉय एक सुस्त गप्पबाज़ है। अक्साकोव के साथ टहलने गया। शाम

---

* यह विचार त्युशेव की किसी तत्कालीन नई रचना के सम्बन्ध में थे; अन्यथा टॉल्सटॉय त्युशेव की कविताओं के प्रशंसक थे।

को घर पर ही रहा। ऑजियर, कॉल्बासिन, गाँव के मुखिया, वी० पर्फीलिव और ग्रीगॉरीव को पत्र लिखे। 'खोया हुआ' जनवरी में प्रकाशित होगा।

१ दिसम्बर—एक बजे माशा के साथ एक गायन-वाद्य-पार्टी में गया। कुछ विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। कीरीवा और सी० ऑबोलेंस्काया भी वहाँ थीं। शेरबाटोवा सुन्दरी है। एन० एस० टॉल्सटॉया खाने के लिये आयी, और पहले सब ठीक था, पर बाद में उसने मुझे परेशान कर डाला। शाम द्याकोव के यहाँ काटी। आश्चर्यजनक बहनें हैं। ए० ने मुझे एक सूत्र से बाँध रक्खा है, और इसके लिये मैं उसका कृतज्ञ हूँ। पर शाम को तो मैं उस पर फ़िदा हो गया हूँ, और प्रसन्नता या खेद हृदय में भरकर घर वापस आया हूँ। मुझे नहीं मालूम, इन दोनों में से कौन-सी भावना मेरे अन्दर समा गयी।

२ दिसम्बर—थोड़ा लिखा। व्यायाम किया। घर पर भोजन किया। ए० सुखोटिन। शाम को शाखोव्स्कॉय के यहाँ गया। बेहूदापन, सुस्ती और कुरूपता। मैं नाच में प्रसन्नतापूर्वक शामिल हुआ—लीवेन।

३ दिसम्बर—थोड़ा लिखा। भोजन फ़ेट के यहाँ किया। अब भी कुछ गड़बड़ी शेष मालूम होती है। 'ऐण्टोनी और क्लियोपाट्रा' का अनुवाद अच्छा नहीं हुआ है। थियेटर में शुरू से आख़ीर तक ए० के साथ रहा। उन्हीं के साथ चाय

पी। मैंने उस (ए०) से अपनी जड़ता और अस्पष्टता के बारे में कह दिया। माइकेल मिखलायलोविच सुखोटिन से समाजवाद पर बहस की।

४ दिसम्बर—बच्चों के साथ पशुशाला की ओर गया। व्यायाम किया—और आज पहला दिन है, जब सन्तोषजनक रीति से कर सका। भोजन सुखोटिन के यहाँ किया। वह मुझसे चिन्तित भाव से बातें करती रही, फिर भी मैं उसे प्रेम करता हूँ, और उसके साथ सभी बेवक़ूफ़ियाँ करने को तैयार हूँ। शाम को पर्फ़ीलिव्स के यहाँ गया। ऐसा मालूम होता है कि मैंने उन्हें उलझन में डाल दिया है। त्युशेवा, सुश-कोव्स के साथ अच्छी तरह है, और उसी तरह मेरे पास भी रहना चाहती पहले की अपेक्षा अब मैं झूठ कम बोलने लगा हूँ। क्लब—शेरबाटोव। बॉबरिन्स्की। कंजड़िनें। यूरी ऑबोलेंस्की—सुस्त और कुछ-कुछ मनोरंजक। मेरे भाई आगये हैं। प्रातः ६ बजे सोया।

५ दिसम्बर—एक बजे उठा। टहला। बेहर्स के यहाँ गया। घर पर भोजन किया। दिल नहीं लग रहा है। सिर में दर्द है। माशा के साथ अक्साकोव्स के यहाँ गया। उन्होंने मुझे दयालुतापूर्ण उपदेश दिये,……घर पर भाइयों के साथ झड़प हो गयी।

६ दिसम्बर—व्यायाम—बुरी तरह। थोड़ा लिखा। थियेटर गया—खेल बिल्कुल वाहियात था। सुशकोव्स के

यहाँ गया। त्युशेव ने मुझे तर्क अधिक करने के कारण धमकाया। र्यूमिंस के यहाँ गया—वह बात नहीं है। शेरबाटोवा कुरूपता से कोसों दूर है।

७ दिसम्बर—वैसिली आगया। र्यूमिंस और शीपोव के यहाँ गया। पॉट्ुलोव्स के यहाँ भी पहुँचा। नाद्या सुन्दरी होने पर भी बड़ी ही छिछोरी है। माइकेल सुखोटिन घर पर ही मिला। पावलोवा बड़ी चालाक है। याश्नाया के लिये रवाना हुआ।

८ दिसम्बर—सफ़र में। सात बजे कज़ारीनोव के यहाँ और तब आर्सेनेव के घर पहुँचा। खोम्याकोव की तबियत शुष्क है। सेम्याकिन के पास भी गया। आर्सेनेव बेवक़ूफ़ नहीं; परिश्रमी व्यक्ति है।

९ दिसम्बर—प्रातःकाल आर्सेनेव के यहाँ गया, और वहाँ से याश्नाया के घर। मामला ठीक नहीं चल रहा है। किसानों का सम्मिलन अच्छा रहा।

१० दिसम्बर—मॉस्को को लौट आया।

११-२६ दिसम्बर—कई ऐसे बॉल-नृत्यों में भाग लिया, जो दिलचस्प नहीं थे। नाद्या के घर कई दिन तक शाम मज़े में गुज़ारी; किन्तु बातें श्लेषात्मक हुईं, और परिणाम शिथिलतापूर्ण हुआ। 'गायक' का संशोधन किया। इसे प्रकाशित करूँगा। दो बार कंजड़िनों के यहाँ भी गया।

२६ दिसम्बर—बारह बजे उठा। काम करना चाहता था,

कि इतने में ऑस्ट्रोव्स्की आगया। और बाद में कई कंज-ड़िन-गायिकाओं को साथ लिये सर्जी भी आ धमका। कैसा वाहियात खर्च है !※ इसके बाद अक्साकोव्स के यहाँ गया। भोजन के सम्बन्ध में बात-चीत की। घर पर भोजन किया। फ़ूफी यह बात कहने की चेष्टा कर रही थी कि मारना, धम-काना बहुत ही उपयोगी है—बात बच्चों के सम्बन्ध में थी। के० अक्साकोव की राय में निकोलेंका अच्छी नहीं है। सुशकोव्स के यहाँ गया। बड़ा आनन्द आया।

२७ दिसम्बर—प्रातःकाल गुडोविच, वोल्कोव-आदि से मिलने गया। भोजन घर पर ही किया। अकस्मात् सेरेज़ा ने मुझ पर बुरी तरह आक्रमण किया। क्रोध तो बहुत आया; पर मैं शान्त होगया। शाम पीकर्स के यहाँ काटी। उसमें बहुत अधिक प्रान्तीयता है। लोगों के मुँह पर बड़े दिन की छुट्टियों की प्रसन्नता झलक रही थी। मॉस्करेड—बेहद परेशानी! निकोलेंका के साथ अच्छी गप-शप हुई।

२८ दिसम्बर—क्रयुकोव और बाखमेतीव लोगों से मिलने जा रहा हूँ। सुखोटिना बहुत ही प्यारी है। अल्सूफ़िव्स ने मेरे सम्बन्ध में (उससे) बहुत कुछ कहा है।

※ यहाँ 'वाहियात खर्च' से मतलब उस पुरस्कार से है, जो कंजड़िन गायिकाओं को रूस में उस समय देने की प्रथा थी।

तबियत में कुछ घबराहट-सी है। भोजन के अन्त में छोटे भाषण हुए। पैवलोव्स्की के अतिरिक्त और सब बोले। कॉन्स्टैंटाइन अक्साकोव की उत्तमता और दयालुता में सन्देह नहीं है। सुशकोव के यहाँ वी० का सौन्दर्य सराहनीय, पर शान्त था। रेव्स्की का व्यवहार ग्लानि उत्पन्न करनेवाला था।

२९-३०-३१ दिसम्बर—बॉब्रिन्सकीज़ के यहाँ बॉल। त्युशेवा चुपचाप मुझे आकर्षित करने लग गयी है। निकोलेंका का 'स्वप्न' लिखा। कोई भी इस 'स्वप्न' से सहमत नहीं है; पर मैं जानता हूँ कि यह अच्छी चीज़ है।
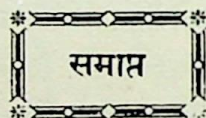
साहित्य-मण्डल-द्वारा प्रकाशित
बीस पुस्तकें--

१—षड्यंत्रकारी

फ्रांस के प्रसिद्ध उपन्यासकार ड्यूमा की एक अत्युत्तम रचना का अनुवाद। अठारहवीं शताब्दी के अंत में प्रजातंत्र के नाम पर जो अत्याचार हुए, उनका लोम-हर्षक चित्रण। मूल्य सचित्र, सजिल्द का १।।)

२—महापाप

रूस के ऋषि महात्मा टॉल्सटॉय की दो प्रसिद्ध रचनाओं का अनुवाद। पहली रचना में एक बदनसीब नौकर की दर्दनाक कहानी है, दूसरी में सामाजिक वीभत्सताओं की भयानक गाथा है। लोगों ने खूब पसन्द की है। मूल्य सचित्र, सजिल्द का १।।)

३—देहाती सुन्दरी

अनुवादक, ठाकुर राजबहादुरसिंह। टॉल्सटॉय की अत्यन्त प्रसिद्ध रचना 'कॉसेक्स' का भाव-पूर्ण अनुवाद। एक नागरिक नवयुवक का ग्राम्य-निवास, और वहाँ बदलनेवाले उसके मनोभावों का मनोहर दिग्दर्शन। मूल्य १।।)

४—यौवन की आँधी

रूस के विख्यात लेखक आइवन तुर्गनेव के एक अत्यन्त प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद। किस प्रकार रूप और

यौवन के थपेड़े मनुष्य को अन्धा बना देते हैं, और होश में आने पर किस नाशकारी अनुताप का उद्भव होता है, इसका चित्रण इस पुस्तक में जादू-भरी क़लम से हुआ है। मूल्य १॥)

५—लेनिन और गाँधी

(ज़ब्त) ३)

६—विनाश की घड़ी

फ़्रांस के विश्व-विख्यात साहित्यिक, महात्मा गाँधी के परम-भक्त, महाशय रोम्याँ रोलाँ के एक संसार-प्रसिद्ध नाटक का अनुवाद। मूल्य १), सजिल्द १॥)

७—श्रद्धा, ज्ञान और चरित्र

लेखक श्री० चम्पतराय जैन, विद्या-वारिधि, बार-एट्-लॉ। विद्वान् लेखक ने इस पुस्तक में आत्मा का अस्तित्व और उसका अमरत्व सिद्ध किया है। अपने विषय की अनूठी पुस्तक है। मूल्य ॥।)

८—रूस का पञ्चवर्षीय आयोजन

(पुलिस के क़ब्ज़े में) ४॥)

९—राजस्थान

लेखक श्रीयुत श्रीगोविन्द हयारण। भारत के देशी राज्यों का प्रामाणिक और संक्षिप्त परिचय। ५० भिन्न-भिन्न अध्यायों में देशी राज्यों-सम्बन्धी प्रत्येक महत्वपूर्ण बात का ज्ञान आप इससे प्राप्त कर सकते हैं। इसके लेखक-

महोदय को आधी उम्र देशी राज्यों में ही बीती है। छपाई, सफ़ाई, गेट-अप बहुत सुन्दर। सजिल्द का दाम ३) स्थायी ग्राहकों को २)

१०—चार क्रांतिकारी

अनुवादक, ठाकुर राजबहादुरसिंह। अँग्रेज़ी के महान् घटना-पूर्ण उपन्यास-लेखक एडगर वालेस की रचना का अनुवाद। चार क्रान्तिकारियों की रोमांचकारी लीलाएँ पढ़कर शरीर थर्रा उठता है! मूल्य १)

११—जेल-यात्रा

लेखक, श्री० प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त'। हिन्दी के एक उदीयमान् लेखक का राजनीतिक उपन्यास। पाठकों को इस उपन्यास की बहुत दिन से प्रतीक्षा थी। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत होने के साथ-ही-साथ इस पुस्तक में एक अछूती प्रेम-कहानी का मार्मिक वर्णन है। मूल्य २), सजिल्द २।।)

१२—तलाक़

लेखक, 'मुक्त'। पति-पत्नी के बीच अनिवार्य कलह का कारण क्या है? क्यों आज हमारा गृहस्थ-जीवन काँटों की सेज बना हुआ है? और, किस प्रकार उसे पुष्पित शय्या में परिणत किया जा सकता है? इसका रहस्य आप इस उपन्यास में पायेंगे। लेखक की सर्वोत्कृष्ट रचना है। प्रत्येक स्त्री-पुरुष को पढ़नी चाहिये। मूल्य २), सजिल्द २।।)

१३—तपोभूमि

लेखकगण, श्री जैनेंद्रकुमार जैन और श्री० ऋषभचरण जैन। इसमें चार अनोखे पात्रों का चित्रण है, जो दुनियाँ की आँखों में भ्रष्ट और अपने-अपने भीतर आदर्श-रूप हैं। यह पुस्तक हिन्दी-साहित्य की अनुपम निधि है। मूल्य २), सजिल्द २॥)

१४—जासूसी कहानियाँ

[अनुवादक—श्रीयुक्त सुकुमार चट्टोपाध्याय]

इँग्लैण्ड के संसार-प्रसिद्ध जासूसी-उपन्यास-लेखक सर आर्थर कॉनन डॉयल की तीन रहस्यमयी कहानियों का अनुवाद। कहानियों के नाम हैं—'भेद-भरी हत्या', 'पिशाच का ख़ून' और 'लाल सिर।' तीनों कहानियाँ ऐसी मनोरञ्जक हैं, कि बार पढ़कर भी मन को सन्तोष नहीं होता। जासूसी कहानियों के इतिहास पर अनुवादक महोदय का संक्षिप्त और महत्वपूर्ण वक्तव्य। बढ़िया आर्ट पेपर पर पतले टाइप में छपी हुई पुस्तक। पौने दो सौ पृष्ठ। मूल्य १) रु०।

१५—टॉल्सटॉय की डायरी

(आपके हाथ में हैं) मूल्य ३)

१६—मास्टर साहब

लेखक, श्री ऋषभचरण जैन। दो मित्रों का हार्दिक प्रेम और ज़रा-सी बात पर बदलनेवाले उनके भाव, तथा सच्चे और सज्जन पुरुष की विजय का बड़ा ही मनोमोहक वर्णन् है। पहला संस्करण समाप्त-प्राय है। मूल्य २)

१७—अभियुक्त

श्री ऋषभचरण जैन की सर्वोत्तम कहानियों का संग्रह है। मूल्य २)

१८—मुग़लों के अन्तिम दिन

उर्दू के प्रसिद्ध लेखक ख़्वाजा हसन निज़ामी साहब की एक दर्दनाक पुस्तक का अनुवाद। मूल्य १)

१९—फूलदान

उर्दू की अत्यन्त सरल और भावमयी कविताओं का हिन्दी-संग्रह। पढ़कर तबियत फड़क उठती है। मूल्य १)

२०—मधुकरी

(दूसरा भाग)

सम्पादक—पण्डित विनोदशंकर व्यास। हिन्दी के श्रेष्ठ कहानी-लेखकों की रचनायें। मूल्य २) रु०।

Mahatma Gandhi's First Experiment.

लेखक श्री० ऋषभचरण जैन। लेखक के हिन्दी-उपन्यास 'सत्याग्रह' का अँग्रेज़ी-अनुवाद। अँग्रेज़ी में अनुवादित होनेवाला हिन्दी का पहला उपन्यास। भाषा बहुत ही सरल। छपाई-सफ़ाई अत्युत्कृष्ट। मूल्य १)

नोट—१७, १८, १९, २०, नम्बर की पुस्तकें नवम्बर के अन्तिम सप्ताह तक प्रकाशित हो जायँगी।

मिलने का पता—

साहित्य-मण्डल,

बाज़ार सीताराम, दिल्ली।